# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

• प्रबन्ध सम्पादक •

जितेन्द्रकुमार जैन

ग्रन्थाङ्क १२०

## मीराँ-बृहत्पदावली—द्वितीय भाग

• प्रकाशक •

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर ( राजस्थान )

१९७५

• मुद्रक •

सज्जन प्रिंटिङ्ग प्रेस, सरस्वती प्रिण्टर्स, शारदा प्रिण्टर्स एव साधना प्रेस, जोधपुर

वि स २०३२ ① शकाब्द १८९७

# विषयानुक्रम

# प्रबन्धसम्पादकीय

मीराँ-बृहत्पदावली का यह दूसरा भाग पाठको के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रथम भाग सन् १९६८ मे प्रतिष्ठान द्वारा ही प्रकाशित किया गया है जिसका सम्पादन सन्तसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ने किया था। बडे हर्ष का विषय है कि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत ने मीराँ-साहित्य की इस खोजबीन को जारी रखा और बडे परिश्रम और उत्साह से मीराँ के अनेक पदो का सकलन किया।

डॉ० शेखावत ने अपने सम्पादकीय वक्तव्य मे मीराँ के पदो को लेकर प्रचलित अनेक उलझनो का सूक्ष्म विवेचन किया है। डॉ० सत्येन्द्र ने अपनी समीक्षात्मक प्रस्तावना मे शेखावतजी के इस परिश्रम का यथोचित मूल्याङ्कन किया है।

मीराँ-शोधसाहित्य मे यह ग्रन्थ विशेष उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

ज्येष्ठ कृ. ३, सं २०३२
[ 28 मई, 1975 ]

जितेन्द्रकुमार जैन
निदेशक

# सम्पादकीय

'मीरां वृहत्पदावली, द्वितीय भाग विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत संग्रह में मैंने राजस्थान की विभिन्न संस्थाओं में संगृहीत हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीरांबाई के कुछ महत्त्वपूर्ण पद ( भजन अथवा हरजस ) संकलित किए है। इस संग्रह का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है —

कुल पद संख्या - ३७२
सर्वथा अप्रकाशित पद - २१६
राग-रागिनी वाले पद - ५०
पूर्व प्रकाशित पदों से भाव-साम्य रखने वाले पद - ४८
पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद - ४८
परिशिष्ट - अप्रकाशित मूल पदों के १० पाठान्तर—

यह पदावली दो मुख्य विभागों में विभक्त कर दी गई है। सर्व प्रथम है मूलपाठ, जिसमें मीरांबाई के अधुनावधि अप्रकाशित पद रखे गए हैं तथा राग-रागिनियों वाले ५० पद इसके साथ ही सम्मिलित किए गए हैं।

द्वितीय खण्ड में मीरां के ऐसे पदों को संकलित किया गया है जो पूर्व प्रकाशित पदों के साथ केवल अंशत. साम्य रखते है। इसमें सर्वप्रथम भाव-साम्य वाले पद हैं, तत्पश्चात् पूर्व प्रकाशित पदों से अंशतः साम्य रखने वाले पद लिए गए हैं।

अन्त मे परिशिष्ट रखा गया है जिसमें मूलपाठ के पाठान्तर तथा टिप्पणियों सहित, शब्दार्थ प्रस्तुत किए गए हैं।

ग्रन्थप्राप्ति-स्रोत—

अब मैं प्रस्तुत पदावली के प्राप्ति-स्रोतों तथा हस्तलिखित ग्रंथों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। इस पदावली के सभी हस्तलिखित ग्रन्थों के प्राप्ति स्रोत मुख्य रूप से दो हैं —

१. राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं के संग्रह
२. वैयक्तिक रूप से संगृहीत संग्रह

राजस्थान की साहित्यिक संस्थाओं मे भी राजकीय साहित्यिक सस्थाए तथा गैर सरकारी संस्थाए, ये दो उपविभाग किए जा सकते हैं।

सरकारी सस्थाए—

राजस्थान की राजकीय सस्थाओ में, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर और उसकी जयपुर, बीकानेर आदि स्थानों की शाखाएं हैं। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर तथा उसकी दोनों शाखाओं ( जयपुर और बीकानेर ) के हस्तलिखित-ग्रंथों से प्रस्तुत पदावली में अनेक पद लिए गए हैं।

गैर सरकारी सस्थाए—

इन सस्थाओं में निम्नलिखित सस्थाए हैं जिनके हस्तलिखित ग्रन्थों से, इस पदावली के अनेक पद, सगृहीत किए गए हैं —

१. राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर।
२. अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, लालगढ़ पेलैस, बीकानेर।
३. भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर।
४. संत साहित्य संगम, बीकानेर।

व्यक्तिगत रूप से प्राप्त—

श्री प्रतापसिंह जी द्वारा पिलानी से प्राप्त हरजस भी प्रस्तुत पदावली में प्रस्तुत किए गए हैं।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, से प्राप्त सामग्री—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में हस्तलिखित ग्रन्थों का एक वृहत् संग्रह है। यहां सत-साहित्य की बहुत महत्वपूर्ण सामग्री है। इस प्रतिष्ठान के ५७ हस्तलिखित ग्रन्थों में मीरां-विषयक सामग्री उपलब्ध हुई। प्रतिष्ठान के कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जैसे ग्रथांक-सख्या ५२ ( इन्द्रगढ़ पोथीखाना ), १८८२, १८६०, ३२५७, ३४०८ ६२५७, १०८५० १०८५१, १०८६२, १०८६४, २५३४४, ३७६४४, आदि। मैंने प्रतिष्ठान के जिन हस्तलिखित ग्रन्थों से सामग्री संकलित की है, उनके ग्रन्थांक निम्नलिखित हैं—

३४६२२, ३७६४३, १२५७७, २५३४४, १०४५७, १८८२, १८६०, ३६१५२, ११०७७, ५२ ( इन्द्रगढ पोथीखाना ), १०८५१, ३७६४४, ६२५६, ७३, ३२२७४, १०८२७, १०८४७, २८३८०, २८१८७, ३४७५६, ३७०३१, ३२८४, १०८६४,

१०८६२, १०८४६, ३०६४०, ३०६०२, ३१८२४, ३१०५४, ३१०५२, ३००२६, १५८२०, २०७७८, २०७६८, १२४२०, १२४२६, १२५८६, ५२३, ५५३, १५८०, ३४६६, ३२४, २८७, २६७ आदि ।

प्रतिष्ठान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रन्थ रागरागिनी-पद-संग्रह हैं। यह ग्रन्थ सचित्र है और इसके पद महत्वपूर्ण हैं। इस ग्रन्थ की ग्रन्थांक-संख्या २५५३६ है। इसी ग्रन्थ से मैंने रागरागनियों वाले ५० पद प्रस्तुत पदावली में संकलित किए हैं।

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रन्थों का पूरा ब्यौरा नीचे दिया जाता है।

| क्रमाङ्क | ग्रंथाङ्क | विवरण | भाषा | लिपि-समय | विशेष |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | ५२ | भजनसंग्रह-(मीरां, चंद्रसखी आदि के) | हिन्दी,राज० | २०वीं सदी | इंद्रगढ पोथी खाने से प्राप्त पत्र सं० १-५० |
| २. | १८८२ | मीरां | ब्रज., हिन्दी, गुज० | १६वीं सदी ,, ,, | |
| ३. | १८६० | ,, | ब्रज,हिन्दी,राज. | ,, ,, | |
| ४. | ३४०८ | पद-सग्रह (मीरां, कबीर आदि) | ,, | १८६० | पत्र सं० २० |
| ५. | ६२५६ | पद-सग्रह (काव्य) | राजस्थानी | १८वी ,, | पत्र सं० ११२ |
| ६. | १०८४७ | मीरां के पद, गोरल ६,३०,२७) आदि | ,, | १६०६ वि०स० | |
| ७. | १०८४६ (२६, ४१) | पद आदि | ,, | १६३१ तथा १६१६ | पत्र सं० ८, ६ तथा ३१ |
| ८. | १०८५१ | हरजस | ,, | १६०२ | पत्र सं० ६,१४,४४ |
| ६. | १०८६२ | पद(मीरां कबीर आदि) | ,, | १८६८ | पत्र सं० २-३३ |
| १०. | १०८६४ | भजन होरी | ,, | १८६७ | पत्र सं० ४५० |
| ११. | १२५७७ | पद आदि (मीरां कबीर) | हिन्दी राज० | १८वीं | पत्र स० ११४-१८६ |
| १२. | २५३४४ | पद-सग्रह (,, ,,) | हिन्दी, राज. | १८६६ वि०स० | पत्र सं० १ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १३ | २५५३६ | राग पद सग्रह(मीरां आदि)राजस्थानी | | १६ वीं | |
| १४ | २८१८७ | ,, ,, (,, ,,सूर) | हिन्दी | १६वी | पत्र सं. १ |
| १५. | २८३८० | ,, ,, (मीरां,गगादास)राजस्थानी | | ,, | |
| १६. | ३१०७७ | राग पद संग्रह(मीरां-आनंदघन) | ,, | १८३६ | पत्र स० १२४ |
| १७ | ३२५७४ | हरजस (मीरां) | ,, | १६वी | पत्र स० ४१ |
| १८ | ३४७५६ | कविता संग्रह(काव्य) | हिन्दी | १६वी | |
| १६. | ३४६२२ | हरजस (मीरा आदि) | × | × | |
| २० | ३६१५० | पद संग्रह(मीरां आदि) | ,, | ,, | |
| २१ | ३७०३१ | पद रागरागनी(,, ,,) | हिन्दी, राज | १६वीं | ४१ से २४३ तक |
| २२. | ३७६४४ | पद संग्रह (,, ,,) | राजस्थानी | १६वीं | पत्र सं. १०३ |

–आदि आदि

---

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जयपुर—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर की जयपुर शाखा के ३ हस्तलिखित ग्रन्थों से मैंने, मीरा के ३५ पद संकलित किए हैं। यहा के एक हस्तलिखित ग्रन्थ के साथ दो नवीन कागजों पर मीरां का बारहमासी वर्णन आदि भी दिया गया है। इस शाखा के कुछ पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन हस्तलिखित ग्रन्थो का पूरा व्यौरा प्रस्तुत है —

| ग्रंथाङ्क | पद-सख्या | कर्ता | विवरण | लिपि-समय |
|---|---|---|---|---|
| ८ | १२ | मीरां | स्फुट पद | वि० स० १८८६ |
| २७ | २ | ,, | स्फुट पद सग्रह | १६वी अदी |
| ७३ | ३ | ,, | ,, ,, ,, | १६५१ बि. स. |
| ७३ | १७ | ,, | ,, ,, ,, | ,, ,, ,, |

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रन्थों के साथ ही ग्रन्थाक १३८ वाला एक गुटका भी यहां उपलब्ध है, जिसमें मीरा रचित बारहमासी ( विरह की ) दी गई है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान बीकानेर—

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर की दूसरी शाखा बीकानेर मे है। इसमें २० हजार के लगभग हस्तलिखित ग्रन्थ है किन्तु अधिकांश सस्कृत अथवा

जैन साहित्य से सम्बन्धित हैं। मैंने इस संस्थान के अनेक ग्रन्थो का निरीक्षण किया – जिनमें से १० हस्तलिखित ग्रथ, मेरे लिए महत्वपूर्ण थे। इन १० ग्रन्थों में से केवल एक हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक १०४५७) में 'मीरां पद संग्रह' का उपलब्ध हुआ, जिसमें से केवल ८ पद ग्रहण किए गए।

ये सभी पद अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मैंने जिन हस्तलिखित ग्रथों को इस हेतु देखा, उनकी सख्या निम्नलिखित है – २८६६, पद संग्रह, ६६७६, होरी संग्रह, १०२६६, पदादिसग्रह १००५७, पद सग्रह ५७६६, पद सवैया आदि, ७४५५,८६१४ कबीर आदि के पद, ८६२३ संतों की पदावली आदि।

राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के पश्चात्, राजस्थानी शोध-संस्थान, चोपासनी, जोधपुर भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण गैर सरकारी साहित्यिक संस्थान है, जिसमें १२ हजार के लगभग ग्रंथों का सग्रह है। इनमे से अधिकांश ग्रंथ राजस्थानी भाषा के हैं। इस संस्थान में ग्रन्थों के साथ-साथ कुछ महत्वपूर्ण प्राचीन चित्र भी हैं, जिनमें मीरां का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्र भी है।

इस संस्थान से भी मीरां के अनेक पदों का सकलन किया गया है। इस संस्थान के १८५ ग्रन्थों का अवलोकन मैंने किया जिनमें से कुल ४२ हस्तलिखित ग्रन्थों से मीरां के पदों का सकलन किया गया। मैंने संस्थान के जितने ग्रन्थों मे सामग्री ली उनके ग्रन्थांक निम्नलिखित हैं।

१०६, १३०, १३१, १४५, १८८, २०६, २८८ २८६ ५६४, ६१७, १०५७, १०६७, १६७६, २८८४, २८६७, ४६७०, ४६७६, ४८५४, ६२६६, ६६६५, ६८४६, ७१४२, ७१४३, ७१७३, ७१७५, ७१८७, ७१८६, ७१६१, ७१६७, ७१६६, ७५७३, ७६३६, ७६६४, ७६६५ ८२५४, ८२६०, ८२६१, ८३६६, आदि।

इस तरह उपरोक्त ४२ हस्तलिखित ग्रथो से मीरा के कुल पद संकलित किए गए, जिनमें अधिकाश चूकि पूर्व प्रकाशित संग्रहों से पूर्णतया मिलते थे अत· इस सग्रह में स्थान न पा सके।

उपरोक्त कुछ हस्तलिखित ग्रंथो का पूर्ण व्यौरा—

| क्रम स० | ग्रथ का नाम | कर्ता | विषय | भाषा | लिपि सं० | पत्र सं० | माप विशेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६६७ | मीरा पद संग्रह | — | भक्ति | राज० | १७ वी. | ४ | १२"×६" |
| २८८४ | मीरा के पद | — | सतसाहित्य | " | — | २८ | ६२/१"×४१/२" |
| २८६७ | मीरां के पद (स्फुट सग्रह) | — | प्रार्थना भजन | राज संस्कृ० | — | ६४ | ३१/२"×२३/४" |
| ४६७० | मीरां-पद | मीरा | काव्य | राज० | १८२६ | २ | ७"×६.५" |
| ४८५४ | मीरा के हरजस | ,, | भजन | " | — | ४ | ५"×४.८" |
| ६२६६ | सत पदावली संग्रह | — | सतसाहित्य | व्रज राज. | — | २१० | ८"×५" |
| ६६६५ | मीरा के पद | ,, | कृष्णभक्ति | राज० | — | १ | ५.५"×३.८" |
| ६८४६ | मीरां के पद | मीरा बाई | भक्ति पद | ,, | १६ वीं | ५ | ११.७"×५" |
| ७१४२ | मीरां आदि सतो के स्फुटपद | — | सत्सग | ,, | — | १० | २५"×१२.५" |
| ७१७३ | ,, ,, ,, | — | ,, | ,, | — | ८१ | ,, ,, |
| ७१७५-३ | स्फुट पद (मीरां कबीर आदि) | | ,, | ,, | १६२८ | ६ | १७.५"×११.३" |
| ७१८७-६ | ,, ,, (मीरां-संतदास आदि) | | हरजस | ,, | १८३४ | ३ | १८.५"×११.३" |
| ७१८६ | ,, ,, (मीरां, सूर आदि) | | सत साहित्य | ,, | — | ४२ | १७.५"×१२.५" |

आदि ।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, लालगढ़ पेलैस बीकानेर—

बीकानेर के लालगढ़ पेलैस स्थित, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, एक अत्यत महत्वपूर्ण सस्था है। जहां राजस्थानी साहित्य संस्कृत साहित्य, ज्योतिष तथा इतिहास आयुर्वेद आदि के अत्यत महत्वपूर्ण-हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित हैं । मुझे मीरां के पदों वाले भी कुछ महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रथ यहा देखने को मिले। इस सस्थान के कुल ८ हस्तलिखित ग्रथो से मैंने कुल ११७ मीरा के पद सगृहीत किए, जिनमे कुछ पद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहा से प्राप्त सभी पदों की अपनी-विशेषता है।

यहा के जिन हस्तलिखित ग्रथों से मैंने सामग्री ली है उनके ग्रंथाङ्क निम्न हैं—
११२. ११३. १७०. १७२. १७७. १६०, २०६, २२३. आदि ।

यहां से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों का पूरा व्यौरा निम्न प्रकार है—

हिन्दी ग्रंथों की सूची—

| अनुक्रमाङ्क | सकलित पद स० | विशेपांक | पत्रसंख्या | विवरण | सवत् आदि |
|---|---|---|---|---|---|
| १७० | (४८) | १७० | १८ | मीरां आदि | फुटकर कवित्त |
| १७२ | (६ पद) | १७२ | (३-३२) | ,, | स० १६४६ |
| १७७ | (२ पद) | १७७ | ४६ | ,, | ,, |
| १६० | (११ पद) | १६० | १३ (३-१५) | ,, | ,, |
| २०६ | (५ पद) | २०६ | २२६ | ,, | ,, |
| २२३ | (२ पद) | २२३ | ८६ | ,, | ,, |
| राजस्थानी ग्रंथों की सूची— | | | | | |
| १२ | (१७ पद) | ११२ | ६२ | हरजस(मीरां के पद) | सं० १६४७ |
| १३ | (३६ पद) | ११३ | २५० | ( ,, ,, ,, ) | सं० १६६१ |

कुल पद (इस पदावली हेतु ) १२७

## भारतीय विद्यामंदिर, बीकानेर—

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के संग्रह में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें से एक हस्तलिखित ग्रंथ जिसका ग्रंथाङ्क दिया हुआ नहीं था, बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस ग्रंथ से मैंने ४३ पद सकलित किए। इनमें से २१ पद पूर्व प्रकाशित पदों से कुछ साम्य रखने वाले थे शेष सभी नवीन कहे जा सकते हैं। इस का लिपि समय दिया हुआ नहीं है। किन्तु १८ वीं शताब्दी का यह गुटका लगता हैं और कोई मीरां-सम्बन्धी हस्तलिखित ग्रंथ यहां देखने में नहीं आया।

## संत साहित्य संगम, बीकानेर—

रामस्नेही सम्प्रदाय द्वारा व्यवस्थित किया जाने वाला यह साहित्य संगम, अभी अपनी शैशवावस्था में है। यहां अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जिनमें संत साहित्य से सम्बंधित्त सामग्री भरी पड़ी है। इस संस्थान द्वारा अनेक हस्तलिखित ग्रंथों को संगृहीत तो किया गया है किन्तु अभी तक उनके ग्रंथाङ्क नहीं लग सके हैं तथा उनकी सूची भी बननी शेष है। इस संस्था के पीछे रामस्नेही संत श्री भगवद्दासजी शास्त्री

की लगन, बुद्धि और उत्साह है, जिससे आशा की जा सकती है कि यह संगम निकट भविष्य में ही सत साहित्य को बहुत कुछ दे सकेगा।

इस संस्थान के कुछ हस्तलिखित ग्रंथों से (जिनके ग्रथाङ्क लगे हुए न होने के कारण नहीं दिये जा सके हैं। मैंने ३६ पद संकलित किए। यहां से प्राप्त अनेक पद महत्वपूर्ण हैं।

सम्पादन-व्यवस्था-

प्रस्तुत पदावली को मैंने व्यवस्थित तथा विज्ञानसम्मत बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। पदावली के समस्त पदों को अकारादि—क्रम से व्यवस्थित कर, पाठकों के समक्ष रखा है। सयुक्ताक्षरों से प्रारम्भ होने वाले पदों को अक्षर-विशेष के अन्त में स्थान दिया है।

मैंने अपनी ओर से इस पदावली में अत्यन्त अल्प संशोधन, परिवर्तन अथवा संवर्द्धन किया है। मेरी यह मान्यता रही है कि प्रस्तुत पदों को अपनी समस्त कमियों के साथ मूल रूप में ही विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत कर दिया जाय तथा अपनी ओर से किंचित् मात्र भी अनावश्यक संशोधन मूलपाठ में न किया जाय किन्तु पदों की मात्रापूर्ति अथवा लय को ठीक करने अथवा लिपिकार के दोषों को दूर करने के लिए अनुस्वार और ह्रस्व—दीर्घ—सम्बन्धी कुछ सुधार अवश्य करने पड़े हैं। साथ ही सम्पादक के कर्तव्य-निर्वाह—हेतु तथा इस पदावली को केवल सकलन-मात्र बनने से बचाने के लिए भी जो परिवर्तन आवश्यक समझे गए, मुझे करने पड़े है। इनके अतिरिक्त मैंने और कोई विशेष हेरफेर प्रस्तुत पदों में नहीं किया है।

जिन पदों के साथ रागरागिनियां दी हुई थीं उन्हें उसी रूप में पाठकों के समक्ष रख दिया है और जिन पदों में रागरागनियों का अभाव था उन्हें भी उसी रूप में रखा गया है जिससे कि उनके स्वरूप में कोई आरोपण दिखाई न दे। किन्तु इस मान्यता के निर्वाह में उस समय अवश्य विघ्न पड़ा है जबकि राग-रागिनियों के पद इस पदावली मे सम्मिलित किए गए।

मीरां के रागरागिनियों से युक्त ५० पद मुझे राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के हस्तलिखित ग्रन्थ (ग्रन्थांक २५५३६) से प्राप्त हुए थे। उनमें से कुछ पदों की तो रागरागनियां दी हुई हैं और शेष में केवल राग⋯—

लिख कर छोड़ दिया गया है। यहां मैंने यह प्रयास अवश्य किया है कि इन सभी पदों की रागरागिनियां लगवा दी जायें किन्तु ऐसा करते समय भी पदों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को अक्षुण्ण बनाये रखने का पूर्ण प्रयास किया गया है। रागरागनी वाले पद जो कि * से चिह्नित है, में रागरागनियां सम्पादक ने श्री बद्रीदासजी पुरोहित (गुणियां) से लगवाई है।

**पाद-टिप्पणी (फुटनोट)-व्यवस्था-**

प्रस्तुत पदावली के मूलपाठ को अधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से मैंने इस संग्रह में 'फुटनोट' की व्यवस्था रखी है। प्रत्येक पद के नीचे सम्पादक-पाठ, शुद्ध पाठ, शब्दार्थ और किन्हीं किन्हीं पदों के साथ (जहां आवश्यक समझा गया है) टिप्पणियां भी दे दी गई हैं, किन्तु व्यवस्था की दृष्टि से प्रत्येक पद के नीचे केवल सम्पादक-पाठ ही दिया गया है। शेष शुद्ध पाठ, शब्दार्थ और टिप्पणियां परिशिष्ट में रखी गई हैं। इसके साथ ही प्रत्येक पद के नीचे ग्रन्थांक और कहीं-कहीं पत्रांक तक भी दे दिये हैं।

सम्पादकीय पाठ रखने का कारण मेरी भाषागत मान्यता ही है। मीरां के पदों की मूल भाषा तत्कालीन राजस्थानी है तथा अन्य भाषाओं में जो मीरांबाई के पद मिलते हैं वे सभी राजस्थानी भाषा के मूल पदों के रूपांतर, पाठांतर अथवा प्रतिलिपि हैं। अतः राजस्थानी भाषा के मूल शब्द ही इन पदों की आत्मा हैं। इस कारण इन पदों में जहां-जहां मुझे लगा कि राजस्थानी शब्द मूल रूप में नहीं हैं (विकृत अथवा रूपांतरित है), मैंने उसे सम्पादक-पाठ में शुद्ध राजस्थानी शब्द में परिवर्तित कर दिया है। जैसे ल को ळ में, चरन को चरण में आदि-आदि। साथ ही जहां जिस भाषा-विशेष का शब्द विकृत मिला, उसे भी उस भाषा-विशेष के मूल शब्द में परिवर्तित करने का प्रयास किया गया है। सम्पादकीय पाठ के द्वारा शब्दों के विकृत स्वरूप को सुधारने का प्रयास भी किया गया है।

इन पदों के संकलनार्थ मैंने जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर के कुल २३६ हस्तलिखित ग्रन्थों को देखा। इन स्थानों की अनेक सरकारी और गैर सरकारी (साहित्यिक संस्थाओं)के समस्त हस्तलिखित ग्रन्थों में से कुल हस्तलिखित ग्रन्थ ऐसे थे जिनसे मुझे मीरां के पद (भजन अथवा हरजस)-विषयक सामग्री प्राप्त हुई।

वैसे तो सभी संस्थाओं के पास अपने हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचिपत्र (सूची रजिस्टर) थे, कुछ सस्थाओं की तो ग्रन्थ-सूचियां प्रकाशित भी हो चुकी हैं ( जैसे अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर तथा राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर आदि) किन्तु सन्त-साहित्य मडल, बीकानेर के ग्रन्थों की न तो सूचियां ही उपलब्ध हुईं और न सूची रजिस्टर ही। अतः सत-साहित्य-मडल, बीकानेर से प्राप्त समस्त पदों के ग्रन्थाक नहीं दिये जा सके हैं। मैंने समस्त पदों के ग्रन्थांक, उस संस्था-विशेष की 'सूची के रजिस्टर' के अनुसार ही दिये हैं।

इन सभी स्थानों के हस्तलिखित ग्रन्थों में प्राप्त कुल हस्तलिखित ग्रन्थों से मैंने कुल ११६ पद(भजन अथवा हरजस)सकलित किए। इन समस्त पदों को, उस ग्रन्थ विशेष के पूर्ण विवरण-सहित मैंने बडी सावधानी से अलग लिपिबद्ध कर लिया। इस तरह अलग-अलग स्थानों की, भिन्न-भिन्न संस्थाओं के भिन्न-भिन्न हस्तलिखित ग्रन्थों के पदो का सकलन किया गया। जब सभी स्थानों के हस्तलिखित ग्रन्थों से मीरा के सम्पूर्ण पदों को लिपिबद्ध कर लिया, तब सभी पदों की संस्थान-विशेष के आधार पर अकारादिक्रम से सूचिया तैयार कीं। फिर एक स्थान-विशेष की, समस्त संस्थाओं की सूचियों से, एक (स्थान-विशेष की)पूर्ण सूची तैयार की। इस तरह जोधपुर, बीकानेर तथा जयपुर, इन तीन स्थानों की तीन सूचियां बनीं। पुन इन तीन सूचियों के आधार पर, एक मुख्य सूची तैयार की। ये सभी सूचियां अकारादि-क्रम से तैयार की गई थीं। इस प्रकार जोधपुर, बीकानेर और जयपुर के हस्तलिखित ग्रन्थों से प्राप्त, मीरां के सभी पदों की अकारादि-क्रम से एक सूची बन गई, जो मुख्य सूची थी।

तत्पश्चात् अद्यावधि प्रकाशित मीरां के सभी सग्रहों की अकारादि-क्रम से सूचिया बनाईं। इनमें से कुछ सकलित ग्रन्थों की तो अकारादिक्रम की सूचिया,सग्रह विशेष मे ही उपलब्ध हो गई तथा शेष संग्रहों की सूचियों को तैयार किया गया। जब पूर्व प्रकाशित मीरां के सभी सग्रहो की सभी सूचियां बन गईं तब स्फुट रूप से, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य पुस्तकों में प्रकाशित मीरा के समस्त पदों की अकारादि क्रम से सूचियां तैयार कीं। इस तरह मीरां के अब तक प्रकाशित सम्पूर्ण पदो की अकारादि-क्रम से समस्त सूचियां तैयार कर ली गई

जब मीरां के पूर्व प्रकाशित पदों की सूचियां बन गई तब इन्हें हस्तलिखित ग्रंथों की मुख्य सूची से मिलाया गया। जो पद पूर्व प्रकाशित पदों से मिलते गए, उन्हें अलग छांट लिया गया और न मिलने वाले पदों को अलग। पुनः पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों की सूचियों से न मिलने वाले हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची के पदों को, पूर्व प्रकाशित संग्रह-सूचियों से मिलाया गया जिससे कि भूलवश बचे हुए पद भी पुनः छांटे जा सके। इस बार भी जो पद नहीं मिले उन्हें अन्तिम बार पुनः इन सूचियों से मिलाया। इस बार पूर्व प्रकाशित संग्रहो की सूचियों से न मिलने वाले पदों को, उन ग्रंथों के सम्पूर्ण पदों से मिलाया गया। तत्पश्चात् इन पदों को प्रस्तुत पदावली के मूलपाठ में अप्रकाशित पदों के रूप में प्रस्तुत कया गया।

मीरांबाई के अद्यावधि ५१ से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट रूप से प्रकाशित मीरां के पदों की सख्या भी कम नहीं है। अतः इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कार्य कितना श्रमसाध्य था।

पदों को इस प्रकार छांटते समय मैंने अनुभव किया कि कुछ पदों की प्रथम पंक्तियों का थोड़ा रूप-परिवर्तन होते ही प्रथम पंक्ति के अकारादिक्रम में अन्तर आ जाता है। चूंकि प्रथम पंक्ति के प्रथम अक्षर से ही अकारादिक्रम की सूचियां तैयार की जाती हैं, अत. इस थोड़े से रूप-परिवर्तन के कारण उस पक्ति का क्रम बदल जाता है और पद का अकारादिक्रम बिगड़ जाता है, जिससे अभीष्ट पद उस स्थान पर प्राप्त नही होता, जहां उसे हस्तलिखित ग्रन्थों की अकारादिक्रम की सूचियों के अनुसार होना चाहिये। इस तरह एक वर्ण अथवा अक्षर का अन्तर पड़ते ही पूरे पद को खोजना कठिन हो जाता है। इसके लिए एक ही पद की प्रथम पंक्ति में प्राप्त सभी शब्दों को, पद की प्रथम पंक्ति का, प्रथम अक्षर मान कर, पद की खोज की गई। इस तरह चार-चार, पांच-पांच शब्दों को प्रथम पंक्ति का प्रथम अक्षर मान कर खोज करनी पड़ी। इस कार्य में श्रम और समय दोनों ही अधिक लगे।

इतना करने के पश्चात् मीरां के हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त, पदों की एक ऐसी सूची बन सकी, जिसे सम्प्रति अप्रकाशित पदों की पूर्ण सूची कहा जा सकता है। यद्यपि मैं ऐसा कोई दावा तो नही कर सकता कि पूर्वप्रकाशित मीरां

का कोई भी पद इस पदावली के मूलपाठ में न आया होगा, किन्तु मैंने अपनी ओर से पूर्ण सतर्कता वरती है कि अनावश्यक रूप से पदों की आवृत्ति न हो।

रागरागिनियों के प्रस्तुतीकरण के समय भी पूरी सावधानी वरती गई है कि अनावश्यक पदों की पुनरावृत्ति न हो, किन्तु ऐसे पदों को प्रस्तुत करते समय जो कि राग-रागिनियों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपर्ण ज्ञात हुए, इस नियम मे । दी गई है।

मूलपाठ के पश्चात् दिये गए पदों को, पूर्वप्रकाशित मुख्य ग्रंथों के पदों से मिला कर यह बताने का प्रयास भी किया गया है कि किस पद का कितना अंश पूर्वप्रकाशित, किस सग्रह के किस पद से, किस पृष्ठ पर, कितना मिलता है और कितना नहीं।

मूल पाठ–

मीरा के पद मुख्य रूप से दो परम्पराओं में प्राप्त होते हैं–
प्रथम है (१) मौखिक अथवा लौकिक परम्परा और
द्वितीय है–(२) लिखित परम्परा।

प्रस्तुत सग्रह में मीरां के लिखित परम्परा से प्राप्त पदों को ही स्थान दिया गया है। इस पदावलीका प्रस्तुतीकरण मैंने अपने कुछ सिद्धांतों के आधार पर

पदों की मौखिक अथवा लौकिक परम्परा से लिखित-परम्परा कहीं अधिक वश्वसनीय और प्रामाणिक होती है। इसी कारण मैंने मुख्यतः हस्तलिखित ग्रंथ से प्राप्त मीरां वाई के पदो को ही इस पदावली में स्थान दिया है। हां, पिलानी से प्राप्त मीरां के केवल- ६ हरजसों जो कि लौकिक अथवा मौखिक परम्परा के हैं, इस सग्रह में अवश्य स्थान पा गए हैं। इन हरजसों को प्रस्तुत पदावली में स्थान देने का कारण, इन हरजसों को कुछ ऐसी विशेषताएँ है जो कि प्राय लिखित परम्परा के पदों या हरजसों में प्राप्त होती हैं।

मुख्य रूप से मैंने राजस्थानी भाषा विशेष कर मारवाडी मे प्राप्त पदों (भजनों, हरजसों) को ही इस संग्रह में स्थान दिया है। मीरां के पदों के अधुनावधि जितने भी संग्रह प्रकाशित हुए हैं, उनमे से अधिकांश में मीरा की भाषा और

स्थान-विषयक चर्चा अवश्य हुई, है किन्तु उसका पूर्णतया निर्वाह उन संकलनों में नही हो पाया है। मीरां की अपनी भाषा राजस्थानी थी और उसमें भी मारवाड़ और मेड़ता की तत्कालीन लोक-प्रचलित-भाषा होने के नाते अपना विशेष महत्व रखती है। यही भाषा मीरा की अपनी भाषा है अर्थात् राजस्थानी भाषा की मारवाड़ी (विशेष रूप से मेड़ता क्षेत्रकी)बोली ही और उस पर कुछ मेड़ता की बोली के प्रभाव से युक्त भाषा ही,मीरां की भाषा कही जा सकती है। यद्यपि उसमें ब्रज और गुजराती का भी प्रभाव द्रष्टव्य है। अतः मेरी दृष्टि में मीरां के वे ही पद अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होने चाहिएँ जो राजस्थानी में हैं।

मीरांबाई के उन्हीं पदों को मैं प्रामाणिकता अथवा विश्वसनीयता के अधिक समीप समझता हूँ जो मीरांबाई के जीवन से सम्बन्धित स्थानो में प्राप्त हैं। राजस्थान मीरां की जन्मस्थली है और उसमें भी मेड़ता और जोधपुर का विशेष महत्व है। राजस्थान में मेड़ता और जोधपुर के साथ बीकानेर, चित्तौड़, उदयपुर और जयपुर, मीरा के पदों के प्राप्ति-स्थानों में अपना विशेष महत्व रखते हैं। इसी कारण मैंने यह निश्चय किया था कि सम्पूर्ण राजस्थान के हस्तलिखित ग्रंथों से प्राप्त मीरां के सभी पदों का संकलन-सम्पादन किया जाय। इसी निश्चय के परिणामस्वरूप प्रस्तुत पदो का संकलन-सम्पादन हुआ है। अब तक राजस्थान के (मीरां से सबंधित स्थानों की प्राथमिकता के आधार पर) प्रमुख शहरों तथा जोधपुर बीकानेर, तथा जयपुर के हस्तलिखित ग्रंथों से मीरां के पदों को संकलित कर लिया गया है, किन्तु इनमे भी 'पोथीखाना' जयपुर और 'पुस्तक प्रकाश' जोधपुर की सामग्री सम्मिलित नहीं हो सकी है। इस सामग्री की पूर्ण प्राप्ति होते ही उसे भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की पूर्ण चेष्टा की जायेगी। इसके साथ ही उदयपुर, चित्तौड़, धोली बावड़ी और अलवर-भरतपुर की सामग्री का भी संकलन किया जा रहा है, जिससे कि सम्पूर्ण राजस्थान की मीरां-विषयक (हस्तलिखित ग्रंथों मे प्राप्त) सामग्री विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत की जा सके।

तत्पश्चात् राजस्थान के उपरोक्त स्थानों से ही, मीरा की मौखिक परम्परा अथवा लौकिक परम्परा से प्राप्त सामग्री को प्रस्तुत करने की योजना है, जिससे कि सम्पूर्ण राजस्थान की, मीरां-विषयक सम्पूर्ण (लिखित तथा मौखिक दोनों प्रकार की) सामग्री पाठकों के समक्ष आ सके।

इस तरह समस्त राजस्थान की मीरां विषयक सम्पूर्ण सामग्री सामने आने

पर, मीरा की पूर्ण 'प्रामाणिक पदावली' के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया जायेगा।

मीरां के पदों के संकलन का कार्य तभी पूर्ण कहा कहा जा सकेगा जब कि, भारत के अन्य राज्यों से प्राप्त मीरां के लिखित तथा मौखिक परम्परा के पदों के साथ ही, विदेशों में उपलब्ध, मीरां के लिखित परम्परा के पदों को भी प्रकाशित किया जाय। लेखक इस सामग्री को भी जुटाने में प्रयत्नशील है। समव है, इस कार्य में कुछ समय और लग जाय, किन्तु इस सामग्री को प्रकाशित करने के लिए, लेखक पूर्ण प्रयास करेगा। इतना होने पर श्री मीराबाई की पूर्ण पदावली कों प्रस्तुतीकरण क ।जायेगा।

लेखक इस बात के लिए भी प्रयत्नशील है कि मीरां के सम्प्रति प्रकाशित सभी सग्रहों की एक पूर्ण सूची तैयार की जाय जो मीरां के अब तक प्रकाशित पद का 'कैटलाग' साबित हो सके।

किसी स्थान-विशेष से सम्बंधित मीरां के पदों को छाटते समय मैंने यह पाया कि ऐसे अनेक हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो लिखे तो किसी दूसरे स्थान पर गए हैं, किन्तु अभी सुरक्षित किसी अन्य स्थान पर हैं। इस तरह वे मूल स्थान से अन्यत्र चले गए हैं, किन्तु इस स्थानान्तरण से उनमें कोई अंतर नहीं आया है। इसीलिए यद्यपि मेड़ता से प्राप्त किसी हस्तलिखित ग्र थ से प्रस्तुत पदावली का कोई पद नहीं लिया गया है, किन्तु जोधपुर और बीकानेर से प्राप्त अनेक हस्तलिखित ग्र थों के मेड़ता में लिखित होने का उल्लेख है, अतः उन्हें मेडता से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों में माना गया है।

मीरांबाई के पदों में एक भाव-साम्य मिलता है। इस आधार को ध्यान में रख कर भी, प्रस्तुत पदावली का सकलन हुआ है। एकसा भावसाम्य रखने वाले पदों को यहां विशेष महत्त्व दिया गया है। जहाँ पदों के भावों में गितरोध लगा, उसे प्रक्षिप्त अ श समझ कर, अलग छांटने का प्रयास भी किया गया है। इस भावस म्य पर विचार करते समय,मीरां के पदों में कृष्ण के प्रति पाये जाने वाले माधुर्यभाव, वसी और राधा के प्रति पाये जाने वाले-सौतिया-भाव, साधु के प्रति भक्तिभाव, उद्धव के प्रति सम्मानभाव आदि पर भी विचार किया गया है। यद्यपि भाव-विशेषता वाले पदों को एक स्थान पर रखने का भी विचार था किन्तु अकारादिक्रम अपनाने के कारण ऐसा नहीं किया जा सका।

मीरां का जीवनवृत्त और काव्य, दोनों ही जब अद्यावधि विवादास्पद हैं, तब हस्तलिखित ग्रंथों में प्राप्त मीरां के-पदों से वर्णित स्थानों और घटनाओं का एक विशेष महत्त्व है। चूंकि ऐसे पदों के आधार पर मीरां के जीवनवृत्त और काव्य पर प्रकाश डाला जाना चाहिए जिनका कि इतिहास अनुमोदत कर देता है, अतः इस विशेषता को भी ध्यान में रख कर इस पदावली को सकलित किया गया है।

मीरां मूलरूप में भक्त थी। अपने अलौकिक सांवरिया प्रियतम गिरधर नागर के प्रति उमड़ती अनुभूति को, मीरां ने जिन शब्दों में अभिव्यक्ति दी है, उनमें गेयता की प्रधानता होनी चाहिए। यद्यपि इस पदावली के सभी पद लिखित परम्परा के हैं, किन्तु गेयता इनमें अक्षुण्ण है। इन पदों की गेयता मौखिक अथवा लौकिक परम्परा से प्राप्त पदों से भी अधिक सुरक्षित है। इतने प्राचीन और सर्वथा नवीन-पदों के लिपिबद्ध स्वरूप को भी जब राग-रागिनी के अनुसार गाया जाता है, तो वे अपनी गेयता में पूर्ण उतरते हैं। यह इन पदों की सबसे बड़ी विशेषता है।

प्रस्तुत मीरा-बृहत्पदावली भाग २ को हिन्दी-साहित्य को प्रस्तुत करने में अनेक विद्वानों के आलेखों ने मुझे प्रेरणा दी है।[1] साथ ही हिन्दी-जगत में

---

१. (क) "सम्पादन कार्य इतना सरल नहीं। उच्चतम कोटि की ईमानदारी इसकी पहली शर्त है। यह माना कि प्राचीन प्रतियो में विशेषकर जब छपाई का साधन नहीं था, ग्रंथ हस्तलिखित रूपो मे ही प्राप्त होते थे, अक्षर सर्वथा सुन्दर और स्पष्ट नहीं मिलते, फिर सम्पादक यदि शुद्धाशुद्ध के अपने निजी ज्ञान का सहारा न ले तो क्या करे ? किन्तु इस ओर भी श्रेयस्कर नीति यह होगी कि सम्पादक को जो पाठ जिस रूप मे मिले हो, मूल आवृत्ति मे उन्हे वह ज्यों का त्यो रख दे और अपने सुझावों को टिप्पणी के रूप में दे दे। इसका फल यह होगा कि आगे काम करने वालो को सच्चा प्रकाश मिलेगा और शुद्धाशुद्ध के निर्णय मे वह नवप्राप्त सामग्री का अधिक विवेकपूर्ण उपयोग कर सकेगा। अपने पूर्व के सम्पादको द्वारा दी गई टिप्पणियों का भी वह सच्चा समादर कर सकेगा और जहां तक सम्भव होगा उससे पथ-प्रदर्शन भी प्राप्त करेगा।"

—ललितप्रसाद सुकुल-मीरा स्मृति ग्रंथ-पृ० (न)

हस्तलिखित ग्रथों के आधार पर तैयार की गई मीरा पदावली के अभाव के विभिन्न संकेतों ने मुझे इस कार्य की ओर प्रेरित किया ।[1] प्रस्तुत पदावली को पाठकों के समक्ष रखते समय मैंने अनेक विद्वानो की आशाओं और आकाक्षाओं का भी पूर्ण ध्यान रखा है ।

---

(ख) "अभी तक पद-सग्रह की हस्तलिखित प्रतियों को खोज कर उनमे कौन से पद किस सवत् की लिखी हुई प्रति मे मिलते हैं व उसका पाठ क्या है, इस तरह का वैज्ञानिक अनुसधान और सपादन नहीं हुआ है । इधर-उधर से जिसको जितने पद मिले सग्रह करके छपवा दिये और अपनी मति के अनुसार उन पदो का पाठ दे दिया ।"—हिन्दुस्तानी (त्रैमासिक) भाग १६ अ क ४ अक्टू-दिस. १६५८ पृ. ६८.

१. (क) "भारत की भक्त कवयित्रियो मे मीरांबाई की सर्वाधिक प्रसिद्धि है । उनके पदो के अनेक सग्रह प्रकाशित हो चुके हैं पर उनके संग्रह एव सम्पादन का आधार क्या है, यह सम्पादको और प्रकाशकों ने अपने ग्रंथों मे स्पष्ट नहीं किया है । अधिकांश पद-संग्रह लोक-मुख पर प्रचलित भजनों का है पर कहा से और किन व्यक्तियो से ये सगृहीत किए गए और इनके गाने वालों की उम्र क्या रही है, इत्यादि बातो पर प्रभाव नहीं डाला । हस्तलिखित प्रतियो से भी जिन पदों का सग्रह किया गया वे प्रतियां भी कब की, किससे लिखी हुई और कौन से ग्रथालय की है । इसका स्पष्टीकरण भी प्राय. नहीं किया गया है । राजस्थान, गुजरात और उत्तर प्रदेश से ही मीरां के पद-संग्रह अधिक निकले हैं पर उन पर की प्रामाणिकता के विषय मे निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता । यह तो सभी जानते हैं कि मीरा के नाम से प्राप्त व प्रचलित प्रत्येक पद सभी मीरां के रचित नहीं हैं पर उनमे बहुत से पद अन्य कवियो ने मीरां के नाम से बना कर प्रसिद्ध कर दिये हैं । मीरां ने कितने व कौन से पद बनाये यह नहीं कहा जा सकता । अब आवश्यकता है मीरां के पदो के वैज्ञानिक सम्पादन की ।"

अगरचन्द नाहटा-शोध पत्रिका, वर्ष १६, अक ३-४, जुलाई-अक्टूबर १६६५ ।

(ख) "वस्तुतः मीरा के प्रामाणिक पदो के आधार पर ही तथ्यातथ्य का निर्धारण किया जा सकता है । अत पाठालोचन की अभिनव पद्धति पर मीरां के प्रामाणिक पदो का सम्पादन एव प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है ।"

—डॉ० कन्हैयालाल सहल-मरुभारती अक्टूबर १६६४ ।

(ग) "मीरा के पदों के सम्पादन की आवश्यकता है । पदों का वैज्ञानिक वर्गीकरण भी नहीं है ।"

—डॉ० रामकुमार वर्मा-हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ५८८ ।

# मीराँबाई के पदों में 'जोगी'

मीराँबाई ने अपने अनेक पदो मे 'जोगी' शब्द का उल्लेख किया है। इस कारण यह शब्द ( जोगी ) मीराँबाई के साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है। कुछ विद्वानो ने जोगी शब्द से युक्त सभी पदो को अप्रामाणिक मानने का सुझाव दिया है। यद्यपि मीरा के सभी पदो की प्रामाणिकता का निर्णय करना अत्यन्त कठिन है, किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि 'जोगी' शब्द से युक्त सभी पद अप्रामाणिक अथवा प्रक्षिप्त नही है। साथ ही यह भी कटु-सत्य है कि इस शब्द वाले सभी पद पूर्णतया प्रामाणिक भी नही कहे जा सकते। अत· प्रथम आवश्यकता तो यही है कि मीराँ के सभी प्रामाणिक पदो के प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया जाय और तत्पश्चात् मीराँ सम्बन्धी कोई निर्णय ( मीराँ के पदों के आधार पर ) लिया जाय।

इस दृष्टि से लिखित परम्परा से प्राप्त पद ही अधिक विश्वसनीय तथा प्रामाणिक कहे जा सकते है।

अद्यावधि अनेक विद्वानो ने अनेक दृष्टियो से 'जोगी' शब्द पर विचार किया है। उनमे से कुछ विचारणीय है, कुछ त्याज्य है और कुछ उपहासास्पद हैं।

**विभिन्न मत**

एक विद्वान् का कहना है कि मीराँ जिस जोगी का अपने पदो मे वार-वार उल्लेख करती है, जिसके पहनाव आदि का पूरा ब्यौरा देती है और जिसे अपना पति या प्रेमी मानती है तथा जिसके लिए वह रोती है, तडपती है, वह कोई लौकिक जोगी ही हो सकता है। जव वह जोगी मीराँ से दूर चला जाता है तव वह उसके विरह मे प्रमादावस्था को प्राप्त हो जाती है। उपर्युक्त वातो की पुष्टि हेतु, वे मीराँ के निम्नलिखित पद प्रस्तुत करते हैं –

१– जोगिया की सूरत मन में वसी
२– म्हारे घर रमतो ही आई रे तू जोगिया
३– जोगिया से प्रीत किया दुख होई
४– जोगिया री प्रीतडी है दुखडा रो मूल
५– राजेश्वर जोगी अव तेरी मौनज खोल

६– मल्यो जटाधारी, जोगेश्वर बाबो
७– जोगिया जी निसिदिन जोऊ बाट
८– जावा दे रे जावा दे जोगी किसका मीत
९– जोगी मत जा मत जा पाव परू मैं तेरी चेरी हो
१०– जोगिया ने कहियो रे आदेस
११– जोगिया जी छाड़ रह्या परदेस

आदि आदि ।

उपर्युक्त विचारो से मेल खाने वाले कुछ विचार डा० सावित्री सिन्हा ने भी अपनी पुस्तक मे व्यक्त किये हैं ।[1] डा० कृष्णलाल मीराँ के जोगी पर नाथ-पथी जोगी का प्रभाव देखते हैं ।[2] श्रीमती पद्मावती शबनम भी कुछ इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुँची हैं ।[3] प्रो० मुरलीधर श्रीवास्तव भी कुछ ऐसा ही कहना चाहते है ।[4] प्रो० अचल के विचार भी इन सबसे मिलते हुए ही कहे जा सकते

---

१ "मीराँ के आराध्य का दूसरा निर्गुण पथी रूप पूर्णतया लौकिक है । जिस जोगी के प्रेम मे वह व्याकुल है वह एक साधारण जोगी है, जो उसके मन मे प्रेम की अग्नि लगा कर चला गया है ।" आगे वे पुन. लिखती हैं– "मीराँ के नैसर्गिक व्यक्तित्व के साथ भौतिक भावना के सम्बन्ध स्थापन से यद्यपि हमारी निष्ठा तथा विश्वास पर गहरा आघात लगता है, पर उनकी अनुभूतियो के आलम्बन जोगी के रूप की स्पष्ट लौकिकता के प्रति निरपेक्षता, सत्य की उपेक्षा होगी ।"

—मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रिया, पृ० १२६-१२७ ।

२. "मीराँ के योगी-रूप आराध्य पर स्पष्टतः नाथ सम्प्रदाय के योगियों का प्रभाव दिखाई पडता है ।"

—मीराँबाई, पृ० १२९ ।

३. "मीराँ ने अपने आराध्य को बार-बार जोगी नाम से ही सम्बोधित किया है । मीराँ के जोगी की वेशभूषा भी नाथ परम्परानुसार ही है । पदाभिव्यक्तियो के आधार पर यह सुस्पष्ट हो उठता है कि मीराँ के ये आराध्य नाथ परम्परानुसार वेशभूषा से विभूषित नाथ-परम्परानुकूल जोगी-कर्म मे रत हैं ।"

—मीराँ : एक अध्ययन, पृ० ११५-११६ ।

४ "इस गीत मे भी स्पष्ट ही जोगी के प्रति प्रेम निवेदित किया गया है । यह गुरु से अनुरोध कभी नहीं हो सकता । यह तो प्रेमिका का प्रेमी से अनुरोध है ।"

—मीराँ दर्शन, पृ० १०८ ।

है।[१] डा० हीरालाल माहेश्वरी का स्वर भी इन्ही स्वरों से समानता रखने वाला है।[२] एक विदेशी लेखक सर जार्ज मैकमन ने मीराँ को एक वेश्या बताया है।[३]

मैकमन के अभिमत को एक भारतीय विद्वान् ने आक्षेप की चरम सीमा माना है[४], परन्तु यदि देखा जाय तो उपर्युक्त विद्वानो के विचार भी मीराँ नाम पर कुछ कम आक्षेप नही है।

### उपर्युक्त मतों की आलोचना

मेरे (मीराँ के योगी के विषय मे) विचार उपर्युक्त सभी विद्वानो से भिन्न हैं। मेरे शोध के आधार पर मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि मीराँ का किसी भी लौकिक जोगी से प्रेम-सम्बन्ध असभव है। मीराँ का प्रणय निवेदन किसी लौकिक जोगी के लिए न होकर अलौकिक गिरिवरधारी 'जोगेश्वर' यदुवशी महाराज कृष्ण के लिए ही है। मेरी यह स्पष्ट और निश्चित मान्यता है कि मीराँ का जोगी और कोई नही बल्कि स्वय योगीराज कृष्ण ही हैं। मीराँ ने उन्हे ही अपना सर्वस्व माना था। इन्ही अजर अमर अलौकिक 'जोगीराज' के लिए ही उसने अपने लौकिक पति मेवाडाधिराजकुमार भोजराज (सांगावत) तक को विस्मृत कर दिया। यह महान् त्याग, एक साधारण लौकिक जोगी के लिए करना न कभी मीराँ को अभीष्ट था और न ही उसके उपर्युक्त पदों अथवा मीराँ के अन्य पदों से यह भाव ही निकलता है।

---

१. "मीराँ की वेदना के पीछे एक कुचले हुए स्वप्न की, एक प्रेमदग्ध हृदय की विकलता है। उस वेदना में पार्थिव यथार्थ है।" —मीरां स्मृति ग्रन्थ, पृ० १२७।

२. "उपर्युक्त पदो से स्पष्ट है कि मीरा की प्रेम-साधना में किसी न किसी जोगी का सहयोग अवश्य रहा था, और संभवतः यह जोगी तथा वह 'गुरु ज्ञानी' एक ही है जिसकी सूरत को देख कर मीराँ मुग्ध हो गई थी (मिलता जाज्यो रे गुरु ज्ञानी)।" —राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ३२६।

३. "उस शताब्दी मे राजपुताना में मीराँबाई हुई, जो कामलिप्सा तथा शक्ति की वैष्णव उपासिका थी, संसार के आनंदमय प्रेमी गोपीनाथ कृष्ण की कीर्ति की उत्साहपूर्वक् गायिका थी तथा लिंग-योनि के रहस्य की उपदेशिका थी। वे वेश्याओ की गुणग्राहिका समझी जाती थी जो प्रायः यही नाम धारण करती हैं। इस नाम को गाँधीगृह में प्रवेश करने पर मिल स्लेड् को धारण करने की आज्ञा नही दी जानी चाहिए थी।" —सर जार्ज मैकमन, दी अंडर वर्ल्ड ऑफ इंडिया

४. डा० हीरालाल माहेश्वरी, 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पृ० ३२८.

हमे मीरां पर कोई भी निर्णय, उस युग और उसकी परिस्थितियों तथा सभावनाओं के सदर्भ मे ही करना चाहिए।

मीरां के युग और परिस्थितियों के सन्दर्भ में–

मीरां के युग की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति के सन्दर्भ में विचार करने से भी यही ज्ञात होता है कि उस परम्परा-पालन के युग में, मीरा का लौकिक जोगी से प्रणय सम्बन्ध नहीं हो सकता। मीरां का युग, धर्म, श्रद्धा, नैतिकता, सदाचार और सतियों का युग है। वह आन, बान और मर्यादा हेतु, पतगे की तरह मर मिटने वाले अनोखे वीरों का युग है। फिर, मीरां तो अपनी आन, मान और मर्यादा के धनी, दो राजकुलों ( मेवाड़ और मेड़ता ) से सम्बन्धित है। मेवाड और मेडता, दोनों अपनी वीरता, आन-बान, चरित्र, सच्चाई, धर्म-सम्मत आचरण, (सदाचार) और नैतिकता के लिए भारतीय इतिहास में विख्यात हैं। जहा, यहां के रणबांकुरे वीरों ने अपनी आन-बान की रक्षा के लिए कभी प्राणो का मोह नही किया, वहा क्षत्रिय-लाज रखने के लिए यहां की स्त्रियों ने कम जौहर नही किए है। हमे इन सभी परिस्थितियों के सन्दर्भ में विचार कर, मीरा पर कोई निर्णय लेना चाहिए। यह नही हो सकता कि उस युग की, उस कुल की, उन परिस्थितियो की मीरा, किसी लौकिक जोगी से प्रणय करे और 'सरेआम' उस प्रणय की अभिव्यक्ति करती फिरे। मीरां स्वय ने कभी ऐसी दूषित कल्पना तक नही की थी, यह सच है, किन्तु यदि स्वयं मीरां भी ऐसा करना चाहती तो भी वह कभी सभव नही होता। मेडतिया वीरो की धमनियो का रक्त इतना शिथिल नही हो गया था कि वे उस तथा-कथित अथवा आरोपित जोगी से मीरां को स्वतत्रतापूर्वक् प्रणय करने देते, जबकि इतिहास इस बात का साक्षी है कि मीरां के प्रति मेडता के राजवश ने सदा आदर ही दिखाया था।

प्रत्येक वस्तु को विपरीत ढग से सोचना और प्रस्तुत करना सदैव प्रगतिशील चिन्तन नही कहा जा सकता। किसी भी तथ्य के सत्यान्वेषण मे न भावुकता से अभीष्ट सिद्धि मिलती है और न मनमानी शाब्दिक ऊहापोह से ही प्रयोजन सिद्ध होता है। ऐसी विवादग्रस्त स्थिति मे तो अन्तर्बाह्य प्रमाण ही साक्ष्य माने जा सकते है।

वर्त्तमान् युग के मानदण्डो से मीरांबाई का मूल्याकन करने से मीरां के साथ न्याय नही होगा। यह ठीक है कि आज के समाज मे प्रणय-लीला एक

साधारण सी वात हो गई है और वैवाहिक जीवन की पवित्रता मे लोगों को अश्रद्धा होने लगी है, परन्तु मीराँ के युग और तत्कालीन समाज मे ऐसी खुली 'प्रगतिशीलता' के दर्शन नही होते।

## विद्वानों की भूल

वस्तुतः मीराँ के पद स्वय इस वात के प्रमाण है कि मीराँ का वह जोगी कौन था। विभिन्न विद्वानो ने उस जोगी को मीराँ का लौकिक प्रेमी सिद्ध करने के लिये, जिन पदो का आश्रय लिया है, यहा पर उन्ही की समीक्षा प्रस्तुत की जा रही है। उन पदो से स्पष्ट है कि मीराँ का जोगी और कोई नही स्वय 'गिरधर नागर' है और मीराँ उसी की एक गोपिका है।

राजेश्वर जोगी अब तेरी मौनज खोल ॥ ० ॥
पूरब जनम की तेरी मै गोपिका।
बीच माहि पड़ गई झोल ॥ १ ॥
सहस्र गोप्या सग रमता जी मोहन।
कई मैं बजाऊं अब ढोल ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर।
पूरब जनम का कौल ॥ ३ ॥

उपर्युक्त पद मे स्वय कृष्ण ही 'राजेश्वर जोगी' हैं। उन्ही अजर अमर योगेश्वर की मीराँ 'जनम-जनम की गोपिका' है, जिसके 'वीच माहि.. . झोल' पड गया है। वे 'मोहन' श्रीकृष्ण ही हैं जो 'सहस्र गोप्या सग' रमते है। वे 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर' क्या कोई लौकिक जोगी हो सकते है जिनका मीराँ से 'पूरब जनम का कौल' है ?

इसी प्रकार मीराँ अपने अलौकिक 'जोगीया' से कहती है—

जोगिया ते जुगत न जाणी हो।
मै तो आसिक तोरड़ी तोनें दया न आणी हो ॥ ० ॥
पतित पावन तो विडद है (याही) वेद वखानी हो।
मीरा कू द्यो दरस प्रभुजी अव सुख-दानी हो ॥ ५ ॥

प्रस्तुत पद मे भी इस लौकिक जगत् की 'जुगत' न जानने वाला 'जोगिया' भी अलौकिक प्रभु कृष्ण के अतिरिक्त और कौन हो सकता है ? मीराँ 'उसी' अलौकिक जोगिया की 'आसिक' (आशिक़) है, जिसका 'पतित-पावन विड़द है' जिसे

'वेद' तक ने बखाना है। मीरां उसी प्रियतम कृष्ण से 'दरस' देने के लिए कहती है, जो स्वय 'सुखदायी' है।

> जाबा दे जी जाबा दे जोगी किसका मीत ॥ ० ॥
>
> . .. .. ... ..
>
> मैं जाणू या पार निभैगी, छांडि चले अधबीच ॥ ३ ॥
> मीरा के प्रभु गिरधर स्याम मनोहर, प्रेम पियारा मीत ॥ ४ ॥

यह 'जोगी' भी वही ब्रह्म का प्रतिनिधि श्री गिरधर नागर है, जो 'किसका मीत' हो सकता है? मीरां को पूर्वजन्म के 'प्रीत' के कारण, यह विश्वास हो चला था कि यह जोगी उसे भवसागर पार ले चलेगा और इस तरह यह प्रणय 'निभ' जायगा, किन्तु वह तो 'छांडि चले अधबीच'। जोगी के रूप में, 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' ही हैं जिन्हें वह 'स्याम, प्रेम पियारा मीत' सम्बोधित कर, स्मरण करती है। कोई लौकिक जोगी 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर, स्याम मनोहर तथा प्रेम पियारा मीत' कैसे हो सकता है? गिरिवरधारी प्रभु के रूप तो श्रीकृष्ण ही अब तक प्रसिद्ध है।

> जोगीया ने कहीज्यो जी आदेस ॥ ० ॥
> जोगीयो चतुर सुजाण सजनी, ध्यावे सकर सेस ॥ १ ॥
>
> . ... .. . . ....
>
> दासी मीरा राम भजिकै, तन मन कीन्हो पेस ॥ ५ ॥

प्रस्तुत पद के द्वारा मीरां ने अपने जोगी को और स्पष्ट कर दिया है। जिस 'जोगिया' से मीरां 'आदेस' कहने की बात कह रही है वह कोई साधारण जोगी नही है। वह तो 'चतुर सुजाण' है जिसका ध्यान ब्रह्मा 'सकर' (शङ्कर) और 'सेस' (शेष) भी करते हैं। मीरां उसी 'चतुर सुजाण' जोगीया की दासी है और उसी को मीरां ने 'तन मन' 'पेस' (पेश=अर्पित) कर दिया है।

> जोगीया जी छाड रह्यया परदेस ॥ ० ॥
> जबका बिछडया फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ॥ १ ॥
>
> . . .. ..
>
> मीरा के प्रभु राम मिलण कूं, जीवनि जनम अनेक ॥ ४ ॥

'परदेस' मे बस जाने वाले जोगी भी मीराँ के प्रभु गिरधर नागर ही है। वह जोगी कृष्ण ही है जो ब्रह्म के रूप मे आत्मारूपी मीराँ से एक बार बिछड़ने पर 'फेरि न मिलिया' और 'बहोरि न दियो सदेस'। वह जोगी और कोई नही 'मीरा के प्रभु' ही हैं जिनसे 'मिलण कूं, जीवनि जनम अनेक' अर्थात् अनेक जन्म धारण करने को भी मीराँ प्रस्तुत है। 'परदेस' से तात्पर्य यहा किसी लौकिक भूखण्ड से नही है, अपितु वह तो एक दिव्यलोक है, जिसका उल्लेख कबीर, चैतन्य-महाप्रभु, रैदास, दादू आदि अन्य सतो (भक्तो) ने अपनी रचनाओ में किया है। उसी 'परदेस' के वासी सावरिया जोगी को इस लोक मे आने के लिए अनुनय विनय करती हुई मीराँ कहती है—

> जोगीया जी आवो ने या देस।
> नैणज देखूं नाथ मेरो, ध्याइ करूं आदेस ॥ ० ॥
> .... .... ... ... ...
> रावल कुण बिलमाइ राखो, बिरहनि है बेहाल ॥ १ ॥
> वीछड्या कोई भौ भयो (जोगी) ऐ दिन अहला जाय ॥
> एक वेर देह फेरी नगर हमारे आइ ॥ २ ॥
> .... . .... .... ...
> मीरा के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यौ हरि आइ ॥ ३ ॥

उसी अलौकिक तथा 'परदेस' वासी जोगिया नाथ से 'ध्याइ' कर मीराँ 'आदेस' करना चाहती है, उस 'रावल जोगी' को किसी ने 'बिलमाइ' लिया है, जिसके कारण यह मीराँ 'बिरहनि है बेहाल'। उस जोगी से 'बीछड्या कोई भौ भयो' है तथा यह जीवन रूपी 'दिन अहला जाय'। अत. हे जोगेश्वर जोगी 'एक वेर देह फेरी नगर हमारे आइ'। मीराँ का वह जोगी 'मीरा के प्रभु हरि अविनासी' से भिन्न नही है, इसीलिए वह उस जोगीया हरि से कहती है—'दरसण द्यौ हरि आइ'।

> जोगिया मेरे तेरी मनसा वाचा करमणा प्रभु, पूरबी मेरी ॥ ० ॥
> मैं पतिवरता पीव की मोल लयी चेरी।
> तुम बिना कोऊ दूजो देवा सुपनै नाहि हेरी ॥ १ ॥
> .... .... ... .... ....
> एक बिरियां मेरे नागर प्रभु दे जावो फेरि।
> मीरा के प्रभु हरि अविनासी राखो चरण नेरी ॥ ३ ॥

उल्लिखित पद के द्वारा मीराँ यह और बता देना चाहती है कि उसके 'जोगिया' और 'प्रभु' मे कोई अतर नही है। तभी तो वह एक ही पक्ति मे इन दोनो शब्दो के द्वारा अपने स्याम को सम्बोधित करती है। 'जोगिया मेरे' तथा इसी पक्ति मे 'प्रभु पूरवौ मेरी' से यह स्पष्ट है। मीराँ कहती है कि उसने अपने इस 'जोगिया - सावरिया - देव' के अतिरिक्त किसी 'दूजो देवा' को स्वप्न मे भी नही देखा है (सुपने नाहि हेरी)। इसीलिये तो वह 'पतिवरता' है। अत. उसका निवेदन है कि 'जोगिया'– प्रभु 'एक त्रिरिया मेरे नागर ( नगर ) देजावो फेरी'। मीराँ अपने 'अविनासी' जोगीया 'प्रभु' से विनीत स्वर मे बार-बार कहना चाहती है कि 'मीरा के प्रभु हरि अविनासी राखो चरण नेरी'। यह 'अविनासीप्रभु' भी वही अलौकिक जोगी, श्रीकृष्ण है। उस 'जोगिया' की प्रतीक्षा करती-करती, मीराँ जैसे अधीर हो उठी है तभी तो पुन कहती है—

जोगिया रे तू कबहु मिलेगा मोकू आय ॥ ० ॥
तेरे कारण जोग लिया है, घर-घर अलख जगाय ॥ १ ॥
... .. . .. ..
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, मिलकर तपत बुझाय ॥ ३ ॥

पूर्व जन्म के आश्वासन के बाद भी जब वह अलौकिक 'जोगीया' नही आया तब अविश्वास होने लगा और उपालम्भ भरे करुण स्वर मे मीराँ कह उठी 'जोगिया रे तू कबहु मिलेगा मोकू आय'। उस जोगिया कृष्ण से मिलने के लिए वैष्णव-भक्त स्वय जोगिन बन गई है। मीराँ स्पष्ट कर देना चाहती है कि तू कि तू जोगीया बन गया है अत मैंने भी 'तेरे कारण जोग लिया है' और घर-घर अलख 'जगाई' है। इसलिए हे जोगीया बने हुए 'मीरा के प्रभु हरि अविनासी, मिलकर तपत बुझाय'। यदि श्रीकृष्ण जोगेश्वर रूप मे न आते, तो सभव है मीराँ भी 'जोगिन' होकर योग साधना नही करती। 'जोगी' और 'जोगनिया' शब्द उन दिनो लोक प्रचलित भी थे तथा लोक मे भी इन शब्दो का प्रयोग होता था। तत्कालीन लोककथाओं मे ऐसे शब्द मिलते हैं।

माई म्हाने रमइयो दे गयो भेष ॥ ० ॥
हम जाने हरि परम सनेही पूरब जनम को लेप ॥ १ ॥
अग भभूत गले मृगछाला घर-घर जगत अलेप ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अविनासी साईं मिलण की टेक ॥ ३ ॥

मीरां स्वयं स्वीकार करती है कि 'माई म्हाने रमइयो दे गयो भेष'। अर्थात् मीरां का 'जोगिया' भेष उसी के प्रभु का दिया हुआ है। साथ ही वह यह भी कह देती है कि 'इसी परम सनेही' 'हरि' ने 'अंग भभूत गले मृगछाला, धारण कर 'घर घर....अलख' जपना प्रारम्भ कर दिया है। इस कारण मीरां को पुन. कहना पड़ा 'मीरां के प्रभु हरि अविनाशी' हे 'सांई' आपसे ही 'मिलण को टेर' है। मीरां की प्रतीक्षा पूर्ण हुई। उसकी साधना सफल हुई। मीरां के 'जोगिया-प्रीतम=स्याम' स्वयं मिलने आये। इस हर्षातिरेक से मीरां गा उठी —

आंण मिल्यो अनुरागी, जोगियो आण मिल्यो अनुरागी ॥ ०॥
मानो सोच अग नहि अवतो। तिस्ना दुवध्या त्यागी ॥ १ ॥
मोर-मुकट पीताम्बर सोहै। स्याम बरण बडभागी ॥ २ ॥
जनम-जनम को साहिब मेरो। वाही सो लौ लागी ॥ ३ ॥
अपणां पिया संग हिल-मिल खेलूं। अधर सुधारस पागी ॥ ४ ॥
मीरां गिरधर के मन मानी। अब मैं भई सुभागी ॥ ५ ॥

उस 'अनुरागी जोगिया' के 'आंण' मिलते ही मीरां ने 'तिस्ना दुवध्या त्यागी'। मीरां ने अपने 'सांवलिया जोगी' की वस्त्र-सज्जा, आभूषण आदि देकर भी यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके जोगी, जगत्-विख्यात मोर-मुकुटधारी स्वयं स्याम ही हैं दूसरा कोई नहीं। मीरां ने प्रस्तुत पद से यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उसका 'साहिब' भी वही कृष्ण है, जो कभी जोगिया के रूप मे उसके द्वारा स्मरण किया जाता है। यह अनुरागी जोगिया वही है जिसके 'मोर मुकुट पीताम्बर सोहै' तथा जो 'स्याम वरण वड़भागी' है जो 'जनम-जनम को साहिब (है) मेरो' वस्तुतः 'वाही सों लौ लागी'। उसी अनुरागी जोगिया गिरधर नागर के साथ मीरां की अभिलाषा है – 'अपणा पिया संग हिल-मिल खेलूं' इतना ही नहीं वह 'अधर सुधारस पागी' होने की भी महती इच्छा रखती है। मीरां की यह अभिलाषा किसी लौकिक जोगी के लिए किसी तरह संभव नहीं है। इसे ही स्पष्ट करने के लिए संभवत अन्तिम पंक्ति मीरां को कहनी पडी 'मीरां गिरधर के मन मानी' और इसी कारण वह कहती है – 'अब मे भई सुभागी'। लगता है जैसे मीरां को चरम लक्ष्य की प्राप्ति हो गई है। किन्तु मीरां यह नहीं समझ सकी कि उसका यह 'रावलिया जोगी' आया किधर से। तभी तो वह पूछ बैठी –

करणी दशा मे रावल आविया रावलिया जोगी
करणी दशा में रावल जासी नाव लिया तर जासी ।
भजन करया मौज पासी म्हेजी म्हे देखिया अविनासी ॥ ७ ॥

यहा भी वह अलौकिक जोगी ही है जिसे वह 'रावल' अथवा 'रावलिया जोगी' के रूप मे याद करती है । यह वही अलौकिक जोगी ही है जिसका 'नाव लिया ( मीरां ) तर जासी' और इसे देख कर मीरां कहती है—'म्हे देखिया अविनासी' । लौकिक जोगी न तो 'रावल' हो सकता और न ही 'रावलिया जोगी' । कोई भी लौकिक जोगी ऐसा नही हो सकता जिसका नाम लेते ही भवसागर पार किया जा सकता है । लौकिक जोगी अविनासी भी नही हो सकता । यदि लौकिक योगी होता तो उसके आगमन की दिशा को जानना भी असभव नही था, परन्तु जो हमारे भीतर विराजमान रहता है उसका जब साक्षात्कार हो जावे, तो निस्सदेह यह कहना पडता है कि 'यह कहाँ से आ गया ।'

इस विषय में एक बात और है की ब्रह्म का साक्षात्कार मानव के लिये स्थायी नही हो सकता । अत जब साधक भक्त की आतरिक दृष्टि से वह ( ब्रह्म ) हट जाता है, तो वह व्याकुल हो उठता है । सूर की गोपिकाओ की शैली में तब वह उपालम्भ देने लगता है । यह कैसी आँख-मिचौनी ? कैसा इधर-उधर डोलना ? इसी भावना से प्रेरित होकर मीरां पाती है कि 'रावलिया जोगी' उसके पास आ तो गया, किन्तु मौन धारण किए रहा । अत. मीरां को कहना पडा—

धूतारा जोगी एकर सूं हसि बोल ॥ ० ॥
जगत बदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।
अग भभूति गले मृगछाला, तू जन गूढिया खोल ॥ १ ॥
सदन सरोज वदन की सोभा, ऊभी जोऊ कपोल ।
मेली नाद वभूत न बटवो, अजू मुनी मुख खोल ॥ २ ॥
चढती वैस नैण अणियाले, तू घरि-घरि मत डोल ।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चेरी भई विन मोल ॥ ३ ॥

प्रस्तुत पद से मीरां ने जैसे अपने 'जोगिया' की सारी 'गूँढिया' (रहस्य) खोल दी है । यह 'धूतारा जोगी' सिवा 'मनमोहन' के और कोई नही है जिसके बारे में मीरां ढोल बजाकर कुछ नही कहना चाहती, क्योकि वह समझती है जैसे सारे जगत को यह रहस्य ज्ञात है किन्तु पुनः जब उसे सशय होने लगता है तब

वह कह उठती है—'अग भभूति गले मृगछाला', यह क्या रहस्य है--'तू जन गूँढिया खोल'। एक ओर 'सदन सरोज वदन की शोभा' लक्षित है तो दूसरी ओर 'सेली नाद बभूत न दटवो'। यह रहस्य कुछ मतिभ्रमित कर सकता है, अतः हे जोगी 'अजूं' मुनी मुख खोल' और सारा रहस्य बतला दे। हे जोगी तेरी 'चढती वैस' है 'नैरण अणियाले' है। अत. 'तु घर-घर मत डोल'। तू ही तो मीरा के प्रभु हरि अविनासी' है जिसकी मीराँ 'चेरी भई बिन मोल'।

इतने पर भी वह 'जोगी मनमोहन' नही बोला, तब मीराँ को पुन उसी स्वर मे निवेदन करना पड़ा—

घुतारा जोगी एक बेरीया मुख बोल रे ॥ ० ॥
कानन कु डल गल विच सेली अब तेरी मुन खोल रे ॥ १ ॥
रास रच्यो बसीवट जमुना ता दिन कीनो कोल रे ॥ २ ॥
पूरब जनम की मै हूँ गोपिका अब विच पड गयो भोल रे ॥ ३ ॥
जगत बदित तुम करो मोहन अब क्यो वजाऊ ढोल रे ॥ ४ ॥
तेरे कारन सब जग त्यागो अब मोहे कर सो लोल रे ॥ ५ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोल रे ॥ ६ ॥

इस पद के द्वारा मीराँ स्वय जैसे इस जोगिया का भेद खोल रही है। कृष्ण ने जोगी-रूप तो धारण किया किन्तु, उनके स्वय के वस्त्राभूपण और मुख-छवि तथा वदन भव्यता जोगी-रूप के अनुकूल पूर्णतया परिवर्तित नही हुई है। यह रहस्य केवल मीराँ ही जानती है। अत इस रूप को देखते ही वह कह उठी है—'कानन कु डल और गल विच सेली'? कुछ उचित नही बन पडा अत: 'अब तेरी मुन खोल रे' तेरा रहस्य मैंने समझ लिया है। तू वही तो है जिसने 'रास रच्यो बसी तट जमुना' और तू ने 'ता दिन कीनो कोल रे'। तु सम्भवत यह सोचे कि इसे यह रहस्य कैसे ज्ञात हुआ तो अब तुझे स्मरण करा दूं–पूरब जनम की मै हू गोपिका।' जिसके साथ हे जोगीया तूने 'कोल' किया था। यह तो न जाने कैसे 'अब बिच पड गयी झोल रे'। 'तेरे कारन' ही मैने 'सब जग त्यागो' अत अब मोहे 'कर सो लोल रे'। मीराँ ने अपने प्रभु को जैसे जोगीया वेश में भी तुरत पहचान लिया है तभी तो वह कहती है-'मीरा के प्रभु गिरधर नागर चेरी भई बिन मोल रे।'

उपर्युक्त सभी पदो को देखने से ज्ञात होता है कि स्वय श्रीकृष्ण ही इन पदो के 'जोगीया जोगी' हैं। उन्ही 'राजेश्वर' अथवा 'रावलिया जोगी' मे मीराँ ने 'जनम-जनम की प्रीत' लगाई है। उन्ही 'गिरधर नागर चतुर सुजान' की वह 'पूरब जनम की गोपिका' है औ रवे कृष्ण ही हैं जो सहस्त्र गोपियो के सग 'रमते' हैं। उन्होने ही जमुना किनारे रास रचाया था। उन्ही श्रीकृष्ण से मीराँ का जनम-जनम का कौल है, जो अब जोगी बने हुए हैं। कृष्ण का ही 'पतित पावन विड़द' है, जिसका वेद ने वखान किया है। वे ही प्रभु 'गिरधर नागर' मीराँ के 'स्याम मनोहर प्रेम पियारा मीत' हैं।

वह जोगी कोई लौकिक जोगी नही है और वह हो भी नही सकता। श्रीकृष्ण का जो रूप, सौन्दर्य, वस्त्र-परिधान और आभूषण-सज्जा भागवत, पुराणादि ग्रन्थो मे वर्णित है उसी का प्रस्तुत पदो मे पुनराख्यान है।[1]

---

१, नाना युगो में भगवान श्रीकृष्ण का रूप-सौन्दर्य एवं वस्त्र-सज्जा

सत्युग मे–

कृते शुल्कश्चतुर्वाहुर्जटिलो वल्कलाम्वरः।
कृष्णाजिनोपवीताक्षान् विभ्रद्दण्डकमण्डल् ॥ २१ ॥

(सत्युग में भगवान के श्रीविग्रह का रग होता है श्वेत। उनके चार भुजाए और शिर पर जटा होती है तथा वे वल्कल का ही वस्त्र पहनते हैं। काले मृग का चर्म, यज्ञोपवीत, रुद्राक्ष की माला, दण्ड और कमण्डलु धारण करते हैं।) पृ० ७३४

हस सुपर्णो वैकुण्ठो धर्मो योगेश्वरोऽमल.।
ईश्वर. पुरुषोऽव्यक्त परमात्मेति गीयते ॥ २३ ॥

(सत्युग के मनुष्य) (वे लोग हस, सुपर्ण, वैकुण्ठ, धर्म, योगेश्वर, अमल, ईश्वर, पुरुष, अव्यक्त और परमात्मा आदि नामो के द्वारा भगवान की गुण-लीला आदि का गान करते हैं।) पृ० ७३४

द्वापर मे–

द्वापरे भगवाञ्छ्याम पीतवासा निजायुध ।
श्रीवत्सादिभिरङ्कैश्च लक्षणैरुपलक्षित. ॥ २७ ॥

(राजन्! द्वापर मे भगवान के श्रीविग्रह का रग होता है सांवला। वे पीताम्वर तथा शख-चक्र, गदा आदि, अपने आयुध धारण करते हैं। वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का चिन्ह, भृगुलता, कौस्तुभमणि आदि लक्षणों से वे पहचाने जाते हैं।

वैष्णव सम्प्रदाय मे श्री कृष्ण के जिस विरद का गान पुराणादि नाना ग्रन्थो मे हुआ है वही 'बीडद' इस जोगी के है।[1] वे 'चतुर सुजाण' श्रीकृष्ण है लौकिक जोगी नही जिनका 'ब्रह्मा' और 'सेस' ध्यान करते हैं। मीराँ के पदो का 'जोगी' वह प्रभु अविनासी है जिससे 'दरसण' देने के लिए, मीराँ अनुनय विनय करती है। उसी 'सावरिया अथवा सांवलिया' जोगी के लिए मीराँ जोग लेकर 'जोगनिया' बनने को तत्पर है, जिसके सिर पर 'मोर-मुकुट' है, तन पर 'पीताम्बर' शोभित है और जो स्वय स्याम वर्ण है। वह महायोगी है, वह

---

त तदा पुरुष मर्त्या महाराजोपलक्षणम् ।
यजन्ति वेदतन्त्राभ्यां पर जिज्ञासवो नृप ॥ २८ ॥

(राजन् ! उस समय जिज्ञासु मनुष्य महाराजाओ के चिह्न, छत्र, चवर आदि से युक्त परम-पुरुष भगवान की वैदिक और तांत्रिक विधि से आराधना करते हैं।)–पृ०७३४।

कलियुग में–

( १ ) तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः ।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥ २ ॥

(पृ० ३१६ अ० ३२)

(ठीक उसी समय उनके बीचो बीच भगवान श्रीकृष्ण प्रकट हो गए। उनका मुख कमल मद मद मुस्कान से खिला हुआ था। गले मे वनमाला थी, पीताम्बर धारण किये हुए थे। उनका यह रूप क्या था, सबके मनको मथ डालने वाले कामदेव के मन को भी मथने वाला था।

( २ ) त विलोक्यागत प्रेष्ठ प्रीत्युत्फुल्लदृशोऽबला ।
उत्तस्थुर्युगपत् सर्वास्तन्व्य प्राणमिवागतम् ॥ ३ ॥

पृ० ३१६ अ० ३२।

(कोटि कोटि कामो से भी सुन्दर परम मनोहर श्याम सुन्दर को आया देख गोपियो के नेत्र प्रेम और आनन्द मे खिल उठे।

( ३ ) उपगीयमानौ ललित स्त्रीजनैर्बद्धसौहृदैः ।
स्वलङ्कृतानुलिप्ताङ्गौ स्रग्विणौ विरजोऽम्बरौ ॥ २१ ॥

(भगवान श्रीकृष्ण निर्मल पीताम्बर और बलरामजी नीलाम्बर धारण किये हुए थे। दोनो के गले मे फूलो के सुन्दर सुन्दर हार लटक रहे थे तथा शरीर मे अगराग, सुगन्धित चदन लगा हुआ था और सुन्दर सुन्दर आभूषण पहने हुए थे।)

( ४ ) सत चित्रमवला. शृणुतेद
हारहास उरसि स्थिरविद्युत् ।
नन्दसूनुरयमार्तजनाना
नर्मदो यर्हि कूजितवेणु. ॥ ४ ।

बडभागी है। वही मीरा का 'जनम जनम' का साहित्र है। उसी से मीरा की 'लौ लागी' है। वह जोगी कृष्ण ही है जो 'जमना' तट पर राम रचाता है। उसी से मीरा ने 'कौल' किया है। उसी ने मीरा को 'पूरव जनम' मे पुर्नमिलन का वचन किया था, मीराँ ही 'पूरब जनम को गोपिका' है।

---

(५) वर्हिणस्तवक धातु पलाशै-
बद्ध मल्लपरिवर्हविडम्ब. ।
कर्हिचित सवल आलि स गोपै-
र्गाः समाह्वयति यत्र मुकुन्द. ॥ ६ ॥

(६) अनुचरै समनुर्वाणतवीर्य
आदिपुरुष इवाचलभूति. ।
वनचरो गिरि तटेषु चरन्ती
वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि ॥ ८ ॥ पृ० ३४५

(७) दर्शनीय तिलको वनमाला-
द्विव्यगन्ध तुलसीमधुमत्तै ।
अलिकुलैरलघुगीमभीष्ट-
माद्रियन् यर्हि सन्धितवेणु ॥ १० ॥ पृ० ३४५

(८) गोपगोधनवृतो यमुनायाम् ।
नदसुनुरनघे तव वत्सो
नर्मद. प्राणयिनां विजहार ॥ २० ॥ पृ० ४४८

(९) पीतनीलाम्वरधरौ शरदम्वुरुहेक्षणौ ॥ २८ ॥ पृ० ३६४

(१०) किशोरौ श्यामलश्वेतौ श्रीनिकेतौ बृहद्भुजौ ।
सुमुखौ सुन्दर वरौ बालद्विरद विक्रमौ ॥ २३ ॥ पृ० ३६४

(११) उदाररुचिरक्रीडौ स्त्राग्विणौ वनमालिनौ ॥

(१२) नाह तवाङ्घ्रिकमल क्षणाधमपि केशव ॥

(१३) नौमीऽय तेडभ्रवपुषे तडिम्बराय
गुञ्जावतस परि पिच्छलसन्मुखाय ।
वन्यस्त्रजे कवलनेत्र विषाणवेणु
लक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपाङ्गजाय ॥ ११ ॥ पृ० २१४, अ० १४

(१४) यया त्वामारविन्दाक्ष यादृश वा मदात्मकम्— (कमलनयन श्याम सुन्दर)
पृ० ६६६, अ० १४

श्रीमद्भागवत में कृष्ण महात्म्य

क) तीर्थास्पद शिवविरिञ्चिनुत शरणम् ।
(वे तीर्थों को भी बनाने वाले स्वयं परम तीर्थ स्वरूप हैं, शिव, ब्रह्मा आदि बडे बडे देवता उन्हें नमस्कार करते हैं .) पृ० ७३६

## कुछ अन्य अन्त साक्ष्य

उपरोक्त सभी उदाहरण उन पदो के हैं, जिन्हे उन विद्वानो ने प्रस्तुत किया है जो मीराँ के जोगी को लौकिक जोगी मानते हैं। अब कुछ वे पद प्रस्तुत हैं, जिन्हे मैं उदाहरणार्थ पाठको के समक्ष रखना चाहता हूँ।

अपने श्याम के प्रिय सखा, उद्धव को सम्बोधित कर मीराँ कह रही है -

उधव जी म्हानैं ले चालो स्यामरारे देस ।। टेर ।।
कबकी छोडी मथुरा नगरी छोड दियो नदजी को देस ।। १ ।।
कर मे कमडल और मृगछाला करसू मैं आदेस आदेस ।। २ ।।
कथा सिवाडु गल-बिच डारू करु भगवां भेस ।। ३ ।।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर मौ मन वडौ अंदेस ।। ४ ।।

मीराँ अपने 'जोगी' के साथ साथ अपने 'जोगनिया' वनने के रहस्य को भी खोल देती है। उधवजी के साथ अपने 'स्यामरारे देस' जाने के लिए वह 'कर मे कमडल और मृगछाला' पहनकर 'आदेस आदेस' करने के लिए तथा 'कंथा सिवा कर गल बिच डार कर' भगवा भेस धारण करने के लिए भी तैयार है क्योकि उसके 'मन वडौ अदेस' है। यह सब कुछ वह केवल अपने 'गिरधर' नागर को प्राप्त करने, उनके 'देस' जाने के लिए ही कर रही है किसी लौकिक जोगी के लिए नही।

अपने स्याम के विरह में व्याकुल हुई मीराँ पुनः कहती है -

---

(ख) त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित राजलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ अभिवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृग दपितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। ३४ ।।

(भगवन् ! आपके चरण कमलों की महिमा कौन करे ? रामावतार में अपने पिता दशरथजी के वचनो से देवताओ के लिए भी वांछनीय और दुस्त्यज राज्यलक्ष्मी को छोड़ कर आपके चरण कमल वन वन घूमते फिरे। सचमुच आप धर्मनिष्ठता की सीमा हैं। और महापुरुष ! अपनी प्रेयसी सीताजी के चाहने पर जानबूझ कर आपके चरण कमल मायामृग के पीछे दौड़ते रहे। सचमुच आप प्रेम की सीमा हैं। प्रभो ! मैं आपके उन्हीं चरणारविंदों की वंदना करता हू।)

पृ० ७३७, अ० ५

कदि रे मिलैंगो आई रमयौ म्हान कदि (रे) मिलैंगो आई ।

.. .... .... ....

ज्या मिलया आनद घणा होई वीछरिया वैराग ॥

.. ... . . ..

न जानु कदि हरि आईसी म्हारै ओगणगारी रो नाह ॥ ७ ॥

मीराँ ने अपने स्याम, रमैया और 'जोगिया' मे कभी अन्तर नही किया तभी तो वह कभी कहती है— "जोगिया रे तू कबहू मिलैंगो मोकू आय ॥ ० ॥" और कभी 'कदि रे मिलैंगो आई रमयौ म्हान कदि मिलैंगो आई'। उसके लिए 'रमयौ' और 'जोगिया' दोनो एक ही हैं 'ज्या मिलया आनद घणा होई वीछरिया वैराग'। मीराँ समझती है मुझ मे कोई गुण नही देख कर ही संभवत मेरे स्याम मेरे पास नही आना चाहते। तभी तो वह कहती है— 'न जानु कदि हरि आवसी म्हारै औगणगारी रो नाह'।

काई रे कारण अण बोला नाथ मासे मुखडे ॥
क्यु नही बोले नाथ मारो ॥ टेर ॥
पेली प्रीत करी हरी हमसे प्रेम प्रीत को जोलो नाथ ॥ १ ॥

. ... . ...

मैं छु बेटी राजा राव री कुबज्या बराबर कई तोलो ॥ ३ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर हीरदा री गु डी कीउ नी खोलो ॥ ४ ॥

मीराँ के पदो के 'अणबोला नाथ' भी वे स्याम, गिरधर नागर ही हैं जो योगेश्वर बने हुए हैं। इसीलिये एक पद मे मीराँ कहती है 'धूतारा जोगी एक वेरीया मुख बोल रे' तो दूसरे पद मे 'काई रे कारण अण बोला नाथ मासे, मुखडे क्यु नही बोले नाथ मारो'। यही तो वह रहस्य है, जिसे वह पाठक को बार-बार समझाना चाहती है। यदि पाठक अब भी भ्रमित है तो वह पुनः कहती है— यह वही नाथ है जिसने 'पेली प्रीत करी' किन्तु नाथ बनकर नही बल्कि ('हरी हमसे') हरि के रूप मे। अर्थात् नाथ, हरि, रमयौ, जोगी-जोगिया, स्याम, गिरधर नागर आदि सभी शब्द मीराँ ने अपने एक ही प्रियतम श्री कृष्ण के लिये प्रयुक्त किये है। शब्द और सम्बोधन बदल जाते हैं किन्तु भावानुभूति और भावाभिव्यक्ति मे कोई अन्तर नही आता, यही कारण है कि मीराँ ने यह सब कुछ अपने 'प्रिय' स्याम के लिए ही कहा है। पुन देखिए—

"काऊ विध मिल जा रे गिरधारी ।। टेर ।।"

.. .. . ....

"बनरावन मे धेनु चरावै ओढ कामलीया कारी ।।"

"काऊ देख्या री घनस्यामा । स्याम हमारे रामा ।।"

इन पदो से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि मीराँ के गिरधारी' घनस्यामा और स्यामा तथा रामा' सभी एक है। तभी तो एक पद में उसका कहना है–'काऊ विध मिल जा रे गिरधारी' और दूसरे पद मे–'काऊ देख्या री घनस्यामा, स्याम हमारे रामा ।।' मीराँ के स्याम ही मीराँ के राम है। वे ही 'वनरावन मे धेनु चरावै ओढ कामरिया कारी ।'

जोगिया जाय वस्यो परदेस ।

.... .... .... .... ....

मीराँ प्रभु गिरधर के कारनै । पहरचा भगवां भेस ।। ५ ।।

ये 'जोगिया' और 'गिरधर' एक ही तो हैं। इसी कारण जोगिया के परदेस बसने पर मीराँ ने 'पहरचा भगवा भेस'। किन्तु इतना ही नही वह और स्पष्ट कर देती है– 'मीराँ ने प्रभु गिरधर के कारन पहर्‌या भगवां भेस' (अर्थात् जोगिया और गिरधर, नाम दो है किन्तु व्यक्ति एक ही है और वे है अलौकिक 'जोगेश्वर' कृष्ण। वे अब बीती बातें भूल गए हैं। पूर्व दिनो की स्मृति कराते हुए मीराँ पुन कहती है–

"जोगियो मेरी न जाणी पीर ।  
अब तो जाय बदेस बैठा । काऊ की सुध न सरीर ।।टेर।।  
याद न आवै बृज के मांही । खेलत जमुना तीर ।।  
ग्वालन को दूध खोस खाते । खौसि पीवत खीर ।। १ ।।  
बन बन डोलत चाव पावतै । पीवत जमुना नीर ।।  
बृज बनिता संगी करै विलास । मन मे होत अधीर ।। २ ।।  
सो दिन लाला भूलि गयो हो । भूप भये बड भीर ।।  
मीराँ के प्रभु गिरधरा ! तुम आखर जात अहीर ।। ३ ।।"

जिस जोगी ने मीराँ की 'न जांणी पीर' और 'अब तो जाय बदेस बैठा', वह नन्द दुलारा गोपाल ही तो है। वह 'जोगियो' कृष्ण ही है जो 'बृज के माही

खेलत जमुना तीर और जो 'ग्वालन को दध खोस खाते, खोसि पीवत नीर ।।' जिनके 'वन वन डोलत चाव पावतै' और जो 'पीवत जमुना नीर'। वह 'वृज वनिता सगी करै विलास, मन मे होत अधीर'। इसी 'जोगिया कृष्ण' से मीराँ उपालम्भ भरे स्वर मे पूछ वैठी– 'सौ दिन लाला भूलि गयो हो। भूप भये वडभोर'। वे ही 'मीराँ के प्रभु गिरधर नागर' हैं, जिनके प्रति व्यगभरी चुटकी लेती हुई मीराँ कहती है— 'तुम वीते दिन और उन दिनो की मेरी प्रीत क्यो ना भूल जाओ— आखर जात अहीर'।

जोगिया ने कहज्यो रे आदेस।
जोगियो चतुर सुजान सजनी। ध्यावे ब्रह्मा सेस ।। टेक ।।
करो कृपा प्रतिपाल हम सू। राखो अपने देस ।।

. .

आपने पतित अनेक त्यारे। मेरा तोहि अनेस ।।
अव तो जोगी मेरे माहि। रह्यो नही कछु लेस ।।
मैं मुरख तुम चतुर रावल। कहा करौं उपदेस ।। ४ ।।
दरद दिवानी भई वावरी। डोली देस वदेस ।।
दासी मीरा गिरधर ढुंढत। पलटे काला केस ।। ५ ।।

यह वही अलौकिक 'जोगिया' है, जो 'चतुर सुजान' है और जिसे 'ब्रह्मा सेस' ध्यान करते है, वह 'प्रतिपाल' भी है, जिसका अपना 'देस' है। (यह 'देस' भी वही परदेस ही है जिसका उल्लेख पहले भी कुछ पदो मे हुआ है ) वह 'चतुर सुजान' जोगिया पतित उद्धारक है वही गिरधारी है उसने 'आगे भी पतित अनेक त्यारे' हैं। उसी से मीराँ वडी दीनता भरे स्वर मे विनती करती है– 'मैं मुरख तुम चतुर रावल' 'कहा करो उपदेस'। 'अव तो जोगी मेरे माहि' 'रह्यो नही कछु लेस'। उस जोगिया गिरधर के स्नेह मे वह इतनी व्याकुल हो गई कि 'दरद दिवानी भई वावरी, डोली देस वदेस'। उस गिरधर की दासी मीराँ के, गिरधर को 'ढूंढत पलटे काला केस'।

मीराँ के जोगी और काना मे भी कोई अतर नही है, दोनो एक ही है। देखिए—

तू मत जा रे काना पाईया परौं चिरी तेरी अरे ।। टेक ।।
चंदन काटौं चिता वणावौं अपने हाथ जला जा रे ।। १ ।।
जल वल भई भसम की ढेरी अंग वभूत लगाय जा रे ।। २ ।।

आसणमार मडी मे वैठी घर घर अलख जगाय जा रे ।। ३ ।।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर जोत मे जोत मिलाय जा रे ।। ४ ।।

मीराँ जो कुछ प्रस्तुत पद मे 'काँना' को सम्वोधित कर रही है वही एक अन्य पद मे 'जोगी' को सम्वोधित करके कहती है– 'जोगी मत जा मत जा पांऊ परौ मैं तेरे'। इससे भी यही ज्ञात होता है कि मीराँ के 'काना' (कान्हा) ही 'जोगी' अथवा 'जोगिया' है। कृष्ण विना वह जीवित रहना नही चाहती। वह तो 'चदन काटौ चिता बणावैं' कह कर 'जोत मे जीत मिलाय' आने के लिए उस 'काना जोगी' से कह रही है, जो उस 'मीराँ के प्रभु गिरधर नागर है।'

अव अन्तिम पद मे मीराँ ने जैसे उस जोगी का सारा रहस्य अथवा भेद खोल के रख दिया है–

जाय पधारे गढ लोक व्रंदावन हर सखी रास रचाय रहे ।। टेक ।।
गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सखा बनाय लिज्ये ।। १ ।।
देख विहार निहार स्याम को सब सखियन संग नाच किये ।। २ ।।
गावत है अति मद मद नुपर ताल बजाय रहे ।। ३ ।।
तव वोले गोपेसुर नायक भगत अनोखा काहा आप रहे ।। ४ ।।
कहे मीराँ यन भाग हमारो प्रभु चरनन पै ध्यान धरो ।। ५ ।।

हमारे पुराण भागवतादि धार्मिक ग्र थो मे श्रीकृष्ण के दो रूपो 'जोगेसुर' (योगेश्वर) तथा 'गोपेसुर' (गोपेश्वर) रूप का वर्णन हुआ है।[1] कृष्ण के उन दोनो ही

---

१. श्रीमद्भागवत में श्री कृष्ण का योगेश्वर रूप–

(क) हंसः सुपर्णो बैकूण्ठो धर्मो योगेश्वरोऽमलः ।
ईश्वरः पुरुषोऽव्यक्त' परमात्मेति गीयते ।। २३ ।। पृ० ७३४

(ख) देवदेवेश योगेश पुण्य श्रवणकीर्तन ।
( योगेश्वर ! आप देवाधिदेवो के भी अधीश्वर हैं। आपकी लीलाओं के श्रवण-कीर्तन से जी पवित्र हो जाते हैं। )

(ग) इतीदृशेन भावेन कृष्णे योगेश्वरेश्वरे ।। २३ ।। पृ० ६९८

(घ) कृष्ण कृष्ण महायोगिन् विश्वात्मन् विश्वभावन ।
( सच्चिदानन्द स्वरूप श्री कृष्ण ! तुम महायोगी हो, विश्व आत्मा हो और तुम सारे विश्व के जन्मदाता हो। ) पृ० ४३२

(ङ) नमः कृष्णाय शुद्धाय ब्रह्मणे परमात्मने ।
योगेश्वराय योगाय त्वामहं शरणता ।। १३ ।। पृ० ४३३

रूपों का परिचय कराती हुई मीराँ कहती है– 'गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सखा वनाय लिय' तथा 'तब बोले गोपेसुर (गोपेश्वर) नायक भगत अनोखा कहा आप रहे'। अत मीराँ के पदो के 'जोगिया जोगी' यही 'ज्योगेसुर' (जोगेश्वर=योगेश्वर) कृष्ण हैं।

---

(च) रासोत्सव सम्प्रवृतो गोपीमण्डितः।
योगेश्वरेण कृष्णेन तासा मध्ये द्वयोर्द्वयो ॥ पृ० ३२३, अ० ३३

(छ) प्रपन्नोऽपि महायोगिन् महापुरुष सत्यते।
( भक्तवत्सल ! महायोगेश्वर महा पुरुषोत्तम। ) पृ० ३४१, अ० ३४

(ज) वय त्विह महायोगिन् भ्रमन्त कर्मवर्त्मसु।
( महायोगेश्वर ! हम लोग तो कर्म मार्ग मे ही भटक रहे हैं ) पृ० ७४६,अ० ७

(झ) योगेश योगविन्यास योगात्मन् योग सम्भव।
( भगवन् ! आप ही समस्त योगियो की गुप्त पूंजी योगो के कारण और योगेश्वर हैं। आप ही समस्त योगो के आधार उनके कारण और स्वरूप भी हैं। ) पृ० ७४८, अ० ७

(ट) कृष्ण कृष्णा प्रमेयात्मन योगेश जगदीश्वर।
वासुदेवाखिलावास सात्वत्ता प्रवर प्रभो ॥ ११ ॥ पृ० ३५६, अ० ३७
( सच्चिदानन्दस्वरूप श्री कृष्ण ! आपका स्वरूप मन और वाणी का विरोध नहीं है। आप योगेश्वर हैं। सारे जगत का नियन्त्रण आपही करते हैं। आप भक्तों के एक मात्र वाछनीय यदुवंश शिरोमणि और हमारे स्वामी हैं। )

(ठ) कृष्ण कृष्ण महायोगिस्त्वमाद्यः पुरुष' पर :
व्यक्ताव्यक्तमिदं विश्व रूप ते ब्राह्मणा विदुः ॥ २९ ॥
(सच्चिदानन्द स्वरूप ! सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाले परम योगेश्वर श्री कृष्ण। प्रकृति से अतीत स्वय पुरुषोत्तम हैं। ) पृ० १८८

(ड) योगेश्वरोतोर्भवतस्त्रिलोक्याम (आप योगेश्वर हैं आदि)

२. श्रीकृष्ण का गोपेश्वर रूप (श्रीमद्भागवत मे)—

(क) स्वयमात्माऽऽत्मगोवत्सान् प्रतिवार्यात्मवत्सपैः।
क्रीडन्नात्मविहारैश्च सर्वात्मा प्राविशद् व्रजम् ॥ २० ॥
(सर्वात्मा भगवान् स्वयं ही वछड़े वन गये और स्वय ही ग्वाल वाल। अपने आत्म स्वरूप वछड़ों को अपने आत्म स्वरूप ग्वाल-वालो के द्वारा घेर कर अपने ही साथ अनेकों प्रकार के खेल खेलते हुए उन्होंने व्रज मे प्रवेश किया।)
—पृ० २०७, अ० १३

(ख) तावत् सर्वे वत्सपाला पश्यतोऽजस्य तत्क्षणात्।
व्यदृश्यन्त घनश्यामा· पीतकौशेयवाससः ॥ ४६ ॥ (पृ० २११, अ० १३)

मीरॉ के उल्लिखित पदो मे भी उसके 'जोगी' और प्रियतम 'कृष्ण, गिरधर नागर, राम, श्री पत, श्री भगवान्, हरि, गोपाल, साहिब, स्याम, घनस्याम, हरी, ज्योगेसुर, गोपेसुर आदि सभी अभिन्न है। अत. यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मीराँ का 'जोगी' कोई लौकिक जोगी नही हैं। वह तो आध्यात्मिक अलौकिक पूर्ण ब्रह्म श्रीकृष्ण ही हैं। हाँ, कुछ पद ऐसे अवश्य है[1] जिनसे किसी लौकिक जोगी का भ्रम होता है, किन्तु वे भी वस्तुत' श्रीकृष्ण की ओर ही स्पष्ट सकेत करते हैं।

---

१. (क) जोगिया ने कहियो रे अदेस।
आऊंगी मैं नांहि रहू रे कर जटाधारी भेस ॥ ० ॥
चीर को फाड कंथा पहिरु लेऊंगी उपदेस।
गिनते गिनते घिस गई रे मेरी उंगलियाँ की रेख ॥ १ ॥
मुद्रा माला मेख लूं रे, खप्पर लेऊं हाथ।
जोगि होय जग ढूंढ सूं रे, सांवलिया के साथ ॥ २ ॥
मीरां व्याकुल विरहिनी, कोई आन मिलावे मोय ॥ ३ ॥

—मीराँ सुधा सिन्धु, पृ० ६२८, प० सं० १७

(ख) तेरो भरम नहिं पायो रे जोगी ॥ ० ॥
आसन मांडि गुफा मे बैठी, ध्यान हरी को लगायो ॥ १ ॥
गल विच सेली हाथ हाजरियो, अंग भभूति रमायो ॥ २ ॥
मीरां के प्रभु हरि अविनांसी भाग लिख्यो सोही पायो ॥ ३ ॥

—मीराँ सुधा सिन्धु, पृ० ६२४, पद सं० १

(ग) जोगिया जी निसिदिन जोऊं बाट।
पांव न चालै पथ दुहेलो, आडा ओघट घाट ॥ ० ॥
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाई।
मैं भोली भोलापन कीन्हीं, राख्यौ नाहीं बिलमाई ॥ १ ॥
जोगिया कूं जोवत वोहो दिन वीता, अजहूँ आयो नांहि।
बिरह बुझावण अन्तरि आवो, तपत लगी तन मांहि ॥ २ ॥
कै तो जोगी जग में नहीं, कैर, बिसारी मोइ।
कांइ करूं कित जाऊं री सजनी नैण गुमांयो रोइ ॥ ३ ॥
आरति तेरी अंतरि मेरे आवो अपनी जाणि।
मीरां व्याकुल हिरहिणी रे, तुम बिनि तलफत प्राणि ॥ ४ ॥

—मीरां सुधा-सिधु, पद सं० ६, पृ० ६२५

उपरोक्त पदो पर गहनता से विचार करने पर कुछ नवीन तथ्य प्रकाश्य होते है। मीराँ अपने 'स्याम रा रे देस' जाना चाहती है और इसीलिए वह उधव से कहती है– 'उधवजी म्हाने ले चालो स्यामरा रे देस'। उधवजी जिस 'स्यामरा' के 'देस' मीराँ को ले जायेगे, वह तो 'जगनायक श्रीकृष्ण' का ही देश हो सकता है, किसी लौकिक जोगी का नही। उस अपने स्याम से मिलने के लिए, मीराँ कर मे कमडल और मृगछाला धारण कर 'आदेस आदेस' का शव्द उच्चारण को भी तैयार है। वह तो 'कथा सिलाकर' गले मे धारण करने और 'भगवा भेस' ग्रहण करने को भी तत्पर हो जाती है। अपने 'जनम जनम के सावरिया गिरधर' से मिलने को वह इतनी आतुर है कि 'जोगनिया' वन जाने तक को वह सहर्ष तैयार हो जाती है। मीराँ की इतनी मिलन-आतुरता केवल अपने स्याम, अपने कृष्ण के लिए ही है, किसी लौकिक जोगी के लिए नही। यदि कोई मीराँ के पदो मे 'कमडल, 'मृगछाला', 'आदेस-आदेस' 'कथा' और 'भगवा-भेस', आदि शव्द देखकर, उसे किसी लौकिक जोगी की जोगनिया मानने की दुष्कल्पना करे तो, यह उसकी जडता, कैतवता और मनचलापन ही कहा जायेगा।

सच्चाई यह है कि मीराँ को अपने अलौकिक आध्यात्मिक योगेश्वर श्रीकृष्ण के प्रणय-निवेदन मे लौकिक सकेतो, मापदण्डो और शव्दो का सहारा लेना पडा। इसके अतिरिक्त प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए, मीराँ के पास और कोई साधन नही था। इसी कारण साधारण पाठक को लगता है जैसे मीराँ का प्रिय और प्रणय, आध्यात्मिक और अलौकिक न होकर लौकिक है। यह कठिनाई, केवल मीराँवाई के साथ ही नही वल्कि, प्रत्येक सत, भक्त तथा साधु के साथ है। अनेक सतो (भक्तो तथा साधुओ) को अपने अलौकिक प्रेम को लौकिक शव्दो, उपमानो अथवा साधनो के माध्यम से अभिव्यक्ति देनी पड़ी है। चूकि सार्थक और लौकिक उपमा का ही लोक मे अधिक प्रचार और

---

(घ) कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत ॥ ० ॥
आसण माड अडिग होय वैठा, याही भजन श्री रीत ॥ १ ॥
मैं तो जाणू जोगी सग चलेगा, छाड गया अधवाच ॥ २ ॥
आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ॥ ३ ॥
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत ॥ ४ ॥

—मीरां सुधा-सिंधु, पद सं० ७, पृ० ६२५

अधिक महत्व होता है, अत· कबीर ने भी यही कहा– 'मैं राम की बहुरिया'। इसी प्रकार बगाल मे चैतन्य महाप्रभु ने भी स्त्री-भाव से कृष्ण की उपासना की है। कुछ थोडे से शब्दो के शाब्दिक अर्थो के आधार पर ही हमे इन विख्यात भक्तो को समझने मे भूल कर, इनमे स्त्रीत्व का आरोपण नही कर देना चाहिये और न ही इनके प्रेम को लौकिक घोपित करने के लिए साधन ही जुटाने चाहिये। यह मब तो केवल एक लौकिक भक्त का, अपने अलौकिक ईश्वर के प्रति लौकिक शब्दों मे भक्ति निवेदन ही है। इसी प्रकार लौकिक मीराँ ने भी अपने अलौकिक 'योगेश्वर गिरधर नागर' से लौकिक शब्दो अथवा उपमानो मे प्रणय निवेदन किया है। अत· इन पदो के केवल कुछ शब्द महत्वपूर्ण नही हैं बल्कि सम्पूर्ण पद का सम्पूर्ण भाव ही महत्वपूर्ण है।

'नाथ', 'जोगी', 'अलख', 'कमण्डल' आदि शब्दो से वैष्णव कृष्ण का भाव कम तथा नाथपथी किसी 'जोगो' या 'नाथ' का भाव अधिक प्रवल दृष्टिगत होता है तथा नाथपथी 'नाथ' अथवा 'जोगी' का चित्रण ही अधिक स्पष्ट भी होता है किन्तु इन शब्दो के माध्यम से भी मीराँ अपने उपास्यदेव वैष्णव प्रभु 'गिरधर नागर' श्रीकृष्ण का ही ध्यान करती है। अत हमे गहन अनुभूति के अभिव्यक्ति माध्यम को महत्व न देकर मीराँ की मूल अवस्था अभिव्यक्त आग्रह तथा मूल भाव को महत्व देना चाहिए।

डॉ० सत्येन्द्र के शब्दो मे– 'मीराँ ने इस हठयोग का कही-कही उल्लेख किया है। इस हठयोग की शब्दावली का चमत्कार तो मीराँ मे देखने को मिलता है। पर मीराँ का स्पन्दन उसके साथ नही है ?[१]

इसी तरह मीराँ का वैराग्य भी उसी अलौकिक 'गिरधर नागर' के लिए ही है, जो मीराँ जैसी 'ओगणगारी रो नाह' है।

मीराँ के पदो मे प्रयुक्त 'नाथ' शब्द भी उन्ही 'स्याम' श्रीकृष्ण के लिए है। भक्ति के आवेश मे अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के लिए जिन शब्दो का प्रयोग मीराँ ने किया हैं, हमे केवल उन्ही पर न अटक कर, पद के सम्पूर्ण मूल भाव को समझने का प्रयास करना चाहिए। मीराँ का 'अणबोला नाथ' कोई लौकिक नाथ या जोगी नही हैं, वे तो जगतनाथ, जगन्नाथ ही हैं अर्थात् श्रीकृष्ण हैं।

---

१. कला कल्पना और जीवन, पृ १९७।

'नाथ', 'जोगी' आदि शब्द उन दिनो, राजस्थान मे अत्यधिक प्रचलित थे, इसी कारण इनका प्रयोग राजस्थान के तत्कालीन प्राय· सभी सन्तो के साहित्य मे हुआ है। वस्तुत ये शब्द लाक्षणिक है और नाम प्रतीकात्मक हैं। एक दो पक्तियाँ अथवा शब्दो को अलग कर, अर्थ का अनर्थ करने की प्रवृत्ति बहुत घातक है। हमे पूरे पद का अध्ययन कर, उसके भाव को सामने रख कर कोई निर्णय करना चाहिए। उपरोक्त पद (स० ३) को पूरा देखने से ज्ञात होता हैं कि मीराँ अपने स्याम से कह रही है कि– 'मुझे कुबज्या के बराबर मत तोलौ'। इसी पंक्ति मे सम्पूर्ण पद का सम्पूर्ण भाव छिपा हैं। मीराँ का यह 'अणबोला नाथ' वही स्याम हैं जो कुबज्या से भी प्रेम करता है। 'कुब्जा' से प्रेम करने वाला नाथ तो वही एक 'जगनाथ'(श्रीकृष्ण) ही, अब तक प्रसिद्ध हैं, किसी लौकिक नाथ के बारे मे ऐसा सुना नही हैं।

मीराँ के पदो मे 'ओढ कामरीया कारी' आदि शब्दो का भी प्रयोग हुआ है। क्या इन शब्दो के आधार पर यह कह दिया जाय कि मुस्लिम धर्म के 'काली कमली वाले बाबा' से मीराँ का प्रेम सम्बन्ध था ? केवल शब्दो के आधार पर तो यह ठीक भी लगता है किन्तु पद के सम्पूर्ण भाव और शब्दो को देखने से ज्ञात यही होता है कि वे कृष्ण ही है जो 'काली कमलिया ओढे, वृन्दावन मे गाय चरा रहे है।'

इसी प्रकार मीराँ की पीर न जानने वाले, उस जोगिया का 'पतित पावन विरद' कहा गया है, जिसका वेदो और पुराणो ने बखान किया हैं। मीराँ उसी 'सुख की खानी' गिरधर से 'दरसण' देने के लिये प्रार्थना करती हैं। विचार करने की आवश्यकता है कि जिस 'जोगीया' का पतित पावन 'विरद' है, वेदो और पुराणो ने, जिसका बखान किया है और जो सभी सुखो की खान है, वह गिरधर क्या लौकिक जोगी 'हो सकता हैं ? नही। वस्तुत वह श्रीकृष्ण के अतिरिक्त कोई दूसरा जोगी हो ही नही सकता।

---

१. इसी प्रकार मीराँ के कुछ पदों मे है– 'तिलक छापा रुडा सोहै वे अमरापुर वाला ।।४।। अमरापुर मे सासरो रे पीहर संता पास'। प्रस्तुत पदावली मे—पृ० ७५, पद सं० १५५ इस अमरापुर के आधार पर क्या यह कहा जाय कि मीराँ सिन्धी जाति के धर्म मे प्रचलित अमरापुर से प्रभावित थी ?

है। वह इस लौकिक नगर का नही है तभी तो मीराँ उस अलौकिक को अपने लौकिक नगर मे बुलाना चाहती है।

जिस जोगीया को मीराँ बार-बार अपने समीप बुलाना चाहती है, वह मन, वचन और कर्म से 'आश' पूर्ण करने वाला है, उसी पति की वह 'पतिव्रता' है। किन्तु वह जोगी कोई साधारण लौकिक जोगी न होकर 'देव' है और उस 'देवा' के अतिरिक्त मीराँ स्वप्न मे किसी ओर को नही देखना चाहती। उसी सर्व-व्यापक जोगी से, वह एक बार अपने नगर की ओर आने की विनती करती है।

इस उद्भावना (लौकिक जोगी) के मूल मे, हमारी विकृत मनोवृत्ति और फ्रायड का आधुनिक प्रभाव ही कुछ हद तक, कहे जा सकते हैं। आज के युग के मानदण्डो, परिस्थितियो तथा उदाहरणो को सामने रख कर, हम (मीराँ पर) अपने निर्णय घोषित करना चाहते है, वस यही सत्य दृष्टिकोण मे बाधक हे। आज के युग का चित्र मीराँ के युग से ठीक विपरीत है। आज के नैतिक मूल्य सदाचार, धार्मिकता, मर्यादा, आनमान, सतित्व आदि सभी वदल गए है। वासना प्रधान युग मे वासना रहित कल्पना तो, कम हो सकती हैं किन्तु वासना-रहित युग की महान धार्मिक विभूतियो तक को इस तरह वासना मे लपेटा जायेगा, इसकी आशा नही थी। किन्तु लगता है जैसे हर असभव को, सभव कर दिखाने के प्रयास मे, सभवत यह भी सभव हो गया है।

इसी विषय पर विचार करने का एक ओर पहलू भी है और वह है, जोगीमगरा गाव के सवध को लेकर। थोडी देर के लिए यदि यह मान भी लिया जाय कि मीराँ का कोई लौकक जोगी रहा भी होगा और उसका जोगीमगरा से कोई सवध भी रहा होगा, तव भी यह कल्पना साकार नही होती। जोगीमगरा मेडता के पास एक गाव अवश्य है, जिसके नाम से मेडता जकशन से जोधपुर की ओर आने वाली रेल्वे लाइन पर, मेडता जकशन के वाद पहला, स्टेशन भी वना हुआ है, किन्तु आज का जोगीमगरा, केवल एक-दो जोगियो की मण्डी के अरिरिक्त और कुछ नही था। 'मारवाड रा परगना री विगत'[१] मे नेणसी ने इस जोगीमगरे का कही उल्लेख तक नही किया है, न ही

१. 'मारवाड़ रा परगना री विगत' —सम्पा० नारायणसिंह भाटी प्रभापक-प्राच्यविद्या प्रतिक

अन्यत्र प्राप्त किसी प्राचीन सामग्री से इस बात की पुष्टि होती है कि जोगीमगरा मीराँ के युग मे भी था। अत इस कल्पना का मूल आधार ही असत्य है। पुन· न तो जोगीमगरे मे कभी जमुना वहती थी, न व्रन्दावन वहा है, न समीप गोकल और न ही मथुरा नगरी है। न उस जोगी ने वहा कभी रास रचाई है, न कुबज्या सग नेह वढाया है और न ही मीराँ से उसका पूर्व जन्म का कोई सबध ही सिद्ध होता है। न तो उस जोगी को 'ब्रह्मा' और 'सेस' ध्याते है, न उसका 'बिडद' वेदो ने गाया है, न उसने पतित अनेक उबारे है न प्रहलाद की 'प्रतिज्ञा' राखी है और न ही गिरवर धारण किया है। ऊपर वर्णित सभी वर्णनो की मीराँ के पदो मे पुनरावर्ती हुई है। तो क्या ऐसे सभी पदो को प्रक्षिप्त मान ले ? किन्तु इतने पर भी वात नही वनेगी क्योकि जोगी शब्द से युक्त सभी पदो मे ऐसे वर्णन मिलते है। अतः फिर नो यही कहा जा सकता है कि 'जोगी' और 'नाथ' शब्द ही प्रामाणिक है, शेष सब शब्द यहा तक कि पद भी अप्रामाणिक है।

# मीराँ के पदों में 'साधु'

मीराँबाई एक महान् भक्त आत्मा है। भक्ति उनके जीवन का मूलमत्र है, 'सत्सग' और 'हरिकथा' उनके प्राणो की धडकन है, तीर्थ यात्राए उनके मन.शान्ति का आवश्यक तत्व है और साधु से वढकर पुनीत कर्त्तव्य उन्हे कोई और दिखाई नही देता। किन्तु, मार्ग के जोगी और साधु मे अन्तर है। 'जोगी' शब्द केवल योगीराज श्रीकृष्ण के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। किन्तु, 'साधु' शब्द का प्रयोग श्रीकृष्ण के लिए न होकर लौकिक साधुओ अथवा सतो-भक्तो के लिए हुआ है। हमे मीराँ के पदो के आधार पर कोई निर्णय देने से पूर्व इस वात को भी दृष्टि मे रखना चाहिए। इस पर थोडा प्रकाश डालने का प्रयास, श्री शभूसिह मनोहर ने, 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका'[1] मे लिखे अपने निवन्ध में अवश्य किया है, किन्तु श्री मनोहर, जोगी और साधु को एक ही समझ रहे है, इस कारण वे दोनो मे अन्तर कर, पाठको को सतुष्ट नही कर सके है।

मीराँ का साधुओ अथवा सतो के प्रति वडा आदर-भाव रहा है, उनका वह वडा सम्मान करती रही है। 'सत समागम' और 'हरिकथा' मीराँ को अत्यधिक प्रिय रहे हैं तथा ये दोनो (उनके अन्तिम समय तक) मीराँ को प्राप्त भी होते रहे हैं। यहाँ भी मीराँ, अपने युग के राजस्थान की धार्मिक परिस्थितियो और परम्पराओ के अनुरूप ही व्यवहार करती है। उस युग मे साधु और सत के प्रति, यही आदर-भाव और सम्मान, सम्पूर्ण राजस्थान मे व्याप्त था। प्रसिद्धि प्राप्त साधुओ अथवा सतो को, उन दिनो राज-परिवार मे भी आमन्त्रित किया जाता था, किन्तु उनके लिए मेहलो मे अलग व्यवस्था होती थी। राज-महलो मे भी उन सम्मानित साधुओ अथवा संतो के भजन हरजस, कोर्तन अथवा उपदेशादि होते थे। स्त्री और पुरुप दोनो ही, वडी श्रद्धा से उन्हे सुना करते थे। महाराणा सागा रायमलोत की झाली रानी के वुलाने पर रैदास का चित्तौड आगमन, इसी वात की ओर सकेत एवम् पुष्टि करता है।

सत समाज की आवभगत एवम् उनकी सेवा, आज भी राजपूत समाज तथा राज-परिवारो मे है। विवेकानन्द जी को अमेरिका के लिए प्रेरित कर,

---

१ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग २६।

उनकी पूर्ण व्यवस्था करने वाले खेतडी के राजा अजीतसिंह और दयानन्द सरस्वती को राजस्थान मे आमन्त्रित करने वाले महाराणा सज्जनसिंह एवम् राजाधिराज नाहरसिंह शाहपुरा ही थे। यहा तक कि पण्डित मदनमोहन जी मालवीय को हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए पूर्ण आर्थिक अनुदान देने वाले भी, राजस्थानी शासक ही थे।

मीराँ के पदो मे सतो के प्रति श्रद्धा की भावना व्यक्त मिलती है। वह सत से अनुनय विनय करता हुई कहती है—

*सता काले रीज्यौ मारो ईतरो जोर। आज बसो मारे घर ।।टेर।।*

छिन घडी पल आप पधारिया सना। चरण पवीत कीनी मारी भोम ।।१।।

अचलो विछाय करु प्रनाम। सीस निवाऊ मारा दोनु कर जोर ।।२।।

मारा क्रम कठन होय लागा। आप पधारो जरा निरमल होई ।।३।।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर। साईया साधुडा रो हिरदो वडो कठोर ।।४।।

श्रद्धा और भक्ति अपने चरण सोपान पर है। जिस मर्यादा और शालीनता से सत से विनीत आग्रह हुआ है, उसकी अन्यत्र उपलब्धि दुर्लभ है। एक-एक शब्द मे सत के प्रति आदर-भाव भरा पडा है। सतो को कल रखना है, और उसके लिए अनुनय विनय के अतिरिक्त, एक श्रद्धालु भक्त, और क्या कर सकता है ? भक्त की भी तो अपनी मर्यादा की सीमाएँ है, जिन्हे वह लाघना नही चाहता। इसीलिए बस केवल इतना शब्द सकेत ही है— 'सना काले रीज्यौ, मारो ईतरो जोर'। इस अनुरोध के पश्चात् भी सत कल तक रुकना नही चाहते तो इसका अभिप्राय यह नही कि वह उनके आगमन की महती कृपा को विस्मृत कर दे। वह कहती है— "छिन घडी पल आप पधारया सता। चरण पवीत कीनी मारी भोम ।।" सता के इस आगमन पर, श्रद्धा और भक्ति से वह इतनी नम गई है कि "अचलो विछाय करु प्रनाम। सीस निवाऊ मारा दोनु कर जोड ।।" मीरां ने अपनी स्थिति के लिए, एक वैष्णव भक्त की तरह पूर्व जन्म अथवा इस जन्म के कर्मो को ही, कारण माना है— "मारा क्रम कठन होय लागा।" और कर्मो के सकट विमोचन का अमोघ अस्त्र है— "आप पधारो जारा निरमल होई ।।"

कितना पावन अनुनय है। इसी तरह पुन: द्रष्टव्य है—

धनि आजि की घरी हौ। साद सत मे परी ।।टेर।।
श्रीमद्‌भागोत श्रवण सुणी। रसना रटत हरी ।।१।।

मीराँ के सत-समागम से चाहे मेवाड राजवश का अपमान होता हो किन्तु मीराँ के लिए वह पल, धन्य है जब वह 'साद सत मे परी।' 'साद सग' से मीराँ ने 'श्रीमद्‌भागोत श्रवण सुणो।' और 'रसना रटत हरी ।।' जो मीराँ हरीमय हो गई है, उसके जीवन का एक-एक पल, एक-एक घड़ी तभी सार्थक है जब वह सत-समागम में व्यतीत हो। तथा दोनों की तभी सार्थकता है जबकि वे 'श्रीमद्‌भागोत' आदि हरि कथा सुने, रसना की तभी महता है, जब वह 'रटत हरी'। मीराँ सत-समागम हेतु जाने का अपना कारण भी स्पष्ट कर देती है—

सहेल्या मारी राम ला(भ)ब म्हे जा(स्यां)सा ।।टेर।।

राम सभा मे सतगरु राजा चरणा मे सीस नवासा ।।१।।

सतगुरू ग्यान कृपा कर देवे सो हरदे घर लासा ।।२।।

राम सभा मे अमरत वाणी सुण सुण (भो) बोत सुख पासा ।।३।।

भेरू भोपा देवड़ीया जी सक्या न सासा ।।४।।

मीराँ के प्रभु गिरधरनागर चरण कमल चित लासां ।।४।।

'राम लाभ' प्राप्त करने के लिए 'राजसभा' मे मीराँ जाना जाहती है। चूंकि रामसभा मे 'सतगरू' ही 'राजा' है, अत. भक्त प्रजा होने के नाते 'चरणा मे सीस नवासा'। इस पर जो 'सतगुरू ग्यान कृपा कर देवे, सो हिरदे पर लासा।' 'रामसभा' मे अमरत वाणी' की वर्षा होगी जिसे 'सुण सुण बोत सुख पासा।' मीराँ का मन अपने ही 'प्रभु गिरधरनागर' के 'चरण कमल' मे लगा हुआ है अतः वह स्पष्ट कहती है 'भेरू भोपा देवड़ीया' आदि की 'सक्या न ल्यासा'।

सतो और साधुओ तथा सतसग के प्रति मीरां की अनन्य श्रद्धा इतनी सबल है कि वह उसका विश्लेषण करने मे भी पूर्ण सक्षम है। सतगुरू को वह जन्म सुधारक के रूप मे स्मरण करती है—

आजि म्हारे पावणीया वैरागी जी ।
जनम सुधारण सतगुरू आया जी ।।टेक।।

प्रीती करैन राम पद रज लेस्सु ।
म्हारो सीस चरणा सर देस्यु जी ।।१।।

चरण धोई चरणामत लेस्यु ।
म्हारा पाप विले होइ जासी जी ।।२।।

कर जोड्या अरज करू छू ।
म्हारो जनम सुधारौ सतगुरू स्वामी जी ।।३।।

सत-(सत्य) परामर्श दाता = सद्गुरू। इसी व्याख्या के अन्तर्गत मीराँ ने अपने गुरू को लिया है। इस सद्परामर्श के लिए किसी गुरू विशेष से मीराँ बधी नही। वैराग्यधारी 'पावणीया' ही मीराँ के 'जनम सुधारण सतगुरू' बन गए हैं। प्रत्येक सत (सच्चा) सत के चरणो मे सीस देने को मीराँ प्रस्तुत है। वह सत-सत, सत-साधु और सत्-गुरू के 'चरणा धोय चरणामत' लेने को तत्पर है। मीराँ की दृढ धारणा है कि 'इससे 'म्हारा पाप विले होइ जासी जी'। कितनी गहरी आस्था है, कितना दृढ आत्म-विश्वास है और कितनी मर्यादा पूर्ण भक्ति है। देख कर आश्चर्य होता है।

'साधा' के आगमन का समाचार सुनते ही भक्त आत्मा, उनके दर्शनार्थ उनकी अमरतवाणी के श्रवणार्थ, अधीर हो उठती है—

रमता साधा काकरा सेवा सालगराम ।
यो मन लागो हर नाव सू रमसा साधा री साथ ।।

साध पधारया म्हे सुण्या काना सुणी आवाज ।
सरवर साधा रे वेसणो दूध पखालू पाय ।।

मीराँ का साधुओ से सम्बन्ध बचपन से रहा है। ज्यो-ज्यो अवस्था बढती गई, सत-समागम और साधु सेवा की प्रवृति भी बढती गई और दृढ भी होती गई। जब वह कोमल 'मन लागौ हर नाव सू' तब तो यह और भी निश्चित हो गया कि 'रमसा साधा री साथ।' 'साध' आगमन की आवाज कानो मे पडते ही मन हर्षित हो गया, अधीरता बढ गई और साधु सेवा अपने पावनतम स्वरूप मे प्रकट हुई— 'दूध पखालू पाव।'

हिन्दी जगत के जाग्रत पाठक, भक्त के द्वारा साधु के, सतगुरू के, चरण प्रक्षालन के नाना साधनो से परिचित होगें किन्तु दूध से साधु के पैर धोने की मीराँ की अपनी देन है। अब तक इस कार्य हेतु जल का ही अधिक महत्व रहा है चाहे वह सोने और चादी के कटोरो मे भर कर रखा गया हो और चाहे नैन-कटोरो से प्रवाहित हुआ हो, था नीर ही। किन्तु, मीराँ की श्रद्धा इन सबसे दो कदम आगे ही है।

कुछ विद्वानो का विचार है कि मीराँ के पदो का जोगी और साधु अथवा सत एक ही है और उससे उसका लौकिक सम्बन्ध हो सकता है किन्तु इस धारणा से सहमत नही हुआ जा सकता। जिन साधुओ अथवा सतो के प्रति मीराँ का इतना आदर, श्रद्धा और पुनीत भाव है, जिनके आगमन पर वह अपने को धन्य मानती है, जिनके पदार्पण की रज-राशि से अपनी 'भोम' को पुनीत हुई मानती है, जिन्हे वह अचल बिछाकर सादर प्रणाम करती है, कर-बद्ध हो नमन करती है, ऐसे श्रद्धेयो से प्रेमालाप अथवा प्रणय-क्रीडा की कल्पना तो क्या, विचार भी असभव है।

सर्व प्रथम और दृढ सत्य तो यही है कि साधुओ, सतो अथवा लौकिक जोगी के साथ मीराँ प्रेम प्रसग कर ही नही सकती, किन्तु यदि कोई यह दुष्कल्पना करे भी, तो उसे इतना और विचार करना चाहिए कि क्या इस अधार्मिक, युग-विपरीत गृहित कृत्य के लिए सतियों, साध्वियो का तब का समाज मीराँ को आदर दे सकता था? क्या मीराँ के पदो को गा गा कर, उसके प्रति श्रद्धा के सुमन अर्पित कर सकता था? मीराँ के प्रति उतना आदर, श्रद्धा और स्नेह हो सकता था, जितना कि आज है? और मान लीजिए कि हो जाता, तो भी क्या ४०० वर्षो तक, वह सम्मान, श्रद्धा और स्नेह अक्षुण्ण रह सकता था? नही, कभी नही, क्योकि भक्ति मे वासना को कतई
है किन्तु लौकिक प्रेम मे वासना सर्वोपरी रहती है। अत दोनो मे जमीन-आसमान का अन्तर है।

मीराँ लोक कण्ठो पर अपनी अलौकिक भक्ति के कारण ही. आज सदियों से विराजमान है। इस अपूर्व जन-श्रद्धा को प्राप्त करने के लिए मीराँ ने महान् त्याग और तपस्या का जीवन विताया है और अपने 'स्व' को सर्वथा त्याग कर प्रकृति के पत्ते-पत्ते मे 'साहब' का प्रतिबिम्ब देखा है—

"डाल पात के हाथ ना लाऊ ना कोई बिरछ सताऊं।
पान पान मे सायब देखु झुक करि सीस निवाऊ।
मेरा राम ने रिझाऊ अेजी मैं तो गुण गोबिन का गाऊ॥"

ऐसी आध्यात्मिक भूमि पर प्रतिष्ठित भक्ति-भावना के साथ, हमारे विद्वानो द्वारा कल्पित मीराँ का लौकिक प्रेम नितान्त भ्रामक और असगत तो है ही, साथ ही उसे किसी भी आधार पर औचित्य एव शालीनता की सीमा मे भी नहीलाया जा सकता।

मीराँ शब्द की व्युत्पत्ति—

मध्ययुगीन महान् भक्त कवयित्री राजरानी मीरांवाई, भारतीय साहित्य, सस्कृति और भक्ति को, मरुभूमि (राजस्थान) की एक अनुपम भेंट है। शुष्क धरित्री मे भक्ति-रस की एक नवीन धारा प्रवाहित कर मीराँ ने सवको आश्चर्यचकित कर दिया। तलवारो की खनखनाहट, युद्धघोषो के तुमुलनाद तथा सुरा और सुन्दरी से भरपूर वातावरण मे मीराँ का भक्तिरस से ओत-प्रोत, जगदीश्वर के प्रति प्रणय-निवेदन और सर्वस्व-समर्पण की तीव्र अभिलाषा, राजस्थान के लिए गौरव और गर्व की वस्तु वन गई है।

मीरांवाई एक ओर अत्यन्त प्रसिद्धि-प्राप्त भक्तमति नारी है, तो दूसरी ओर हिन्दी जगत्, भक्ति-साहित्य और इतिहास मे एक अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, यही स्वरूप अव तक मीरांवाई का रहा है। इसका मुख्य कारण भारतीय इतिहास का मीराँ के वारे मे मौन रहना ही है। यह वास्तव मे अत्यन्त आश्चर्य की वात है कि मेडता, मेवाड और मारवाड जैसे विख्यात राजकुलो से सम्वन्धित इस विख्यात भक्त-नारी का कही प्रामाणिक उल्लेख तक नही है। इसी कारण जीवनवृत और काव्य दोनो ही अत्यन्त सदेहात्मक और विवादात्मक वन गए है। यहा तक कि मीराँ के नाम पर भी सशय और विवाद खड़े हो गए, प्रामाणिक आधार के अभाव मे, वेसिर-पैर की कल्पनाए उठ खडी हुई। ऐसी ही कल्पनाओ और सभावनाओ के सहारे मीराँ नाम की उत्पति को लेकर, हिन्दी साहित्य मे एक ज्वार उठ खडा हुआ।

कुछ विद्वानो की मान्यता है कि 'मीराँ नाम नही, उपनाम अथवा उपाधि

है।[1] कुछेक विद्वानो का विचार है कि 'मीराँ' नाम तो माना जा सकता है. किन्तु यह शब्द शुद्ध रूप मे भारतीय नही, अपितु अरबी-फारसी का शब्द है।[2] कुछ विद्वानों ने इस शब्द को भारतीय सिद्ध करने के लिए भी तर्क सम्मत तथ्य प्रस्तुत किए हैं।[3]

मीराँ शब्द को विदेशी सिद्ध करने के लिए, मीराँ के जन्म सम्बन्धी किंवदतियो का जन्म हुआ, जो कालान्तर मे ऐतिहासिक सत्य के रूप मे मानी जाने लगी। कुछ विद्वज्जनो ने मीराँ का सम्बन्ध अजमेर के मीर साहब से जोडा।[4] इस प्रकार हिन्दू धर्म मे आस्था रखने वालो ने मीराँ के नाम सम्बन्धी कुछ ऐसी ही कल्पनाए की। इस तरह अनेक मत रखने वालो ने, अपनी मान्यता अथवा धारणा हेतु अनेक प्रमाण भी जुटाए। विचार-शृङ्खला

---

१. स्व० डा० पिताम्बरदत्त बड़थ्वाल, सरस्वती, भाग ४०, अक ३, मीराँ-बाई नाम।

२. (क) स्व० पुरोहित हरिनारायण जी, संतवाणी पत्रिका, वर्ष १ अंक ११ पृ० २४ तथा मीराँ वृहत्पदावली प्रथम भाग, पृ० २।
(ख) स्व० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल, सरस्वती, भाग ४० अक ३ मीराँवाई नाम।
(ग) श्री शभुप्रसाद वहुगुणा, मीरा स्मृति ग्रंथ, पृ० ५२-५३।
(घ) परशुराम चतुर्वेदी, मीरांबाई की पदावली, पृ० २४२-२४३।
(ङ) श्री विश्वेवर नाथ रेऊ, संतवाणी पत्रिका, अक ११ वर्ष १ पृ० २४।

३. (क) पं० के० का० शास्त्री, कवि चरित भाग १ तथा मीराँबाई नाम, बुद्धिप्रकाश अक्टू० दि० १६३६, पृ० ४२०।
(ख) श्री ललिता प्रसाद सुकुल, मीरा स्मृति ग्रथ पृ०।
(ग) श्री नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थानी साहित्य, उदयपुर वर्ष १ अंक २।
(घ) श्री ब्रजरत्नदास, मीराँ माधुरी, पृ० ११४-११५।
(ङ) श्री महावीरसिंह गहलोत, मीराँ, जीवनी और काव्य, पृ० १७।
(च) दलाल जेठालाल वाडीलाल, मीराँ स्मृति ग्रंथ, पृ० ११५।
(छ) डॉ० मजुलाल मजूमदार, संस्कृत भविष्य महापुराण, प्रतिसग, अध्याय २२, श्लोक४१-४२।
(ज) डॉ० गोकुलभाई पटेल, स्वर भार अने व्यापार पृ० २१६।
(झ) डॉ० भगवानदास तिवारी, मीरा नाम: एक समस्या? सम्मेलन पत्रिका, भाग ५०, सं० २-३ चैत्र भाद्रपद शक १८८६।

४. स्व० पु० ह० ना० पुरोहित— मीराँ वृहत्पदावली, प्रथम भाग पृ० २ (भूमिका)।

मीराँ शब्द की शुद्धि-अशुद्धि तक भी पहुँची। अल्प मत इस बात के पक्ष मे था कि 'मीरा' शब्द शुद्ध है।[1] अनेक विद्वान् 'मीरा' शब्द मानते है[2] और ऐसे भी है जिनके अनुसार 'मीराँ' शब्द ही शुद्ध है।[3] उपरोक्त विभिन्न मान्यताओ के कारण मीराँ शब्द का प्रयोग भी तीन प्रकार (मीरा, मीरा, मीराँ) से होने लगा। इस तरह केवल 'मीराँ' शब्द को लेकर ही बहुत विचार-विमर्श हुआ। केवल मीराँ शब्द के लिए ही अनेक निबन्ध लिखे गए। इस प्रकार मीरॉबाई के नाम को लेकर विद्वानो मे तीन श्रेणिया बन गई। इनमे से दो श्रेणिया ही मुख्य

---

१. (क) डॉ० सत्येन्द्र।
(ख) डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (स्व०), (ग) नरोत्तमदास जी स्वामी, मीराँ मदाकिनी।
(घ) डॉ० सावित्री सिन्हा, मध्यकालीन हिन्दी कवियित्रियां पृ० १०५-१५८।
(ङ) भुवनेश्वर मिश्र माधव, मीराँ की प्रेम साधना।
(च) मीरा स्मृति ग्रथ — बंगीय हिन्दी परिषद् कलकत्ता।

२. (क) हरिसिद्ध भाई दिवेटिया, मीरॉबाई ना भजनो:
(ख) मुशी देवीप्रसाद, मीरॉबाई का जीवन चरित्र।
(ग) तनसुखराम मनसुखराम त्रिपाठी, बृहतकाव्य दोहन पृ० ७।
(घ) प्रो० मुरलीधर श्री वास्तव, मीराँ की प्रेम साधना।
(ङ) इच्छाराम सूर्यराम देसाई, वृहत्काव्य दोहन पृ० ७।
(च) डॉ० भगवानदीन तिवारी— मीराँ नाम ? एक ससस्या ? सम्मेलन पत्रिका, भाग ५० सख्या २-३ चेत्र भाद्रपद शक १८८६।

३. (क) डॉ० मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी भाषा और साहित्य।
(ख) डॉ० श्री कृष्णलाल मीरॉबाई।
(ग) श्री परशुराम चतुर्वेदी, मीरॉबाई की पदावली, पृ० २४२।
(घ) डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, राजस्थानी साहित्य पृ० २९५।
(ङ) श्री ब्रजरत्नदास, मीराँ माधुरी।
(च) श्री स्वामी आनन्द स्वरूप जी, मीराँ सुधा सिन्धु।
(छ) श्री महावीरसिह गहलोत, मीराँ, जीवनी और काव्य
(ज) श्रीमती पद्मावती शबनम, मीराँ वृहत पद सग्रह तथा मीरा एक अध्ययन।
(झ) श्री रामचन्द्र नारायण ठाकुर, मीराँ प्रेम दिवानी।
(ट) प० रामलोचन शर्मा कण्टक— मीराँ की प्रेम वाणी।
(ठ) श्रीमती विष्णुकुमारी मजु— मीराँ पदावली।
(ड) श्री ज्ञानचन्द्र जैन— मीराँ और उनकी प्रेम वाणी।
(ढ) श्री कार्तिकप्रसाद खत्री— मीराँ बाई का जीवन चरित्र

कही जा सकती हैं—

१. मीराँ शब्द को विदेशी शब्द मानने वाले

२. मीराँ शब्द को भारतीय मानने वाले

इसी तरह—

१. मीराँ शब्द को नाम मानने वाले

२ मीराँ शब्द को उपाधि मानने वाले

सर्व प्रथम स्व० डा० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल ने मीराँ नाम के प्रश्न को उठाया। उनके अनुसर यह फारसी के 'मीर' शब्द से बना है तथा किसी सत (विशेष कर मुसलमान सत) द्वारा दिया गया उपनाम है। आपने कबीरदास जी के चार दोहो [1] में आए हुए मीरा शब्द का अर्थ परमात्मा अथवा ईश्वर से तथा बाई का 'अर्थ' पत्नी से लगा कर, मीराँबाई का अर्थ निकाला— 'ईश्वर की पत्नी'।

---

१. (अ) कबीर चाल्या जाइ था, आगै मिल्या खुदाइ।
मीरां मुझसौं यौं कह्या, किनि फुरमाई गाइ ।।

(आ) हज काबै हूवै हूवै गया, केती बार कबीर।
मीराँ मुझमे क्या खता, मुखाँ न बोलै पीर ।।

(इ) सुर नर मुनिजन, पीर, अवलिया, मीरा पैदा कीन्हा रे।
कोटिक भय कहालूं वरनूं, सवनि वयाना दीन्हा रे ।।

(ई) कहुँ कबीर न दर करेजे मीरा, राम नाम लगि उतरे तीरा।

डॉ० भगवानदास तिवारी की मान्यता है— 'हिन्दी साहित्य के इतिहास में सबसे पहले कबीर की तीन साखियो मे मीरां शब्द का उल्लेख पाया जाता है—

चोहरे च्यतामणि चढी, हाडी भारत हाथि।
मीरां मुझसूं मिहिर करि, इव मिलौं न काहू साथि ।।१।।
कवीर चाल्या जाइ था, आगे मिल्या खुदाइ।
मीरां मुझ सौं यौं कह्या, किनि फुरमाई गाइ ।।२।
हज काबै हूवै हूवै गया, केती वार कबीर।
मीरा मुझ मे क्या खता, मुखां न बोलै पीर ।।३।।

—मीरां नाम : एक समस्या ? सम्मेलन पत्रिका पृ० १८७, भाग ५० सं० २-३ चैत्र भाद्रपद शक १८८६।

इसी आधार पर डा० वडथ्वाल ने मीराँ को निराकारवाद की पोषिका सिद्ध करने का प्रयास किया। उनके विचार से मीराँ ईश्वरवादी शब्द का पर्याय तथा सतो द्वारा दिया गया उपनाम था। इसी धारणा को लेकर, उन्होने मीराँबाई का अर्थ ईश्वर की पत्नी लगाया और मीराँ को कबीर तथा रैदास से प्रभावित माना।

श्री विश्वेवर नाथ रेऊ ने भी डा० वडथ्वाल के स्वर मे स्वर मिला कर कहा कि मीराँ शब्द सस्कृत का नही है।[1]

गुजराती साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान श्री केशवराम काशीराम शास्त्री ने भी इस (मीराँ) शब्द पर विचार किया और इसके मूल रूप की सस्कृत के मिहिर' शब्द से सभावना व्यक्त की।[2]

राजस्थानी साहित्य के विद्वान श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने प्राकृत तथा अपभ्र श के व्याकरण के आधार पर, मीराँ का मूल रूप बीरा' माना।

मीराँबाई पर कार्य करते हुए, जीवन के अनेक वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् स्व० हरिनारायण जी पुरोहित इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अजमेर शरीफ के सिद्ध मीराशाह की मनौती से उत्पन्न होने के कारण, उनका नाम

---

१. प्रसिद्ध इतिहासवेता श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ का लिखना है कि— "नागौर में मुसलमानों का अड्डा होने व मेडते के, उसके निकट रहने से, अथवा अन्य कारणों से उनका प्रभाव राजपूतों पर पड़ा होगा। मीरा शब्द फारसी मे मीर का वहुवचन हैं और शहजादों के अर्थ मे प्रयुक्त होता है।

—सतवाणी-पत्रिका, अक ११, पृ० २४, वर्ष १।

२. के० का० शास्त्री के अनुसार— मिहिर— सूर्य से मिहिरा, मिइरा और फिर मिरा बना। मीरां शब्द का स्त्रीवाची 'आ' नामों के साथ गुजरात मे अत्यधिक प्रचलित है। रूपा, घना, तेजा, शोभा, लीता, जीपा आदि ऐसे ही शब्द हैं। इसी प्रसंग मे वे आगे लिखते हैं— देशी मिरिया झोंपडी नाम के लिये प्रयुक्त हुआ होगा। देशी मइहर गाव का अगुआ मइहर, मीअर, मीरा मीरां-गांव के अगुआ राजा की पुत्री मीरा हुई—

—मीरावाई नाम - बुद्धिप्रकाश - अक्टू० दिस० १६३६, पृ० ४२०

मीराँ रखा गया ।[1]

श्री ललिता प्रसाद सुकुल ने 'मीराँ' की उत्पति के लिए मेडता (शहर) शब्द की व्याख्या को महत्व देते हुए मीर से जलाशय का अर्थ ग्रहण किया और इसी जलाशय के प्रतीक के रूप में, (मीराँ के दादा) राव दूदा जी द्वारा अपनी पौत्री का मीरां नाम रखना सिद्ध किया है।[2]

श्री व्रजरत्नदास मीर या मीरा शब्द को सस्कृत का मानते हैं और इसकी व्युत्पति मि+हरा=मीरा बतलाते है ।[3]

श्री परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार 'मीराँ' शब्द का मूल रूप 'मीर' ही है।

---

१. अरवी भाषा के अदारी केवल रूप का वना। अम्र से फईल के वज़न पर अमीर बना। अमीर का संकुचित रूप मीर हुआ मीर का बहुवचन और प्रतिष्ठा द्योतक मीरां शब्द बना।

—पु० ह० ना० (स्व०)

२. मीर+ता=मीरता। मीर शब्द का अर्थ संस्कृते कोष के अनुसार जलराशि, समुद्र, किसी पर्वत का कोई भाग, सीमा और पेय विशेष और एकाक्षर कोष के अनुसार का शब्द लक्ष्मी शब्द का वाचक है।

—ललिताप्रसाद सुकुल

३. "फारसी के कोषों में मीर शब्द अमीर का मुखफ्फफ अर्थात छोटा रूप लिया गया है और अघीर का अर्थ सदौर है। मीर का वहुवचन मीरान् या मीरां होता है। इससे अनेक शब्द बनते हैं, जैसे— मीरक=छोटा मीर, मीरजाद या मीरजा=मीर का वशज, मीर मजलिस = सभापति आखोर = अस्तवल का दरोगा आदि। मुसलमानो मे यह प्रमुख संपदो का अल्ल भी होता है। मुगल दरवार से भीर मीरान् मीरां का सरदार पदवी दी जाती थी और सम्मान के लिये एक मनुष्य को 'मीरान् जी' कह कर सम्बोधित किया जाता था।'

—मीरां माधुरी (भूमिका) पृ० ११२

श्री शभुप्रसाद बहुगुणा की सूचना के अनुसार मीर शब्द अरवी फारसी का भी है ।[1]

डा० गोकुल भाई पटेल ने गाथा सप्तमी का आधार लेकर मदिरा से महरा और मइरा से मीरा शब्द की उत्पत्ति मानी है ।[2]

डॉ० भगवानदास तिवारी के अनुसार, "जहा तक मीरा शब्द की व्युत्पत्ति का सम्बन्ध है, मीराँ शब्द सस्कृत के मीर शब्द से उद्धृत माना जा सकता है और उसमे मीराँ+अ=मोराँ नाम वन सकता है, किन्तु राजस्थान के क्षत्रिय कुल मे प्रयुक्त मीराँ शब्द फारसी के मीर शब्द से व्युत्पन्न नही माना जा सकता ।"[3]

दलाल ,जेठालाल वाडीलाल के अनुसार, मीराँ जन्म के समय, एक अलौकिक प्रकाश विम्व दिखाई पडा था, इसी कारण पुत्री का नाम मही+हरा=अर्थात् मीरा रखा गया ।[4]

---

१. 'मइहर शब्द का अर्थ मिहिर, मेहर, दयावाला, दयालु भी पदवि है किन्तु वह जन्मभूमि, पीहर, पितृगृह का द्योतक है । उदाहरणार्थ— वावूस मीरा मइहर छूटी जाय । मातृगृह=माइहर, महिअर, महिअर फ्रान्सीसी भाषा मे मिलने वाला समुद्रवाची मेरला मेरमेडिट्रान्ने भूमध्य सागर शब्द इसी अर्थ मे सस्कृत शब्द महापर्व विद्यमान है, जिसका रूप गुजराती भाषा के कवि भालण (सवत् १४६०-१५७०) की कादम्बरी मे मिलता है— मिहरामण अति कोडी । .. . मुझे दिखाई देता है कि मीरां शब्द के नानार्थ मे मिहिर सूर्य से अधिक ठीक है । सूर्योदय के पर्वत को वागविल मे मेरा से कहा गया है । यही हमारा सुमेरु है । मिहिर कुल नाम भी है और सूर्य वण का द्योतक भी सूर्यकुल से मीरा का लम्वन्ध था ही ।

—मीरा स्मृति ग्र थ, पृ० ५३-५४

२ स्वर भार अने व्यापार पृ० २१६

३ सम्मेलन पत्रिका, पृ० १६२-१६३ (भाग ५०, स० २-३, चैत्र भाद्रपद शक १८८६) ।

४ 'प्रेम लक्षणा भक्ति थी वश कीधा करतार ।
धनघन मीरावाई ने गिरधारी शू प्यार ।।'

मीरा के जन्म के समय अलौकिक प्रकाश का विम्व दिखलाई पडा था, जिससे कुमारी का नाम महो+इरा अर्थात मीरा रखा गया । मही का अर्थ पृथ्वी और इरा का अर्थ तेज या प्रकाश हुआ । मीरा ने पृथ्वी पर निर्दोष प्रेम-भक्ति का प्रकाश फैलाया और अपने पिता रत्नसिंह से प्रगट होने के कारण रत्न के प्रकाश के समान वह उज्जवल तथा निर्मल थी ।'

—मीरा माधुरी पृ० ११६ (भूमिका)

कुछ विद्वानो ने मीराँ शब्द को अंग्रेजी कोषो मे ढूढने का प्रयास भी किया है ।[1]

इस तरह मीराँ नाम को लेकर पर्याप्त विचार किया गया है, किन्तु दृष्टिकोणो को छोड़, अधिकाश मे भारतीय दृष्टि का अभाव ही है। 'मीर' शब्द के कारण अधिकाँश विद्वानो की दृष्टि अरबी और फारसी भाषाओ पर लगी रही। कुछ विद्वानो ने अवश्य ही भारतीय दृष्टिकोण से इस शब्द पर विचार किया। कुछ विद्वानो ने इस नाम को लेकर नवीन कल्पनाए भी की। इस तरह यह शब्द विवादास्पद बनता गया।

मीराँबाई द्वारा अपने प्रति अथवा किसी समसामयिक भक्त अथवा साहित्यकार द्वारा मीराँ के प्रति पूर्ण और प्रामाणिक उल्लेख न करने के कारण भी यह नाम (मीराँ) एक समस्या बन गया।

**लेखक की मान्यता—**

वस्तुत मीराँ शब्द पूर्ण भारतीय शब्द है, जिसकी व्युत्पति सस्कृत भाषा से हुई है। यह शब्द भारतीय सस्कृति और वाङ्गमय मे इतना प्रसिद्ध और घुला-मिला है कि आज हम इसे चाह कर भी भारतीय सस्कृति और और वाङ्गमय से अलग नही कर सकते। मीराँ शब्द सस्कृत का है जिसका तात्पर्य है— लक्ष्मी। लक्ष्मी के रूप मे यह शब्द भारत मे अत्यन्त प्रचलित रहा है तथा आज भी है किन्तु मीराँ के रूप मे नया लग रहा है।

प्रस्तुत है मीराँ शब्द की व्युत्पति प्रक्रिया—

मीर— पु० (मिन्वति प्रक्षिपन्ति नद्या जलान्यत्रेति)

मिज्+"असि चिमित्रा दीर्घश्श्च।" उण ०२।

---

१. अंग्रेजी के कोषो को देखने सेज्ञात होता है कि एग्लो-सेक्शन शब्द मेअर (एम०, ई०, आर० ई०) का अर्थ भील या ताल है। जर्मन तथा डच भाषाओ के 'गेर' (एम० ई० ई० आर०), लेटिन के मेअर तथा फ्रंच के 'मेर' (एम० ई० आर०) या मेअर समानार्थी है। इन सबका अर्थ समुद्र है। इन कोषो मे यह टिप्पणी भी है कि यह शब्द संस्कृत मरु (रेगिस्तान) या म्रि (मरना) शब्दो से व्युत्पन्न है और इसी से मेराइन (समुद्री) तथा मार्श (दलदल) शब्द बने हैं।"

श्री ब्रजरत्नदास, मीरा माधुरी पृ० ११३

२५।इति क्रन् दीर्घत्वश्च । समुद्र । इत्युणादि कोपः ।

पव्र्बतैक देश । सीमा । पानीयम् । इति सक्षिप्रसारोणादिवृति ॥

मिञ् धातु, उणादि प्रत्यय 'र' मिय के उकार को दीर्घ मीर कर देता है। शब्द कल्पद्रुम मे इसके समुद्र, पर्वत का एक भाग, सीमा, जल आदि अर्थ दिये है।

मीर शब्द मिञ् धातु से बना है। इणादि प्रत्यय 'र' लगा है। 'र' प्रत्यय के जुडने से (लगने से) 'मि' धातु दीर्घ हो गई, जिसका अर्थ हुआ— जहा नदिया अपना जल डालती है, वह मीर है। इसके दूसरे अर्थ, पर्वत का एक भाग, सीमा और जल भी दिये गए है।

मीर से उत्पन्न होने वाले को 'मीरज' कहेगे। इसमे मीर+अन् धातु मे 'ड' प्रत्यय है और यह 'ड' प्रत्यय सप्तमी उप-पद रहने पर लगता है अर्थात् मीरे जायते इति 'मीरज' (समुद्र मे उत्पन्न होने वाला)। इसका स्त्रीलिंग शब्द 'मीरजा' होगा और इसके अकार का लोप हो जाने पर मीरा शब्द बनेगा। इस प्रकार मीरा का अर्थ होगा— समुद्र से उत्पन्न होने वाली अर्थात् लक्ष्मी।

इस प्रकार के लोप होने का सस्कृत मे एक सूत्र दिया गया है— "क ग च ज त द पयवाम प्रायोलोपा।" इस सूत्र के आधार पर 'मीरज' से जकार का लोप होते ही 'मीरज' 'मीर' वन गया तथा 'मीरज के स्त्रीलिंग 'मीरजा' से अकार लोप होते ही मीरा वन गया।

इस तरह मीराँ शब्द शुद्ध सस्कृत का है। सस्कृत का यही शब्द 'मीरा' राजस्थानी मे 'मीरा' अथवा मीराँ वन गया। सस्कृत के अनुसार 'मीरा' (अनुस्वार रहित) शब्द ही शुद्ध कहा जायेगा, किन्तु हिन्दी तथा राजस्थानी भाषाओ मे 'मीराँ' अथवा 'मीरा' शुद्ध माना जायेगा। राजस्थानी भाषा के अधिकाश विद्वान 'मीराँ' को ही शुद्ध मानते है।[१]

यह कहना सत्य नही है कि मीराँ शब्द भारतीय न होकर विदेशी है और यह फारसी अथवा अरवी से आया है और न ही 'मीर साहव' की मनौती वाली किंवदन्ती ही सत्य है। यह कहना भी उचित नही है कि मीराँ उपनाम अथवा उपाधि थी। मेडता के जलाशय की कल्पना भी सुन्दर ही कही जा सकती है, सत्य नही।

**पाठालोचन की दृष्टि से–**

प्रस्तुत पदावली को पाठालोचन के सिद्धान्तो के आधार पर सम्पादित करने का प्रयास किया गया है। पाठालोचन का सम्बध इसी प्रकार के सम्पादन[1] से अधिक होने के कारण, मैंने पाठालोचन के सिद्धान्तों को आधार बनाया है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर कवि के मूलपाठ का अनुसन्धान ही सामान्यत: पाठालोचन कहा जाता है।[2] पाठालोचक के समक्ष एक ही कवि के काव्य की अनेक प्रतियाँ होती है, जिनमे से कुछ विभिन्न स्थानो, समय तथा ग्रन्थो मे होती हैं, तो कुछ एक ही स्थान, समय एवं ग्रन्थ से। पाठालोचक इन ग्रन्थो के माध्यम से कवि के मूलपाठ तक पहुँचने का प्रयास करता है और इसके लिए उसे मूलपाठ अनुसधान सम्बधी सिद्धान्तों तथा मूलपाठ अनुसंधान सम्बंधी सिद्धान्तो तथा मूलपाठ अनुसंधान सम्बधी प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक विषय, कवि अथवा काव्यकृति (हस्तलिखित ग्रन्थों सहित) के मूलपाठ तक पहुँचने के लिए अध्ययनकर्ता को अन्ततः अपनी बुद्धि एव विवेक से ही कार्य करना होता है[3] क्योकि प्रत्येक ग्रन्थ की पाठ-समस्याएं भिन्न-भिन्न होती हैं, किन्तु कुछ सामान्य सिद्धान्त अवश्य है जिन्हे सभी ग्रन्थो के पाठालोचन मे लागू किया जा सकता है। मैंने अपने सम्पादन में इन्ही सामान्य सिद्धान्तो का उपयोग किया है।

**पाठालोचन के सामान्य सिद्धान्त**

पाठचयन का एक सामान्य सिद्धान्त यह है कि सभी प्रतियों में समानरूप से प्राप्त होने वाला पाठ किसी समान उद्गम की ओर संकेत करता है। सभव है वह समान उद्गम रचयिता का स्वहस्तलेख ही हो।[4]

---

१ पाठालोचन–सिद्धान्त और प्रक्रिया–डॉ० मिथिलेश कान्ति एव डॉ० विमलेश कान्ति, पृ० १

२ पाठालोचन सिद्धान्त और प्रक्रिया-डॉ०मिथिलेश कान्ति एवं डॉ०विमलेश कान्ति,पृ० ६

३ Postgate; Encyclopeadia Britanica, (Texual criticism)

४ Hall, Companion to classical taxts.

—पाठालोचक अपने कार्य को सुचारुरूप से सम्पन्न करने के लिए अनुपलब्ध प्रतियो का भी अनुमान करके चलता है।

—पाठालोचक यह मान कर चलता है कि जो भी रचना प्रतिलिपि के रूप में होती हुई आज हमे प्राप्त होगी उसमे अवश्यमेव अशुद्धियां आ जाएंगी और यह प्रतिलिपि मूल से जितनी दूर होगी उतनी ही उसमे अधिक अशुद्धिया भी होगी।

—पाठालोचन का यह सामान्य सिद्धान्त वन गया है कि जितना ही कठिनतर, अप्रचलित तथा सक्षिप्त पाठ मिले उसे उतना ही प्राचीन तथा प्रामाणिक माना जाना चाहिए।

—पाठचयन करते समय हम एक निर्धारित विधि से क्रमश: प्राप्त पाठ से अप्राप्त पाठ की ओर वढते है और इसी क्रम से हम धीरे-धीरे रचयिता के मूलपाठ तक पहुँचते हैं।

—उन समस्त पाठो को विकृत-पाठ की संज्ञा दी जायगी, जिनके मूल लेखक द्वारा लिखे होने की किसी प्रकार की कल्पना नही की जा सकती और जो लेखक की भाषा - शैली और विचारधारा के पूर्णतया विपरीत पड़ते हैं।

पाठालोचक का उद्देश्य–

पाठालोचक का उद्देश्य प्राचीनतम पाठ प्रस्तुत करना नही, वरन् कविकृत पाठ प्रस्तुत करना है और कविकृत पाठ प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक है कि वह कवि की भाषा-शैली, उसकी विचारधारा आदि का सम्यक् अध्ययन करे, यह देखे कि जो पाठ हमे मिल रहा है वह लेखककृत हो भी सकता है कि नहीं; कही कोई पाठ की विचारधारा का विरोध तो नही कर रहा है, और वह प्रक्षिप्त तो नही है, कही अनावश्यक पुनरावृति तो नही हो रही है, और कही वीच मे लेखक द्वारा अपनाई गई छद, गति आदि की अवहेलना तो नही होती है।

—पाठालोचन का उद्देश्य किसी रचना के मूलपाठ का पुनर्निर्माण करना होता है।

एक पाठालोचक की तरह मेरा भी एक मात्र ध्येय यही रहा है कि मैं मीराँबाई की मूल रचना को पाठको के समक्ष प्रस्तुत कर सकूँ। मेरा यह भी उद्देश्य रहा है कि मीराँ के मूल पदों का अनुसधान कर, उन्हे अधिक से अधिक सुन्दर और मीराँबाई द्वारा अभीष्ट रूप मे प्रस्तुत कर सकूँ। इस उद्देश्य की पूर्ति-हेतु मैंने एक ओर केवल लिखित परम्परा से प्राप्त मीराँ के पदों को सगृहीत किया तो दूसरी ओर प्राचीनतम हस्तलिखित ग्रन्थो में प्राप्त पदो से कविकृत पाठ को प्राप्त करने के लिए, प्राचीन हस्तलिखिन प्रतियो के सभी पदो का संकलन किया। सकलिन पदो के माध्यम से कवि के मूल पाठ तक पहुंचने के लिए पाठालोचन के सिद्धान्तों का सहारा लिया। यद्यपि पाठालोचन का आधार वह समस्त सामग्री मानी जाती है जिसमे कविकृत पाठ मिलने की संभावना रहती है अर्थात् लिखित एव मौखिक दोनो परम्पराओ से प्राप्त सामग्री होती है। किन्तु, मैंने इस सम्पादन कार्य तक केवल हस्तलिखित-परम्परा से प्राप्त सामग्री को ही आधार बनाया है।

इसी प्रकार पाठालोचन का प्रमुख सिद्धान्त है कि प्राप्त अनेक हस्तलिखित प्रतियो से किसी एक को आदर्श प्रति के रूप मे स्वीकार कर, कवि के मूल पाठ तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है, किन्तु चूंकि मीराँबाई के समस्त पदों का सकलन कार्य अभी सम्पूर्ण नही हुआ है तथा मेरे पास मीराँ वृहत्पदावली के अगले भाग की सामग्री एवं योजना है अत: अद्यावधि प्राप्त किसी हस्तलिखित प्रति को आदर्श प्रति मान कर, पाठ-अनुसंधान की प्रक्रिया इस पुस्तक मे नही रखी गई है।

इसके साथ ही चूंकि पाठालोचन–पद्धति का उद्भव एव-विकास योरोप मे प्राचीन ग्रन्थों के सम्पादन से हुआ है और मेरी दृष्टि मे पाठालोचन के उन सभी सिद्धान्तो को भारतीय ग्रथो पर पूर्णतया लागू नही किया जा सकता। अतः मैंने वहुत सावधानी से पाठाचोलन के सिद्धान्तो का वही आधार बनाया है जहां इनकी आवश्यकता समझी गई है।

पाठालोचन की शास्त्रीय तथा वर्तमान मे मान्य विधि के अनुसार मैंने भी अपने इस अनुसधान को निम्नलिखित चार भागो मे बांटा है—

१. पद-सग्रह और वश-वृक्ष निर्माण (Heuristics)
२. पाठनिर्माण Recensio

३ पाठसुधार Emendatio

४. पाठविवेचन Higher criticism

सर्व प्रथम मैंने प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो से प्राप्त मीराँबाई के सभी पदो का संग्रह किया। तत्पश्चात् अब तक प्रकाशित मीराँ के पदो का सकलन किया। सामग्री-संग्रह के पश्चात् उसकी अतरग एवं बहिरग परीक्षा की और सामग्री की प्रामाणिकता तथा प्राचीनता के आधार पर उसका अपेक्षित महत्त्व स्थिर किया। अत मे प्रतियो के पाठो का मिलान कर, प्रतियो के मुख्य तथा गौण सम्बधो को निश्चित किया।

पाठालोचन के प्रमुख सिद्धान्त के अनुसार मैंने विभिन्न हस्तलिखित प्रतियो मे प्राप्त मीराँ के पदों के पाठो मे (प्राचीनतम पाठ के इतिहास में पैठ कर तथा कवि-पाठ का अनुमान लगा कर) उन पदो को अधिकाधिक सुन्दर एव प्रामाणिक रूप मे प्रस्तुत करने की दृष्टि से आवश्यक सुधार किए हैं।

मैंने मीराँबाई के पदो के मूल स्रोतो का अध्ययन करते हुए Higher Criticism को भी अपने सम्पादन का आधार बनाया है। मीराँ की भाषा, विचारधारा तथा पदो एवं इतर ग्रथो मे प्राप्त विचार शृंखला को सम्पादन मे विशेष स्थान दिया है, किन्तु यह क्रम अभी पूर्ण नही हुआ है।

प्रस्तुत सम्पादन मे सम्पादक का ध्येय यही रहा है कि मीराँबाई के पदो के मूल पाठ का अनुसधान किया जा सके न कि प्राचीनतम पाठ का। अत: सम्पादक को अन्त.साक्ष्य[1] तथा बाह्यसाक्ष्य[2] को महत्त्व देना पडा है। मीरां की

---

१ Internal Probability—अन्तःसाक्ष्य वह साक्ष्य है जो पाठ-विज्ञानी को लेखक की कृति के अध्ययन से प्राप्त होता है। पाठालोचन-सिद्धान्त और प्रक्रिया-डॉ० मिथिलेश कान्ति एव डॉ० विमलेश कान्ति पृ० ५०

२. Documental Probability—

"किसी भी पाठ-सामग्री के सम्बन्ध मे यह देखना कि उसके लिपिकाल, लिपि-प्रयोजन आदि के सम्बध में उसमे जो कुछ कहा या लिखा हुआ है, वह कहां तक विश्वसनीय है, अथवा यदि उसमे इस प्रकार का उल्लेख नहीं है, फिर भी इन विषयो पर उसके सम्बध मे कोई प्रसिद्धि रही है, तो वह कहा तक मान्य है यह प्रति की बहिरंग परीक्षा कहलाती है।"

डॉ० माताप्रसाद गुप्त. अनुसधान की प्रक्रिया (पाठानुसंधान) पृ० १२३

समस्त विशेषताओं का ध्यान रखते हुए उसके प्रयोग एवं सन्दर्भों को भी जानना पड़ा। इस भाग मे मैंने केवल संक्षिप्त संशोधन ही किए हैं।

—प्रस्तुत मीरांवृहत्पदावली भाग २ विद्वत्समाज को भेंट करने में जिन सज्जनो की प्रेरणा, सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ है उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। इस कार्य के सम्पूर्ण होने में हितैषियो की प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा सहयोग एव गुरुजनो की शुभाशीष व शुभकामना सदा साथ रही है। यदि इन महानुभावो का सहयोग न मिल पाता तो संभव है, यह अनुष्ठान पूर्ण ही न होता।

सर्व प्रथम मैं श्रद्धेय डॉ० सत्येन्द्र (भू० पू० विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय एवं वर्तमान निदेशक, राज० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर के प्रति नतमस्तक हू, जिन्होने इस पुनीत कार्य की ओर मुझे प्रेरित किया और अन्त तक पूर्ण निर्देशन तथा प्रोत्साहन देते रहे। इस प्रकाशन के समाचार मात्र से जो हर्ष डॉ. साहब को हुआ, वह इस बात का परिचायक है कि आपको इस कार्य से संतोष अवश्य हुआ। आपकी सद्प्रेरणा, सद्परामर्श एवं सुयोग्य मार्गदर्शन न होता तो सभव है यह कार्य न हो पोता। इसके साथ ही मेरे अनुरोध पर आपने अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी इस पुस्तक की महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना (समीक्षात्मक अध्ययन सहित) लिख कर मुझे प्रोत्साहित किया है, इसके लिए मैं विनम्र शब्दो मे आपका आभार प्रकट् करता हू।

मैं आदरणीय डॉ. फतेहसिहजी (भू पू. निदेशक प्राच्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) का किन शब्दो मे आभार प्रदर्शन करू ँ। आप मेरे श्रद्धाकेन्द्र है। आपने ही इस ग्रन्थ का, हिन्दी-जगत् के लिए महत्त्व समझ कर, इसे प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित करने का निर्णय लिया। आप जैसे मनीषी के सतसग से जो ज्ञान और निर्देश प्राप्त हुआ, उसके लिए मैं आपका ऋणी हू।

इसी प्रकार सम्मानीय डॉ. दशरथजी शर्मा भू. पू. इतिहास विभागाध्यक्ष जो वि. वि. एव वर्तमान—(निदेशक, राजस्थान प्राच्च विद्याप्रतिष्ठान, जोधपुर) का कृतज्ञ हूं कि आपने मेरे शोध-कार्य के प्रति आशा और विश्वास रख कर मुझे सदा प्रोत्साहित किया। आपने ही मुझे राजस्थान इतिहास कांग्रेस के प्रथम (जोधपुर) अधिवेशन में 'मीरांबाई के जीवनवृत पर पुनर्विचार'-निबन्ध लिखने तथा निबन्धपाठ करने को प्रेरित किया था। आपने ही मुझे यह सिखाया कि सत्य का अन्वेषण वडी ईमानदारी से होना चाहिए। सच तो यह है कि आप ही मेरे नवजीवन के निर्माता है। ऐसे तपस्वी साधक को मैं नमन करता हू।

मैं विशेष रूप से (राव साहब मसूदा) श्री नारायणसिंह तथा डॉ० करणीसिंहजी (भू० पू० महाराजा बीकानेर) का उनकी मीरांभक्ति एव राज–

स्थानी भाषा प्रेम के साथ-साथ मेरे प्रति स्नेह सहयोग एव आशीर्वाद के प्रति आभार स्वीकार करता हू ।

डॉ नारायणसिंह भाटी (निदेशक, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी जोधपुर) ने प्रारम्भ से ही मेरे इस कार्य मे विशेष रुचि लेकर सहयोग एव सुझाव दिए । आपने राजस्थानी शोध संस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थो को देखने उनकी प्रतिलिपि करने की जो सुविधा दी तथा सस्थान स्थित दुलर्भ एव मूल्यवान मीराँबाई के हस्तचित्र की फोटोकॉपी' करने की अनुमति प्रदान की, वह आपके अपनेपन एव विद्यानुराग का परिचायक है । अपने ही बडे परिश्रम एव लगन से लगभग १५,००० ग्रन्थो एवं सैकडो मूल्यवान हस्तचित्रो को सगृहीत कर इस शोधसंस्थान का स्थायी महत्व स्थापित कर दिया है ।

श्री सौभाग्यसिह शेखावत के सहयोग को विस्मृत कर देना, वास्तविकता छिपाना होगा । राजस्थानी भाषा और साहित्य के इस प्रसिद्ध विद्वान् ने जिस आत्मीयता, परिश्रम एव लगन से इस काय में आद्योपात सहायता की, उसे शब्दो मे व्यक्त करना, इस मौनसाधक की भावनाओ को ठेस पहुचाना होगा, अतः हृदय से अनुगृहीत हूँ ।

राजस्थान प्राच्चविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के सर्व श्री पुरुषोतमलाल मेनारिया,लक्ष्मीनारायण गोस्वामी तथा विशेष रूप से श्री गिरधरवल्लभ दाधीच से प्राप्त सहयोग को कभी विस्मृत नही किया जा सकता ।

इसी प्रकार राज० प्रा० विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, जयपुर तथा बीकानेर शाखाओ, अनूप संस्कृत लाइब्रेरी बीकानेर, सत साहित्य सगम, बीकानेर आदि संस्थाओ के प्रबन्धको, सचालको एव कर्मचारियो को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ ।

मेरे स्वजनो मे श्रद्धेय मामा ले० कर्नल धोकलसिहजी एवं उनके अनुज कमान्डेन्ट श्री सवाईसिह मेरे अग्रज श्री सायरसिह तथा पितृ तुल्य श्वसुर श्री ओंकारसिहजी आइ० ए० एस० का मुझे इस योग्य बनाने मे बहुत योग रहा है अत' उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रदर्शित करता हू ।

मेरा प्रथम प्रयत्न विद्वत्समाज के समक्ष प्रस्तुत है । अनेक अभावो एवं त्रुटियो का रहना सभव है । अतः समस्त भूलो तथा त्रुटियो के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं । मेरे इस तुच्छ प्रयास से हिन्दी साहित्य-भण्डार की श्रीवृद्धि हो सकी, तो मैं अपने कार्य को सफल समझूंगा ।

कल्याणसिंह शेखावत
सम्पादक

जोधपुर, १९७३

# प्रस्तावना

## (समीक्षात्मक अध्ययन सहित)

ले० सत्येन्द्र

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के प्रकाशन में 'मीरांबाई वृहत्पदावली' में मीरां के पदो के संग्रह का यह दूसरा खड एक विचित्र सयोग का परिणाम है, क्योकि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत को राजस्थान विश्वविद्यालय से मीरांबाई पर पी-एच० डी० हेतु अनुसधान करने के लिए विषय दिया गया था, उसके लिए इन्होने जो कार्य करना आरभ किया तो संयोग से इनको ऐसे पद मिलते चले गये जो अब तक प्रकाश में नही आये थे। किन्तु, इस सयोग के पीछे कई कारण भी विद्यमान थे; जिनसे यह सयोग सिद्ध हुआ।

सबसे बड़ा कारण तो यह था कि डॉ० कल्याणसिंह शेखावत का मीरांबाई की वश-परंपरा से सबंध बैठता है। तभी जब जयपुर में "मीरांबाई शोध सस्थान' या परिषद् की स्थापना का विचार उठा तो इन्होने बड़ी कर्मठता दिखायी थी। मसूदा के राव साहब श्री नारायणसिहजी को भी इन्होने प्रवृत कराया। एक बड़ा आयोजन करने का भी निर्णय उस समय लिया गया था। ये उस समय ही हिन्दी एम० ए० की उपाधि प्राप्त करके किसी विषय पर अनुसंधान के लिए व्यग्र थे। 'मीरांबाई' पर अनुसंधान करने की बात तभी उठी।

प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को मीरांबाई प्रिय है। ब्रजवासी को तो और भी अधिक प्रिय है। पर मीरांबाई अपने क्षेत्रो की सीमाओ को बहुत पहले ही लांघ चुकी है। वे राजस्थान की थी, वे हिन्दी की थी—पर वे गुजरात की भी थी। इन तीनो क्षेत्रों से उनका निजी सपर्क रहा था। राजस्थान मे पैदा हुई, यही के एक घराने में विवाहित होकर गयी-पर राजघराना छोडकर जब कृष्णयोगिनी मीरां साधु-सतो मे विचरण करने लगी तो वे वृन्दावन भी गयी, और गुजरात भी गयी। इस कारण राजस्थान, उत्तर प्रदेश और गुजरात उन्हे अपना मानते हैं। और यह

विषय अब भी विवादास्पद ही है कि उन्होने अपने पद राजस्थानी मे लिखे, व्रज मे लिखे या गुजराती मे लिखे। किन्तु, बगाल से ऐसा संबध न होने पर भी मीराँ बगाल मे भी अत्यन्त प्रिय है। मैं जिन दिनो कलकत्ते मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभागाध्यक्ष था तो ऐसी कई देवियो से परिचय हुआ जो मीराँ के गीत बड़ी भक्ति से गाती थी, पर वहीं भारतीय सस्कृति के निष्णात विद्वान डाँ० कालीदास नाग से यह भी विदित हुआ कि बगाल मे एक ऐसी भी देवी है जो मीराँ का अवतार ही मानी जाती है। उन्होने कही मीराँ के गीत पढे-सीखे नही नहीं पर मीराँ के गीत उनके कण्ठ से बिना प्रयास उद्गरित होते हैं। स्पष्ट है कि मीरां तो लोक-कवयित्री हो गयी हैं, और भारत के घर-घर मे सतो की वाणी के साथ-साथ पहुच गयी है।

मेरे कलकत्ते मे पहुचने से पूर्व मीरा को लेकर कलकत्ते मे एक आदोलन-सा हो चुका था। वात यह थी कि प्रो. ललिताप्रसाद सुकुल (अब स्वर्गीय) ने 'मीरा स्मृति ग्रंथ' मे मीरा के पदो का सग्रह प्रकाशित किया। डाकोर वाली प्रति को उन्होने प्रमाण माना और डाकोर प्रति की भाषा को ही मीराँ के पदो की भाषा। अब इस पर वावैला मचा। इस वावैले ने मीरा के पदो की भाषा की समस्या और उनके प्रामाणिक पदो की समस्या को उभार दिया। हिन्दी-जगत् मे इस सवध मे उस समय बहुत चर्चा हुई।

इससे मीरां के पदों के सवंध में ही प्रश्न नही खड़ा हुआ, सभी सतो के सबंध में ही उठ खड़ा हुआ। मेरे मन में यह विचार उठा कि इन सतो में से प्रमुख की प्रामाणिक रचना और प्रामाणिक पाठ अर्थात् प्रामाणिक भाषा-रूप का निर्धारण शोध-प्रयत्नो मे किया जाना चाहिये। तभी एक शोध-छात्र को 'कबीर की भाषा के प्रामाणिक रूप पर अनुसधान का कार्य मैंने सौंपा। मै दो वर्ष बाद आगरा आ गया, तब क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ में मैंने मीराँ के समस्त उपलब्ध पदो के स्रोतों पर कार्य कराने के लिए एक विषय डॉ० विमला गौड को दिया। मेरा अभिप्राय यह था कि एक वार मीरा के समस्त पद एक सग्रह में प्रस्तुत कर दिये जायँ, उनके विषयो के अनुसार वर्ग कर दिये जायँ, उनके स्रोतो का अनुसधान हो ले—तो आगे भाषा विषयक अनुसंधान की एक सीढ़ी प्रस्तुत हो जायगी।

बड़े परिश्रम से उस समय के समस्त उपलब्ध पदों का संग्रह विमला ने किया और आवश्यक अनुसंधान किया, पी–एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। पर आगे का काम कौन करे ? कैसे हो ? यह प्रश्न मन में था ही, तभी राजस्थान विश्वविद्यालय ने मुझे बुला लिया और शेखावत को मैंने मीरां का आगे का काम सौंपना चाहा।

अस्तु, शेखावत मीराँ के अनुसंधान में लगे. और नये से नये पद जो अब तक कही प्रकाशित नही थे, एक प्रकार से पूर्णतः अज्ञात थे, या भिन्न रूप में ज्ञात थे, इन्हे मिलने लगे। इनकी सख्या इतनी अधिक हो गयी कि प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान ने 'मीराँ वृहत्पदावली' को दूसरे भाग के रूप में प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया।

प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान स्व हरिनारायण पुरोहित जैसे प्रतिष्ठित विद्वान द्वारा सगृहीत मीरा के पदो का एक संग्रह पहले छाप चुका था। इसका नाम रखा था 'मीरां वृहत्पदावली प्रथम भाग।' पुरोहित जी की अनुसंधान - निष्ठा और विद्वता को कौन नही जानता ? उन्होने अपना ग्रंथ भी बड़े परिश्रम से तैयार किया था, संभवतः उन पदों में से भी कुछ का उससे पूर्व प्रकाशन नही हुआ था। यह संग्रह भी एक महान् देन के रूप में सामने आया।[2] इस समय तक १६४४ ई० तक तथा इसके बाद अब तक कितने ही मीराँ के पदो के संग्रह प्रकाशित हो चुके है।[3] यह स्वाभाविक ही था कि इस समय (१६७०-७२) लोग यह सोचने लगे हो कि अब और पद मीराँ के नही मिलने।

पर डा० शेखावत ने अपने परिश्रम और अनुसधान–कौशल से इतने नये पद मीराँ के उद्घाटित कर दिये कि उनका भी एक दूसरा भाग बनाकर प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान इस ग्रथ में प्रकाशित कर रहा है।

जहाँ तक मै समझता हू मीराँ के पदों की यही इति नही हो सकती। अनेको हस्तलेख अभी ऐसे होगे जिन तक संकलनकर्ता अभी पहुँच नही पाये। वस्तुतः मीराँ के पदो के सकलन का कार्य एक महान् कार्य है, और कोई ऐसा सस्थान खड़ा होना चाहिये जो अखिल भारतीय स्तर पर कार्य कर सके।[4]

हस्तलेखों से भी महत्त्वपूर्ण है लोक कण्ठो पर विराजे हुए मीराँ के गीत। मीराँ के ऐसे समस्त गीतो के संकलित हो चुकने पर ही मीराँ की काव्य-संपत्ति

ग्रौर भाव–सम्पति की नाप–जोख हो सकती है ग्रौर उनकी प्रामाणिकता की यथार्थ कसौटी निर्धारित की जा सकती है।

इस दिशा में डॉ० शेखावत का यह कार्य ग्रभिनंदनीय है। ऐसा कई कारणो से है। पहले तो यह इसीलिए ग्रभिनन्दनीय है कि इतने ग्रछूते पद इस सकलन मे हमे मिलते है। ग्रभी तक कितने ही संकलन प्रकाशित हो चुके है। इनमें कुछ वृहद् सग्रह भी हैं। कुछ मे यह दावा भी है कि उन्होने समस्त उपलब्ध पद तथा नये पद भी दिये है। इसके उपरान्त भी इतने ग्रछूते पद डॉ० शेखावत ने यहाँ देकर ग्रभिनन्दनीय कार्य किया है। पर यह भी ध्यान देने योग्य है कि उनका शोध-क्षेत्र केवल राजस्थान ही रहा है यह डॉ० शेखावत के इस विवरण से सिद्ध है कि "इस पदावली के सभी हस्तलिखित ग्रथो के प्राप्ति - स्रोत मुख्य रूप से दो है। (१) राजस्थान की साहित्यिक सस्थाग्रो के संग्रह (२) वैयक्तिक रूप से संगृहीत सग्रह।" ये सभी राजस्थान के ही है।

दूसरी वात जो हमें ग्राकर्षित करती है, वह उस स्थापना का परिणाम है, जो सम्पादक ने की है। सपादक ने कहा है कि मीरावाई के पदो की भापा वही होगी जो उनकी जन्मभूमि मेडता में वोली जाती है। सपादक ने पदो की भापा का रूप 'सम्पादक–पाठ' मे वैसा ही रखने का प्रयत्न किया है। मेरी जानकारी में मीरावाई के पदो के सग्रहकर्ताग्रो मे से किसी का मेड़ता से उतना घनिष्ट सम्वन्ध नही रहा जितना इस संग्रह के सम्पादक का रहा है। ग्रौर ग्रपन शोध के लिए उसने मेडता-क्षेत्र का विशेष ग्रनुसधान भी किया है। इस प्रकार मीरा की जन्म भूमि की भाषा की रंगत वह ग्रहण कर सके है. ग्रौर उसी रंगत में ये पद उन्होने दिये हैं। यह प्रश्न विवादास्पद हो सकता है कि मीरां के पदो की भाषा मेड़ती वोली की रंगतवाली थी, ग्रौर यह वात भी सब को मान्य नही हो सकेगी, कि मीरां के पदो में जो विशिष्ट रगत मिलती है वह मेड़ती है, या ये मीरां के पदो को मेडती रंगत में प्रस्तुत करने मे सफल हुए है। क्योकि मीरांकालीन मेडती राजस्थानी. मीरा की भाषा हो सकती है। पर यह निर्विवादा है कि इस दृष्टि से पदो को प्रस्तुत करने का यह पहला ग्रौर ग्रभिनदनीय प्रयास है। प्रयास मे मेडती की रंगत का रूप इसमें है, जिससे मीरां के पदो का स्वाद कुछ ग्रौर ही हो गया है। मेड़ती रगत समभने के लिए यह सग्रह ग्रध्येता के लिए ग्रनिवार्य रहेगा। इस विधि से हम केवल मीरा के पदो के ग्रर्थ में ही

नही किसी सीमा तक उसकी निजी भाषा के रूप मे भी दर्शन कर सकेगे, क्योंकि मीराकालीन भाषा ही तो आज की मेड़ता में ढली है। मीरां की भाषा से सबन्धित विवाद की नीव बहुत गहरी है, वह ऊपरी तर्कों और युक्तियो से नहीं सुलझाया जा सकता। हाँ, हम लोग अपना-अपना आग्रह प्रकट् करते है। यह आग्रह समस्या को और उलझाता है। पर यह भी सत्य है कि इस प्रकार सभी आग्रह और दुराग्रह उभरकर ऊपर आ जायं तो फिर यथार्थ की खोज का मार्ग भी प्रशस्त हो सकता है। जो मीरां की भाषा मात्र राजस्थानी मानते हैं, उनके ही तर्क के अनुकूल यह मान्यता अधिक बलवती होनी चाहिये कि मीराँ की भाषा मेड़ती थी। जहाँ तक मेरा सबध है, मेरा निजी मत तो यह है कि कवयित्री मीरां को ब्रजभाषा का ज्ञान था। जो लोग यह कहते है कि वे वृन्दावन नही गयी थी, तो यह उस कथन का ही खडन है जो यह कहते हैं कि वे वृन्दावन गयी थी। उनकी वृन्दावन-यात्रा से उनके ब्रजभाषा - ज्ञान का सबंध जोड़ने वाले तर्क का भी यह खडन हो सकता है। पर ब्रजभाषा के ज्ञान के लिए 'ब्रजवास' आवश्यक नही था, आवश्यक नही रहा है। आचार्य भिखारीदास ने जब यह लिखा था कि 'ब्रजभाषा हेतु ब्रज बास ही न अनुमानो'-तब उन्होने एक ऐतिहासिक सत्य तथा तथ्य का ही उल्लेख किया था। राजस्थान और राजस्थान से बाहर के कितने ऐसे कवियो के नाम गिनाये जा सकते हैं, जो कभी ब्रज में नही रहे। राजस्थान मे ब्रजभाषा अपनी भाषा के रूप मे प्रचलित थी। राजस्थान में ब्रज-भाषा भारत में अंग्रेजो की तरह विदेशी नही थी। फिर भक्ति के क्षेत्र मे तो और भी अधिक उदारता थी। कुछ यह परंपरा भी दिखायी पडती है कि कृष्ण-काव्य ब्रजभाषा मे और राम-काव्य अवधी-उन्मुख भाषा मे रचा जाय। मीरा भक्त थी, कृष्ण भक्त थीं, अत ब्रज भाषा मे उनके लिए भक्तिगान कोई समस्या नही हो सकती थी। फिर वे राजघराने की थी और वे मेवाड़ के महाराणाओ के यहां रही। राजघरानों मे ब्रज का विशेष महत्व था। भक्तो और साधुओं की मडली जिनसे मीरां घिरी रहती थी, मीरां को मात्र मेड़ता या मेवाड़ी सीमाओ में ही बाधकर नही देखा जा सकता। मीरा की भाषा के सबध में निराग्रह होकर और दुराग्रह छोड़कर विचार करना होगा और हमें इस प्रकार विचार करने के लिए अभी और सामग्री एकत्र करनी होगी, मीरां के पदो की भी और इतिहास की भी, साहित्य के इतिहास की भी। डॉ॰ शेखावत का यह प्रयत्न इसलिए अभिनदनीय है कि उन्होने जितने भी पद उन्हे अभी तक मिल

सके हैं, आगे की शोध के लिए तथा मीरां के भक्तो के लिए भी और मीरा के पदो के प्रेमियो के लिए भी, इस सग्रह मे दे दिये हैं।

पद्मावती शबनम ने 'मीरां - वृहत्पदसग्रह' में भाषा—चर्चा, स्थान—भेद इतिहास, भाव-भेद, सप्रदाय भेद आदि के आधार पर की है जिसे यहां उद्धृत कर देना समीचीन होगा :—

'राजस्थान में ही मीरा ने जन्म लिया और राजस्थान में ही उनका अधिकांश जीवन व्यतीत हुआ। अतः अधिकांश पदो का शुद्ध राजस्थानी भाषा में पाया जाना ही युक्ति-सगत है। फिर भी पुरानी राजस्थानी और आधुनिक राजस्थानी में प्राप्त पदो की भाषा की शुद्धता पुरानी राजस्थानी के माप पर ही निर्धारित की जा सकती है। ऐसा एक प्रयास मैं कर भी रही हू और आशा रखती हू कि शीघ्र ही हिन्दी-साहित्य की यह छोटी सी सेवा भी कर सकूंगी।'

इसके बाद वे पद आते हैं जो मिश्रित भाषाओ के अन्तर्गत रखे गए हैं। इनमे से कुछ की भाषा प्रधानत राजस्थानी होते हुए भो ब्रजभाषा से प्रभावित है। तो अन्य कुछ की भाषा प्रधानत. ब्रजभाषा होते हुए भी राजस्थानी से प्रभावित है। साधु—समागम के कारण भी भाषा का यह सम्मिश्रण सम्भव हो सकता है। अद्यावधि मीरां का ब्रज-क्षेत्र मे गमन और निवास भी मान्य है।

तथाकथित मीरां के पदो की एक बड़ी संख्या ब्रज—भाषा में भी प्राप्त है। इनमे से कुछ की भाषा विशुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। ऐसे कुछ पद साहित्यिक सौन्दर्य का सृजन करने मे सूरदास के पदों से भी होड लेते हैं। अद्यावधि प्राप्त सामग्री के आधार पर मीरा की वृन्दावन—यात्रा और निवास बहुमान्य होते हुए भी सुनिश्चित इतिहास नही अपितु एक अत्यन्त विवादग्रस्त विषय है। इन पदो की साहित्यिकता भी इनकी प्रामाणिकता के विरुद्ध ही गवाही देती है। मीरां को शास्त्रीय अध्ययन का सुअवसर प्राप्त हुआ हो, ऐसा भी कोई निश्चित इगित प्राप्त सामग्री मे नही मिलता। प्राप्त पद कवि की रचना न होकर एक स्वतः सिद्ध भक्त के भावातिरेक के सत्यतम चित्र हैं अत शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा प्राप्त पदो की प्रामाणिकता विशेष सन्दिग्ध हो जाती है।

गुजरात मे भी मीरा के अन्तिम काल मे मीरा का द्वारिका गमन और निवास इतिहास सिद्ध है। अद्यावधि मान्य इतिहास, प्राप्त जनश्रुतियो और पदाभिव्यक्तियो से भी उपर्युक्त कथन का समर्थन होता है।

अत्युक्ति न होगी यदि कहा जाय कि प्राप्त सम्पूर्ण सामग्री मे यही एक ऐसा पहलू है जो सर्व-सम्मति से सुनिश्चित है। क्रमशः विकसित होते हुए जीवन व अन्य बहुत ही हल्की भावनाओं का चित्रण बहुत सहज नही प्रतीत होता। चितौड़ के सम्पूर्ण राज-वैभव व तद्जनित सुख-सुविधा को 'तजि बटुक की नाईं' अपने आराध्य के शरण मे द्वारिका आ जाने पर मीरा जैसी भक्तिमती नारी की रचना मे विराग और नैराध्य की भावनाओं का मिलना ही अधिक सहज है। अस्तु, गुजराती में पद-रचना असम्भव या असंगत नही प्रतीत होती तथापि अभिव्यक्ति के आधार पर प्राप्त पदो की प्रामाणिकता में सन्देह ही उत्पन्न होता है।

कुछ गुजराती में प्राप्त पदों में 'मीरां के प्रभु गिरधर नागर' 'मीरां के प्रभु गिरधर ना गुण' में भी परिवर्तित हो गया है—बहुत सम्भव है कि गेय-परम्परा ही इसका कारण हो, अस्तु, ऐसे पदो की प्रामाणिकता और भी संदिग्ध है।

भोजपुरी, अवधी, बिहारी आदि विभिन्न बोलियो में भी कुछ पद प्राप्त होते हैं। राजस्थान, ब्रज और द्वारिका से बाहर भी कभी मीरां ने प्रयाण किया हो ऐसा आभास कोई नही मिलता। साधु-समागम के कारण पडे प्रभाव के कारण भी ऐसे इक्के-दुक्के पदो की रचना सम्भव नही। अत. इन पदो को निश्चित रूपेण प्रक्षिप्त कहा जा सकता है।

खडी बोली में प्राप्त कुछ पद भी भाषा की आधुनिकता के आधार पर निश्चित रूपेण प्रक्षिप्त ही कहे जा सकते हैं।

प्रस्तुत संग्रह में बहुत से पदों पर एक ऐसा ★ चिह्न लगा दिया गया है। भाषा और भाव के आधार पर प्रक्षिप्त प्रतीत होनें वाले पदो पर ही यह चिह्न लगाया गया है। जैसाकि ऊपर कहा गया है, बहुत सम्भव कि शेष पदो मे से भी अधिकाश प्रक्षिप्त ही हो, परन्तु उनको प्रक्षिप्त या प्रामाणिक कहने का कोई सुनिश्चित सूत्र अद्यावधि उपलब्ध नही। बहुत सम्भव है कि प्राप्त सामग्री के गहरे अध्ययन के बाद शेष पदों पर भी निश्चयपूर्वक विचार किया जा सके। किसी ऐसे ही प्रामाणिक सग्रह के आधार पर ही मीरा के जीवन-वृत्त को सुनिश्चित् इतिहास का रूप दिया जा सकता है।

किन्तु, भाषा पर यह विचार शबनम जी के अपने 'वृहत्पद सग्रह' के पदो के आधार पर है, अत: इन नये पदो और अनुसंधान में आगे मिलने वाले पदो, सभी को लेकर विचार करना होगा, अन्यथा विचार का आधार अधूरा रहने के कारण निष्कर्ष भी सदोष रहेगा। फलतः डॉ० शेखावत जैसे अन्य प्रयत्न अपेक्षित हैं।

तीसरे महत्त्व की बात स्वयं सिद्ध है कि जब अछूते पद मिलेंगे तो कवयित्री की भाव-सम्पत्ति को समृद्ध करने वाली अछूती भावराशि भी मिलेगी। इस प्रकार मीरां के अब तक उपलब्ध समग्र सामग्री रूप में निश्चय ही एक सवर्धन होगा। कवि की रचना के परिणाम को भी महत्त्व तो है ही, पर उस परिमाण के साथ उसी अनुपात में भाव संवर्द्धन और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। शेखावत को २१६ पद ऐसे मिले है जो अन्यत्र प्रकाश मे नही आ पाये। राजस्थान के ही ग्रथागारो में इतने नये पदो की प्राप्ति स्वय मे ही महत्त्वपूर्ण बात है।

सपादन प्रणाली :

डॉ० शेखावत ने सपादन–प्रणाली के लिए प्रो० ललिताप्रसाद सुकुल से प्रेरणा ग्रहण की है। प्रो० सुकुल ने मोरां स्मृति ग्रथ मे पृ० (न)पर यह सुझाव दिया था कि सम्पादन मे 'मूल' को ज्यो का त्यो ऊपर दिया जाय और संप'दक अपने सुझाव पाद टिप्पणी मे दें। इन्होंने भी पदो का जो रूप हस्तलिखित ग्रथो में मिला है, वह मूल पाठ के रूप मे दिया है। केवल कुछ ऐसे संशोधन ही किये, हैं, जिनसे पद को पढने मे कठिनाई न पड़े - अर्थात् 'लघु - दीर्घ' मात्राओं में त्रुटियो को ठीक किया है, और अन्य वर्तनी दोष भी दूर कर दिये है। अत. बहुत कम सशोधन किये हैं और अपने सुझाव पाद टिप्पणी मे दिये हैं। इन संशोधनो के सुझावो का आधार वह आदर्श है, जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है कि मीरा की भाषा राजस्थानी है।

यद्यपि इसे वैज्ञानिक पाठ नही माना जा सकता, क्योकि वैज्ञानिक पाठालोचन एक जटिल प्रक्रिया है, और विशेष वैज्ञानिक - दक्षता व अध्यवसाय की इसमे अपेक्षा रहती है। इस प्रक्रिया से सम्पादित पाठ की प्रामाणिकता भी स्थापित होती है। साथ ही भाषा का रूप भी प्रामाणिक स्तर पर स्थापित हो जाता है। किन्तु, इसके लिए यह अपेक्षित है कि किसी भी पद के जितने भी पाठ मिलें वे सभी सम्पादक के पास हो। किन्तु,इस समय जो स्थिति है, उससे विदित

होता है कि अब तक के इतने प्रयत्नों के बाद भी अभी सभी पद संकलित नही हो पाये है। लिखित मे भी अभी बहुत खोज शेष है और मुखस्थ या कंठस्थ पदो को संकलित करना भी कितना आवश्यक है। केवल कुछ ही ऐसे पद-८-१० ही अभी सामने आते हैं। यह जब तक नही होता अर्थात् यथासंभव समस्त पद प्रकाश मे नही आते, तब तक वैज्ञानिक पाठशोधन की बात नही की जा सकती। वस्तुत: वैज्ञानिक पाठ शोधन के लिए यह आवश्यक है, हमें पहले मीराँ के पदों के वे रूप, जैसे ग्रथो मे मिले है, या कण्ठ से मिले हैं, यथावत् प्रकाशित रूप मे उपलब्ध हो।

इसके लिए हमें उसी प्रणालो का उपयोग करना होगा जिसका उपयोग डॉ० शेखावत ने किया है। इसे आरंभिक वैज्ञानिक संपादन कह सकते हैं। इसमें सदेह नही कि डॉ० शेखावत ने यह कार्य सावधानी से सपन्न किया है। इस दृष्टि से भी इस संकलन को महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

अनुसधान की दृष्टि से इनमे एक और वैशिष्टय है। संपादक ने प्रत्येक पद का स्रोत भी पाद टिप्पणी मे दे दिया है। कही-कही ग्रन्थ की पृष्ठ सख्या दे दी है। यदि इसमे सग्रहो का लिपि - काल भी दे दिया गया होता तो इसका महत्व और अधिक बढ जाता। किन्तु, इस कमी की पूर्ति उन्होने भूमिका मे पृष्ठ ३ पर स्रोनो का पूरा विवरण देकर कर दिया है। इससे इसकी उपादेयता और भी बढ गयी है।

डॉ० शेखावत ने इस सपादन-कार्य मे प्रवृत्त होने के लिए प्रेरणा देने वाले कुछ विद्वानो के उद्धरण पृ० १५-१६ पर पाद-टिप्पणी मे दिये हैं। उन सभी विद्वानों ने मीरांबाई के पदो के प्रामाणिक पाठ की आवश्यकता पर बल दिया है। प्रेरणाप्रद उद्धरणो से सकेत मिलता है कि डॉ० शेखावत की दृष्टि भी प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने की रही होगी, तभी उक्त उद्धरण उन्हे इस कार्य मे प्रवृत्त होने की प्रेरणा दे सके। यह दृष्टि सचमुच श्लाघनीय थी, पर जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने की प्रक्रिया बहुत जटिल है, और उसे आज वैज्ञानिक स्तर पर पहुँचा दिया गया है। डॉ० शेखावत का यह कार्य 'प्राथमिक वैज्ञानिक' सोपान प्रस्तुत करता है। जैसा उन्होने स्वय स्वीकार किया है, कि अभी वे कई महत्वपूर्ण पुस्तकालयो से सामग्री नही ले पाये है। यह आवश्यक है कि राजस्थान में जितने भी संस्थागत तथा निजी

पुस्तकालय हैं, उन सबसे सामग्री लेकर राजस्थान के क्षेत्र में प्राप्य मीरां के पदो का एक पूर्ण संग्रह प्रस्तुत कर लिया जाय। राजस्थान से ही एक दूसरा संग्रह मौखिक या लोक–परंपरा मे जीवित मीरां के पदो का प्रस्तुत किया जाय। वैज्ञानिक दृष्टि से इस लोक–संकलन में यह आवश्यक होगा कि प्रत्येक पद के क्षेत्रीय रूप भी उसमें हुए परिवर्तनो के साथ दिये जायं। ऐसे ही सग्रह उत्तर–प्रदेश, गुजरात, बगाल, महाराष्ट्र तथा अन्य प्रदेशो से कराये जाय। इन सबके आधार पर पाठालोचन के लिए सामग्री प्रस्तुत की जाय। ऐसे पाठालोचन के लिए स्रोत सामग्री भी अपेक्षित होगी। उसे हम माइक्रोफिल्म आदि यान्त्रिक साधनो से अपने मीराँ सग्रह मे ला सकते है।

डॉ॰ शेखावत की इस सग्रह मे मुख्य दृष्टि यह रही है कि ऐसे पद ही प्रकाशित कराये जायँ जो अछूते है, अभी तक मीरा के सग्रहो मे प्रकाशित नही हो पाये हैं। जैसा हम ऊपर लिख आये हैं, यह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। पद–पाठालोचन के लिए तो जानी–अनजानी समस्त सामग्री अपेक्षित होगी, और उसे हम अब भी उन स्रोतो से पा सकते हैं, जिनका उल्लेख डॉ॰ शेखावत ने भूमिका में कर दिया है। तात्पर्य यही है कि श्री शेखावत के इस शोध–प्रयत्न से प्रामाणिक पाठ तक पहुँचने के लिए एक अच्छा सोपान मिल गया है।

प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने के लिए या तो 'मीरां शोध संस्थान' स्थापित होना चाहिये, जिसमें मीरां विषयक एक संग्रहालय या म्यूजियम भी हो। यह संस्थान समस्त सामग्री एकत्र करे और प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत कराये। या फिर प्राच्य–विद्या प्रतिष्ठान ही इस महत्कार्य के लिए आगे आये। वह अपने प्रतिष्ठान में एक मीरा शोध अभिकरण स्थापित करे, मीरा विषयक समस्त सामग्री एकत्र कराये, मूल रूप में, या माइक्रोफिल्म, फोटो स्टेट, या फोटो प्रतियो के रूप मे और शोधार्थी एव विद्वानो की एक मंडली को प्रामाणिक पाठ प्रस्तुत करने का कार्य सौंपे। आजकल प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ॰ दशरथ शर्मा सूझ–बूझ वाले व्यक्ति हैं और विद्वता में भी अद्वितीय हैं। वे चाहे तो प्रतिष्ठान से यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करा सकते हैं। 'मीरा अभिकरण' प्रतिष्ठान को उनकी स्थायी देन होगी, और सामान्यजन, शोधार्थी तथा विद्वानो को समान रूप से हितकारी होगी।

भूमिका लिखते हुए, कुछ च्युत होकर, मैंने ऊपर कुछ सुझाव दिये है क्योकि मीरा का महत्व सामान्यजन, शोधार्थी और विद्वान सभी के लिए है। मीरां का काव्य सार्वजनीन हित का कार्य है। आधुनिक युग में विदेशों में जो अध्यात्मकेन्द्रित सास्कृतिक विद्रोह या क्रान्ति दिखायी पड़ रही है, उसका मानव के अस्तित्व के अतल तल से घनिष्ठ सबध है। मीरां उस तल में लहराते अध्यात्म सागर को भाव तरगो की गायिका है। यही कारण है कि सहज, सरल भाषा मे निबद्ध लोक मानस की भूमि पर गेय पद सभी के मर्म को छूते और प्रभावित करते है। शब्दो का ऊबड-खाबड रूप, काव्य-तत्वो की स्थूलता, भाषा का प्रकार—कोई भी मीरा की हृदयस्पर्शिता में बाधक नही होता। उसी अतरंगी अध्यात्म के रग के कारण मीरा के पद 'कथ्य' से चमत्कारिक तादात्म्य करा देते है, तभी उनमे नव-नव स्फूर्तिदायक ताजगी मिलती है और लगता है कि सभवतः इन्ही बातो के कारण इतने विशाल साहित्य मे उनसे तुलनीय पद नही मिलते।

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरी न कोई' यह चरण कितना सामान्य, सरल और निष्प्रपंच है। पर, क्या इसमे कुछ ऐसा नही है कि पढ़ते ही और सुनते ही पाठक और श्रोता का, मानवीय अस्तित्व के सहज अध्यात्म से तादात्म्य न हो जाता हो और ढूंढने पर भी किसी कवि मे हमे ऐसा पद नही मिलता। वस्तुत. मीरां के पदो मे 'आस्वाद' नही है, टोना है; और यह टोना भी गजब का है। साहित्य में टोने की बात करना अब से कुछ वर्ष पूर्व उपहास्यास्पद माना जा सकता था। पर, आज जब पाश्चात्य विद्वानो ने इसे मान्यता दे दी है और टोने की चर्चा में वे लगे हुए है, तो हम भी उसका उल्लेख तो कर ही सकते हैं। भारत में तो 'अक्षर' को अक्षर-ब्रह्म और शब्द को 'शब्द ब्रह्म' मानकर बहुत पहले ही भाषा को टोने का आधार मान लिया था 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' में भी इसी टोने की ओर सकेत है। शब्द तो शब्द है, टोने का माध्यम, और अर्थ वस्तु है। जब हम 'घोड़ा' कहते हैं तो अर्थ में 'घोडा' नाम की वस्तु अभिप्रेत होती है, और दोनों में, शब्द और अर्थ में, इस प्रकार अभेद होता है।

पाश्चात्य विद्वानों में कॉलरिज को पहला व्यक्ति बताया जाता है जिसमें 'शब्द और अर्थ' के अभेद के लिए छटपटाहट थी, वह शब्द से अर्थ या, वस्तु का तादात्म्य पाना चाहता था। उसने विलियम गौडविन को २२ सितबर, १८०० के पत्र में लिखा था—

"I wish you to write a book on the power of the words........is thinking impossible without arbitrary 'signs' And how far is the word 'Arbitrary' a misnomer ? Are not words, etc. parts and germinations of the plant ? And what is the law of their growth ? In something of this sort I would endeavour to destroy the old antithesis of Words and Things; elevating, as it were, Words into Things and living things too"

इसका संदर्भ प्रस्तुत करते हुए इस पर जो पाद टिप्पणी दी गयी है वह भी द्रष्टव्य है :

1 Unpublished letters of S. T. Coleridge, ed. E. L Griggs (London, 1932), I 155-6. A few years later Lord Byron voiced much the same aspiration in his Childe Harold.

I do believe
Though I have found them not,
That there may be
Words which are things.

Canto III, Stanza C XIV

और इस 'शब्द तथा वस्तु (अर्थ) के अद्वय का चिंतन बढते-बढते वह स्थिति आयी कि प्रतीकवाद (Symbolism) के पोषको के विविध पक्षो को लेकर जब अनिश्चय का वातावरण बना तो एक परिभाषा यह दी गयी—

'Whether a real school of Symbolism ever existed, remains a problem of speculation.. ... Each poet developed and represented a single aspect of an aesthetic doctrine that was perhaps too vast for one historical group to incorporate ........But more than on any other article of belief the symbolists united with Mallarme in his statements about poetic language. The theory of the suggestiveness of words comes from a belief that a primitive language, half-forgotten, half-living exists in eachman. It is language possessing extraordinary affinities with music and dreams (Mallarme, p 64)

आदिम भाषा आज भी मनुष्य में है, इसीलिए कविता में ऐसी शब्दावली आ जाती है जो अधभूले से, अधजीवा - से होती है। मनुष्य में इस आदिम भाषा के अवशेष के अभिव्यक्त हो पड़ने से आधुनिक काल में 'मिथ' के अस्तित्व को प्रोत्साहन मिला तथा मनुष्य टोने तक पहुँचा गया।

इस टोने के संबंध मे ईट्स (Yeats) ने अपने मैजिक (Magic) नामक निबध में लिखा कि वह उन तीनों सिद्धान्तो में विश्वास करता है, जो किसी भी जादुई आभास या करतब में आधार रूप मे मिलते हैं। ईट्स के शब्दो में वे हैं :—

(1) That the borders of our minds are ever shifting, and that many minds can flow into one another, as it were, and create or reveal a single mind, a single energy.

(ii) That the borders of our memories are as shifting, and that our memories are a part of one great memory, the memory of Nature herself

(iii) That this great mind and great memory can be evoked by symbols

Literary Criticism : A short History मे विम्सेटट तथा ब्रुक्स ने ईट्स के इन सिद्धान्तो का पृ० ५९८-५९९ पर उल्लेख करते हुए पाद टिप्पणी मे बताया है कि Great Mind तथा Great Memory मे जुंग (Jung) के Collective unconscious (सामूहिक अवचेतन) की छाया दिखायी पड़ती है, जिसके साथ जुंग के आर्कीटाइपो (मूलस्थापितो) का भी सबंध है।

इस प्रकार पाश्चात्य आलोचना क्षेत्र मे शब्द और अर्थ के अर्थात् शब्द और वस्तु के अद्वय सम्बन्ध के चिंतन से शब्द प्रतीक (Symbol) के सहारे टोने को मान्यता मिली। अतः हम आज कह सकते हैं कि मीरां के काव्य में टोना (Magic) है। यही कारण है कि श्रोता और पाठक मीरां की शब्दावली से मंत्रविद्ध हो जाता है; किन्तु इस मंत्रविद्धता का मूल वह आदिम भाषा की छाप नही जिसमें शब्द अधभूले और अधजीवा-से होते

हैं और कवि की अभिव्यक्ति को रहस्याभिमंडित कर देते हैं। जब मीरां कहती है कि—

'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरी न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरी पति सोई॥

तो इसमे महामानस (Great Mind) तथा महास्मृति (Great Memory) तो है, और प्रतीक भी है–

मोरमुकुट वाले गिरिधर गोपाल पर भारतीय मानस के लिए मोर मुकुट धारी गिरिधर गोपाल इतना प्रकट है कि उसकी रहस्यमय पक्षता का अर्थ रहते हुए भी नही रहता–पर मीरां का टोना मन्त्रविद्ध अवश्य कर लेता है। वस्तुतः यह टोना ही है जो मीरां के काव्य मे है। एक विद्वान ने बताया है कि "काव्य, धर्म तथा टोने का मूल एक ही है।[५] आगे इनका कथन है कि "मेरा अभिप्राय यह है कि प्राचीनतम काव्य का उदय मंत्रो से हुआ, सशक्त तथा स्तवनीय शब्दो तथा छन्दता से हुआ, जिनके द्वारा मनुष्य अपने स्रष्टा से साक्षात्कार कर सकता था और साथ ही समस्त सृजित पदार्थों के सारतत्व से भी सपर्कित हो सकता था ·  ........." [६]

मीरा के पद इसीलिए टोना हैं कि वे सशक्त और स्तवनीय (evocative) शब्दो मे रचे गये हैं, और उनसे हमें अपने स्रष्टा का, अपने पति का 'गिरधर' नागर' का, साक्षात्कार होता है। किन्तु, शब्दो की सशक्तता की परीक्षा क्या उस समय तक सभव है, जब तक कि पदो की शब्दावलो, उनकी पद-योजना और अर्थाभिव्यक्ति-गतशीलता को उपलब्ध करने का कोई साधन न हो। छन्दता (Rhythm) पर तो हमने अभी विचार आरभ ही किया है, किन्तु, जब तक कि मीरा की समस्त संपदा सुलभ न हो तब तक छन्दता का रहस्योद्घाटन भी असभव ही रहेगा क्योकि मूलतः छन्द और लय का जो रूप काव्य में ढलता होता है वह धरा के छन्द - लय का बीज-मन्त्र होता है।[७] और आगे कामलस के "एनसाइक्लोपीडिया आफ लिटरेचर" मे पोइट्री शीर्षक निबन्ध मे लिखा है कि

'चीन की पवित्र धार्मिक पुस्तको मे यथा लि कि XVII, II (अनुवाद जेम्स लेग्गे) हमें यह पढने को मिलता है कि 'प्राचीन राजा ......., संगीत) को जीवन उत्पादक ऊर्जा के संमजन में ले आये थे–संगीत और काव्य के अभिप्राय तब एक ही थे।

डॉ० हैरीसन उस श्लोक (hymn) के संबंध में, जिसमें से उक्त उद्धरण दिया गया है, कहते है कि "वह देवता जिसकी अभ्यर्थना की जा रही है उपस्थित नही है......उसे आने का आदेश दिया जा रहा है और स्पष्टत: उसका आना.... उसका अस्तित्व भी, उस अनुष्ठान पर निर्भर है जिसके द्वारा वह अभ्यर्थित किया गया है।" अर्थात्, उसका आना और उसका अस्तित्व शब्दों के जादू और छन्दता के जादू पर निर्भर करती है।[८]

मीरा के काव्य का भी मूलाधार शब्द और छन्द का टोना है, तभी तो कृष्ण, मोर-मुकुटधारी गिरधरगोपाल से उनका साक्षात्कार होता है। पर, मीरा के शब्दो और छन्दता की ऊर्जा और शक्ति का अभी अनुसंधान कहाँ हुआ है? और हो कहाँ सकता है, जब तक कि ऐसे-ऐसे संग्रहों के प्रकाशन से मीरां के पदो की समग्र सामग्री अध्ययनार्थ उपलब्ध न हो जाय।

भारत में तो वेद-पूर्वी युग से लेकर मध्ययुग के छोर तक और आधुनिक युग के एक अन्तरंग स्तर पर भी कविता और मन्त्र इस टोने के कारण ही धार्मिक भूमि पर मान्य स्वीकृत हुए। समस्त काव्य में स्रष्टा के साक्षात्कार की आस्था अडिग भाव से विद्यमान है। मीरा में यही परपरा एक वैशिष्ट्य के साथ मिलती है। किन्तु, मीरां का यह वैशिष्ट्य भी समझने के लिए सपूर्ण सामग्री अपेक्षित है। मैंने बार-बार यहाँ इसी बात को दुहराया है कि मीरा के समस्त पदो का सग्रह प्रकाश में लाना अत्यन्त आवश्यक है और इस दिशा में डॉ० शेखावत का यह प्रयत्न श्लाघ्य है। इससे मीरा के समस्त पद तो सामने नही आते, पर अब तक जो सामने नही आ सके थे उनमें से कुछ तो अधिक ही अब इस रूप में उपलब्ध हैं। इस प्रकार मीरा के काव्य की आत्मा तक पहुँचने के लिए कुछ और चरण हमें प्राप्त हो गये हैं। वस्तुत: मीरा के पदो और उनकी भाषा का यह पक्ष अनुसधान की दृष्टि से अछूता है, महत्वपूर्ण भी है। सरल और सहज शब्दावली मे, वह चाहे राजस्थानी रूप में हो, ब्रज-रूप में या गुजराती रुप में तीनो में, समान भाव से मन्त्रविद्ध करने की शक्ति है। यहाँ शब्द-शक्तियो से किसी चमत्कारक अर्थ पर पहुँचने की स्थिति भी नही है।

मीरा के काव्य के समस्त स्वरूप को यथार्थत हृदयगम करने के लिए आवश्यक है कि शीघ्रातिशीघ्र अधिकाधिक पद संकलित कर लिये जायँ और तब शब्द और अर्थ दोनो के शील को समझने का प्रयत्न किया जाय। मीरां भक्त

थी—इसमें कोई सदेह नहीं, पर भक्त तो और इतने कवि और महाकवि रहे हैं, पर उनमें मीरां-सा वैशिष्ट्य कहाँ हैं ? मीरा में रस-परिपारक की प्रवृत्ति कहाँ है ? 'कवित्व' तत्व भी तो नही है किन्तु शब्दार्थ का शील कुछ अद्भुत है यथा—

म्हानें चाकर राखो जी
चाकर रहस्यू वाग लगास्यू

यहाँ कुछ विद्वानो के उद्धरण देना समीचीन होगा। इनसे इस समस्या का रूप कुछ और अधिक समझ में आ सकेगा।

प्रो० शभुसिह मनोहर ने 'मीरा पदावली' में पृ० ५३ पर लिखा है कि "मोरा की प्रेमानुभूति तो सर्वथा अनिर्वच है, जैसा कि देवर्षि नारद ने कहा भी है—

'अनिर्वचनीयं प्रेम स्वरुप ॥५१॥ मूकास्वादनवत् ॥५२॥ शब्दों में न उसके प्रेमोन्माद को व्यक्त करने की शक्ति है, न उसके विरह को थाह लेने को सामर्थ्य।'

आगे पृष्ठ ५५-५६ पर वे लिखते हैं :—

"मीरां सचमुच प्रेमोन्मादिनी थी। कृष्ण के दिव्य और अलौकिक प्रेमोन्माद में डूबी हुई। उस प्रेमोन्मादिनी का वह कैसा अपूर्व प्रेमोन्माद था कि श्याम के ध्यान में तन्मय होने पर वह अपनी सुध-बुध खो बैठनी थी। अपने सर्वान्त.करण से प्रियतम के चरणो में समर्पित हुई मीरा तब हर्ष-विभोर ह नाच उठती थी—

पग घुंघरू बांध मीरां नाची रे।
मैं तो मेरे नारायण की हो गई आपहि दासी रे,
लोग कहैं मीरा भई बावरी न्यात कहे कुलनासी रे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सहज मिलो अविनासी रे।

उक्त नृत्य की एक-एक ताल पर शत-शत कैवल्य न्यौछावर होते थे। नूपुरों की एक-एक झंकार पर भक्ति की अनन्त सम्पदाएं चरणो में लोटती थीं, उस प्रेमदीवानी के मृत्युञ्जयो अधरों के स्पर्श से जीवन का गरल भी अमृत बन गया था। भगवती पार्वती की भांति उस प्रेमोन्मादिनी का वह प्रणय-लास्य भी कुछ ऐसा ही अपूर्व था।"

फिर ७८ - ७९ पृष्ठों पर यह कथन द्रष्टव्य है :—

"मीरां के काव्य में हमारी इसी लोकपरक सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष है जो समस्त प्रतिक्रियावादी मान्यताओं एव वर्ग-भेद-जन्य दुराग्रहो का प्रतिकार करती हुई जाति तथा जगजीवन के साथ एक रूप हो गई है—

"सासू अमारी सुषमणारे, सासरो प्रेम सन्तोष।
जेठ जग-जीवन जगत माँ, म्हारो नावलियो निर्दोष ॥"

प्रो० देशराजसिंह भाटी की पुस्तक "मीराँबाई और उनकी पदावली" के निम्नलिखित उद्धरण भी द्रष्टव्य हैं :—

"मीराँ की प्रेम-साधना मे शास्त्रीय परिभाषाओ के अनुसार स्वरूप और वर्ग तो मिलते ही हैं, साथ ही इसमें हृदय की जो सहज मंजुल-धारा अजस्र प्रवाह से प्रवाहित है, वह मीरा काव्य की अपनी निजी विशेषता है। इस प्रसग मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के ये शब्द उल्लेखनीय है :

"कबीर ने भी 'राम की बहुरिया' बनकर अपने प्रेमभाव की व्यंजना की है, पर 'माधुर्य भाव' की जैसी व्यजना स्त्री-भक्तो द्वारा हुई है, वैसी पुरुष-भक्तों द्वारा न हुई है, न हो सकती है। पुरुषो के मुख से वह अभिनय के रूप में प्रतीत होती है। उसमें वैसा स्वाभाविक भोलापन, वैसी मार्मिकता और कोमलता आ नही सकती। पति-प्रेम के रूप मे ढले हुए भक्तिरस मे मीराँ की संगीत-धारा में जो दिव्य माधुर्य घोला है, वह भावुक हृदयो को और कही शायद ही मिले।" [९]

"नि० कहा जा सकता है कि मीरां की वेदनानुभूति अत्यन्त उदात्त, परिष्कृत और भावमयी है। प्रो० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल के शब्दों मे—

"....................मीरा की वेदना मे एक शोधक प्रभाव (Purifying effect) है। उसके गीतो को पढकर, सुनकर हम भीतर-भीतर एक आन्तरिक ठहराव, एक जीवन स्थिरता और प्रवृत्ति का मांगलीकरण अनुभव करते हैं। प्रेम की यातना हृदय को द्रष्टा और स्रष्टा दोनो बना देती हैं। श्रीमती ब्राउनिंग के शब्दो मे We learn in suffering what we teach in songs. [१०]

"अन्ततः कहा जा सकता है कि मीरां की रसयोजना बहुत ही सफल और मार्मिक है। यद्यपि मीरां का ध्यान इस योजना की ओर बिल्कुल नही था, तथापि यह सत्य है कि महती भावनाएं स्वतः योजनाबद्ध होती हैं। इसीलिए

मीरां की रस–योजना में, जहाँ एक ओर हृदय की सच्ची तथा-यथार्थ अनुभूतियाँ मिलती है,वहाँ दूसरी ओर यह काव्य-शास्त्र के निष्कर्ष पर भी खरी उतरती है।'

'इस प्रसंग मे प्रो० रामेश्वरप्रसाद शुक्ल के ये शब्द उल्लेखनीय हैं'–

"मीरां की वेदना युग-युग से प्रियतम से बिछडी हुई प्रीतिदग्ध-प्रणयानुकूल आत्मा की वेदना है। वह अपने को आराध्य की जन्म-जन्म की दासी समझती है और सर्वस्व-समर्पण, जो प्रेम का प्राण है, उसके गीत–गीत मे मन के सम्पूर्ण आवेग के साथ उच्छ्वसित हुआ है। प्रत्येक घडी, प्रत्येक क्षण उसके सामने प्रिय का रूप मंडराया करता है। इष्टदेव के दर्शन की ऐसी तीव्र लालसा, मिलन की ऐसी परिपूर्ण तृष्णा, कामना की ऐसी अविनाशी आग, कम से कम हिन्दी के अन्य किसी कवि मे नही पाई जाती।"

'डॉ० रामधारीसिंह दिनकर ने 'सस्कृति के चार अध्याय' (पृ० ४३४-४३५) मे लिखा है, 'प्रेम-पीर' की यही नयी भगिमा हम मीराबाई मे भी देखते है। अवश्य ही, दर्द की यह नयी अदा, विरह-वेदना का यह नया रूप उन्हे कबीर की ही परम्परा से मिला होगा। किन्तु, दूर पर, कबीर और मीरा की इन बेचैनियो के पीछे कही–न–कही, फारस के सूफियो की वेदना का हाथ था, इस अनुमान का खडन नही किया जा सकता।

है री, मे तो दरद की मारी दीवानी रे,<br>
मेरा दरद न जाने कोय।

अथवा

काढि करेजी मैं धरूँ रे, कागा, तू ले जाइ।<br>
ज्याँ देसाँ मेरा पिउ बसे रे, वे देखे, तू खाइ॥

अथवा

घायल ज्यूँ घूमूँ सदा री, म्हारी व्यथा न बूझै कोइ।

"इन पक्तियो मे विरह का जो रूप है, उसकी परम्परा न तो मेघदूत में मिलेगी, न माघ, श्री हर्ष और भवभूति मे। यहाँ तक कि विरह की इस वेदना का आभास हाल और गोवर्धनाचार्य की सप्त-शतियो मे भी नही हैं। सम्भव है, दर्द की यह तर्ज लोक गीतो से उठकर साहित्य के धरातल पर पहुची हो, किन्तु, तब भी यह विदेशियो के ही साथ इस देश मे पहुँची होगी।"

इन सभी उद्धरणो मे मीरां के काव्य के transcendental प्रकृति का पता चलता है। उनकी उस मनोभूमि का भी ज्ञान होता है, जिस पर वे सामान्य मानस से सामूहिक मानस (Collective unconscious) अथवा ईट्स के महामानस और महा स्मृति के क्षेत्र मे सीमा रहित विचरण करती हैं।

किन्तु, इन सबके मर्म को समझने के लिए शब्द और अर्थ के शील को भली प्रकार समझना होगा।

पाश्चात्य कवि बायरन (Byron) ने लिखा कि–

'मैं विश्वास करता हूँ कि ऐसे शब्द हैं जो वस्तु हैं—यद्यपि मेरा इनसे अभी साक्षात्कार नहीं हुआ है।' पर जब मीरां के पदो को पढ़ते है तो लगता है कि उन्हें 'शब्द' गिरधर नागर के साथ साक्षात् गिरधर नागर मिल रहे हैं 'मेरे तो गिरधर गोपाल जाके सिर मोर मुकुट' जैसे इन शब्दों के साथ शब्दगत वस्तु का साक्षात्कार हो रहा है। वही टोना है। मीरां के पद, मंत्र हैं। मीरां के लिए भी ये मंत्र थे, और पाठकों के लिए भी सदा-सर्वदा के लिए ये मंत्र रहेगे। उनमें शब्द - शक्ति, रस तथा अन्य साहित्यिक अध्ययन आरोपित ही रहेगे।

किन्तु, यह तो बहुत स्थूल निरूपण है। मीरां के शब्द+अर्थ के शील को जानने और उसे विश्लेषण पूर्वक हृदयंगम करने के लिए समस्त पदों का संग्रह पहली आवश्यकता होगी। उस दिशा मे यह भी एक श्लाघ्य प्रयत्न है। मुझे विश्वास है कि इस प्रयत्न का स्वागत होगा।

पाद टिप्पणियां—

(१) इन्होने इसका ब्यौरा यों दिया है : कुल पद संख्या—३७२
अप्रकाशित पद—२१६
राग रागिनी वाले पद —५०
पूर्व प्रकाशित पदो से भाव साम्य रखने वाले पद—४८
पूर्व प्रकाशित पदों से अंशत: साम्य रखने वाले पद—४८
परिशिष्ट—अप्रकाशित मूल पदो के १० पाठान्तर

(२) अपने संग्रह के संबंध में स्वयं पुरोहित जी ने बताया है कि मैंने परिश्रम और खोज के साथ ही (संग्रह) किया है। '(क) मेड़ते जाकर

सामग्री एकत्र की (ख) बडी रूपाहेली के स्व० ठाकुरसाहब चतुर-सिंहजी से (ग)बदनोराधीश गोपाल सिंहजी से, ये दोनो ठाकुरसाहब भी मीरांबाई के मेडतिया कुल के वंशज थे। (घ) मेडता के अन्य लोगो से (ङ) कलकत्ते वाले बाबू अनाथदास से (च) मीराबाई सबधी बहुत से लिखित तथा मुद्रित पुस्तको से सामग्री ली है।'

पुरोहितजी ने पदो के नीचे उनके स्रोत का उल्लेख सकेताक्षरो मे किया है, पर उन सकेताक्षरो से क्या अभिप्राय है इसका पता नही चलता। क्योकि पुस्तक मे भी इनकी कुंजी नही दी। यहा हम सकेताक्षरो मे ही उनके स्रोतो का उल्लेख किये देते हैं, जो इस प्रकार है—

१. सं० या—सं० रा० के से।
२. वृ० रा० र० पृ०।
३. आ० सा०-भा०।
४. मी० ली० दी० ना० पत्र।
५. मी० ली० स० मा०।
६ सूर्य नारायणजी दाधीच।
७, पु० ना० वा०।
८. व० पु० (बगाली पुस्तक)
९ दीना० म० मी० प०।
१०. मी० प० जमा० राम०।
११. प्रभु नारायणजी का गुटका।
१२. मीरा पदावली वि० कु०।
१३. क० व०।
१४ राम स० गु० (राम स्नेही गुटका)
१५, भजन मजरी।
१६ का० गु०।
१७. मीरां की प्रेमवाणी।
१८. स० मा० मी० ली० (सरस माधुरी मीरां)
१९ मी० ल० ० दूधू।
२०. आ० म०।

२१. गोपीराम ब्रजवासी से प्राप्त ।
२२. हरि नारायणजी की पु० ह० ।
२३. का० दो० ( काव्य दोहन गुटका )
२४. मंजु पदावली ।
२५. नवनिधि कुँवर बाईजी से प्राप्त ।
२६. वृ० भ० र० ( भजन रत्नावली )
२७. का० ह० नं० १ ।
२८. भजन स० भा० ।
२९. हस्तलिखित पद मुक्तावला ।
३०. मीरां वा० ज० च० ।
३१. ब्रजनिधि ग्रन्थावली ।
३२. मीराँबाई के भजन ।
३३. रास पद सग्रह ।
३४. मीराँबाई का जीवन चरित्र ( मु० देवीप्रसाद ) ।
३५ मीराँ मदाकिनी ।
३६ पु० नाथू नारायणजी की पुस्तक ।
३७. मीराँबाई–हिन्दी पुस्तकालय,मथुरा ।
३८. भक्त-चरितावली ।
३९ प्रहला० भ० पा० ।
४०. नारायणदास नटवाने ( ना० दा० जी० पद संग्रह )
४१. मीराँ जी० का० प्र० जी० ।
४२. वि० भू० पु० ।

इससे प्रकट होता है कि पुरोहितजी ने ४२ स्रोतो से यह सामग्री छाँट कर इस संग्रह में रखी । यह भी स्पष्ट है इन बयालीस स्रोतों से, उनमे उपलब्ध मीराँ के सभी पद उन्होने नही लिए । किसी कसौटी के आधार पर ही ये पद छाँटे गये हैं—वह कसौटी ऐसी रही होगी जिसके आधार पर वे यह कह सके कि ये मीराँबाई के ही पद हैं और प्रामाणिक हैं । डॉ० फतहसिंह ने प्रकाशकीय में सूचित किया है कि—"भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण वहुरा के कथनानुसार पुरोहितजी ने पदो की प्रामाणिकता के लिए कोई कसौटी भी निर्धारित की थी

जो उनके सुपुत्र श्री रामगोपालजी पुरोहित ने स्वर्गीय पिता द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थो तथा मीराँ से सम्बन्धित सभी सामग्री के साथ हमारे प्रतिष्ठान को भेंट कर दी थी। खेद है कि अब कसौटी हमें उपलब्ध नही है।"

खेद है वह कसौटी नही रही, पर पुरोहितजी के द्वारा प्रसारित ये प्रामाणिक पद इस संग्रह मे उपलब्ध है। इसलिए यह प्रथम भाग भी वहुत महत्वपूर्ण देन हैं।

(३) प्रो० शम्भुसिंह मनोहर ने निम्नलिखित मीराँ के पद - संग्रहो का उल्लेख किया है, अपनी मीराँ पदावली मे —

१. मीराँबाई और उनकी पदावली—देशराजसिंह भाटी।
२. मीराँ स्मृति ग्रन्थ- -वंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता।
३. मीराँ मन्दाकिनी - नरोत्तम स्वामी।
४. मीराँ माधुरी— व्रजरत्नदास।
५. मीराँ, जीवनी और काव्य- -महावीरसिंह गहलोत।
६. मीराँ, सहजो और दयावाई—वियोगी हरि।
७. मीराँ पदावली—-विष्णुकुमारी मजु।
८ मीराँ पदावली —परशुराम चतुर्वेदी।
९. मीराँ वृहत् पद संग्रह—पद्मावती शबनम।
१०. मीराँ वाई—डॉ० श्रीकृष्णलाल।
११ मीराँ और उनकी प्रेमवाणी—ज्ञानचन्द्र जैन।
१२. मीराँ सुधा-सिन्धु—स्वामी आनन्द स्वरूप।
१३. मीराँबाई नी भजनो (गुज०) हरसिद्धभाई जभाई दिवेटिया।
१४ वृहत् काव्य दोहन (गुज०) (भाग १, , ५, ६, ७)।
१५ मीराँवाई का काव्य—मुरलीधर श्रीवास्तव

इस सूची मे प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित मीराँ वृहत्पदावली भाग १ का उल्लेख नही। तव तक इसका प्रकाशन नही हुआ था।

जिन प्रकाशित संग्रहो का उल्लेख ऊपर हुआ है उनके अतिरिक्त भी अन्य संग्रह हो सकते हैं, जिनका उल्लेख न हो पाया हो। इन पदावलियो पर प्रो० शंभुसिंह मनोहर ने अपना अभिमत यो दिया है :

"इस संबंध में, जैसा कि डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने लिखा है–'पदावलियों के सम्पादकों में केवल तीन विद्वानो ने हस्तलिखित प्रतियों के आधार की बातें कही हैं। ये है श्री नरोत्तमदास स्वामी, श्री उदयसिंह भटनागर तथा श्री ललिता-प्रसाद सुकुल। (डॉ० हीरालाल माहेश्वरी - राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० ३२२) इनमे से डॉ० हीरालाल माहेश्वरी तथा उनसे सहमत होते हुए प्रो० शम्भुसिंह मनोहर, आचार्य नरोत्तम स्वामी के संग्रह को अधिक प्रामाणिक मानते हैं, क्योंकि उनका पाठ किसी प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ के आधार पर सपादित हुआ है। डॉ० माहेश्वरी ने प्रो० सुकुल के पाठ की सतर्क, सोदाहरण किन्तु कटु आलोचना की है।

ऊपर जिन १५ संग्रहों का नाम दिया गया है, उनमे तीन दृष्टियाँ मिलती हैं: (अ) एक है-छात्रोपयोगी या पाठ्यक्रम मे रखवाये जाने की दृष्टि से तैयार किये गये संग्रह (आ) भक्तों के उपयोग के लिए प्रस्तुत किये गये संग्रह, तथा (इ) मीरां पर शोध की दृष्टि से संग्रह।

(४) उत्तर प्रदेश मे फतहपुर की यात्रा पर मैं हस्तलेखो की खोज मे गया था। वहाँ जिला नियोजन अधिकारी थे कैप्टेन शूरवीर सिंह जिन्हे साहित्य और शोध मे बहुत रुचि थी। उन्होने अपना बहुमूल्य समय देकर अपने वाहन मे ही मुझे कई स्थानो की यात्रा करायी थी। इनमे एक स्थान था 'शिवराजपुर'। यहाँ एक सज्जन के पास मीरा के पदो के संग्रह का एक हस्तलिखित ग्रथ बहुत पुराना बताया जाता था। कैप्टेन साहब ने बताया कि इस सग्रह मे मीरा के सर्वाधिक पद हैं। जब हम गये तो उस घर मे ताला पडा हुआ था। अतः ग्रथ के दर्शन नही कर पाये। मैं समझता हूँ कि यह सग्रह और इसी प्रकार के अन्य बहुत से संग्रह अब भी अछूते हैं। शिवराजपुर मे मीरा की बहुत प्रतिष्ठा है। यहाँ एक भव्य मंदिर मे 'गिरधर गोपाल' की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा है। यह कहा जाता है कि यात्रा करते हुए मीरा यहाँ आयी थी, और ये 'गिरधर गोपाल' यही स्थापित होने के लिए मचल उठे। तो मीरा जी ने उन्हे यही पधरा दिया।

मीरा की कई मूर्तियो का विवरण स्व० पुरोहित जी ने 'मीरांवृहत्पद सग्रह'-भाग-१ की भूमिका में दिया है। किन्तु, इस मूर्ति का कही कोई उल्लेख नही। यह स्वयं में अनुसधान का एक विषय है।

पर, इस विवरण से यह बात प्रकट होती है, 'मीरां' पर शोध के लिए अभी कितने ही क्षेत्र अछूते पड़े है।

(५) The root of poetry, religion and magic were the same. (P. 423)

(६) I mean that the earliest poetry arose from incantation, from the use of powerful and evocative words and rhythms, by means of which man could come into communication with his creator and with the essence of all created things........(P. 423)

(७) Man believed that by the use of certain rhythms he might obtain a power over rhythms of the earth the budding, growing and reproduction (P. 423)

(८) In the sacred books of China, for instance in the Li. Ki, XVII, ii (tr. James Legge), we read that 'the ancient Kings........brought (music) into harmony with the energy that produces life'. The purposes of music and of poetry were then one.

Dr. Harrison says of the hymn from which the above quotation is taken, 'The God invoked is not present............ He is bidden to come and apparently his coming........his very existence, depends on the ritual that invokes him'. In other, words, his coming and his existence depend on the magic of words and the magic of rhythms.

(5 - 8 from Cassell's Encyclopaedia of Literature Vol I. pp. 423 - 424)

(९) मीरा की प्रेम-साधना - प्रस्तावना पृ० २

(१०) मीरां स्मृति ग्रंथ पृ० १३७

## —संदर्भ ग्रंथ—


१. Literary Criticism : A short history—William K. Wimsatt, & Cleanth Brooks.
२. Cassell's, Encyclopaedia of Literature (Vol I).
३. मीरा वृहत्पदावली (प्रथम भाग)—सं स्व. पुरोहित हरिनारायणजी
४. मीरा पदावली—प्रो. शभुसिंह मनोहर
५. मीरां वृहत् पद सग्रह—पद्मावती शबनम
६. मीराबाई और उनकी पदावली—देशराजसिंह भाटी
७. राजस्थानी भाषा और साहित्य—डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
८. संस्कृति के चार अध्याय—डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'
९. मीरां की प्रेम साधना—भुवनेश्वर मिश्र 'माधव'
१०. मीरा स्मृति ग्रंथ—बगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता



सत्येन्द्र
निदेशक
राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी
जयपुर—४

# मीरां-बृहत्पदावली

## द्वितीय भाग

### १

अपना प्रभूजी की वाट री ॥
मैं कुण न भेजू ॥
नैनन की मुसलात[1] ॥
आपन जाय दुवारका मे छाये ॥
झूठी लख[2] दे पातरी ॥
मोर मुकट पीतामर[3] सौहै ॥
सोधै[4] भीनी गात री ॥
वृंदावन की कुंज गली मे ॥
दरसन[5] भई सुनाथ री ॥
मीरा[6] के प्रभू गिरधर नागर ॥
आनि मिले सुप्रभात री ॥ १ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२, पत्राङ्क-१७२

---

सं० पाठ १- १. कुसलात । २. लिख । ३. पीताम्बर । ४ सौंधं । ५. दरसण । ६. मीरां ।

२

अपराधी तैं राम न जान्यो रे
हारा सौ तन छाडि[1] कै रस मो विश्व छान्यौ रे ॥ १ ॥
जठरागिनि तैं काढि[2] के वाहर ने आन्यो रे
उहा तैं आयौ कौल कर इहा विसरान्यौ[3] रे ॥ २ ॥
मात पिता सुध[4] वधवा[5] इन सौ मन मान्यौ रे
मीरा प्रभु[6] गिरधर विना कोउ लष[8] सयान्यो रे ॥ ३ ॥

३

अब मारा[1] गोकल[2] का विहारी[3] जीस्या[4] ॥ ठाकुर ना जाणू कद आसी ॥ टेर ॥
प्रभू जी छोड्या पीयर ओर सासरो ॥ जाय वसाई कासी ॥
मेवाडा[5] को मुख नही देखु[6] ॥ हरी दरसण की प्यासी ॥ १ ॥
अटकी नाव सममदे[7] वीच[8] वेडा[9] ॥ प्रभूजी पार लगासी ॥
मीरा को ना कछू नही वीगडो[10] ॥ वीडज[11] रावलो[12] जासी ॥ २ ॥
प्याला मे वीष[13] घोल[14] दीया[15] है ॥ पीया है नीज दामी[16] ॥
कर चरणामत पी गई मीरा ॥ हो गई चद्रकला-सी[17] ॥ ३ ॥
सब सतन ने देखत मीरा ॥ हरी को नाम समासी ॥
मीरा के प्रभू अवीनासी[18] ॥ राणा जी पीसतासी[19] ॥ ४ ॥

---

१. सत साहित्य सगम बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।
२. अनूप स० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से उद्धृत।

---

स० पाठ २- १. छाड़ि। २. काढि। ३. विसरान्यौ। ४. सुत। ५. बाधव। ६. प्रभू। ७ गिरधर। ८. लख।

" " ३- १ म्हारा। २. गोकळ, गोकुल। ३. विहारी। ४. जिस्या। ५. मेवाडा। ६ देखू। ७. समद, समद। ८. बिच। ९ बेडा। १०. बिगड्यो। ११. बिड्द। १२. रावळो। १३. बिख। १४. घोळ। १५ दिया। १६. निजदामी। १७ चद्रकळासी। १८. अविनासी। १९. पिछतासी।

अव तो बुढापो आयो ये ।। टेर ।।
बालपणु[1] हस खेल गमायो मात पिता भुलरायो ऐ ।। १ ।।
भरतौ जोर्बन माही[2] काम कमायो रे लालैच[3] मै[4] लपटायो ऐ ।। २ ।।
बीरध भयो जदि चेत्या[5] व्यापी रे सीस धूजण ने थायो ऐ ।। ३ ।।
बेटा तो बहू थारी कांण नै मानै रे डोला सू ठुकरायो ऐ ।। ४ ।।
मीरा[6] कहै[7] प्रभु[8] गीरधर[9] नागर गोमद[10] कबुऐ[11] न गायो ऐ ।। ५ ।।

५

अब मोसू बोलौ म्हारा सैन ।।
तुम बोल्या[1] विनि जीवडो दुखत होइ ।।
सुख नाही[2] म्हांरै चैन ।। टेक ।।
काजर भरि भरि बदन बिगरि गयौ ।।
चखरातर भरि नैन ।।
ऊभी ठाडी[3] अरज करत हू ।।
अरज करत भई रैनि[4] ।।
सुकल रैनि मै[5] सेभ सवारी ।।
कब र पधारौ[6] सुख दैन ।।
मीरां के प्रभू मोहन पधारे ।।
अंग मिलासे[7] दोऊ नैन ।। १ ।।

---

१. सत सा० स० बीकानेर के ह० लि० ग्र० से ।
२ भार० वि० मं० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से ।

---

स० पाठ ४- १. बालपणो । २. माही । ३. लालच । ४. मे । ५ चिंता, चेतना । ६. मीरां । ७. कहे । ८. प्रभू । ९. गिरधर । १०. गोविंद । ११ कबहूं ।
" " ५- १. बोल्या । २. नांही । ३. ठाढी । ४. रैन । ५. मे ६. पधारो । ७. विलासे ।

६

राग खंबायची

अब माने[1] गुढण दे मोरी माय।
भव भव मे मै[2] गऊ चराई
थाके[3] लाका[4] पाय[5] ॥ १ ॥
प्रात समै मैं कर कलेवो
चारण जासु[6] गाय ॥ २ ॥
मीरा[7] के प्रभु[8] गिरधर नागर
लीयो है उर लपटाय ॥ ३ ॥

७

अरी हों तो याही उमाहै[1] लागि रही री।
कबऊन[2] पिय मो सौं[3] प्रेम जनायौ[4]।
कबहून[5] हसि[6] मोरी बहियां गही री।
अब कैसें जीवन बनें मोरी आली।
कबहून पिय मो सौं जीय की कही री।
मीरा के प्रभु[7] गिरधर नागर।
कोन[8] चूक मोहि माहि लही री ॥ १ ॥

---

१ अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. राज० शो० स० चौपासनी, जोधपुरके ह० लि० ग्रं० सं० १०६७, पत्रांङ्क-६३

---

स० पाठ ६- १ म्हांनें। २. मैं। ३. थांकै। ४ लागां, लागूं। ५. पांय। ६. जास्यूं। ७. मीरां। ८. प्रभू।

„ „ ७- १. उमाहो। २ कबहून। ३ सौं। ४. जणायो। ५. कबहूंन। ६. हंसि। ७ प्रभू। ८. कौन, कवण।

८

अरियां[1] नि मानी सुनि नि अमा।
मनमोहन दे रूप लुभानी।
साढी गल नेक नाही मांनी।
लोकां डर छपक छिपावा।
भरि भरि आवत पानी।
लाली लखि लखि लूका लावैं।
तकि तकि दै हमुनैं[2] ताना।
मैं भी जीती लाज न कीती।
ओर न दिल बिचि आनी।
मीरा प्रभु[3] गिरधर गल साढी।
ढपी छपी सब जानी ॥ १ ॥

९

अरी आली तू उठी लालन कै
अंग संग बिछुरी[1] मांग अलकैं
छुटी कानन कौ कुटिल बिराजत
मुकट मणिल सकल बन उलटी
छवि सो मुक्तमाल लर[2] तूटी[3]
आप रंगीली सारी कुचन मैं[4] अतिभारी
अैसी बनी मानौ[5] बीरबहोटी
मीरा[6] प्रभु[7] पै अनत तैं सतिमानी
कामत पती बिरहा लूटी

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्र० स० १०६७, पत्राङ्क ३३
२. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्र० स० १०६७, पत्राङ्क-८२

---

स० पाठ ८- १ अखिया। २. दे हमुनैं। ३ प्रभू।
" " ९- १ बिछुडी। २. लड। ३. टूटी। ४. मे। ५. मांनो। ६. मीरा। ७. प्रभू।

१०

अलवता मे[1] कही नार बरो छु[2] जी व्रजराज बडी मु[3]
कवकी नार वडो[4] सू जो धीनानात[5] बडी सु
सब गोपीअह्ल[6] सु लाला हस[7] हस बोलोह[8]
मे[9] कई[10] नार वरी[11] छु[12] जी धीनानात बडी छु ॥ १ ॥
मव गोपीअया[13] मोतीअन की माला मैं तो हीर कणेरी जी
वाजराज[14] वडी सु कवकी नार वडी सु जी
धीनानात वडी सु जी ॥ २ ॥
सव गोपया[15] तो लाला चपला[16] री कलिअचा[17]
हम नो फूल गुलाबी जी बरजराज वडी सु
धीनानात वडी मु जी ॥ ३ ॥
मारो[18] तो घेणो[19] सगलो[20] जागी गोधन जासी प्यारो
वरजराज वडी सू जी कबको नार वडी सु जी
धीनानात बडी सू जी ॥ ४ ॥
मीरावाई[21] के प्रभु[22] गरधर[23] नागर हरी चरण चत[24] लगोजी
व्रजराज वडी सु कवकी नार बडी सु जी
धीनानात वडी सु जी ॥ ५ ॥

११

असल फकीरी रुडी[1] है थारी[2] वैरागो[3] रामा ॥ टेक ॥
भिज्ञा[3] घाल्या लेवो नाही टुकडा[4] मे[5] सबुरी[6] हो ॥ १ ॥
आसण मार इकत छेय वैठा[8] छाड[9] दई दलगीरी हो ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु[10] गिरधर नागर जोग जुगत सब जांणी हो ॥ ३ ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं०–३४६२२, पत्रांक–१०-११
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४३, पत्रांक–३३

---

स० पाठ १०- १. में। २ वडी छू। ३. सू। ४. (क) वडी (ख) खडी। ५ दीनानाथ। ६. गोर्प्यां। ७. हंस। ८. वोलो। ९ में। १०. कहीं। ११ (क) बुरी (ख) चडी। १२ छूं। १३. गोप्या। १४. व्रजराज। १५ गोप्या। १६. चपला। १७ कळिया। १८ म्हारो। १९ गेहणे। २०. सगळो। २१. मीरांवाई। २२. प्रभू। २३ गिरधर। २४. चित।
,, ११- १. रूडी। २ थारी। ३ भिक्षा। ४. टुकड़ा। ५ में। ६ सबुरी। ७ छे। ८ वैठा। ९ छोड़े। १० प्रभू।

## १२

अहीर को प्यारो प्यारो री माई सावरो[1] ।
मै दधि बेचन जात वृदावन[2] ॥ छीन लयो दधि सावरो[3] री ।
येक[4] नाचत येक मृदग[5] वजावत[6] ॥ येक गावत दे दे तारी रे ॥
वृदावन की कुज गलीन[7] मै[8] ॥ सेस गोपी यक-कान कानो री ॥
वृदावन मै[9] रास रच्यौ है ॥ नरत करै गिरधर धारो री ॥
मीरा[10] के प्रभु[11] गिरधारी नागर ॥ हरि चरना[12] चित मेरो मेरो री माई॥ १ ॥

## १३

अहो मेरे प्रीतम नाहै के तुम भले आव नही ॥
अहो तेरी सुरति[1] की वलिजाउ[2] के दरस दीखावना हो ॥
आयो है सावन[3] मास कै[4] मोर मलारिया हो ।
अहो लाल चात्रग टेर सुनाहै[5] वरसे लाईया हो रे ॥
चात्रग जीहा जाय मेरा साईया[6] ॥
अहो लाल कागद लिखी भेजो पीया रे पीव न हो ॥
निम दिन रहन हो[7] कुसाल सदा सुख जीवना ॥
अहो लाल जैन[8] मीरा[9] वलजाहू[10] येता हठ कु[11] कीया हो ॥ १ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १८६०, पत्राङ्क-४३
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १८६०, पत्राङ्क-१७३

---

स० पाठ १२- १. सावरो । २ व्रदावन । ३ सावरो । ४ एक । ५ म्रदग । ६. वजावत । ७. गलिन । ८ मे । ९ मे । १०. मीरां । ११. प्रभू । १२. चरणा ।
" " १३- १ सुरत । २. वलिजाऊ । ३ सावण । ४. के । ५ सुनाए । ६ सांईया । ७ हो ८. जन । ९. मीरा । १० वलिजाऊ । ११. यमू ।

१४

अहो प्यारे वासुरी नेक सुनाई हो।
वृ दावन की कुज मे[1] नेक देखि दिखाई।
आव हौ[2] हम विरहनि[3] व्याकुल[4] भई।
हमरी वेद न जाय हौ।
या वेदन कौ[5] वैद वासुरी।
गिरधर लाल वजाय हौ।
जा पर क्रपा[6] करौ[7] नदन।
ताकै सदाइ सहाय हौ।
मोहन मूरति नवल किशोरी।
दासी मीरा वलि जाय हौ॥ १॥

१५

आज रगीली रेण प्रीतम पावणा हो राज॥ टेर॥
तन सनगारु[1] सेज सवारु[2]॥ अजन सारु[3] धन वारु[4]।
स्याम सुदर तन धारु[5]॥ लेसू भावना माराज[6]॥ १॥
फले मनोहर[7] मन मन फूले॥ सदा सुवाग पटल तुख डुले॥
सब दुख भूले॥ फूले[8] करसु[9] वदावना[10] हो राज॥ २॥
सुणे[11] सखीरी[12] भाग हमारो॥ वर पायो ब्रजराज दुलारो।
नख पर गीखर[13] धारे॥ वसी वजावणा॥ ३॥
जनम जनम की पीड[14] मोटाड़ी[15]॥ अपनी कर लीनी चरनाही॥
मीरा[16] हरी मन भाडी॥ मगल[17] गावना[18] हो राज॥ ४॥

---

१ रा० शो० म० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०६७, पत्राङ्क ११-१२
२ अनूप स० ला० लालगढ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७० से।

---

स० पाठ १४- १. मे। २ हो। ३ विरहणी। ४. व्याकुळ। ५. को। ६. कृपा ७. करो।
,, ,, १५- १. सिणगारु। २. सवारु। ३ सारु। ४. वारु। ५. धारु। ६ महाराज।
७ मनोरथ। ८ फूले। ९. करसु। १०. बधावना। ११ सखीरी।
१२. सुणे। १३ गिरधर। १४. पीड। १५. मिटाड़ी। १६ मीरा।
१७ मगल। १८. गावणा।

१६

आज तो माई सांवरा ने वसरी[1] वजाई[2] है ॥ टेर ॥
सुण मुरली की ताना ॥ सुनी आका[3] सुटीधाना ॥
सुण कर व्रज वधु ॥ वन ही कु[4] धाई हे ॥ १ ॥
सुण मुरली की ताना ॥ वसवा[5] न पोवे धाना ॥
मीन मृग धरे न धीरा ॥ आस चलाई है ॥ २ ॥
सुणत उडगण—पती पवन की मग—गती[6] ॥
जन मीरां जादुपाती[7] ॥ जे जे वमी गाई है ॥ ३ ॥

१७

आज तो पेच पाग के नीके
मोहन कोन[1] वनाय दये है ।
अेंडी बेंडी चाल कहा सीखे हो
प्यारे राते नेनन[2] ये ।
उरन को चहन वन्यो छतीयन पर
ता सग खेल भये हो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर वैठौ जु[3]
वौटौ[4] लछन वे न गये है ॥ १ ॥

---

१. प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२९९, पत्राङ्क-१६५
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०६७, पत्राङ्क-५२

---

स० पाठ १६-१ वसरी, बासुरी । २. वजाई । ३. आका । ४. कू । ५. वसवा
६. गति । ७ यदुपति ।
" " १७-१. कौन, कवण । २ नैनन । ३. जी । ४. बैठो ।

१८

आजि नो सखी री मेरे उधो[1] आये पाहुणा ॥ टेक ॥
घस—घस चदण अग लिपटावौ स्याम ,
अजहू[2] न आए स्याम तपति बुझावणां ।। १ ॥
मुथरा मैं कस मारौ[3] लकापति आप गारयौ[4]
मोई रूप[5] वलि यौ भेख धरयौ[6] वावना[7] ॥ २ ।
द्रोपता को लाज काज द्वारिका[8] सो[9] ध्याऐ हे नाथ
मीरा तौ तिहारी दासी प्रभू वेगि आवणा ॥ ३ ॥

१६

आजि म्हारै पावणीया वैरागी जी ॥ जनम सुधारण सतगुर आयाजो ॥टेक॥
आजि सखि म्हानै सुपनौ री आयौ ॥ सत वधाई कोई ल्याया जी ॥१॥
ऊची चढि हू[1] जोवण लागी ॥ म्हारा सतगुर निजर पगयाजो[2] ॥२॥
प्रेम के घोरै उतरत देख्या ॥ आण पिया राजन आया जी ॥३॥
भगवासा कपड़ा कर मे डोरी ॥ दरसण की विलहारी[3] जी ॥४॥
भाव भगति सू करु रसाई[4] ॥ प्रीति की भारी भर ल्याऊ जी ॥५॥
आजि सखी हू तौ हरख फिरु छू ॥ सतगुर काई म्हानै वगसै जी ॥६॥
सील सतोष क्रिपा करि दीन्हा ॥ मो उर आनद कीन्हा जी ॥७॥
पण परसाधी[5] म्हाने सतगुर जी दीन्ही ॥ मो उपरि किरपा कीन्ही जी ॥८॥
प्रीति करै न राम पद रज लेस्यु ॥ म्हारो सीस चरण सर देस्यु जी ॥९॥
चरण घोइ चरणामत लेस्यु[6] ॥ म्हारा पाप विलै[7] होइजासी जी ॥१०॥
कर जोड्या रामजी अरज करु छु[8] ॥ म्हारौ जनम सुधारौ सतगुर स्वामीजी ॥११॥
मीरा कहै प्रभु हरि अविनासी ॥ जनम जनम की मैं दासी जी ॥१२॥

---

१ राज० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८२९१, पत्राक-३ ७

२ भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्र० मे ।

---

स० पाठ १८-१. ऊधो । २. अजहूंन । ३. मार्यो । ४. गार्यो । ५ रूप । ६ धार्यो ।
७ वांवना । ८. द्वारिका । ९ मो ही ।

,, १९-१ हूँ । २ परा आया जी । ३ बलिहारी । ४ रसोई । ५. परसादी
६ चरणामृत लेस्यू । ७ विलय । ८ करू छू ।

२०

आली री गुन समगल बलमा ।
मोहन विचित्र मन मूरति आए ।
मेरे ग्रह है क्रपाल[1] ॥
जवतै लालन मेरे आवन कीनौरी ।
तव हौ भारी लीनी भुज अकमाल ।
पलकै[2] पावडे करो ॥
सुभ घरी महूरत जवतै आवन कीनौ ।
निस भरे सरब मधि ॥
मोरा के प्रभु गिरधर नागर ।
परयेमे[3] रस के सीले[4] लाल ॥ १ ॥

२१

आवण वारा म्हारे कूंण हे जो ॥ म्हारी आषडली[1] हौरा ऐ फरुकै ॥
आवण हारा माहार[2] सतगुरु ॥ माहारी[3] आषडली फरुकै ॥ टेक ॥
आन सापी[4] सपनौ भईयो[5] रे ॥ म्हारे आगण आंबौ मौरचो ॥
हरी जी रौ[6] आवण मै सूणीयौ रे हैली ॥ म्हारे हरदऊग दोडीयौ ॥ १ ॥
वटा[7] उण देसरा रे ॥ कहीजे सदेसौ जाई ॥
तुम विना व्याकुल मैं भई रे ॥ वार वार सुद लीज्यौ यौ ॥ २ ॥
मीरा कहै सुणौ केसवा ॥ तूम[8] विना कहौ कहा कीजै ॥
पल-पल नेण हौ जपु ॥ म्हारौ[9] हरी[10] विना जीवडौ[11] सीज ॥ ३ ॥

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७,
पत्रांक-६४-६५

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १२५७७, पत्राक-१७२

---

सं० पाठ २०-१ कृपाल । २. पलक । ३. परेम, प्रेम । ४ रसीले ।

" " २१-१. आखड़ली । २. म्हारे । ३ म्हारी । ४ सखी । ५. भयो । ६ रो ।
७ वराऊडा, बटाऊडा । ८. तुम । ९ म्हारो । १० हरि । ११ जिवड़ो ।

२२

आव री आयो सजनी खेलो होरी ये ॥
चोवा चदन वुक वदन अवीर भरे—भरि जोरीया[1] ॥
खेल मच्यौ रस रेलि—पेलि को नवल किसोर किसोरिया[2] ॥ टेक ॥
तुम सावरे[3] हम गोरीया तो कला हमारी करहे देहे रग चोहोरीया[4] ॥
मीरा[5] के प्रभु गिरधर नागर चरण-कवल[6] लपटानी ॥ वातु ॥

२३

आवन क्रीह[1] हरि कह जो गया ॥
कव आवैगी बैरण परसू ॥ टेर ॥
चित चावै उड जाय मिलू ॥
उड़ीयो[2] नार जाय विना परसू ॥ १ ॥
आवो मेरै सांवरा आवो मेरे ज्यांनी ॥
ताहि कूं लगाऊं अपना गलासू ॥ २ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर ॥
कवही मिलै मोहन हमसू ॥ ३ ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १८६०, पत्रांक-७१-७२

२. अनूप स० ला० लालगढ के ह० लि० प्र० स० ११२ से।

---

स० पाठ २२-१. जोरी, जोरिया। २. किसोरी। ३. सांवरे। ४ चहोरी, चहोरियां।
५. मीरा। ६ कमल।

" " २३-१ की। २. उडियो।

## २४

अेजी लाला चरण कमल बीलीअयारी[1] ।
भट मील लो: सपूरण ।
डफ बाजे कुटील कनरीअया[2] को ।
डफ बाजे हो जी लाला ।
गीत नाचत हे बीनमाली[3] ।
ज्या जावे ज्या रत्र[4] मे भीजोवे ।
अेजी लाला करत जोबनी अयारी[5] जोवी ।
डफ बाजे कुटल कनईअया को ।
मीरा[6] के प्रबु[7] बेग पधारो ।
अेजी लाला चरणा[8] मे चत[9] धारलीअयो[10] ।
डफ बाजे कुटल कनईअया को ।

## २५

ऐ मा[1] हेला देति[2] लाजु[3] भला[4] दियो न जाय ।।
तन याकै[5] बसरी[6] किनि[7] छ बसरीया[8] ।।
तन मन हमारो येजि[9] लीवो छ चुराया[10] ।।१।।
हे मा हेला देती लाजू भालो दियो न जाय ।।
बरज रहि बरजो नहि मानै ।।२।।
नद रा[11] गुमानि[12] हासे[13] चलो[14] गयो छै रूठाय ।।
मीरा[15] के प्रभु गीरधर[16] नागर सावली[17] सुरत म्हारे हीये म[18] समाय ।।३।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३४६२२, पत्रांक २७

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २५३४४, पत्रांक-७५

---

सं० पाठ २४-१. वलिहारी । २ कनैया, कन्हैया । ३. वनमली । ४. इत्र । ५. जौवनियारी
६. मीरा ७. प्रभु । ८. चरणां । ९. चित । १०. धारलीयो ।

" " २५-१. मा । २ देती । ३. लाजू । ४ झाला, झालो । ५. याकै । ६ वश री ।
७. कीनी । ८. वसरिया । ९ ऐजी । १०. चुराय । ११. रो ।
१२. गुमानी । १३. हासे । १४. चल्यो । १५. मीरा । १६. गिरधर ।
१७. सावळी । १८. मा, मे ।

## २६

ऐक[1] दिन क्रिसन[2] मेरै[3] कहै[4] गये आवणां
वाचा तो कुवाचा[5] भई ।। पकडुगी[6] दावणा ।।
अजहू न आग्रे मेरै ।। वसी के वजावणां ।। १ ।।
वल[7] कुं[8] छलनि[9] चले ।। भेख धरे वांवना ।।
मैथरा[10] म[11] कस पछाडे ।। लकापति रावणा ।। २ ।।
प्रैह्लाद[12] की प्रतज्ञा[13] राखी ।। वसदेव[14] के वध छुडाए ।।
द्रोपदा की लाज्या[15] राखी ।। चीर कु वधावणा ।। ३ ।।
पीया कौ अनेसौ[16] भारी ।। कैसै कहू[17] री प्यारो ।।
मीरा[18] के प्रभू ग्रधर[19] नागर ।। तेरो जस गावणा ।। ४ ।।

## २७

उवव जी म्हानै[1] लै[2] चालौ[3] स्यामरा[4] रै देस ।। टेर ।।
कवकी छौडी मथुरा नगरी छोड दीयौ[5] नद जी को देस ।। १ ।।
करमै[6] कमडल ओर मृग–छाला करसू[7] मै आदेस आदेस ।। २ ।।
कथा सिवाडु[8] गल विच डारु करु भगवा भेस ।। ३ ।।
मीरा[9] कहै प्रभु गिरधर नागर मौ मन वडौ अदेश ।। ४ ।।

---

१. रा० शो० स०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७६६५, पत्रांक-१८
२ अनूप स० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० स० ११२ से ।

---

स० पाठ २६-१. एक । २. कृष्ण । ३. मेरे । ४. कह । ५. कुवाचा । ६. पकडूगी । ७ वलि । ८ कूं । ९ छलने । १० मथुरा । ११. मे । १२. प्रह्लाद १३. प्रतिज्ञा । १४. वसुदेव । १५. लज्जा । १६. अदेसो । १७. कहू । १८. मीरां । १९ गिरिधर ।

,, ,, २७-१ म्हाने । २ ले । ३. चालो । ४ सांवरा । ५ दियौ । ६. कर मे । ७ करस्यु । ८ सिवाडू, सिलाऊ । ९ मीरा ।

२८

उधो[1] बेगा जाज्यो राज ।।
कहैज्यौ[2] सांवरीया नै मारै[3] ।। म्हला[4] आज्यौ राज ।। टेर ।।
बोहोत[5] दिन वीता म्हारी सुध न लई ।। नैना नीद[6] तो गई ।।
चांनणी सी रात म्हारै ।। बैरण भई ।। १ ।।
सावणीये री रात बागा कोयलीया[7] बोलै ।।
मारी छ्लो[8] क्यू छौलै ।। पपी रे[9] पपीईया[10] मारौ
अत क्यूं तोलै ।। २ ।।
मीरां तो वीनां[11] कल नां पडै ।। यौ दुख क्यू न हेरे[12] ।।
छ्वीयां तपै नेणां नीर तौं[13] भरै[14] ।। ३ ।।

२९

उंधोजि[1] नैण रहे जड[2] लाय
नदीया[3] वइजात[4] दीन - राती[5] ।
मुतलव के गरजु हो उधो
सांम[6] सगाति ।। अकडी० ।।
उधोजि कुवज्या सै नैह लगाय
हमकु[7] लिखी है जोग दिवाति ।
मुतलब के गरजु हो उधो० ।।
उधोजि कब लग करु पुकार
मैं तो कुरल्या—जु[8] कुरलाति[9] ।
उधोजि मीरांबाइ बल[10] जाय
हू[11] तो चरण—कमल रग—राति[12]

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।
२ राज० प्रा० वि० प्र० वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से ।

---

स० पाठ २८-१. ऊवो । २. कहज्यो । ३. म्हारे । ४. महलां । ५. बहुत । ६. नींद ।
७. कोयलियां । ८. छाती । ९. पापी रे । १०. पपीहा । ११. विन, विना ।
१२ हरे । १३. तो । १४. मरे ।
" " २९-१ ऊधोजी । २ झड । ३ नदिया । ४.वहो ज़ात । ५. दिन-राती । ६ स्याम ।
७. कूं । ८ कुरज्यां ज्यूं । ९. कुरळाती । १०. हूँ । ११. वलि । १२. रंग ।

३०

ऊदा जो हरी वना रीग्रोअ ने जाग्रे[1] सावरिया ने के दीजो समझाग्रो[2] ।

वसीवारा[3] ने के[4] दीजो समझाग्रे ।

गगा जमना त्यौं[5] वरई । ऊदा जी कुल नार ईक मलाग्रे ।

साकरी ग्रमाने[6] के दीजो समझाग्रे ।

अनखाती राद[7] प्य की[8] जी । ऊदा जी गोपया[9] रई[10] मुरलाई[11] ।

सावरीअयाने[12] के दीजो समझाई ।

आगलीग्रभारी[13] मुदडी जी । जदा[14] जी रलकी[15] आवे मेरी वाग्रे[16] ।

सांवरीग्रयाने के दीजो समुझांग्रे ।

ग्रोइ जल जमना रो जुलवीजी[17] । ऊदा जी अमारे[18] कदम की छाग्रे ।

सांवरीअयाने के दीजो संमझाग्रे ।

वनरावन[19] की कुज[20] मे जी । सब गोप्या को सजोग ।

सावरिया ने के दीजो समझाग्रे ।

मीरां हरके[21] लाडली जी । ऊदा जी प्यारे सुरा जो सरजराहार ।

गोवीदा[22] ने के[23] दीजो समझाग्रे ।

१, रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३४६२२, पत्राङ्क-३२

---

म० पाठ ३०-१. ऊधोजी हरि विन रह्यो न जाय । २ समझाय । ३ वंसीवाळा । ४. कह । ५ ज्यो । ६ सावरिया नैं । ७. राधा । ८ प्यारी । ९ गोप्या । १०. रही ११. मुरझाई, कुरळाई । १२. सावरिया ने । १३ आगलिया री । १४. ऊदो । १५. रळकी । १६. वाए । १७ झूलवौजी । १८ यारे । १९. वृन्दावान । २०. कुज । २१ हरि की । २२ गोविंदा । २३ कह ।

३१

उविरी[1] होरी हो रही । तु[2] अब क्या सोवै री[3] ॥ टेक ॥
रैनै[4] गई तो जान दे सजनी । दीनै[5] मती षोवे[6] री ॥ १ ॥
यो संसार नाव कौ मेलो यामै तेरा[7] को री ॥ २ ॥
मातै[8] पीता[9] सुत कूटमै[10]–कवीलो । यातै[11] तेरा–मो है री ॥ ३ ॥
मीरा[12] के प्रभू हरि अवनासी[13] यो नातो दीन[14] दो है री ॥ ४ ॥

३२

राग मारु

कदि र मिलैगो आई रमयौ[1] महान[2] कदि मिलैगो आई ॥
ज्यारी ओल[3]री आवै वारुवार[4] ॥ टेक ॥
वुझो[5] रुडा जोईसी[6] हो ॥ रुडी लगन विधचारि[7] ॥
कहै गोव्यदा[8] कव आयसी[9] ॥ म्हार आगणिजै[10] पाऊ[11] धारि ॥ १ ॥
पछी वुझु[12] पल गिणी ॥ उभी मारिग[13] जोई ॥
कोई बतावै हरि नै आवतो ॥ माहारौ[14] हीयौ उरे रौ होई ॥ २ ॥
उठत वैठत निरपता[15] हौ ॥ नैन रह्या रत—वाहि[16] ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० (इन्द्र) ५२, पत्राङ्क-२७

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३६१५२, पत्राङ्क–५२

---

सं० पाठ ३१-१. उठो री । २. तू । ३. सोवे री । ४. रैन । ५. दिन । ६ खोवे । ७. तेरो । ८ मात । ९. पिता । १०. कुटुम्ब । ११. यातें । १२ मीरा । १३. अविनाशी । १४. दिन ।

„ „ ३२-१. रमैयो । २. म्हाने ३. ओळूं । ४. वारम्वार । ५. बूझो । ६ जोशी । ७. विचार । ८. गोविंदो । ९. आसी । १०. आगणिये । ११. (क) पाव (ख) पाऊ । १२ वूझूं । १३. मारग । १४. म्हारो । १५ निरखतां । १६. वाही ।

हरिजी रो मारिग हेरता ॥ म्हान रैंन गई तिन[17] जाय ॥ ३ ॥
अण मिलया औलु[18] घणी हो ॥ मो मनि वारौ-वार ॥
उर्भाल फुटज्या कारज्यौ[19] ॥ म्हानैं नैंन पाडि[20] धार ॥ ४ ॥
ज्या[21] मिलया आनद घणा होई वीछरिया[22] वैराग ॥
हरिजी रौ मारिग हेरिता[23] ॥ म्हे तौ षडिच[24] उडाऊं काग ॥ ५ ॥
अहि औसर आये न हौ ॥ गयौ सदेसौ षुटि[25] ॥
हीयौ पुराणो नाव ज्यौं ॥ म्हारौ गयो विचासु[26] टुटि ॥ ६ ॥
हाथणि देसी वोलीभो[27] हौ ॥ दाझ्या उपरि दाह ॥
न जानु[28] कव हरि आईसी[29] ॥ म्हारै औगणगारी रो नाह ॥ ७ ॥
क्रपा[30] करि आवो हरी हौ ॥ जन अपणा कै भाय ॥
लावैं नौ आचंलि लेस्या[31] वारणा ॥ ज्याकौ[32] जन मीरा[33] वलि जाय ॥

३३

काई[1] रे कारण अण-बोला नाथ मासे[2] मुषडे[3] ॥
क्यु[4] नही वोलो नाथ मारो[5] ॥ टेर ॥
पेली प्रीत करी हरी हमसे प्रेम-प्रीत को जोलो (ड़ो) नाथ ॥ १ ॥
रेसम गाला गाडी गुल[6] रई ॥ कांई रे मीस[7] कर बोलो[8] ॥ २ ॥
मे छुं[9] बेटी राजा भीवरो कुवज्या वरावर कई तोलो ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गीरवर[10] नागर ॥ हीरदा री गुडी[11] कोउनी[12] पोलो ॥ ४ ॥

---

१ अनूप सं० ला० लालगढ; बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

---

१७ दिन । १८ ओळूं । १९. काळजो । २०. खांडी । २१ ज्या । २२. बीछडिया । २३ हेरतां । २४. खडी । २५. खूट । २६ वीच सूं टूट । २७. ओळमों । २८. जानूं । २९. आसी । ३० कृपा । ३१. लेस्यां । ३२. ज्याकी । ३३. मीरा ।

स० पाठ ३३-१ कांई । २. म्हासे । ३. मुखड़े । ४. क्यूं । ५. म्हारा, म्हासों । ६. गाठी घुळ । ७. मिस । ८. खोलो । ९. छूं । १०. गिरिधर । ११. घुडी । १२. क्यों नी ।

३४

काई हट(ठ) जागो रे मोहण दाणी ॥ टेर ॥
मैं दुव बेचण जात विनावन[1] । लुटट[2] नार वीडाणी[3] ॥ १ ॥
व्रंदाविन की कुज[4]-गलण[5] मे । मै सेरी[6] चाल पिचाणी[7] ॥ २ ॥
वसी वजावत ठाडो वाट मे ॥ किस विध जाउ[8] जमना पाणी ॥ ३ ॥
मिरा[9] के प्रभू गीरधर[10] नागर ॥ चरण-कमल लपटाणी ॥ ४ ॥

३५

काऊ विध मिलजा रे गिरधारी ॥ टेर ॥
गौकल[1] ढुढ[2] वनावन[3] ढूंढी ढूढी मथुरा सारी ॥ १ ॥
वनरावन मैं[4] वेनु[5] चरावैं[6] औढ कामरोया कारी ॥ २ ॥
मोर मुकट पीतावर सोहै वसी की छवि न्यारी ॥ ३ ॥
मीरां कहै प्रभु गिरवर नागर चरण-कमल वलिहारी ॥ ४ ॥

३६

काऊ देख्या री घनस्यामा ॥ स्याम हमारे रामा ॥ टेक ॥
बरसांणै सु[1], छली[2] गुवालणी ॥ नद गाव कु जाणा ॥
अदवस[3] मोहन वसी वजाई ॥ हरे हमारे प्राणा ॥ १ ॥
मोरमुगट पीतावर सोवै ॥ कुडल झलकै काना ॥
सावरी सुरत पर तिलक वीराजै ॥ जीणसु[4] लग्या मेरा ध्याना ॥ २ ॥
सीव-सनकादीक[5] अरु वृमादीक[6] गावत वेद पुराणा ॥
मीराकै प्रभु गीर[7][धर] नागर ॥ बिज[8] तज अ[न]त न जाणा ॥ ३ ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२६६, पत्राङ्क-११
२ अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० ११३ से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०—६२६६, पत्रांक—१४७

---

स० पाठ ३४-१. वृन्दावन । २. लूटत । ३ विडांणी । ४ कुज । ५. गलिन । ५. तेरी ।
७. पिछांणी । ८ जाऊं । ६ मीरा । १०. गिरिधर ।
" " ३५-१. गोकुल । २ ढूंढ । ३. वृन्दावन ।
" " ३६-१. सूं । २ चली । ३. अधबिच । ४. जिणसूं । ५ शिव सनकादिक ।
६ वह्मादिक । ७. गिरिधर । ८. व्रज ।

३७

कानो कुवज्या[1] रे सिपलायो[2] मामु[3] रुठै रुठै छेजी रुठै छै ॥
हीवडे हाथ न लाय सावरा[4] हूलडो-जीउ[5] रेहै कानो ॥ टेर ॥
आप करी कुवज्या पटरागणी मासु[6] फीरै छै अफुटै[7] छै ॥ कानो० ॥
मिरा[8] कहै प्रभु गिरधर नागर लागि लगन माहरि[9] तुरै[10] छै ॥ कानो० ॥

३८

राग नटवा

काहू न सुख लियो रे पीत्त[1] कर काहू न मुख ली लीयो[2] ॥ टेर ॥
मृगलै प्रीत करी से नादन[3] सै सुनमुख[4] वाण सहो रे ॥ १ ॥
छात्रक[5] पीत[6] करी बुदन[7] सै पीउ–पीउ रटत रहो रे ॥ २ ॥
अलसुत[8] पीत करी जलसुत सै सकट वोत[9] सयो रे ॥ ३ ॥
पतग प्रीत करी दीपक सै बल–जल भसम हूओ[10] ॥ ४ ॥
ग्योप्यो[11] प्रीत करी माधव सै जावत कसु[12] न कयो ॥ ५ ॥
मिरा[13] कै प्रभु गीरधर[14] नागर तलफ–तलफ यु[15] गयो ॥ ६ ॥

३९

कीन[1] मारी पीचकारी[2] रे गुगट[3] की लपट मै ॥ टेक ॥
ऐक[4] भरी लाला दुजी[5] भराउ[6] ॥ तीजी भरो दडगारी रे ॥ १ ॥
अग की अंगीया[7] सगली भीज गई ॥ लाल सूनडीया[8] न्यारी रे ॥ २ ॥
मीरा कै प्रभू गीरधर[9] नागर ॥ फुगवा दो भर डोरी रे ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १०४५७ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९, पत्राक–२
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२९९, पत्राङ्क-१०६

---

स० पाठ ३७-१. कुब्जा । २. सिख० । ३ म्हासूं । ४ सावरा । ५ हूलडी-जेउ (पक्षी-विशेष) होलडी । ६ म्हासूं । ७. अफूठै । ८. मीरा । ९. म्हारी । १० तूटै ।
३८-१. प्रीत । २. लियो । ३. नाद । ४. सन्मुख । ५ चातक । ६. प्रीति । ७ बूदन । ८ अलिसुत । ९. मोत, वहुत । १० भयो रे । ११ गोप्यां । १२ कछु । १३ मीरा । १४. गिरिधर । १५ यू, जीव ।
" " ३९- १. किण, कुण । २ पिचकारी । ३. घूघट । ४. एक । ५. दूजी । ६ भराऊ । ७. अंगियां । ८ चुनरिया । १२. गिरिधर ।

४०

**षमाच—होरी**

कुण पेले थासे[1] होरी रे संग लगोई[2] आवे ॥ टेर ॥
भर पीचकारी[3] मेराम[4] मुप[5] पर डारी भीज गई तन सारी रे ॥ १ ॥
मोर मुगट सीर[6] छत्र वीराजे[7] कुडल[8] की छीब[9] न्यारी रे ॥ २ ॥
वीनरावीन[10] री कुंज-गली मैं सेस गोप्या गीरधारी[11] रे ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[12] नागर फगवा दोभर गोरी रे ॥ ४ ॥

४१

कुवज्या[1] बे दिन क्यों न चितारै, कु० ॥
वनरावन[2] मै व्य[3] पग तल काडिया । चुग-चुग वानत[4] मारा ।
के(क)सराय घर हूति जि वेरी । बारतिं वगड सकारा ।
हे कुवज्या बे दिन कु न[5] चितारा[6] ॥ १ ॥
हाथ कटोरो वनण[7] कै र मुठीयो । घसता गयो रे जमारो ।
अब मैलन की भइ पटरांणि । मोहौं[8] स्याम हमारे(रो) ।
हे कुबज्या वे दिन कु न चितारै ॥ २ ॥
आपरो बाया आपे इ लुणसि । क्या बिधनां का(को) सारो ।
मिरां कहै[प्रभू] गीरधर[9] नागर । तिन[10] काल उजियारो ।
ए कुबज्या वे दिन कु न चितारो ॥ ३ ॥

---

१ अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १७० से ।

२. राज प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से ।

---

सं० पाठ ४०-१. थां से । २. निगोड़ी, ले गोपी । ३. पिचकारी । ४. मेरा । ५. मुख । ६. शिर । ७. बिराजे । ८. कुंडळ । ९. छवि । १०. वृन्दावन ११. गिरिधारी । १२. गिरिधर ।

" " ४१-१. कुब्जा । २. वृन्दावन । ३. वे । ४. छानत । ५. क्यो न । ६ चितारे । ७. चन्दन । ८. मोह्यो । ९. गिरिधर १०. तीन ।

४२

कुबज्या व दीन क्यु न चीतारो।
कसराय घर चेरी होती वगर मुवारनो सागे ॥ १ ॥
बन-वन लकरी वा वन माही सीर घर लाती भारो ॥
हात कचोलो चदन मुओ[1], सघेता[2] गयो जमारो ॥ २ ॥
वरसत अग क्रहन[3] घ्यारे कु हो गयो रुप अपारो ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर बस कीयो वंसीवारो ॥ ३ ॥

४३

कैसै खेलु[1] मैं होरी सहेली ॥ पीय तज गयो रे अकेली ॥ टेर ॥
माणक मोती सब ही साञ्चा[2] गल मै पैरी सेली
भोजन भवन नीका नहीं लागै॥ पीया कारण भई गेली
मुजे[3] दूरी क्यू मेली ॥ १ ॥
अब तुम प्रीत ओर से जोड़ी। हम सै करी क्यूं पेली
बोहो दिन बीता अजऊ[4] नही आए ॥ लग रहीं ताला-वैली रे
करण वलमायो[5] हेली ॥ २ ॥
स्यांम विनां जीवड़ो मुरझावै। जैसे जल विन वैली[6] ॥
मीरां कहे प्रभु दरसन दीजो जन्म-जन्म की चेरी
दरसन विन खरी[7] रे दुहेली ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ के हृ० लि० ग्र० सं० १६० से।

१. रा० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के हृ० लि० ग्र० सं० १४५, पत्राङ्क-४५

---

सं० पाठ ४२—१ मुठियो। २. घिसतां। ३. कृष्ण।

" " ४३-१. खेलू। २. सांचा। ३. मुझे। ४. अजहूं। ५. किण बिलमायो।
६ वेली, वल्ली। ७ खड़ी, घणी।

४४

कैसे लगाई जुग प्रीति मेरा दिल हरि वस्त[1] है ॥ टेर ॥
या तन का[2] नोछावर करौंगी[3] सीस करौं बकसीस ॥ १ ॥
मैं जानी प्रभु ले निबहोगे छाडि चले अध-बीच ॥ २ ॥
जाका दिल म्याविति[4] सांई सूं सोई अवलिया[5] पीर ॥ ३ ॥
पहली तौ हर[6] प्रीति लगाई अब कीन्ही विपरीति ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर क्या कपटी सौ प्रीति ॥ ५ ॥

४५

राग मारु

कोई हरिलौ हो हरीलौ हो वोलै । सरि[1] परि[2] हो मटकोया डोलौं(लै) ॥
दय[3] को नांव[4] विसर गई गुवालनि । कोई स्यांम मनौहर हर ल्यौ हरी० ॥टेक॥
क्रस्नरुप[5] गुवालन धरो । कछु और ही धरै वोलै ॥
मीरा के प्रभु गीरधर[6] नागरि[7] । कोई मौलि[8] लीयौ[9] बीन[10] मोलै ॥१॥

४६

कोई राम पिया घर लावै रे ॥
तलफत प्राण दुखी अति मेरौ ॥ जरती[1] अगन बुझावौ(वै) रे ॥ टेर ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३, पत्राङ्क-१
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७, पत्रांक-३६
३. अनूप स० ला० लालगढ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से ।

---

स० पाठ ४४-१. वसत । २. को । ३. करूंगी । ४. साबति । ५. औलिया । ६. हरि ।
„ „ ४५-१. शिर । २. पर, पड़ी । ३. दई, दही । ४. नाम ५. कृष्णरूप ।
६. गिरिधर । ७. नागर । ८. मोल । ९. लियो । १० बिन ।
„ „ ४६-१. जलती ।

है कोई मित हमारो अैसो । जाय सदेसो सुणावै रे ॥
व्रैह-अगन अति(भई) आतुर । जागत रैण बितावै रे ॥ १ ॥
तलफ-तलफ तन तालाबेली । सास[3] कलप-सम जावै रे ॥
नीर विना मछी[4] किम जीवै । विछडीया[5] मर जावै रे ॥ २ ॥
अव तो किरपा कर आवो मनमोहन । दरस वेग दिखावो रै ॥
जन मीरा व्रेहन[6] अति व्याकुल । मरतक[7] आन जिवावो रै ॥ ३ ॥

४७

गहरा करी स्याम अमल-पाणी ॥ टेर ॥
चलो स्याम वरसाणे चालो ॥ तेरा भाग मे रची सो हम जांणी ॥ १ ॥
तो हो करा होरी को रसीयो[1] ॥ मे[2] सब वणसा अगवाणी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[3] अवीनासी[4] ॥ वीरपभाण[5] घर मझमानी[6] ॥ ३ ॥

४८

गीरधर[1] सग न टारो हो राणा जी माहरो[2] गीरधर संग न टारो ॥ टेर ॥
नामदेव की छानि छवाई ॥ हस्ती सग उवारो ॥
जन कबीर के वालद[3] न्यायो । आप भयो वणजारो ॥ १ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १७० से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ८२९०, पत्राङ्क-६०-६१

---

२. विरह । ३. सांस । ४. मच्छी । ५. बीछडियां ६. विरहिणी ।
७ मृतक को ।

" " ४७-१. रसिया । २. म्हें । ३ हरि । ४. अविनाशी । ५, वृषभानु ।
६ मिजमानी ।

" " ४८-१. १. गिरधर । २. म्हारो । ३. वळध, बैल ।

जन प्रहलाद की प्रतंग्या राषी[४]। नृसिंघ[५] रुप ज धारो ॥
षभ फरि[६] करि प्रगट भयो। हरणकुस नषन बडारो[७] ॥ २ ॥
जग सब भूठो पति है। राणेजी कौ न विचार[८] ॥
तू तो म्हारो भूठो पति है। सांचो मुरलीवारो ॥ ३ ॥
राण जो प्यालो विष रो भेज्यो। दे मीरा नै मारो ॥
अैसे तो वा लेवैंगे (गी) नाही। चरनामृत धामें[९] डारो ॥ ४ ॥
जनम-जनम को पति परमेसुर। जामैं[१०] रच्यौ है जग सारो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ॥ जीवन प्रान हमारो ॥ ५ ॥

४६

गोबंद[१] स[२] अटकी हे र (री) मन गोवीद स अटको री ॥
अेर[३] आली म[४] सावरा[५] क[६] वसी परी सजनी लोग कहे भटकी ॥
वन[७] ही गोपाल लाल बीन सजनी को जान[८] घटकी ॥
अेरी अति करन ककनी[९] उपर सजनी ई (री) दामन सी दमकी ॥
अग-अग आभुसण[१०] राज (जे) बनमाला छीटकी[११] ॥
धकती[१२] भयो[१३] दोउ द्रीग[१४] मेरे दे[१५] छीव[१६] नटकी ॥
मीरा के प्रभु सग रमुगी[१९] कुज-कुज भटकी ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से।

---

४. राखी। ५. नरसिंह। ६ फाड। ७. विडारो। ८. क्यो न विचारो।
९. आ, या में। १०. ज्या ने।

सं० पाठ ४६-१. गोविंद। २. से। ३. अे री। ४. मैं। ५. सांवरा। ६ कै।
७. विन। ८. जानै। ९. किंकिणी। १० आभूषण। ११. छिटकी।
१२. थकित। १३. नये। १४. दोऊ दृग। १५ देख। १६. छवि।
१९. रमूंगी।

५०

गोवीद को सरनु[1] ॥
क्या दुक[2] धन माल की लाहे[3] हम ही कहा करनु[4] ॥
सावरी सुरति चीतवन[5] मे धरनु ॥ (गोविंद को सरनू)
मीरा के प्रभु गीरधर नागर ॥ वेर वेर वरनु[6] । (गोविन्द को सरनू)

५१

चद लग्यो दुष[1] देण ॥ टेर ॥
माई री मौनै चद लग्यो दुप देण ॥ टेर ॥
काहा[1] वे मोहन कहा वे वतिया, काहा वा सुष की रैण ॥ १ ॥
तारा गिन-गिन रैई[2] मेरी आली, टपकण लागै नैन ॥ २ ॥
मीराँ कैहै[3] परभु[4] गीरधर नागर, दुष-भजण सुष-दैण ॥ ३ ॥

५२

छित्र[1] लालन मोहि[2] भावै वारी[3] चितवन चित ललचावै ॥ टेक ॥
सुदर वदन कमल-दल-लोचन मधर-मधर[4] मुसकावै ॥ १ ॥
मोर-मुकुट पीतावर[5] सोहै चदन पोर[6] वमावै ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर जो सेवै सोई पावै ॥ ३ ॥

---

१ अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७७ से।
२. संत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त।
३ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३७९४४, पत्रांक-३०

---

सं० पाठ ५०-१. सरणूं। २. कहूँ, करु ३. किला है, ४. करणूं। ५ चितवन।
६ वरणूं।
,, ,, ५१-१. कहा। २. रही। ३ कहे। ४. प्रभु।
,, ,, ५२-१. छवि। २. मोही, मो हिय। ३. वांरी। ४. मधुर-मधुर।
५. पीतांवर। ६ खोर।

५३

जब छल ठग गया दील[1] प्रामा[2] ॥
तव रया हा नही कछु नेमा ॥ टेर ॥
नही कछु पाना[3] न कछु पीना हो गया ठडा हेमा ॥ १ ॥
छकीया डोले मुष से न बोले प्रीत लगी गनसांमा[4] ॥ २ ॥
प्रतपकी[5] रीत बफुल[6] फकीरी हुआ जगत वेकामा ॥ ३ ॥
तक (ख) त हजारा मुलक बजारा त्याग दीया[7] धन-धामा ॥ ४ ॥
मीरावाई[8] भणे भवसागर वे मस्त कीया जग नामा ॥ ५ ॥

५४

**फाग**

जमना की (के) नीकट[1] बजाई बसी ॥ टेर ॥
जीव जत जल थल के मोहे ओर[2] मोहे वन के तपसी ॥ १ ॥
सुर नर मुनी[3] मोह लीऐ[4] हो षुल ग[ये] ताल हसे[5] तपसी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी[6] अवीनासी[7] चरण-कवल मे प्राण वसी[8] ॥ ३ ॥

५५

जमुना कै तट हरि सग षेलै गोपी ॥
मोहन लाल गोवरधन धारचो ताकं नष पर ओपी हो ॥ टेक ॥
सजल जलद-तन घन पीतावर कर मुष मुरली धारी हो ॥
वैन सैन दे कंवर लाडलै ललना सब हकारी हो ॥ १ ॥

---

१. अनूप स० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७० से ।
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७० से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३७६४४, पत्रांक-६६

---

स० पाठ ५३-१. दिल । २. एमा प्रेमा । ३. खाना । ४. घनश्यामा । ५. प्रीति की ।
५. विकल । ७. दियम ।
" " ५४-१ निकट । २. अरु । ३. मुनिजन । ४. लिये । ५ खुल गए ताल हंसे ।
६. हरि । ७. अविनाशी । ८. बशी ।

सज सिणगार चली वृज[1]-वनिता नप सिप उपर[2] ठांनी हो ॥
लोक वेर अरु धरम सहत यहि वदत न काहू की कांनी हो ॥ २ ॥
कर कठ-ताल[3] ताल के उपर सवहि एक रस वाजै हो ॥
महुर[4] चग उपग डा(वा)मुरी मेघ-झटी ज्यौ गाजै हो ॥ ३ ॥
नयन वयन[5] वसन एक रम कठ भुजा पद ग्रीवा हो ॥
मध नायक गोपाल विराजै सुदरता की सीवा हो ॥ ४ ॥
वल है वल के वीर त्रिभगी गोपिन के सुपदाई हो ॥
मिट गई विथा[6] सकल तन मन की हरि हस कठ लगाई हो ॥ ५ ॥
माधव नारि नारि माधव कौं चरचत चोवा चंदन हो ॥
अैसो पेल मच्यो अवनी पर नद-नदन लग वंदन हो ॥ ६ ॥
कहत केल-कोतुहल[7] माधो मधरी सी वानी गावै हो ॥
पूरग चद सरद की रजनी चेतन उच उपजावै हो ॥ ७ ॥
सिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सवहि पोहोप-घन[8] वरसै हो ॥
भूर भाग गोकल-वनता[9] मीरां प्रभु-पद परसै हो ॥ ८ ॥

५६

ज[य] ज[य] हो जगदीस तुमारी ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि ज्याको ध्यान धरत है गावत चारु[1] सीस तुमारी ॥ १ ॥
सेस महेस पुराण वषाण[2] सव के हो तुम सीस हमारी ॥ २ ॥
मीरा नरसी कह र कहयो ह[3] धरचो सीगासन[4] सीस तुमारी ॥ ३ ॥

---

१. राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० स० १०५७, पत्रांक-२

---

सं० पाठ ५५-१. व्रज । २. ऊपर । ३. करताल । ४. मधुर । ५. वचन । ६ व्यथा । ७ केलि-कोतूहल । ८ पुष्प-घन । ९. वनिता के ।
" " ५६-१. च्यारू । २ वखाणे । ३ कह्यो है । ४. सिंहासन ।

५७

जाणीयै जांणीयौ जांणीयै हो हरि ॥
हेत हियानौ जाणीयै ॥ टेर ॥

हमै छा तुमारा तुम छो हमारा जा विच अतर नथि आणीये ॥ १ ॥
हम छै अबला तुम छै बलवता छैल छबिला[1] माथै ताणीये ॥ २ ॥
दूरा न जावजो वेगलाज थावजौ[2] अरज हमारी मांनीये ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर आसा लगी छै थारा नामनी [ए] ॥ ४ ॥

५८

**राग जजवति ॥**

जाय पधारे गउ-लोक ब्रद्रावन हर सखी रास रचाय रहे ॥ टेर ॥
गोपी रूप धरो ज्योगेसुर नरसी सषा वनाय लिअ (ए) ॥ १ ॥
देष विहार निहारं स्यम क[1] सब सषीयन सग नाच कीये ॥ २ ॥
गावत ह (हैं) अति मद-मद सुर नुपर[2] ताल बजाय रहे ॥ ३ ॥
तव बोले गोपेसुर नायक भगत अनोपा काहा आय रये ॥ ४ ॥
कह (हे) मीरा धन भाग हमारो प्रभु-चरनन प (पै) ध्यन[3] धरो ॥ ५ ॥

५९

जीउं री[1] म[2] सांवलड़ा र[3] बण[4] ॥ टेक ॥
सूवणा[5] सूणत[6] सूद-बूद[7] विसरी विर[ह] विथा[8] भई अ(ए) न ॥१॥
घडी-घड़ी लहर जहर तन व्यापै घूम रही सारी रेण ॥ २ ॥
तम[9] विन मेर (रे) कल न पड़त ह[10] भर-भर लाउ[11] नण[12] ॥ ३ ॥
मिरा[13] के प्रभू गीरधर नाग [र] दूष[14] मेटण सुष-दैण ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० सं० १९० से।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ५२, (इन्द्रगढ़ पोथीखाना) पत्राङ्क-१२२
३. सत साहित्य मंडल, बीकानेर के एक ह० लि० ग्र० से।

सं० पाठ ५७-१. छबीला। २, आवजो।
" " ५८-१. श्याम के। २. नूपुर। ३. ध्यान।
" " ५९-१. जीऊं री। २. मैं। ३. री। ४. वेण। ५. श्रवणां। ६. सुणत।
७. सुध-बुध। ८ व्यथा। ९. तुम। १०. है। ११. लाऊं। १२. नैण।
१३. मीरां। १४. दुख।

## ६०

जैसा 'कर किसाह ना[1]' होवै तो रषरणा राम हजुरी[2] ॥
वौदि[3] वजरिया षावरण दीजो नहितर दीजो कुरि[4] ॥
पासा अमेत[5] कर कै मानु मो-मौ घरणी सवुरी[6] ॥ १ ॥
भारो लासुँ पुर्लो[7] लासु भेस दुहा सु मुरी[8] ॥
राम रसौई कर जौमाउ जारी[9] लीया हजूरी ॥ २ ॥
सीरष पथररणा सावदु डौलीयो[10] नहि तर देजौ खजूरी ॥
कालो कावलीया ओडरण[11] देजौ पलक न करसु दूरी ॥ ३ ॥
चररण-कमल की सेवा दीजी चररणामत[12] की पा (प्या)सी ॥
ओ जस गावै मीरावाई जन्म-जन्म की दासी ॥ ४ ॥

## ६१

जोगिया आव मैं नेरी[1]।

मनसा वाचा करमरणा प्रभू पुरवो आस (सा) मेरी ॥ टेर ॥
मैं पतिभरता पीव की हो, मोल लई चेरी ॥
तुम विना कोऊ दुजो[2] देवा सुपनै हूँ ना हेरी ॥ १ ॥
मात-पिना सुत वधू दारा ये पाव मै वेरी ॥
तुम विना कोउ नाही मेरो पुकार कहूँ टेरी ॥ २ ॥
एक वीरोया[3] मेरै नगर[4] दे जावो फेरी ॥
मीरा के प्रभु गीरधर[5] मैं चरना सु नेरी ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९६ से ।
१. रा० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८२६० से ।

---

" " ६०-१. करम-माधना । २. हजूरी । ३ वोदी । ४. कूरी । ५. अमृत । ६. सवूरी । ७. पूळो । ८. नूरी । ९ झारी । १० ढोलियो । ११. ओढ़ण । १२. चरणामृत ।

सं० पाठ ६१-१ नेरी । २ दूजो । ३ विरिया तुम आफर । ४. नगर । ५. गिरिधर नागर ।

६२

राग सोरठि गिरना ॥

जोगियो चतर सूजान सजनी गायो ब्रह्मा सेस ॥ टेर ॥
जोगिया ने कहियी रे आदेस ॥
कृपा करो प्रतपाल मुझि परि[1] राखी अपणैं देस ॥
आवूंगी[2] मै ना रहुँ म्हार (रे) वसां[3] प्रदेस ॥ १ ॥
परण[4] चोलो भस[5] कथा जोग धरयो दरवेस ॥
तेर (रे) कारण [धारखो] जोया (गा) तज्यौ कुल प्रवैस ॥ २ ॥
आग (गे) पतत[6] अनेक [उ] तारे तोर(रे) मोहि अनेक ॥
ज्यद[7] करौ कुरवान तुझपें ओर न दूजी पेस ॥ ३ ॥
दरद दीवानी भई वावरी डोल बगालो देस ॥
दासी मीरा लाल ग्रधर[8] पलटि काले केस ॥ ४ ॥

६३

जोगी मन मतवाला है कोई जोगी मन मतवाला ॥
लोग बसै ढेकुडो[1] ॥
जोई साधरी[2] नंदा[3] करसी जासो हरदे रुरो[4] ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर घर वर पायो पुरो[5] ॥ १ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९९,

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८९०, पत्राङ्क–८२

---

स० पाठ ६२-१. मुझ पर । २. अभागी । ३. वणी । ४. पर्ण पेरण । ५. भेष, भसमी ।
६. पतित । ७. जांन । ८. गिरधर ।

" " ६३-१. छे कूड़ो । २. साधु री । ३. निंदा । ४. हिरदै । ५. रुड़ो ।
६. पूरो ।

६४

जो दुप थाय सो थाज्यौ रै रुडा रामजी न[1] भजंता ॥ टेर ॥
पीउ जाय तो राषव[2] लीजो जीव जाय तो जायै रे ॥ १ ॥
उचा[3] बाघ[4] तल अगनी पू(प्र) जालौ मार समेला री षाज्यो[8] रे ॥ २ ॥
लोक नीदै[5] तानै निदेन्वा[6] दीजौ राज डडै तो डंडाज्यौ रे ॥ ३ ॥
मीरा कैहै[7] दुप-कोट[8] सहीनै गुण गोविंदजी ना गाज्यौ रै ॥ ४ ॥

६५

झूठो वर कुण परणायो[1] हे मा ॥
परणू तो मेरो मरम जाय कूडो वर कुँण परणायो हेमा ॥
लख चौरासी रो चूडलो मे पैरयो वारवार ॥
ओ तो वर देही को सगाती मो वर सिरजणहार ॥ झूठो वर० ॥
जामण मरण वरया वर[1] केता विखराता नर नार
मेरो मन लागो बाल मुकुंद सू वर पायो किरतार ॥ झूंठो वर० ॥
सात वरस री मैं श्रीरग सेविया जद पायो सुख सुहाग[2] ॥
मीरा नै [प्रभु] गिरधर मिल्या[3] भव-भा[4] रा भरतार ॥ [झूठो वर०]

---

१. संत साहित्य मडल, बीकानेर के ह० लि० ग्र० से ।

२. पिलानी से प्राप्त हरजस ।

---

सं पाठ ६४-१. ने । २. राखव । ३. ऊंचा । ४. वांघ । ५. निंदै । ६. निंदवा
७. कहै । ८. कोटि ।

" " ६५-१. वरिया । २. सार । ३. मिलिया । ४. भव-भव ।

६६

टलवता 'पांडणो फुल'[1] गुलावी रग[2] रादकी[3] ओडण चीर जरी का।
जगमग जोत वणी रादे जी की कनाह[4] चदरमा[5] सो नीका।
तीका[6] नेण रादे जी का ज्याने मोश्रा[7] कवर[4] नदजी का।
तीका नेण रादे जी का ॥ १ ॥
वीदी वाल[8] नेण वीचे[9] कजला वेर जडाऊ रा टीका।
मोतीप्रेन[10] मांग भरी रादे जी की करोड चदरमा सा नीका।
तीका नेण रादे जी का ज्याने मोज्या कवर नदजी का।
तीका नेण रादे जी कन ॥ २ ॥
मीरा वाई के प्रवु-(भु) गरधर[11] नागर अत स्याम रादे जी का।
तीका नेण रादे जी का ॥ ३॥

६७

राग भमती

टुक धीरो रै[1] रे वसीवाला तै मैरो मन मोयो ॥ टेर ॥
नप-सष[2] गेणों[3] सरव सौना रो वीस-वीस मोती पोयो ॥ १ ॥
तुम विन प्रभु मोह कल न परत है नेण भरे-भर जोयो ॥ २ ॥
मीरां कै प्रभु गीरधर नागर तुम भर जोवन[5] वोयो ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२ से। पत्राङ्क-१०

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, पत्रांक-२

---

स० पाठ ५६-१. पांडुरो (पाडणो) फूल। २. रंग। ३. धाजी का। ४. कृष्ण है
५. चन्द्रमा। ६. तीखा। ७. मोह्या। ८ भाल। ९ विच। १० मोतियन।
११. गिरिधर।

" " ६७-१. रह। २. नख-शिख। ३. गहणों। ४. मोहे। ५. जोबन।

६८

तन मन ललचावे री आवे ब्रजराज कवर ॥
कोटि काम वारणै ज्जेव मोहना नाचाय्या[1] गावे री ॥ टेक ॥
दाहणे[2] क्र[3] कृसन गेंद वावे[4] हाथि[5] वंसी ॥ १ ॥
चलन रूप माधुरी गज मदन परेस सीव ॥ २ ॥
स्याम सुद्र[6] कवल-नैन अदवुद मुप चदा ॥ ३ ॥
लोचन प्यासे चक्र तिनकुं मगन लटकी ॥ ४ ॥
मीरा प्रभु भगति-वुद[7], हिरदा मैं गटकी ॥ ५ ॥

६९

तम[1] भज्यां हो महाराज सर्व सुष ॥ टेर ॥
प्रहलाद की प्रतग्या राषी ध्रूइ[2] अवचल राज ॥
भीवपरण[3] को राज दीनो सारीया सव[4] काज ॥ १ ॥
कृष्ण सुदामो वाल-सनेसी[5] पढते एकरण साल ॥
कनक-मैहल[6] चिणाये छिन मे जडत हीरा लाल ॥ २ ॥
जद व्रज पर इद्र कोप्यो डरे गोपी गवाल[7] ॥
डावै नष पर धारो[8] गिरवर राप लीयो नदलाल ॥ ३ ॥
आज व्रज मै आद्र[9] ववाई घर-घर मगलचार ॥
कहै मीरा भक्त [के] कारण कृष्ण लीयो अवतार ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ९१५९, पत्रांक-५२

२ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ७१४२. पत्राङ्क-१०६

---

स० पाठ ६८-१ नचाय। २. दाहिने, दांये। ३. कर। ४. बांये। ५. हाय। ६ सुंदर। ७. भक्ति-वृंद।

" " ६९-१. तुम। २ ध्रुव को। ३. विभीषण। ४. सव। ५. सनेही। ६. महत्व। ७ ग्वाल। ८. धारयो। ९ आनद।

७०

ततै[1] नावै[2] तीयांणो[3] वाणो[4] रामायो[5] हीवैडो[6] रो हांरै[7] ।।
मुगतै[8] री मार[9] सोहीयो ।। टेर ।।
मारै सीलै(ल)संतोकै(प)चुदंडै[10] वाणे रमायो ही सालुडा री कोरै(र) ।। १ ।।
सहेल्यां हे घांणो[11] पेरियो चीतै[12] चेतनै(न) चुडैलो[13] वाणो ।। २ ।।
रामायो हे चालैया[14] जी रै लुवै—भुंबै बाजुबांदं[15] वाणा ।।
रांमायो है वाजुवादै री लुवै ।। ३ ।।
सहेल्या हे मै तो कांरणी रो काजालै[16] सारियो सील फैला लाडे ।। ४ ।।
ईतोरी[17] गाणो जी पैहारै[18] नीकैली[19] चाली रामाया री सैजै ।। ५ ।।
वाई मीरा ने गरधारै[20] मील्या[21] पुरी-पुरी[22] य[23] मनड़ा[24] री आस ।। ५ ।।

७१

"राग सोरठ होरी"

तुजे (तूने) कीण[1] होरी वेलाई[2] वावरी वण आई ।। टेर ।।
गुगट[3] मे चकडोल करत है नेनन से चतराई ।।
सासु[4] पुछे[5] सुणे(न)री वारी ऐ[6] अंगीया[7] काह[8] छीटाई ।।
तुजे कीण होरी षेलाई ।। १ ।।

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ८३६६ से ।

२. अनूप स० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्रं० सं० १७०. से ।

---

सं० पाठ ७०-१ तन ने । २ भावें । ३. तियाणो, तिहांरो । ४. वानो । ५. रमैयो । ६ हियड़ै हिवडै । ७. हार । ८. मुक्ती । ६. मारग । १०. चूनडी । ११. गहणो । १२. चित्त । १३. चूडलो । १४. चालिया, चाल्या । १५. वाजूबंद । १६. काजल । १७. इतरो । १८. पहर । १६ निकली । २०. गिरिधर । २१ मिलिया । २२. पूरी-पूरी । २३ या । २४ मनड़ा ।

सं० पाठ ७१-१. किण, कुण । २ खेलाई । ३ घूंघट । ४. सासू । ५. पूछे । ६. बायडी, वहू री, वावरी । ७. अंगीया । ८. कहाँ ।

मे तो गई नी (थो) गुलाव के वाग मे फुलन-डार[9] नमाई ॥
डाला टुट[10] पड्या मेरी छतीया[11] अगीया रंग लपटाई ॥
तुजे कोण होरी पेलाई ॥ २ ॥
मे जल जमुना भरन जात ही[12] वीच मीले[13] जदुराई ॥
वेठ कदम-तले वसी वजाई मदुर-मदुर[14] मुसकाई ॥
तुजे कोण होरी पेलाई ॥ ३ ॥
भर पीचकारी[15] मेरा मुख पर डारी अगीया रग लपटाई ॥
तुजे कोण होरी पेलाई ॥ ४ ॥
हात(थ) गेद गुलाल फेट मे, तो मुध नही मोय काई ॥
तुजे कोण होरी पेलाई ॥ ५ ॥
ईण व्रज माय वुम[16] मचा हे सव मील[17] गावत ध्याई[18] ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर नद को लाल अनाई[19] ॥
तुजे कोण होरी पेलाई ॥६ ॥

७२

तुने नीका जानी हे वन की लकडी ॥
ते गिरधारी मोहीयो[1] तपस्या कुन[2] करी ॥ टेक ॥
थारो हो तो वृ दावन वास तु(तू) वन की लकड़ी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १८९०, पत्राङ्क-६८

---

स० पाठ ७१-९ फूलन—डार। १०. टूट। ११ छतियाँ। १२. रही। १३. मिले।
१४ मधुर—मधुर। १५ पिचकारी। १६. धूम। १७. मिले। १८. धाई।
१९ कन्हाई।

सं० पाठ ७२-१. मोहियो। २. कौन।

तूनै गावै मीरा दास[1] मोहन अधर धरी ॥
गजराज गुमानरण हे सावलीयारी.................... ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल लपटाय(या)री ॥ ☆

७३

तुम जाने दो जी कपटी से कुन बोले ॥ टेर ॥
मे जल जमुना जात भरन कु नीत उठ आडा डोले ॥ १ ॥
मे दद(धि) वेचन जाती वृद्राबीन[1] रूप देष रग तोले ॥ २ ॥
प्रीत न करी अनीत करी है बाहे पकड़ गु गठ[2] खोले ॥ ३ ॥
प्रीत की रीत तो कांहा[3] जांनो प्रभु चाम बराबर माखन तोले ॥ ४ ॥
मीरां कहे प्रभु गीरधर नागर कपट की गाठ न खोले ॥ ५ ॥

७४

तु[1] मति[2] जारै काना पाईया[3] परौं चेरी तेरी अरे ॥ टेर ॥
चदन-काटौ[4] चिता चिणावो अपने हाथ जलाय जा रे ॥ १ ॥
जल-वल भई भसम की ढेरी अंग वभूत[5] रमाय जा रे ॥ २ ॥
आसण मार मढी मै बैठो घर-घर अलष जगाय जा रे ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[6] नागर जोत मै जोत मिलाय जा रे ॥ ४ ॥

---

१. अनूप स० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३७६४४, पत्रांक-८७

---

स० पाठ ७२-३. दासी । ☆ इसी पुस्तक के पत्राङ्क १२६ पर इस पद की निम्न पंक्तियां ही प्राप्त हैं ।

तूने नीका जाण(णाह (हे) वन की लकडी ।
गीरधारी भी दा(वां)हन प(पं) सारी कुण [तप या] करी ॥
थारो हो तो विदरावन वास तू वन की लकड़ी ।
तू गावं मीरा दासी मोहन अधर धरी ॥

सं० पाठ ७३-१ वृन्दावन । २. घूंघट । ३ कहाँ, क्या ।
सं० पाठ ७४-१ तू । २. मत । ३ पैयां, पैरों । ४. काठ की, काष्ठ की । ५. विभूति, भभूत । ६ गिरिधर ।

७५

तू तो वैरी चितार पपीया मोरे प्यारे ॥ टेर ॥
आई बैठो अवला-केरी डारी पीव-पीव[1] सबद पुकारे ॥ १ ॥
आधी रात अचानक बोले बिरहैबाण[2] पर मारे ॥ २ ॥
मैं तो मूती मद क(की) मातो मेरे छाती जा-जा रे ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभू हर अविनासी मिलि करि कारज सारे ॥ ४ ॥

७६

तेर (रे) हरि आवगे(वेंगे) आजि खेलन फाग री ॥
सूगन समुरत[1] मैं सुन्य ो तेर(रे) आगन बोल्या काग री ॥ टेक ॥
गुवाल-मडली सब चली आई जाह्रा व्रदावन बाग री ॥
ताल म्रदग डफ मे सुन्यी री सखी क्या सोव(वे)उठि जाग री ॥ १ ॥
पानी पान बीछौना आदरा[2] उठी वाकै पगी[3] लाग री ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर तेरो परम सुहाग री ॥ २ ॥

७७

"राग बीलावल"

तेगे मुख नीको मेरो री प्यारी ॥
तन दरषन नोरषत[1] नद-नदन सबी कहो वृषभानु-दुलारी ॥
तुम कर पर गोवरधन धारो हम उर पै धार(रे) गीरधारी ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर मैं वनसु नैही नैंक न नारी ॥

---

१. राज० शो० सं० चौंपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८२९१ से
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३१०७७।
३ अनूप स० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७७ से।

---

स० पाठ ७५-१ पीउ-पीउ। २ विरहवाण।
स० पाठ ७६-१ सुमुहूर्त्त। २ आदर, चादर। ३. पग, पद।
स० पाट ७-१ निरखत।

७८

थांन(ने) खडी पुकार(रे) थे सुणज्यो जादवराये(य) ॥ टेक ॥
आस-पास दोऊ दल भारी वीच मच्यौ घमसाण ॥
कत्तो[1] मेरा अड उवारो नतर[2] तजूंगी प्रान ॥ १ ॥
मेरे पुत्रन के पर पख नाही लेर[3] ऊठ[4] आकास ॥
वा भारक[5] म अक[6] पुकार (रे) किस विध वच चे) प्रान ॥ २ ॥
भीम गद(दा) अहराक ते लागी घट पड्यो घरराय ॥
वा घंट(टा) म(मे) अड बचाय(ये) असे[7] दीन-दयाल ॥ ३ ॥
मीरा कहे मीथुला यण वोसर राष लीये वृजराज ॥

७९

थानै महारी[1] पीड ने[2] आवै हो ॥ टे० ॥
महारा[3] मने[4] मै थे ई वसो बाला थांने कछु ओर सुहाव(वे) हो ॥
पपीयो पीव-पीव रटे जलहर कौ नही भावे हो ॥
मीरा के प्रभु कवंहु कीरपा[5] करि स्वाति-वूंद बीरपाव[6] हो ॥

८०

थारा छा बीहारी माने भूलो छो गणा[1] ॥ टेर ॥
सरणागत छा चरण-कवल का वाहो तो समालो[2] आए ॥ १ ॥
भगत-वीछल[3] थारो बीरद कुवावे[4] ओगण मारा चीत ना धरणा ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु हरी अबिनासी चाकर छा जी राज पदमाजी[5] तणा ॥ ३ ॥

---

१. रा० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०५७ से।
२. रा० शो० स०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० २८८४, से।
३ अनूप स० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७० से।

---

स० पाठ ७८-१. के तो, क्या तो। २. नहि तो। ३. ले कर। ४. उड़ूं, उडै। ५. भारत। ६. अंड (१) । ७ ऐसे।
सं० पाठ ७९-१. म्हारी। २. न। ३ म्हारा। ४. मन। ५. कृपा। ६. वर्षावें।
स० पाठ ८०-१. घणां। २. सम्हालो। ३. भक्तवत्सल। ४. कहावें। ५. कदमां जी।

८१

"राग कालगड़ो"

थारा मीठा बोलण रा मे लोभी ॥ टेक ॥
मुग्ड भगी मुघड़[1] नही बोली मोनी कु'हुवा छो म्हान (ने जावा दो जी ॥
सरव गुण थारा वोगण[3] म्हारा वोगण म्हारा चत[4] न धरो जी ॥
म रा कैह[5] प्रभु गरधर[6] नागर दुख-काटण सुष दो जी ॥ १ ॥

८२

"राग ऊजाज सोरठ"

थारे घाली[1] ताना दै छै म्हांनै लोक, रसिक विहारी जी राज थारै ॥ टेर ॥
आप तो जाय द्वारिका मै घाऐ हम कू पढायो जोग ॥
कुब्ज्या दासी कसराय की ताय कीयौ सजोग ॥ १ ॥
प्र करी तो ओर निभाईजौ मति हसाईजौ लोग ॥
अवके वेछरे[2] कव [हु] मिलोगे नदी-याव[3] सजोग ॥ २ ॥
व्रहैव्यया[4] की कहा कहू सजनी ऋाय रयौ तन-रोग ॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर अव छे मिलन कौ जोग ॥ ३ ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के (इन्द्र)ह० लि० ग्र० सं० ५२, २ कृति पत्रांक-५७

२. अनूप स० ला० लालगढ़ के ह० लि० ग्र० स० ११३ से।

---

स० पाठ ८१-१ मुखडे, मुख से। २. क्यु, क्यों। ३. अवगुण। ४. चित्त। ५. कहै। ६ गिरिधर।

" " ८२-१. गाली। २. बिछुडे। ३. नदी-नाव। ४ विरहव्यथा।

८३

थु(तू) तो मेरा राम मील्या दीलजानी, मेरे अगर मेरवानी ॥ टेर ॥
देस-देस ओर मुलक-मुलक मे, पाई नही तेरी नीसानी ॥ १ ॥
जग की आस-वास सब तज दी, लाव[1] होओ चाहे हानी ॥ २ ॥
चाऐ[2] मेर (रे) तारया जग मे, तेरी सुरत मन मानी ॥ ३ ॥
सुणीए[3] साम[4] काम जलदी कर, कहा पत्री लषु[5] छाने ॥ ४ ॥
बाई मीरा भणै सामसु मु[6] जाचक थु[7] दानी ॥ ५ ॥

८४

दरसण क्रपा करो तो पाऊ ॥
बसि[1] ब्रदावन-कुज-कुटी मै पड्यो पड्यो जस गाऊ ॥
सतन की रज धरु(रू) सीस पै जा जमना मै नाहाउ[2] ॥
जीन[3] हरीया[4] संसार सार मै फेर जनम नही पाउ(ऊ) ॥
मीरा के प्रभु गीरधर नागर नीत उठ मगल गाउ(ऊ) ॥
दलसन क्रपा करो तो पाउ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर, के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १६० से ।

---

स० पाठ ८३ १. लाभ । २. चाहे । ३. सुनिये । ४. श्याम । ५. लिख । ६. मै । ७. थू, तूं ।

" " ८४-१. वसि । २. न्हाऊं । ३. जन । ४. हरि ।

८५

दरसण दीजौ राज ॥
कड (र) जौड[1] अरज करै म्हारी बाहें गईया[2] की लाज ॥ टेक ॥
लोक-लाज विसार डारचौ छाडौ जग उपदेस ॥
व्रहे-अगन[3] मै प्राण दाजै[4] सूण लीजौ आदेस ॥ १ ॥
पाच(चौं) मुदरा[5] भसम(मी) कथा नष-सष[6] राष्या सांज ॥
जौगणी[7] हौऐ[8] कर जग ढौढसू[9], म्हारी घर-घर फैरी जै ॥ २ ॥
दरद दीवानी तन-जालण, मीलीया राम दयाल ॥
मीरा कै मनू(न) आनद उपज्यौ रूम-रूम खुसीयाल ॥ ३ ॥

८६

दावन[1] ना वीसमाणो हो सांम[2] राव रे ॥
तागो तुटो[3] तो फेर सध(धे) नही षल[4] टूटो कुमलाव(वे) रे ॥
तारो[5] रुठो सामरो अस[6] लव-लऊ(?) जाय [वे रे] ॥
काल तन रो[7] पाणी न पीयो[8] काला लूंग न खाऊं ॥
काला कीसनजी री सेज नही जाऊ मैं काली पड जाऊ ॥
कड़व(वा) लीव[9] नीवोली मीठी सरवर मीठा पाणी ॥
काल(ली) कीसन जी रो(री) सेजा भल जोऊ ओड कसुमल साडी ॥
मीरा कवे(है) परभु[10] गीरधर नागर तम जीते हम हारी ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७, पत्रांक-१७८
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३२५७४, पत्रांक-८

---

सं० पाठ ८५-१. जोड । २ गह्या । ३. विरहाग्नि । ४. दाझै, दाहे । ५. मुद्रा । ६. शिख । ७ योगिनी । ८. हो । ९. ढूंढस्यूं ।

" " ८६-१. दामन (?) । २ श्याम । ३. टूटो । ४. खाल । ५ यारो (?) ६. ऐसो । ७. काले तन री । ८ पीऊं । ९ नींव । १०. प्रभु ।

८७

पद राग बहंग

देखो हरि कहां गया नहडो[1] लगाय ॥ टेर ॥
छोड चल्यौ बीसवासघाती[2] प्रेम की बात सुणाय ॥ १ ॥
घायल कर निरमायल कीनी खवर न लीनी मेरी आय ॥ २ ॥
व्रह-समद[3] मै छोड गये है नेह की न्याव[4] चलाय ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर रह्या छै माधोपुर[5] छाय ॥ ४ ॥

८८

धर[1] न धरीज(जे) कंवार, भजिये तौ बात भली है ॥ टेक ॥
मुथरा बास बहौत दिन कीनौ सूत्र[2] मारे के वार ॥
कालजन[3] चकंद[4] दिसिटि[5] जारी तो भुम कौ भारि मुतारि[6] ॥ १ ॥
क्रमा[7] सौरी[8] पुल्ही वाई हरि भजि ऊतरी पार ॥
मीरा प्रभु गीरधर की दासी अबकै सरनै ऊवारि(र) ॥ २ ॥

८९

न कस्यो ई कसोटी हौत है बारैह[1] बानी ॥
सुपच[2] भगत प्रिविप्रसेवारौ[3] मं हरिदाथि[4] बिकानी ॥ १ ॥
वीष[5] कौ प्यालो राणो दीयौ अपयो[6] मीरा जाणी ॥
मीरा के प्रभु न्याव निबेड़ौ ॥ छाणे दूध र[7] पाणी ॥ २ ॥

---

१. सत साहित्य मंडल बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से ।

---

स० पाठ ८७-१. नेहडो । २. विश्वासघाती । ३. विरह समुद्र । ४. नाव । ५. मधुपुर, मथुरा ।
" " ८८-१. धीर, धैर्य । २. शत्रु । ३. कालयवन । ४. मुचकुन्द । ५. दृष्टि । ६. उतार । ७. करमा । ८. शवरी ।
" " ८९-१. वारह । २. स्वपच । ३. थी विप्र सेवा रो ? । ४. हृदय से । ५. विष । ६. आप्यो, अप यो । ७. अरु ।

९०

राग नट

नणादी हे मोहन मुदरी ले गयो ॥
ले गयो बद्रीधाम रो र अरी[1] तोर ॥ टेक ॥
मोर-मुकट सीर[2] सोहै हरी पीतावर को फेंट ॥
हुँ[3] दध वेचण जात ही कुज गली भई भेंट ॥ १ ॥
छगरी ते मुदरी भई ओर गले को हार ॥
गाव न वसीयो नद के कहुँ न लगे पुकार ॥ २ ॥
ढुंढी[4] मुथरा नगरी ढूढ्यो गोकल गाँव ॥
घोटक कहीये नद को कानकवर वाको नाव ॥ ३ ॥
गरे(लि) दुपटा(ट्टा) डार के पायन परीये आय ॥
ज्यूँ ज्यु हुँ नाही न कहु[5] हा हा षाय[6] ॥ ४ ॥
मुदरी के मस[7] मोहन ले गयो चत्त[8] चुराय ॥
मीरा के प्रभु ढुढत[9] फीरु[10] जे कहुँ देह वताय ॥ ५ ॥

९१

नद जी कै द्वार आग[1] माला मोरी ले गयो ॥ टेक ॥
माला तो मै फेरि मगावू द्रसनै[2] केसैं[3] पावू ॥
असो[4] है विसवासघाती काया मोरी छो[5] गयो ॥ १ ॥
सषीया क[6] सगि आवै राग तो छतीसू गावै ॥
वसरी बजाव वै कानी सैना माहि कहि(ह) गयौ ॥ २ ॥
सूनि[7] हो ग्रधारी[8] लाला चलूगी[9] तुम्हार रे लारै ॥
मीरा तो तुम्हारी दासी अब क्यूँ विसारि(रो) है(रे) ॥ ३ ॥

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं०, ७६६५ से ।

२. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८३९९, से ।

---

स० पाठ ९०-१. रौके अरी । २ शिर । ३ हूँ । ४. ढूढ़ी । ५. ज्यू ज्यूं नांही न कहूँ । ६. कुहाय (?) । ७. मिस । ८. चित्त । ९. ढूढत । १०. फिरूं ।

" ,, ९१-१. आगे । २. दर्शन । ३. कैसे । ४. ऐसो । ५. छ्ल । ६. सखियाँ के । ७. सुन । ८. गिरिधारी । ९. चालूंगी ।

९२

नंद जी के राजकुँवार मै(म्हे) तो होरी थांसु(सू) खेलां राज ॥ टेर ॥
फागण मास सवायो आयो मो सुगणी कै भाग ॥
चोवा चदन और अरगजा चदन चरचुं गात ॥ १ ॥
आवौ री सपी खेल रच्यौ है सरसी सारा काज ॥
गह वाहीया[1] हम हरि-सग खेला पुरण[2] परम सुहाग ॥ २ ॥
फैट[3] पकड हम पुगवा लेस्यां अब कत[4] जाओ भाग ॥
मीरा कै प्रभु गिरधर नागर चरण-कमल अनुराग ॥

९३

नद जी के लाला वंसी तुमारी सव जग मोहनि(नी) ॥ टेर ॥
हरिया बांस की वासुरीस रे निकसी परवत फोर ॥
पाड वेज मुष पै धारीस रे वाजै वोत कठोर ॥ १ ॥
इद्र घटा ले उतरयोस रे सुख मुरली की टेर ॥
वंसीवालौ सावरोस रे लई गवालन घेर ॥ २ ॥
दघि सुत के नीचै वसेस रे मोती सुत[1] के वीच ॥
सो मागत है राधिका स्याम देऊ द्रिग मोच ॥ ३ ॥
नैनी[2] सै मोटि[3] करी से(स) रे काचौ दूध पिलाय ॥
असौ जादू जाणतीस रे देती आग लगाय ॥ ४ ॥
थूं माधव की वसरीस रे मैं माधव की नार ॥
एक धरा की लाडलीस रे अपनो विरद विचार ॥ ५ ॥
मोहन बजावै वसरीस रे जल जमना की तीर ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर पार करौ बलवीर ॥ ६ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६, से ।

२. अनूप स० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० ११३ से ।

---

स० पाठ ९२-१. बहियां । २. पूरण ३ फेंट । ४ कित ।

" " ९३-१. सूत । २. नन्ही । ३. मोटी ।

९४

नहिं माई वदनूं[1] सारो ॥
प्राणपति को लहरि सजनी डसि गयो कारो ॥ टे० ॥
लोक कह(है) याने रोग व्याप्यो, तन सिझी[2] गयो सारो ॥
तनक याक[3] बाण लागो, निकसि गयो पारो ॥ १ ॥
कहत ललना वैद ल्याऊ नंद को प्यारो ॥
उण आया थारो रोग जासी, मानि[4] पनियागो ॥ २ ॥
मो चदवा क[5] हाथि सो देत ह(है) झारो ॥
दासी मीरा लाल ग्रघर[6] विष कीयो न्यारो ॥ ३ ॥

९५

"राग सोरठ"

नही माहरे[1] सारो साम[2] नही माहरो (म्हारौ) सारो ॥
च पोहोर चार जुग वीतै देषो (स्यो) न सखी उणहारो ॥ १ ॥
माहानै[3] कुण[4] चीतारसी राणा रो नीत वारो ॥
माहाने तो वे ही चीतारसी प्रभु वीरज[5]-चद गोकल वारो ॥ २ ॥
गोकल ने उधार के प्रभु द्वारका[6] मती पधारो ॥
ग्रवके ग्रावु माहारा रगीला प्रीतम जी ग्राडो समदर खारो ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर मोहे [है]पतिहारो ॥

---

१. राज० शो० स० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ८३९९, से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ७६६५ से

---

स० पाठ ९४-१. वैद, वैद्य । २. सीज, सीझ । ३. याके । ४. म्हांनै । ५. मो चंदवा कं ।
६. गिरिधर ।
" " ९५-१. म्हांरो । २. श्याम । ३ म्हांनै । ४. कूण । ५. व्रज । ६. द्वारिका ।

९६

राग भेरवो दीन उग

नाचत गनगवरी के नदा ॥
सीर[1] तीलक[2] भाल अर चदा नाचत गनगवरी के नदा ॥ टेर ॥
वागो वीस[3] के सग गुगरवा, मोतीयन–माल बेजंदा ॥ १ ॥
ऐक दत हु(हूँ) जो दयावत हे(है) लडवा खात मुकंदा ॥ २ ॥
रीदी[5] सीदी[6] के सग मे सोवे, भगतन के सीर[7] वीनदा ॥ ३ ॥
सष्टी[8] सारी ध्यावे नर–नारी भाम होय बोहो[9] घनदा ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु भणत गणपत कु, काटो जग के फदा ॥ ५ ॥

९७

हरजस

नाचत हे गनपती[1] अनदीया[2] मे नाचत है गनपती ॥ टेर ॥
ताल पखावज अमा[3] कु(को) दीना गुगरा[4] चलावे सुरसती ॥ १ ॥
रेवा की दीरा[5] तीरा[6] सवजी[7] वीराजे सग चले मानधाता
बडा जाती ॥ २ ॥
सीव्र की जठा(टा) मे गगा वीराजे सग चले पारवती ॥ ३ ॥
पाचु(चू) षेड़ा[8] सीवजी वसाया भाग गोठे[9] पारवती ॥ ४ ॥
वाई मीरा के प्रभु गीरधर नागर कंठ वीराजे सरसती ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १७० से।

२. अनूप स० ला० लालगढ़ बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

---

सं० पाठ ९६-१. शीर्ष। २. तिलक। ३. विस। ४. घुघरवा। ५. ऋद्धि। ६. सिद्धि।
७. शिर। ८. सृष्टि। ९. बहु।

" " ९७-१. गणपति। २ श्री नदिया। ३. ब्रह्मा। ४ घुघरा। ५. रेवा नदी रा
६. तीर। ७. शिवजी। ८. खेड़ा। ९. घोटे।

९८

नात(थ) हर ना बोलो खरी, हरी हरी हरदा[1] के माहे दल खोलो खरी ।
सतगुरु का दुजी ससार जगत तारे बारणे चोडी[2] मे कुल-मरजाद ॥
जाण न दी जी य्यारे कारणे र जन मीरा टोडारे बेस मोटी हुई ॥
मेरते आई गड[3] हो चीतोड़ सरव सालगराम के ॥
चीडी[4] गड चीतोड राणा जी रो राज है छोडी मुलक मे पाउ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर धणी हो धारण आपने ॥
जागो मारा जुगपती नात(थ) जलमनई की जीहे गावे ॥

९९

नाव किनारै लाव नावडीया[1] तेरी नाव किनारै लाव ॥ टेर ॥
गगा जमना और सुरसत्ती जन[2] को ओही सुभाव ॥ १ ॥
ईत[3] गोकल ऐत[4] मुथरा नगरी मुधरी[5] सी वैण वजाव ॥ ना० ॥ २
मीरा कै प्रभु गीरधर नागर हरी-चरणा चित लाव ॥ ना० ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४९२२ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२९९ से ।

---

सं० पाठ ९८-१ हिरदा, हृदय । २. छोड़ी । ३. गढ । ४. छोड ।

,, ,, ९९ १ नावडिया, खेवैया । २. जिन । ३. इत । ४. उत । ५. मधुर ।

१००

नीदडीया[1] वैरणि होइ रही नीदडीयां ।। टेक ।।
कै कोई जागै जोगी-भोगी, कै चाकर कै चोर ।।
कै कोई जागै संत ववेकी[2], जाका धड परि सीस न होइ ।। १ ।।
बालपणौ हसि खेल गुमायौ, तरणपन[3] रही साइ[4] ।।
तीन अवस्था यू ही गुमाई, मुकति काहा सूँ होइ ।। २ ।।
नर-तन-रतन गुमाइ कै मैं रही कसूब रग धोइ ।।
अब क्या मुख दिखलाऊं हरि सू, वेठि[5] जोबन खोइ ।। ३ ।।
रोइ-रोइ नैन गुमाइयां, मन पिछतावा होइ ।।
मीरां दासी गुन्हैगार है, माफ करौ साई मोइ ।। ४ ।।

१०१

नोनड़ली[1] थानै वेच द्यूं जे थारो गायक होय ।।
नीदड़ली बैरण वेच द्यू ।। टेर ।।
पीसै सेर टकै पसेरी रिपिया री मण दोय ।।
हेला दे-दे गायक तेडू घालूं उधारी तोय ।।
वीच बजार विछायत[2] माडू ऊंची खोलू हाट ।।
दे दे झोला बधती तोलूं बधता राखू बाट ।।
सोवत सोवत सब दिन बीत्या दियो जमारो खोय ।।
निनरा[3] बैरण ता घर जावो राम भगत ना होय ।।
आयो साजन मुड़ गयो रे मैं बैरण रही सोय ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर राखी नैण समोय ।।

---

१. मा० वि० मंदिर बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ..................

२. पिलानी से प्राप्त हरजसो से

---

सं० पाठ १००-१. नींदडिया । २. विवेकी । ३. तरुणपणै । ४. सोइ । ५. वैठी ।

,, ,, १०१-१. नींदड़ली । २. विसायत, विसारत । ३. निद्रा ।

१०२

नैण हमारे अजब कवोल[1] ॥
सायब कु दिदारी[2] कटारि(री) मारि[3] पेम दी मारी ॥
सुली[4] उपर[5](रामा) सेझ हमारो किस विध हुवै जिहार[6] ॥ कटारी० ॥
मिरा[7] कहै प्रभु-गिरधर नागर वात वाणि अत भारि(री) ॥ कटा० ॥

१०३

राग सौरठ

नेद[1] जी का राजकुवार, प्यारा मानु[2] दरसण राजा दोजौ[3] ॥ टेक ॥
हूँ तौ थारी दासी जनम-जनम की हमारी तुम कू लाज ॥ १ ॥
विन देख्या मोहि कल न पड़त है, तड़फ तड़फ जीव जाय ॥ २ ॥
मीरा कै ऊपर कृपा[4] कोजौ, वाह-ग्रहा की लाज ॥ ३ ॥

१०४

पचरगी लहरयौ भीज(जै) छ मारो[1] पचरगी लहरयौ ॥ टेक ॥
अमई[2] रगआयो[3] जो मईयान[4] आज ही पहरयौ ॥ १ ॥
काली पीली घटा उमग आई रग चुव(वै) गहरो ॥ २ ॥
मीरा कह मीथुला यण वोसर चरनन को चहरो ॥ ३ ॥

---

१. राज० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १०४५७ से।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२६६ से।
३ राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से।

---

स० पाठ १०२-१. कपोल। २. दीदार। ३ म्हारे। ४. शूली। ५. ऊपर। ६. जुहारी, जीवारी। ७ मीराँ।
" " १०३-१. नंद। २. म्हाने। ३ दीजौ राज। ४. किरपा, कृपा।
" " १०४-१. म्हारो। २. अम्बई। ३. रंगायो। ४. मैया ने, मैं याने।

१०५

पड गइ(ई) माने राम-भजन की बांण जी ।। आ पड० ।।
साध-संगत वीनो[1] वोहदीन[2] वीता हो, आइ[3] पडी छै मोय हांण जी ।।पड०।।
देय फूक मै पाव धरूंगी पाणी पीउ(ऊ)गी मै छाण जी ।।पड०।।
घर धवा मे मेरो मन नही लागै साधा मै बैठु(ठू)गी आण जी ।।पड०।।
मेरो तो मन हरसु जी लागे छांड डाली कुल की काण जी ।।पड०।।
पाव दीया चल सतसग करलै हाथ दीया कर दान रे ।।पड०।।
नेण दीया साधु-दरसण करलै कान दिया सुण ग्यांन जी ।।पड०।।
मीरा कवै (हे) प्रभु सतगुर सरणै हरसु पडी छ(छै) पीछाण ओ ।।
पड़ गई मान(ने) राम-भजन री बांण जी० ।।

१०६

परम सुदरी मृगा-नेणी राधे थै मोहन वस कीनौ हो ।। टे० ।।
मे दुध बेचन जात ब्र दावन गोरस को रस लीनो हो ।। १ ।।
कोप्यौ सुनो लुग[1] सोपारी[2] पानन मै कसु(छु) दीनो हो ।। २ ।।
मिरा[3] कं प्रभु गीरधर[4] नागर चरण-कमल चीत[5] दीनो हो ।। ३ ।।

---

१. राज प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १०४५७ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२६६ से ।

---

स० पाठ १०५-१. विना । २. बहुत दिन । ३. आ ही ।
,, ,, १०६-१. लूंग, लोग । २. सुपारी । ३. मीरां । ४. गिरिधर । ५. चित्त ।

१०७

पल ही पल पुकार गरै[1] मेरे(रो) गात है ॥
दिवस न अनि[2] भावै नाही निद्रा राति(त) है ॥ टेक ॥
तुम मोहि मारि डारि प्रेम की कटारी सारि ॥
नैन बैन घाव मारि नैक न चलात है ॥ १ ॥
छिनि-छिनि प्रीत लागी ब्रिह[3] की अगनि जागी ॥
अबै तन जत[4] मेरो कोइ न बुझात है ॥ २ ॥
छडि[5] विसार डारे मघ(ग) जोऊं नैन हारे ॥
अब कब मिलि(ल)न होई कोइ न बतात है ॥ ३ ॥
अब हम नाही जीऊं विष पीऊ........... ॥
दास मीरा आव माधो धीर न धरात है ॥ ४ ॥

१०८

पात-पात व्रदावन ढूंढे ढूंढे मथुरा कासी ॥
देख्या स्यांम विलासी ॥
मोर-मुगट पीतावर सोहै कुडल की छिब अैसी ॥
आप ही जाय द्वारका छाये ले गए प्राण निकासी ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर तुम ठाकर हम दासी ॥

---

१. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से ।

२ पिलानी से प्राप्त मीरां के हरजसो से ।

---

सं० पाठ १०७-१. गले, करै । २. अन्न, अन्य । ३. विरह । ४. ......
५. छाडि, छोड़ ।

१०९

पिछलो वैर सभारचो रे पपीया पापी ॥ टेक ॥
मैं सूती हूँ सुख कै भवन मैं पीउ-पीउ कहत पुकारचो ॥ १ ॥
दाधा ऊपर लूंण लगावै हिवडै करवत सारचो ॥ २ ॥
उड-उड वठै कदम की डारी वोल-षोल[1] उर जारयो ॥ ३ ॥
अति हठ सो तू गैल परचो रे मैं तेरो वाप[2] न मारचो ॥ ४ ॥
मीरा गिरधर आरत लागी चरन-कवल चित धारचो ॥ ५ ॥

११०

पीया घर वार मोर गानी ॥
भोतकाल[1] वीषोयन[2] सग खोयो अव तो नकल[3] जावारै ॥
कुमती नार तेरे सग खोटी इन सब काज वीगारै ॥
सुमती के घर आवौ मेरे सायव तो सुख होय हमारे ॥
मीरां के प्रभु गीरधर[4] नागरै(र) व[ह] सव काज सवारै ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-५३

२. अनूप सं० ला० लालगढ़, वीकानेर के ह० लि० ग्र० स० २०६ से ।

---

स० पाठ १०९-१. बोल-बोल । २. बाप ।

" " ११०-१. भूतकाल । २. विषयन । ३. निकल । ४. गिरिधर ।

१११

पीया[१] जोगी भरथरी गुरु गोरख पाया ॥
धनि माता मैणावती सुत राज छुडाया ॥
अमल कीया[२] मावा हूवा[३] सुख रैणि विहावी(वैं) ॥
अमल-नुकल हरे[४] पुरवै[५] जस मीरा जी गावै ॥

११२

पीया मे मैं तेरी दासी हो सनमुष होय सुष दीजे हो ॥
मैं आस-पीआसी[१] हो मेरा तो कछु बसि नही सब तेरे सार(रे) हो ॥
तेरी-तेरी सब ही कहै तुम मया विसार(रे) हो ॥
मेरे तो तुम आसा राम जी तेरी आंन(नी) हो ॥
फीका लागो तुम वीना[२] सब ज[न] मल[३] जान(नी) हो ॥
आरतिवत सुदरी पीव-पीव पुकार(रे) हो ॥
अजऊ न[४] आये नाथ जी पछतावा मार[५] हो ॥
मात-पिता कुल छाडि कै तुम-सो ले साथि(थी) हो ॥
हो जने तो नर वाहीयो तेरै वाडै वाधी हो ॥
मुज(भ) अवला मै चुक[६] का कऊ[७] गई न आये हो ॥
तेरै घर कै वारन[८] सव रैनि गुमाइ(ई)यो हो ॥
येक[९] सगा ससार मै नही ओर न थारा[१०] हो ॥
मीरा प्रभु गीरधर वीना सुष रैनि विहानी हो ॥

---

१. राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० स० २८६७, पत्रांक-१

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १८९०, पत्राङ्क-१४४-४५

---

म० पाठ १११-१ पिया। २. किया। ३. हुआ। ४. हरि। ५. पूर वै।

,, ,, ११२-१ आशा-प्यासी। २. विन। ३. मिल जा। ४. अज हूं न। ५. म्हारे। ६ चूक। ७ कहूँ, कहीं। ८. वारणं, द्वार मे। ९. एक। १०. यारी, प्यारी।

११३

प्रभुजी तुम दरसण विन दोरी ॥
मेरी लगन लगी है राम सू और सकल सूं तोरी ॥ टेक ॥
पीया मोनै मनां विसारी औगुण उर विच लीया ॥
साहिव मेरा सांच न मानै ध्रिग हमारा जीया ॥ १ ॥
पीया मोसू मुख[से] न वोले मैं कैसी विध जीऊ ॥
मैं तो प्राण तजत हूं अव ही भर वटकी[1] विष पीऊ ॥ २ ॥
पीया मौ पर म्हैर[2] करीजै मौ अवला क्यू मारो ॥
जैं मौकूं जीवाई चाहौ तो चरण मेरै घर धारो ॥ ३ ॥
चात्रग[3] छाय[4] लगी आकासां धरण पड्यौ नही पीवै ॥
मीरां व्याकुल भई व्रैहनी[5] राम मिल्या ही जीवै ॥ ४ ॥

११४

राग साम कठाण

प्रान लागो हरीरवा मुकटवारे स(सैं) मेरो ॥ टेक ॥
पेदो उन ना वरजो नही मानत सषो नागर नटवारे सैं ॥
मोर-मुकट उर माल वीराजत वसीवीरे[1] पटवारे सैं ॥
मीरां कै प्रभु गरवर[2] नागर वावा नदजी रा सुतवारे सैं ॥ ॥

११५

प्रा (आ)यजो मारी[1] भीर सावरा जी आयजो भोर ॥ टेर ॥
सुवा[2] पडावता[3] ग्नका[4] तोरी तारचो छै जी कालु(लो) कीर ॥ १ ॥
वावा नंद-घर धेन चराई विछणं मै पाई पीर ॥ २ ॥
गोपि व्रज-मंडल मै राच[5] रचाडयो[6] तट जमना की तीर ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभू ग्रिध्र[7] नागर मेटो नी तन की पीर ॥ ४ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७१४२ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के (इन्द्रगढ पोथीखाना) ह० लि० ग्र० सं० ५२, पत्रांक-४०
३. राज० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १४५ से ।

---

सं० पाठ ११३-१. वाटकी, प्याला २. महर । ३ चातक । ४. छांट । ५. विरहिणी ।
" " ११४-१. वंसी वारे । २. गिरिधर ।
" " ११५-१ म्हारी । २. सूआ । ३ पढावत । ४. गणिका । ५. रास । ६. रचायो । ७. गिरिधर ।

११६

फीर[1] गई राम दुआई[2] रे लका मै राम दुआई रे ।। टेक ।।
कँहत[3] मदोवर[4] सुन पीया रांमरण[5] ऐसी कुवद[6] चलाई रे ।। १ ।।
मिरा[7] कै प्रभु गीरधर नागर चरण-कमल लपटाई रे ।। २ ।।

११७

वलि जाऊ चरण(णा) की दासी ।। टेक ।।
या ही मेरे गगा या ही मेरै जमना याही है तीरथ कासी ।। १ ।।
हरिजी मेरा म्हैं मैं हरिजी की जगत करौ कि न(म) हासी ।। २ ।।
जैसै चद चिकोर[1] निहारै जल विनि मीन पीयासी ।। ३ ।।
अन न भावै नीद न आवै निस-दिन फिरत उदासी ।। ४ ।
मीरां कै सिर उपरि[2] राजै ऐक[3] अपड[4] अविनासी ।। ५ ।

११८

वसो थारी वाजै जी जमुना री तीर ।।
मैं जल जमुना भरण जात हूँ भरण दे मोहि नीर ।। टेक ।।
यत(इत) गोकुल उत मथुरा नगरी वीच गह्यौ मेरो चीर ।।
मीरां के प्रभु गर धर नागर सुधि नही लेत सरीर ।।

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ से, पत्राङ्क-६
२ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८४७ से।
३ राज० शो० सं० चौपासनी बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० २८८४ से।

---

सं० पाठ ११६-१ फिर। २. दुहाई। ३. कहत । ४. मदोदरी । ५. रावण
६. कुबुद्धि, कुविधि। ७. मीरा।
" " ११७ १. चकोर। २. ऊपर। ३. एक। ४. अखंड।

११९

वाईजी म्हारै सांवरियो आ[1] तो देव बदला मे दी(दि)यो ।।
म्हे सेयौ सिरजनहार[2] ।। टेक ।।
कोई निंदो कोई ब्यंदो[3] कोई कहौ लख च्यारि(री) ।।
सांवरियौ बर पायौ हि[4] म्हाँनै जगत हंसै हौ महारी[5] ।।
सजनी सब तजि जगत बिकारी[6] ।। १ ।।
पाटी पाड़ौ मांग संवारौं नौसत करुली सिंगार(री) ।।
सावरियौ चारी सेज सुरगी म्हे देखूंली नैना निहारी ।। २ ।।
साध संगति कीन्ही धनि हौ तीरथ हीये है अधाय ।।
मीरां प्रभू गी(गि)रधर नी दासी चरण कंवल[7] चितलाई(य) ।। ३ ।।

१२०

वांके छैल वीग्रारी[1] ।।
ली(लि)खत परबाती कीण्डे[2]जाग्रे[3] बिलुब्याना[4] म्हे(मैं)हेला दे दे हारी ।।
हो जी खांड भात ओर मेवा मिसरी तोरै कारण लाई जी ।।
उठौ सांवरा भौर भयो सासू छांने आई जी ।।
कण्डे जाए बिलुब्याना म्हे हेला दे दे हारी जी ।।
मेरो तो गागर बोत[5] रसीलो सबधात सोनारी जी ।।
नटनाग्रीग्रयान[6] लुट लडी से लोग हसे दे ताली(री) जी ।।
कण्डे जाए बिलुब्याना म्हे(मैं) हेला दे दे हारी जी ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से, पत्राङ्क-८४

---

सं० पाठ ११९-१. ओ । २. सिरजणहार । ३. विंदो, वंदना करो । ४. है । ५. म्हारी ।
६. विकार । ७. कमळ

" " १२०-१. विहारी । २. कहां । ३. जाय । ४. बिलमाये । ५. मोत, वहुत ।
६. नटनागरिया नै ।

१२०

कोई के ओडण पीत पीतामर[7] कोई के कामल[8] काली[9](री) जी ॥
मे(मै) तो व्रकभाण की कवरी राधका तुम ऊौ नददुलारी[10] जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हे हेला दे दे हारी जी ॥
रेण अदे(धे)री पत[11] दोअ्रेणो सिर पर गागर भारी जी ॥
मीरा के प्रबु[12] गिरधर नागर चरण-कमल[13] वलिहारी जी ॥
कण्डे जाए विलुव्याना म्हे हेला दे दे हारी जी ॥

१२१

राग पनघट

वारी[1] पनघटवा कैसे जाऊ ॥
घाट वाट मग घेरै ही ठाढो कहौ कैसै भर लाऊं ॥ १ ॥
कांकर मार गागर कू फूरत[2] कहा[3] कह कर समझाऊं ॥ २ ॥
छिपकै निरख कर ताक लगावै तव काहा[4] भज जाऊं ॥ ३ ॥
ऐसै तौ नित नाहि निभैगी जसोधा(दा) सै कह आऊ ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभू अत खुट पचरो चरन कवल[5] चित लाऊं ॥ ५ ॥

१२२

वूझो-वूझो नै पिडत जोसी, मोरा राम मिलन[1] कव होसी ॥ टेर ॥
मेरी आंख फरुकै वाई, मोहि साघ मिलै कै साई[2] ॥
मेरा पीव परदेसा छाया, काही[3] विरहन नै भरमाया ॥ १ ॥
मेरी रोय रोय अखिया राती, मेरा तन दीपक मन वाती ॥
मेरा झुर-झुर पिजर खीना, जैसै जल[4] विन तलफत मीना ॥ २ ॥
उड-उड रे कारे कागा, मेरा हरिजी नै घणा दिन लागा ॥
वाजीदौ व्रैहै[5] विसूरै, मेरी आस गुसाईया पूरै ॥ ३ ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४६२२ पत्रांक-३०
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २५३४४, पत्रांक-१०१
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १०८५१, पत्रांक-६

---

सं० पाठ १२०-७. पीताम्वर । ८. कामळ । ९. काळी । १०. दुलारे । ११. पंथ । १२. प्रभु । १३. कमळ ।
" " १२१-१. वाईरी । २. फोरत । ३. का । ४. कहां । ५. कमळ ।
" " १२२-१. मिलण । २. सायां । ३ कांई । ४. जळ । ५. बिरह ।

१२३

भली भई मारी[1] मटकी फूटी दद(धि) वेचन सु(सूं) छूटी रे ।। १ ।।
ब्रंदावन की कुज गली मे सिर से मटकी फूटी रे ।।
मै वेटी ब्रखभान राय की कौन कहे जा(जो) मोऐ जुडी[2] रे ।। २ ।।
मैं दद(धि) वेचन जाती वींद्रावीन[3] बीच सांवरे लूटी रे ।।
रपट-जपट मारी[4] बईयां मरोरी लड़ मोतियन की टूटी रे ।। ३ ।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरी(रि) चरना[5] की बूटी रे ।।
हरी(रि) नाम ली(लि)या जिन षुव[6] काम की प्सी (प्यासी) ।।
ओर बात सब जु(भू)ठी रे ।। ४ ।।

१२४

राग विलावल

भली तो निभाई बालापन[1] की रे उधो ।।
व्याकुल भई कल न परत है, सुध न रहत है तनकी ।। रे ऊधो ।। टेक ।।
आपन जाय द्वारका छाये, हमनें(सौं) कही वन-वन की ।। १ ।।
सव सखियन मिल जोग गहीलो, भसम रमाओ मलयागिरी की ।। २ ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर कोई न जानें[2] मारै[3] मन की ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७९४४, पत्रांक-८

---

स० पाठ १२३-१. म्हारी। २. भूठी रै। ३. वृंदावन। ४. म्हारी।
५. चरणां। ६. खूब।
„ १२४-१. वालपण २. जांणै। ३. म्हारै।

### १२५

भूल मती जाजो[1] जी मारा[2] राज ।। टेर ।।

मैं अवला वल नाई गुसाई तुम मेरे सिरताज ।। १ ।।

मै निरगुणी गुण ना(ई) गसाई तुम गुणवंता राज ।। २ ।।

मीरा के प्रभू कव रे मिलोगे सरणे मोई[3] नीवाज ।। ३ ।।

### १२६

मगन रो रे[1] परभु के भजन से मगन रो रे ।।

का जाणै रांणो भगता रो भाव दीनौ जे'(जह)र ईमरत हुय जाय ।। १ ।।

वटवा मे घालो[2] राणो कालो[3] नाग हु(हो)य गई मूरत सालगराम ।। २ ।।

भाडा-भडा[4] अमराव[5] खान सुरत[6] मनारी गी(गि)रद उडियो गान[7] ।। ३ ।।

का[8] गये गोपी का गये गवाल[9] का गये भी(वी)ण वजावणहार ।। ४ ।।

मीरावाई ने मीन्नया घी(गि)रधर लाल तुम छुडाये[10] राणा मेरो खाल ।। ५ ।।

---

१. अनूप स० ला० लालगढ़ पेलॅस, वीकानेर के ह० लि० प्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से । पत्रांक-११

---

pa० पाठ १२५-१. जाज्यो । २. म्हारा । ३. मोही ।

" " १२६-१. रहो । २. घाल्यो । ३. काळो । ४. वडा (वड़ा) वडा ।

५. उमराव । ६. सुरताण । ७. चौगान । ८. कहां ।

९. गुवाल । १०. छुडायो ।

१२७

मन की मन मे रही रे मांहरे[1] हीरद(दै) करोत भई रे ॥
एक समै हर मेरे ग्रह[2] आया मै दध मथन रही रे ॥
मै मंदभागण माणस जान्यौ[3] जातन अठ गही रे ॥
इत गोकल उत मथुरा नगरी वैरन बीच भई रे
मैं इत वो वुत ये री सखी री पर(पी)तम भेट भई रे ॥
सोल-संस्त[4] गोपका छाकी (डी) कुबजा सग लई रे ॥
मनै[5] (जोग), भोग कुबजा सूं, ज्रीज मे न्याव नही रे ॥
आपनै जाय दुवारका. छाये हमसू कछू न कही रे
मीरा के प्रभू गिरधर नागर गोप्या झु(भु)र रही रे ॥

१२८

मन मांनै ज्या[1] जावो छौ राज थांरो ॥ टेर ॥
भीलनी के वोर, सुदामा के तदुल, रुच रुच भोग लगावो छौ ॥ १ ॥
दुरजोधन का मेवा त्यागया, साग विदुर घर पावो छौ ॥ २ ॥
राधा रुकमनी तजी[2] सतभामा कुवज्या के मन भावो छौ ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर वोल वचन निभावो छौ ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ बीकानेर, के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

---

सं० पाठ १२७ १. म्हारै । २. घर । ३. जाण्यों । ४. सोळै सहस्र । ५. हमसूं ।

" " १२८-१. जहां । २. तजि ।

१२६

राग तोडी

मनमोहन आवन की सुनकै भयो जो[1] परमानद रे ॥ टेर ॥
श्रवण सुनत ही अती[2] सुप पायो छूट गया दुख-दुद रे ॥ १ ॥
सुण रे(रो) सखी ऐ(ए)क वात सैयानी काहा जो कयी[3] गोवद[4] रे ॥ २ ॥
मीरा कै प्रभू गिरधर नागर काट दी(दि)या जम-फद रे ॥ ३ ॥

१३०

राग कालिगड़ो

मनरो[1] वसे छै जाही जाज्यौ जी ॥
राधा रुकमनि अरु सतभामा कुवज्या कै संग जाज्यौ ॥ १ ॥
कूड़ी प्रीति करी मनमोहन कूडी-कूडी सोंगन खाज्यो ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु सव वृजनायक आगणिये[2] फिरि आज्यौ ॥ ३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७२ से ।
२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७५७३ से ।

---

स० पाठ १२६-१. जी । २. अति । ३. कयौ, कह्यौ । ४. गोविंद ।
" " १३०-१. मनड़ो । २. आगणिये ।

१३१

राग सोरठ

मना रे गिरधर का गुन गाय ।।
मनसा वाचा करमना रे धणी सौ ध्यान लगाय ।। टेक ।।
कोल करी[1] ग्रभवास मे रे सो तै क्यौं बिसराय ।।
पाणी सों पैदा की(कि)यो रे मिनखा देही[2] धराय ।। १ ।।
प्रभू सूं कोल बिसार कै रे माया मोह लुभाय ।।
मात पिता सुत बधु दारा बांधो(ध्यो) सहज सुभाय ।। २ ।।
जौबन तो जातौ रह्यौ रे अब यो बुढापो आय ।।
राम नाम सुमरचो नही रे पाछै ही पिछताय ।। ३ ।।
मीरां यौ कर(रु)णां करी तव दया करी रघुराय ।।
घरि बैठा गी(गि)रधर मिल्या ताते दुरि काहै कौ जाय ।। ४ ।।

१३२

राग विहाग रौ

मदिर पौढिये रघुराई ।। टेक ।।
कचन कौ महल कचन कौ ढुलिया(यो)[1]रेसम वान वजाई[1] ।। १ ।।
फूलन सेज फूलन के गिदवा फूलन लूब लगाई ।। २ ।।
चौवा चदन अगर कुम-कुमा केसरि अग लपट पठाई[2] ।। ३ ।।
सीताराम दोउ(ऊ) संग पौढे बलि जाय मीराबाई ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८२६० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२५६ से । पत्राङ्क-६८

---

सं० पाठ १३१-१. करचो । २. देह ।

" " १३२-१. रेसम बाण बणाई । २. लपटाई ।

१३३

माई कब देखौ मोहन मूरति लाला रिसाल को दरस ॥
अखिया अरबरानी जिय मे कछु ओर वा(ठा)नी ॥
असुवन जल इद्र लाग्यौ बरसन ॥
निस-दिन मारग जोऊं कल ना परत मोकौं ॥
अजहू न आए पी(पि)य लागे ने(नै)ना तरमन ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर निरखत ही पग पर(स)न ॥

१३४

माई नद के नदन मेरो मन हरैया[1] ॥
चित मे भई चटपटी भारी चेटक सौ जु करचौं ॥
तनक ही मानक सुनी मुरली की तन मन मे न हरचौ ।
स्याम स्याम रसना रट लागो और सबे विसरचौ ॥
लोक लाज कुल कानि विकाई गई([ग]र्व गुमान गरचौ ॥
फूली सो डाली डोलति गोकुल मे घेर घनो परचौ ॥
छन मोहन मूरति देखे जो तन धीर धरचौ ॥
गरिधर हाथ विकानी मीरा प्रभू दाव परयौ मु परचौ ॥ १ ॥

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२५६ से । पत्रांक-६८

---

सं० पाठ १३४-१. हरचो ।

### १३५

माई री लालन आवन कौ मैं आगम जान्या ॥
फरकत लागे री कुच भुज बाही, सुनि सखि एक बात पी(पि)य आवेंगे ॥ १ ॥
प्री(प्रि)या पात फूली आगन मांही, अखिया आगोंनी मिलि आई,॥
करवो कगन देऊगी, मोतियन की लार[1] दैऊंगी ॥ २ ॥
तिन मोरे पियहवू[2] की बतिया सुनाई, कब मिलि भेटौगी ॥
मीरा के प्रभु कोटिकी[3] करि हौं बधाई ॥ ३ ॥

### १३६

माणक मोती सब हम छाडै गल मे पहरी सेली ॥
भोजन बसन नीको नही लागै पी(पि)या कारन भई गेली[1] ॥
मुजै(भे) दूरी क्यों मेली ॥ १ ।
अब तुम प्रीति ओर सू जोड़ी हम सूं करि क्यूं पहलै(ली) ॥
वोहो दिना बीते अजहूं न आए लग रही तालाबेली ॥
किणै[2] बिलमाए[3] सहेली ॥ २ ॥
स्याम बिना जीवयौ(ड़ौ) मुरझैयौ जैसै जल विन वे(बे)ली ॥
मीरा के प्रभू दरसन दीजो जनम जनम की चेरी(ली) ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, १०६७ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७३ से ।

---

स० पाठ १३५-१. लड (लर) । २. पिय हू । ३. कोटिक ।
" " १३६-१. गैं'(ह)ळी । २. किण । ३. विळमाया ।

१३७

हरजस

मारी[1] गलीयां[2] आवण हो पीयारा[3] ॥
गगसम[4] मिजलस आवण हो गगसाम ॥ टे० ॥
लग रईया[5] फूलडा भुक रई कालीया[6] ऊंची हुठाई[7] मारा[8] (रो) गाम ॥
सड़ो गलीअया[9] आवण हो गंगसांम ॥
पीछवाड़(डै) आय हेलो दीजो ललना(ता) सखो मेरो[10] नांम ॥
सोयरव(वै) सव वीरज को लोकओ आई हे छल–वल को कांम ॥
... ..........जावो नी(नि)रमोहीडा जाणी थारी पीत ॥
इमरत छोड जहर कीउ[11] पीये तुम मे आकाणा की पीत ॥
पीत लगी जव ओर रीत ही अव भई आन[12] रीत ॥
........जासवो नी(नि)रमोहीडा जाणी थारी प्रीत ॥
मीरा कै है परभु गी(गि)रधर नागर तुम मतलव का मीत ॥

१३८

मारो[1] लालजी छोगालो[2] रे ठाडो जमुना की तीर ॥ टेर ॥
तू जमना वडभागणी नी(नि)रमल थारो नीर ॥
पणीयारयां[3] पाणीभरे काई ओडण चगा चीर ॥
जी म्हानै पीयरीऐ[4] पीछावो[5] रे ॥ १ ॥
जमुना तू दूरी ग(घ)णी मासु[6] गयो ये न जाय ॥
कीजो[7] मारा[8] साम[9] ने मानै[10] गोदयां कर ले जाय ॥
जी मे पाली(ळो) कीस(विध)चालू रे ॥ २ ॥

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४ से। पत्रांक-७

सं० पाठ १३७-१. म्हांरी । २. गळियां । ३. प्यारा । ४. गंगश्यांम । ५. रह्या । ६. कळियां । ७. हताई । ८. म्हांरो । ९. गळिया । १०. म्हारो । ११. (क्यू) पीऊं । १२. अन ।

" " १३८-१. म्हारो । २. छोगाळो । ३. पिणयारयां । ४. पिहरिये । ५. पोंचावो । ६. म्हांसू । ७. कहिज्यो । ८. म्हांरा । ९. स्यांम । १०. म्हानैं ।

तूं जमुना गेरी[11] ग(घ)णी मांमु उतरयो न जाय ॥
कीजो मारा स्यांम ने माने वेस्या पकड़ ले जाय ॥
जी मे झाला दे दे हारी रे । ३ ॥

मे(मैं) तने वरजु(जूं) सांवरा रे बरसाणे मत जा(य ॥
बरसाणां री गु(गू)जर्यां थांने राखेला वी बि)लमाय ॥
जी मे(मैं) वरजत हारी रे ॥ ४ ॥

मै बेटी वृखभाण की राधा मेरो नाम ॥
पकड़ मगाऊ क्रस्न को कोई छोटो सो नदगाम ॥
जो माने दया तो तुमारी आवै रे ॥ ५ ॥

छोटो छोटो(मत) कर रादा(धा) मत कर छोटी वात ॥
छोटो दूज को चंद्रमा कई दुनीया जोड़े हात ॥
जी दुनिया मे दो दिन रेणा रे ॥ ६ ॥

अतलस को लै(ह)गो वणास्यां रे चोली बूंटादार ॥
असी मोहर को तो तेवटो मारी नथडी भल(ळ)कादार ॥
जी मारे[12] दातन चूप दीरावो रे ॥ ७ ॥

तन चोखा मन लापसी ने(नै)णां घी की धार ॥
दूजो हात(थ) परूसती काई जीमो क्रस्न मुरार ॥
जी मनुहार कर कर हारी ॥ ८ ॥

बरसाणा रा बाग मे रे पाकी छै वडबोर ॥
कीजो मारा स्याम ने कांई लावे लूबा तोड़ ॥
जी मे तो उबी[13] वाट उडीकू रे ॥ ९ ॥

गोकल वाजा बाजिया रे बरसाणे सुणी आवाज ॥
(मैं)मे दद(धि) वेचन जावती कई आगे खडा नदलाल ॥
जी माने वंसी की टेर सुणाई रे ॥ १० ॥

हरिया कंद की चुदड़ी रे बूटी लाल गुलाल ॥
ओडण वाली[14] रा(ध)दका कंई नीरको[15] क्रस्न मुरार ॥
जी मै सेना मे सम(भावूं)जावु रे ॥ ११ ॥

विनरावीन[16] री कुञमे रे क्रस्न(ण) रचाया रास ॥
सब मुनी जै जै करे कंई गावे मीरा दासि ॥
जी चरणा मे चित लगाया रे ॥ १२ ॥

---

१. अनूप स० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

---

सं० पाठ १३८-११. गेहरी, गे'री । १२. म्हांरे । १३. ऊभी । १४. वाळी १५. निरखो ।
१६. वृंदावन ।

१३६

पद

मिजाजीड़ा वकै[1] नैणा मे जादू डारचा ॥ टेक ॥
घायल की गत घायल जाणै क्या जाणै वेद विचारे ॥ १ ॥
तुम तो किसन जनम के कपटी प्रीत करी पछताना[2] रे ॥ २ ॥
मीरा कै प्रभू गिरवर नागर तुम जीत्या हम हारचा(रे) ॥ ३ ॥

१४०

मीरा नै जहर इ म्रत कर पीयौ, पीयौ-पीयौ धणी कै भरोसै ॥ टेक ॥
राणो जी कागद मौकल्या जी, द्यौ मेड़तणी नै जाइ ॥
साधा री सगंति छोडिद्यौ, थांरां कुल[1] नै लांछण थाइ ॥ १ ॥
काठन की माला[2] तजौजी, प्हरो मोतीहार ॥
भगताई थे दूरि करोजी, सब ही राज तुम्हार ॥ २ ॥
काठन की माला हीरा जडी जी, म्हांरा हीया सूं लिपटाई ॥
जे थारै मन भ्रान्ति वसै तौ, हमैं(म) वहन तुम भाई ॥ ३ ॥
मीरादासी राम की जी, निति प्रति रहै हजूरि ॥
हरिजन सू सुनमुख सदाजी, दुसय्या[3] सेती दूरि ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८५७ से ।

२. ना० वि० मंदिर बीकानेर के ह० लि० प्र० से

---

सं० पाठ १३६-१. वाकै । २. पिछताणा ।

" " १४०-१. कुळ । २. माळा । ३. दुसटां ।

### १४१

मुज प्रेम में हरि करोजी हरि आवनां हरि आवना जी मन भावनां ।।टेक।।
मेरं द्रग तलफत[1] द्रग देखन कु, गल[2] कर दरस दिखायना ।। १ ।।
लग-लगी सब कोई जाने, अब कहौ कैसे छिपावना ।। २ ।।
मीरा(रा) कै प्रभू गिरधर नागर, यो ओसर नही पावना ।। ३ ।।
हम कब होवेगे व्रजवासी ।। ४ ।।

### १४२

राग कीलन (कल्याण)

मुरली नै म्हांरो जीवैरो[1] मोह ली(लि)यौ ।।
वर(स)परी[2] बाजत है निस-दिन अधरन को रस (लि)लीयो ।।
मोर मुकट गल-माल विराजै कुडल की छब न्यारी ।।
मीरा के प्रभु गी(गि)रधर नागर मन मोह(न) वनबारी[3] ।।

### १४३

मेरो प्यारो नदलाल बंसी बजायो(य) गयो बन मे ।।
बसी की धुन सुन(ण) मैं चली मोहे कछु न सुहाये ।।
बसी बजाय गयो बन मे ।।
विसरि है सुनु धुन तकी[1] तन मन मोहे मेरे प्रान ।।
बसी बजाय गयो बन मैं ।।
बनहूँ के मिर्गा[2] मोहे चदा मोहे आकास ।।
पानी तो पाथरा[3] हो गये जमना बाहि आसराल ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से । पत्रांक-२२

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २५३४४ से, पत्राक-१५

---

सं० पाठ १४१-१. तड़फत । २. मिल ।
" " १४२-१. जीवडो । २. वंसरी । ३. बनवारी ।
" " १४३-१. सखी । २. मिरगा । ३. पाथर ।

कनवा मिलन कू मे(मैं) चली विच पाह् गई नांव ॥
मिरा[४] तो हरजी की लाडली दरसन दिजो नदलाल ॥
वसी वजाय गयो वन मे ॥ १ ॥

१४४

मेरी आखिन लगी आई लाज री, मेरौ मन लाग्यौ उनके मनसौं ॥ १ ॥
मन चात्रिग नैना अति चचल, ये दोउ(ऊ) कठिन इलाज री ॥ २ ॥
मन कहत नैना अजहूं मिलि, विछरन(त) ये ही जजाल री ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु गिरधर आय मिले, मोंहि जीवन सफल धन आज री ॥ ४ ॥

१४५

मेरी कानां सुनिजो जी कर(रु)णा निधांन ॥ टेक ॥
रावलो विड़द मोहि रुड़ो सो लाग परत पराये प्रांन ॥ १ ॥
सगा सनेही मेरे ओर न कोई वैरी सकल जिहान ॥ २ ॥
ग्राहा गह्यो गजराज उवारयौ वूडि न दीन्हौं[१] जानि[२] ॥ ३ ॥
मीरादासी अरज करत है नही जी सहारो आन ॥ ४ ॥

---

१. राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० २५३४४ से । पत्राक ६२
२ राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७, से ।
३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८४७, से ।

---

पं० पाठ १४३-४. मीरां ।
१४५-१ दीन्ही । २. जाण ।

१४६

मुगत रौ ऐ गैहणौं पैरीयौ(पै'रियौ) ॥
पै'रियौ पैरियौ ऐ सतगुर परताप ॥ टेक ॥
मारै(म्हारे) खिम्यांरी चूंदड़ बाण रही रांमइयौ ऐ सालूडारी कोर ॥१॥
मारै(म्हारे)करणी री काजल सारिचौ रामइयौ ऐ मारै तिलक लिलाड॥२॥
मारै(म्हारे) सील सतोख चूप बणी मारै(म्हारे) नथ वेसर गुरग्यान ॥३॥
मारै(म्हारे) तत नाम तिमण्यौं रामइयौ ऐ हिवड़ा रौ हार ॥४॥
मारै(म्हारे) चित-चेतन चुड़लौ वण्यौ रांमइयौ ऐ चुड़ला री मजीठ ॥५॥
मारै(म्हारे) ग्यांन वाजूबंद बहुरगा रामइयौ ए बाजूबध री लूव ॥६॥
हूं तौ इतनौ जी पहिर नीसरी चाली चाली ऐ रामइया री सेज ॥७॥
वाई मीरा नै गिरधर मिल्या पूरी-पूरीऐ मनड़ा री हूँस ॥८॥

१४७

मैरौ राम नै रिझाऊं, अजी मैं तो गुण गोबिन्द का गाऊ ॥
डालपात कै हाथ न लाऊं, ना कोई बिरछ सताऊ ॥
पान पोन मे सायब देखूं, झुक झुक सीस निवाऊ ॥
अजी मैं तो गुण······ ॥टेक॥
गगा जाऊं न जमना जाऊ, ना कोई तीरथ न्हाऊ ॥
अडसव तीरथ भरचा घट भीतर, ज्यामे मलमल[1] न्हाऊ ॥ १ ॥
साधू होऊं न जटा बधाऊं, नां कोई खाख रमाऊं ॥
ग्यान कटारी कस कर बांधूं, सूरता म्यान चढाऊ ॥ २ ॥
पारबिरम पूरण पुरसोतम, व्यापक रूप लखाऊ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, आवागमण मिटाऊं ॥ ३ ॥

---

१. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७१४३, से । पत्रांक-५३

२. पिलानी से प्राप्त हरजसो से

---

स० पाठ १४७-१. मळमळ ।

१४८

मैं तो छाडी छाडी कुलकी कानि राणो मेरों कहा करसी ।। टेक ।।
साधा रे सग जाय दवारका मे(मैं) तो भज्या श्रीरणछोर ।। १ ।।
दौडि रे जास्यो[1] देउरैं (देवरैं) लेस्यों[2] महाप्रसाद ।। २ ।।
पगा वजावैं घुँघरा हाथ मैं लेस्यौं(स्यू) ताल ।। ३ ।।
गास्यो(स्यू) गुण गोपाल ।।
मीरा पोहर छाडो[3] मेरतो सासरियौ चीं(वि)तोड़ ।। ४ ।।

१४९

मैं वैरागण राम की थारैं मारैं(म्हारें) कद कौ सनेह ।।
वी(वि)नपाणी विन सावुना रे सावरा हू गई (होगई) धोय सफेद ।। १ ।।
जोगण हुई[1] जगल सव हेरु रयो) तेरा[2] न पाया[3] भेस(द) ।।
तेरी सूरत कै कारणैं सावरा धरै (र) लिया भगवा भेस ।। २ ।।
मोर मुगट पीतावर सोहै घूघर वाला[4] केस ।।
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर हैंण बडा सनेस ।। ३ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८९० से ।
२. सत साहित्य मडल वीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से प्राप्त ।

---

म० पाठ १४८-१. जास्यू, जास्या । २. लेस्यां, लेस्यूं । ३. छोड्यौ ।
" " १४९-१ होय । २ तेरो । ३. पायो । ४. वाळा ।

१५०

मोरे[1] घर आज्यो राम पियारा ।। टेर ।।
मैं नुगणी मे गुंण नहीं कोई मो मै ओगंण सारा ।।
तन मन धन सब अरपण करसूं (स्यूं) भजन करूं(कस्यूं) मैं थांरा ।। १ ।।
वोहो[2] गुणवता साहिब मेरा गुनां(न्हा) बकसज्यो सारा ।।
मीरां तो चरणन की दासी तुम बिना नैन दुख्यारा ।। २ ।।

१५१

मोवन[1] जावोला कठै सांवरिया जावो[ला]कठै अब रे'वौ अठै ।। टेर ।।
गोकल(ळ) वसवो[2] फीकोई लागे मथुरा में कई[3] लाडू बटै ।। १ ।।
रादा (राधा) रुखमण और (अर) सतभामा कुबज्या-
कई[4] थारे लीनी पटे ।।
नितरौ(रा)ई आवौ नितरो(रा)ई जावो नित आया थांरो मान घटे ।। २ ।।
नहीं आवौ तो थांने कूण बुलावै आवौ तो थांने कूण नटे ।।
बाई मीरा(मीरा) के प्रभु गिरधर नागर थारो नाम लिया-
म्हारो दुख कटे ।। ३ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

---

सं० पाठ १५०-१. म्हारै । २. बहु, मो'त ।

" " १५१-१. मोहन । २. वसवो । ३. कांई, कंई । ४. कंई ।

१५२

मोहन रातड़ली का वसिया ॥
थांरा भंवर पटामें आवै वासड़ली रातढली[१] ॥ टेर ॥
काई[२] तुमारो नाम कहीजे काई[३] तुमारी जातड़ली ॥ १ ॥
भगतवछल मारो(म्हांरो नाम कहीजे जादु[४] हमारी जा(वा)तडली ॥ २ ॥
के सतभोमा[५] रे मेल[६] पधारै कै कुब्ज्या से किवी वातडली ॥ ३ ॥
वाई मीरा के प्रभु गिरधर नागर आण मिल्या परभातड़ली ॥ ४ ॥

१५३

म्हांनै जावोदो[१] वी(वि)हारी, मारै(म्हांरै) काम सै (छैजी)
इतनी अरज सुणो जी सावरा, था(थां) विचै मा(म्हा) विचै राम से(छै)जी ॥१॥
इत गोकल उथ(त) मथरा नगरी, जमना क(कि)नारै मेरो गाम(छैजी) ॥२॥
मोरे आ(आं)गण चदन का वी(विं)रवा[२], सावरी सषी(खी)मेरो नाम सै(छै)जी ॥३॥
मीरा(रां) कहै प्रभु गिरधर नागर, हर[३]-चरणां मेरो ध्यान सै (छै)जी ॥४॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ७६६४ से ।

---

सं० पाठ १५२-१. रातढली । २,३, कांई । ४. यादव, जादव । ५. सतभामा । ६. महल ।
१५३-१. जावादो । २. विरछा, वृक्ष । ३. हरि ।

१५४

राग सोरठ

म्हानै लाष(ख) लोग ह(ह)सि जाह्व दासी जगदीस तणी है ॥ टेक ॥
दासी सोई दासातउ जांणै मन मे राखै भाव ॥
तन मन धन सतन कौ अरपे(पैं)ह हरि तजि अनत[1] न जाय ॥ १ ॥
व्रदावन की क(कु)ज गलिन मे नरतत [2]ताथे इत्ता(ताय)[2] ॥
रुणक झुणक घुंघुरु अति घमकै मुरली री अधिक वना(बणा)व ॥ २ ॥
मन वचन क्रम करि गोविंद भजिस्या(स्यां) म्हारो यौ ही सुभाव ॥
मीरां प्रभु गिरधर नी दासी म्हारो काई करैलो रो राणो राव ॥ ३ ॥

१५५

म्हारां पियरी(रि)यांरी वांतां सतगुरु कैता[1] जाजी[2] ॥ टेर ॥
सतगुरु आया सब रस लाया प्रेम पियाला पाया ॥
सतगुरु सा(सा)चा सूरमा म्हानै सैंजां राम मिलाया ॥ १ ॥
सासरी(रि)या मैं दुख्ख घणो रे सासू नणद संतावै ॥
कैजो[3] म्हारा वावा(बाबा)जी(सा) नै वे(वि)गा लेवा(बा) आवै ॥ २ ॥
देवर-जेठ म्हारो कुटव कवीलो नित उठ राड चलावै ॥
इण घर-धधै री वातां मानै एक ही दाय न आवै ॥ ३ ॥
मारा[4] पिहरी[5] रो लोक भल(ले) री वाधै कठी माला[6] ॥
तिलक छापा रुड़ा सा(सो)है वे अमरापुर वाला[7] ॥ ४ ॥
अमरापुर मे सासरो रे पीहर संता पास ॥
भले (ळे) न इण जुग आवसा[8] गावै मीरा(रा)दासी ॥ ५ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२-से । पत्रांक-१३२
२. अनूप सं० ला० लालगढ़, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से ।

---

सं० पाठ १५४-१. अन्यत्र । २-२. ता थेइ तथ्या ताय ।
" " १५५-१ कैं'ता कहता । २ जाजोजी, जांज्योजी । ३. कहिज्यो, कैं'ज्यो ।
४. म्हारा । ५. पिहरिया । ६. माळा । ७. वाळा । ८. आवस्यां ।

## १५६

म्हारी लागी लगन मत तोड(ड़) सांवरा ॥
गाव(ठ) जु घुर(ळ) गई रेसम की ॥ टेक ॥
स्याम सु(सू) प्रीति करी सजनी ज्यो जाणे ज्यों जोड़ ॥ १ ॥
तुम वि(वि)न मो को कल(ळ) न परत है तो(तू) मुख मति मोड़ ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर लीज्यो आप वहोड़ ॥ ३ ॥

## १५७

म्हारे हीरदे[1] ली(लि)ष्यो जो हरी(रि) नाम ॥
अब नही वीसरु(रू) म्हांरी सेवामे(मे) सतगरु राम ॥ टेर ॥
वी(वि)स का प्याला राणेराइ भेज्या दो(द्यो) मेड़तणी रे हाथ ॥
करी चरणाम्रत पीई गई, थे जाणो रे रगुनाथ[2] ॥ १ ॥
जाई दासी म्हल मे, जरे मीरां मुई क(कै) नांही ॥
मुई वे[3] तो जाल[4] दो(द्यो) जी, ने तो नदी मे दो(द्यो) जी बुहाई ॥ २ ॥
पावां वादया[5] मीरा(रा) गु(घू)गरा जी, हाता(थां) लीनी ताल(ळ) ॥
मीरा(रा) महल मे ऐकली जी, भजे राम-गोपाल(ळ) ॥ ३ ॥
राणो मीरा(रा) परी(पर) कोपीयो जी, मारु ऐ(ए)करण सेल ॥
लांछण लागे जीव कु(कू), पीहर दीजो(ज्यो) मेल ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४, पत्रांक-४१

---

सं० पाठ १५७-१. हिरदै । २. रघुनाथ । ३. हुवै । ४. वाळ । ५. बांध्या ।

मीरा(रा) महल सु(सू) उ(ऊ)तरी जी राणा(णै) पकडयो(ड्यो) हाथ ॥
हतलेवा[1] का साईना मारे(म्हारे[2]) और न दूजी वात ॥ ५ ॥
रत(थ) वेल्या[2] सीणगारीया[3] उठां[4] कसी(सि)या भार ॥
डावो मेल्यो मेततों(मेड़तो) पहली पोक(ख)र जाई ॥ ६ ॥
सा(सा)ढीड़ा सा(सा)डीयो पीलाण जा रे मीरा(रा) पाची(छी) फेर ॥
कुल(ळ) की(री) तारण अस्तरी मुरड़ चली राठो(ठौ)ड़ ॥ ७ ॥
साढीडा(ड़ा) साड्यो फेर दे रे पर तन देसु(स्यूं) पाव ॥
ले जाती वैकुठ मे (रे) समज्या(झ्यौ)नही सीसोद ॥ ८ ॥
लाजै छै पीयर सासरो मीरा(रां) लाजे(जै) छै माय-मोसाल(ळ) ॥
लाजै दु(दू)दाजी रौ मेरतो[5] लाजै गढ ची(चि)तोड़ ॥ ९ ॥
तारु(रू) पीयर सासरो जी तारु(रू) माय-मोसाल(ळ) ॥
तारु(रूं) दु(दू)दाजी रौ मेरतो[5] तारु(रू) गढ ची(चि)तोड ॥ १० ॥
लक्षमीनाथ के रै देवरे जी बैठी सीसोदया[6] साथ ॥
मीरा(रां) नाचे ऐकली जी, छाडी कुल(ळ) की लाज ॥ ११ ॥
साध हमारा मे(मैं) साघ की, हम हे(हैं) साधा आग(गै) ॥
साध हमारे मे रम रं'या(रह्या) ज्यु(ज्यूं) पथरी मे आग ॥ १२ ॥
मीरा(रा) को पीयर मेडतोजी सासरी(रि)यो ची(चि)तोड़ ॥
मीरा(रां) ने गी(गि)रधर जी मो(मि)ल्या नागर नद-किसोर जी ॥ १३ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ।

---

सं० पाठ १५७-१. हथळेवा । २. बळद्यां । ३. सिणगारिया । ४. ऊटां । ५. मेड़तो ।
६. सिसोद्या

१५८

म्हारै मिंदरी(रि) ऐ(ए) पधारौ जोऊं थांरी वाट ।। टेक ।।
धरण गिगन विच झो(झ)री लागी ऊगंते परभात ।।
रसना मेरी राम रटत है सतगुर जी रै परताप ।। १ ।।
दोड चोकी मैं(मे) सहजै छेकी नाम कवल[1] कै घाट ।।
वक-नाल पर मुरली वाजै सतगुर मारचा था(सा)ट ।। २ ।।
काया-नगर मैं(मे) रास रच्यौ, है सुरत सुहागण नार ।।
जनम-जनम को टोटा भाग्या गुरु(रू) मिलया[2] दातार ।। ३ ।।
इगला पिंगला सुखमण नारी सहैज रच्यौ घरवास ।।
मीरा नै गुर(रु) गरवा मिलीया[3] जब पायौ विसवास ।। ४ ।।

१५९

म्हारो वालो[1] विसा[2] विलंवि रह्यो ।।
मन का मोहन स्याम जी जाइ विदेसा विलवि(त्रि)यो ।। टे० ।।
गगन भव(व)ती कुजरडी हे कुरजा अेक संदेसौ ले जाइ ।।
म्हारा स्यामजी सौ यौं जाइ कहियौ प्यारी विरहन पांन न खाइ ।। १ ।।
काढि कलेजा[3] भु(भू) धरी कै ऊवाकू[4] ले जाइ ।।
जा दिस मेरा पीवजी वसत है वा देखत तू पा(खा)इ ।। २ ।।
पल पोली[5] पल आगणै पल-पल ऊभी जा(जो)इ ।।
घायल जू (ज्यू)यूं मत फिरौ म्हारो मरम न जाणै का(को)इ ।। ३ ।।
राम मिल्या जीवौ(वो) खरी[6] नहींतर छुटै देह(इ) ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर तुम विन किसा सनेह(इ) ।। ४ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८४७, से ।

२ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २८१८७ से । पत्राक-१

---

सं० पाठ १५८-१. कंवळ । २, ३. मिलिया ।
,, ,, १५९-१ वाल्हो । २ विदेसां । ३ कलेजो । ४. ऊभाकूं, ऊवाकू
५ पोली ळी । ६. खरो ।

१६०

म्हे जास्या सांवरीथा र(रे) साथ्य[1] वाइ[2] म्हान(नै) जगत
हसौ(हंसै) है ॥ टेक ॥
जगत हंसै हसि जांण दे री टहैल करा म्हे जाय ॥
माधुरी मु(मू)रति हिरदै वसै म्हा तो चित मे रही है लुभाय ॥ १ ॥
लोग कढुबी (कुटंवी) निदवै री प्रति[3] न घटाय[4] ॥
जब देखां तब ही सुख ऊपजै बिनि देख्यां जीव[ड़ो] जाय ॥ २ ॥
सास ननद दे ली[5] बोलीवो[6] म्हांना(रा) मात-पिता पछताय ॥
मीरा(रां) प्रभु(भू) गिरधर नी दासी अब कैसे रेऊ वा(बा)रि ॥ ४ ॥

१६१

म्हे तो जास्या(यां) सांवरिया रि(री) लारि[1] ये मुध्रा रै लारि[2] बाई ॥टेक॥
जगत हस्त(हंसत) हसै न ध्रौहै ॥ टहैल करै(इ) संग जाय(इ) ॥
माध(धु) री मु(मू)रति मन वसो ॥ मह्रारै(म्हारै) हिरदै ॥
रही है समाय(इ) ॥ १ ॥
पद नु (नूं) प्रकटि किकनी ही घुघरांन की भु(भ)णकार ॥
मीरा(रा) प्रभु(भू) जीन(नै) मोह लीनी काई स दु(कहु) नंद-कवार ॥२॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२, पत्रांक-१२६
१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३६१५२ से । पत्रांक-८३

---

सं० पाठ १६०-१. सायै । २. बाई,माई । ३. प्रीत । ४ घटजाय । ५. देवैली । ६. ओलमो ।
" " १६१-१. ल्यारी । २. अमीरी ।

१६२

यनकी साझ(ध,ज)न राखतां छै भगति मे हांरा ॥
देवर-जेठ म्हारै कुबधि[1] नी(नि)त की राडै(ड) पछाड ॥
घर-धघा की वात कहत है म्हारै दाय न आव(वै) ॥ १ ॥
पीहरी(रि)या रो लोग भलेरो वाधै कठी माला(ळा)[2] ॥
छापा तिलक मनोहर वाना काटै जम का जाला(ळा) ॥ २ ॥
भोव-साग्र[3] म(मे) सासरो पीहर साधा(धा) पास ॥
वहोड[4] न अरण जू(जु)ग आवस्या यू गावै मीरा(रा) दास(सी) ॥ ३ ॥

१६३

ये आज आवेगे मेरै लाल बोलत सुभ वानी(णी) ॥
कुच भुज फर(रु)कत कचुकी दरकत करकै करीया[1] कर सरकत ॥
होर छतियां ऊलसानी दीपग(क) झरत जोति ॥ १ ॥
जगमगानी यांहू ते मैं जानी अवै जुपाउ(ऊ)गी[2] ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु तन मन नोछावरि करौगी ॥ ३ ॥
पीउ(ऊ)गी वारि वारि पानी ॥ ४ ॥

---

१ राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ७६६५ से।
२ राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० स० १०६७, से।

---

स० पाठ १६२-१. कु बुद्धि। २. माळ। ३ नोसागर। ४. वहुड़, वाहुड, वहुरि।
,, ,, १६३-१ करियां, कड़ियां। २. जलाऊगी।

१६४

रघुबर मोंहि परना(णा)ई अमा मोरी ॥
सुन्दर सुघड़ सुजान(ण) सांवरो जनम-जनम भरतार ॥ टे० ॥
मोर-मुकुट पीताबर सौहै गल[1] मोती(ति)यन की माल[2] ॥ १ ॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण-कवल[3] चित लाई ॥ २ ।

१६५

रघुवर माधो री मु(मू)रत लीलवरन[1] घनस्यांम सीयावर माधो री मूरत ।टेक।
ध्ररग कर तारत सबको दाता मन सारी पूरन(ण) कांम ॥ १ ॥
जनकसुता-वर लक्षमण राजी(जि)द कीट-मुगट[2] अभैराम[3] ॥ २ ॥
मीरा कै प्रभु गी(गि)रधर नागर चरण कमल नी(नि)ज धाय ॥ ३ ॥

१६६

रमतां लाध्या कांकरा सेवा सालगराम[1] ॥
यो मन लागो[2] हर-नांव[3] सूं रमसां[4] साधां री साथ ॥
साध पधारया म्हे सुण्यां काना सुणीं आवाज ॥
सरवरसे[5] साधां ने(नै) बैसणो दूध पखाळु(ळू) पांय ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २८८४ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से ।

३. पिलानी से प्राप्त मीरां के हरजसों से ।

---

सं० पाठ १६४-१. गळ । २. माळ ३. कवळ ।

सं० पाठ १६५-१. नीलवरण । २. किरिट-मुकुट । ३. अभिराम । ४. कमळ ।

,, ,, १६६-१. साळगराम । २ लाग्यो । ३. नाम । ४. रमस्या । ५. सरवर, सरोवर ।

विसरा प्याला राणा जी मोकल्या[6] दीज्यौ मीरां रै हाथ ॥
कर चरणाम्रत पी गई भजु(जू) रुगनाथ ॥
राणों आघो होय नै जोइयो[7] मीरा मुई कै नाह ॥
पगा बजावे गू(घूं)घरा हाथा बजावै ताल(ळ) ॥
लाजै पीहर सासरो लाजै माय मोसाल(ळ) ॥
लाजै दु(दू)दाजी रौ वेसणौ दूजौ ची(चि)तौड़ी राव ॥
त्यारो पीहर सासरो त्यारचो[8] माय मोसाल(ळ) ॥
त्यारो दूदाजी रो वैसणो दूजौ ची(चि)तौड़ी राव ॥
ओ मन लाग्यो हर नाव[9] सू(सूं) रमसां साधां री साथ ॥
ओ मन लाग्यो गुर-ग्यांन सूं ॥

१६७

रसनां तू राम वि(वि)नां मति बोल ॥ टेर ॥
ओर बोल्यां अपराध लगत है पड़त भजन माहै झोल ॥ १ ॥
सुखरत सुमरण करलै री आणीयै दोय बात अमोल ॥ २ ॥
जगत तणी बाता सब झूठी राम-नाम मुख बोल ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरवर नागर की(कि)या छै गरम म्हांहै[1] कोल ॥ ४ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलैस बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से ।

---

सं० पाठ १६६-५. सरवर, सरोवर, सवरो । ६. मोकळ्या । ७ जोयो ।
८ त्यारों । ९. नाम ।
" " १६७-१. मांई, मांहे ।

१६८

राखो र(रा)म हजूरि(री) वाला हम मे बडी सबु(बू)री ॥
अज्योध्यापुर[1] मे चाव[2] न्पानैं[3] तो राखो र(रा)म हजूरी ॥ टेक ॥
हे जी सेरहू(हू) सेरी वजरी दीज्यो न(ना)तर दीज्यो कूरी ॥
प(प)चाअम्रत[4] कर-कर मनु(मांनू) हमने घडी(णी)[5] सबु(बू)री ॥ टेक ॥
हे जी वोढन[6] को कारी[7] कामरी[8] दीजे[9] न(ना)तर दीज्यो कु(क्)री कमल(ळी) ॥
मैरा जीव सों लागी धरत न मेळो(ले) दूरी ॥ टेक ॥
हे जी चारो ल्यासु(सू) पु(पू)लो[10] ल्यासु(सू) भैंस दुवासो[11] भूरी ॥
जीमन(ण) चु(जू)ठन(ण) करि-करि मेलु झारी ले'र हजु(जू)री ॥ टेक ॥
हे जी मु(मौ)र मुकट कांना कुडल(ळ) सोहै और व(वै)जतीमाला ॥
आठ पहर दरवार खड़ी रहु(हू) काटो जीव का जाला(ळा) ॥ टेक ॥
मीरांवाई हरि गुन(ण) गावै चरन(ण) क(क)वल(ळ) की दासी ॥
चरनणकवळ की सेवा करसु(सू) चरनामत्रि[12] की प्यासी ॥ टेक ॥

१६९

राज करे तेरो कानो वी(बि)रज को बि(ब)सवो छाड्यौ ॥ टेक ॥
अ(इ)त गोकुल अ(उ)त मथुरा नगरी वी(बि)चे[1] नदजुको[2] ठाढो ॥ १ ॥
वरजु जसोदा अपना(णां) लाल कुँ(कूं) जी(जि)त देखू ती(ति)त आडो ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गी(गि)रधर नागर मदन मीत जूको गाढो ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८९० से । पत्रांक-८६-९०
२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १६६७ से ।

---

स० पाठ १६८-१. अयोध्यापुरी । २. चयावो, चाव है । ३. म्हानैं, न्याव । ४. पंचामृत । ५. घणीं । ६ ओढण । ७. काळी । ८. कामळी, कामळिया । ९. दीज्यो । १०. पूळो । ११. दुवास्यूं । १२. चरणांमृत ।
१६९-१. बीच । २. नदजी को ।

१७०

रादै(वे) ने वसो चोरी ॥
नई(ही) है सोना की रादे(वे) नही हे रुपा की ॥
हरी(रि)अया बास री पोरी रादै(धे) नै वसी चोरी ॥
काअ्रेसे[1] गाहु[2] राघे काअसे बजाई (बजाऊं) ॥
काईसे(काहेसे) लाग्र(ऊ)गह(ऊ) गेरी[3]रादे ने व(ब)सो चोरी ॥
मुक(ख)से गावो काना[4] कर से बजाओ ॥
लकड़ी से लावो[5] धीन(धेनु) गेरी(घेरी) रादे नै बसी चोरी ॥
मीरा(रा) के प्रबु(भु) गी(गि)रधर नागर प्रबु(भु) के चरण च(चि)तवारो ॥

१७१

राधे वासि[1] कीनी हो स्याम सुजांन(ण) ॥
धन जी रानी कुपि[2] तुमारी धन जी पो(पि)ता वृखभान(ण) ॥ टेक ॥
सुनो रंगवेली राज गहेली कहाँ की(कि)या जी सागर रुप उजगार[3] ॥
अखियां मं(मे) जान[4] वी(वि)जान ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर दीज्यौ जो भगत(ति) मोहि दान ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३४९२२ पत्रांक-२८-२६

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से, पत्राङ्क-६१-६२

---

सं० पाठ १७०-१. काहे से । २. गाऊं । ३. घेरी । ४. कान्हा । ५. ल्यावो ।
" " १७१-१. वसि, वश । २. कोखि, कूंख । ३. उजागर । ४. ज्यांन ।

१७२

रामजी विना कूं(कुं)ण करै म्हांरी भीर ॥ टेक ॥
ऐ(ए)क समै गजराज उवारयौ काट्या जहर[1] जभीर ॥ १ ॥
ऐ(ए)क समै प्रहलाद उवारयौ धारियौ नृसिंघ-सरीर ॥ २ ॥
ऐ(ए)क समै द्रोपति-पत राखी खैंचत वाढ्यो चीर ॥ ३ ॥
राका भी त्यारचा[2](रामजी)वांकां भी त्यारचा-त्यारचा[3]है कालूकीर ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभू हरि अविनासी[4] वै साहिव गहर गभीर ॥ ५ ॥

१७३

रांम-दिवांनी(णी) हो गई मे(मैं) तौ राम दिवांनी(णी) हो ॥
भांवै लोक हासी करौ मेरे मनमांनी हो ॥ टेक ॥
लोक कुटंव प्रवार[1] तज्यौ लैहो चात्रग पानी(णी) हो ॥
स्वात-वूंद रघुनाथ जी तन सू ललनी हो ॥ १ ॥
प्रेमसुधा-रस पीवता नही मे(मै) छूं अघानी हो ॥
गावै मीरां व्याकुली[2] हरि हाथ वे(वि)कानी(णी) हो ॥ २ ॥

---

१. भारतीय विद्या मन्दिर बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से ।

२. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९१ से

---

सं० पाठ १२७-१. जी हर । २. तारचा । ३. तारचा । ४. अविनासी ।

" " १७३-१. परिवार, परवार । व्याकुळ ।

### १७४

राग खमायची

गामजी मिलावैं तौ फेर मिलेंगे मिल वि(वि)छडौ मत कोई हो ।।टेक।।
लगन लगी जब लाज कहा रही निद्या करौ सब कोई ।। १ ।।
प्रीत करी मैं सुख कै कारण प्रीत की(कि)या दुख होई ।। २ ।।
आपतौ जाय व(वि)देसे[1] वसे हो मिलण किसी विध होई ।। ३ ।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हूँण मतै सो होई ।। ४ ।।

### १७५

रायघाट सब ढूढ[1] फिरि ब्रदावन[2] मेरो सावरीये(रिया) ।। टेर ।
घर सैं निकसन मोकु(कू)छीक भई है आगे वान सुना(णां)वै कागरी(रि)या ।।१।।
............गोकल लैइया क्या डौलै ।। २ ।।
हलका[3] हुवै सो डिगमग डोलै पूरा भया जब क्या डोलै ।। ३ ।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर [नागर] सायब[4] पाया तन औलै ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७१४३ से ।

२ रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २०९से, ।

---

स० पाठ १६८-१. विदेस, विदेश ।

" " १७५-१. ढूंढि । २. वीनरावन, वृन्दावन । ३. हळका । ४ साहिब ।

१७६

रुत आया बोलें मोर हरी(रि) बिना जि(जी)व[1] दोरा ॥ टेर ॥
ऊमट[2] घुमड़ आई बदलियां[3] व(ब)रसत है चहुं ओरा ॥ १ ॥
दादर मोर पपैया बोलै कोकी(कि)ल है तन सोरा ॥ २ ॥
नदि(दी) किनारे सारस बोले कहा जानू(णे) पिया मोरा ॥ ३ ॥
मि(मी)रा कै है[4] गिरधर नागर हरि मिल्या जि(जी)व शो(सो)रा ॥ ४ ॥

१७७

रेसु[1] बावा नंद–घर चेरी ॥ टेव ॥
टेल करसु(सू)[2] सेवा करसु(सू) हरि के चरणां नेडी ॥ १ ॥
टेल के म(मि)स दरसंण करसूं धिन जीवन मेरी(रो) ॥ २ ॥
एक व(ब)न ढूढ सकल[3] वन ढुढे ढु(ढू)ढी वृ(ब्र)ज सगरी ॥ ३ ॥
ब(बं)सरी को सबद सुण–सुण भई मगन घणेरी ॥ ४ ॥
सासु(सू)नणद मारी[4] देवर जेठाणी सबही मिल ज(झ)गडी(री) ॥ ५ ॥
माहरो[5] मन लागोरी[6] या सांवरी सुरत सु(सू)जख मारो सगरी ॥ ६ ॥
भली कहो कोई बुरी कहो मैं मा(मा)डली झोली(ळी) ॥ ७ ॥
दासी मीरा लाल गिरधर अज बनी जोडी ॥ ८ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १६६७ से ।

---

सं० पाठ १७६-१. जीवड़ा । २. उमड़ । ३. वदळिया । ४. कही ।
" " १७७-१. रेस्यूं । २. करस्यूं । ३. सकळ । ४. म्हांरी । ५. म्हारो ।
६. लाग्यो ।

१७८

लखता पल'मारे[2] मेल[3] पदा(धा)रो जी पल मारच्(म्हारे) ॥
उगेणं[4] मारा[5] सासू जी वसत है आतु(थू)णे गर[6] मारचोजी ॥
पल मारच् मेल पधारो जी पल मारच् ॥ १ ॥
जाजर वोल हातां(था) मे लीजो मुगट दुसाला सु(सूं) ढाकोजी ॥
पल मारच् मेल पदा(धा)रो जी पल मारच् ॥ २ ॥
मारा[7] तो घणं[8] सगलोई[9] जासी गव-धन[10] जासी प्यारोजी ॥
पल मारच् मेल पदा(धा)रो जी पल मारच् ॥ ३ ॥
मीरावाई के प्रवु(भु) गिरधर नागर हरी(रि) चरणां च(चि)त धारोजी ॥
पलमासु(सू) पलमासु मेल पधारोजी पलमासु ॥ ४ ॥

१७९

लग कोपै मोहै न्यारो ॥ टेर ॥
घायल की गत घायल जाणै क्या जांणै व(वै)द विचारो ॥ १ ॥
गला[1] म(मे) ऐक घारो[2] लघु[3] मैं प्रेम मगन मतवारो ॥ २ ॥
तेर(रे)भांवै कारी कवरी-वारौ[4] मैर[5] हे प्रान(ण) कौ प्यारौ ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभू गिरधर नागर पल पल प्राण अधारो(रो) ॥ ४ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३४९२२ से । पत्राङ्क-१०
२ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७६६५ से ।

---

स० पाठ १७८ १. पैल, पहिले । २ म्हारे । ३. महल, म्हेल । ४. अगूंणं । ५. म्हारा ।
६ घर । ७ म्हारो । ८. गेंणं, गेहणं । ९. सगळोई । १०. गो-धन ।
" " १७९-१. गळो । २. न्यारो । ३. लागू । ४. कमळी वाळो । ५. मेरे ।

१८०

लागे सोई जाणे हेली मेरो मालक जांणे कठण लगन की प्रीत ।।टेर।।
में(मैं) जगल की हीरणी री सजनी सतगुर(रु) मार्या तीर ।। १ ।।
खेच बांण सतगरु जी दीनो वीकुल[1] भयो सरीर ।। २ ।।
लागी जब जाण्या नही सजनी अव दुख देन[2] सरीर ।। ३ ।।
मीरा के प्रभु कब रे मी(मि)लोगे सुखी करोगे सरीर ।। ४ ।।

१८१

ले जा रे कागदवा नरसी जु(जी) क(के) पास ।। टेक ।।
राम-नांम कह दीजो रे सबन को और कहिज्यो सावास र(रे) ।। १ ।।
कागद की बिधि हय (हे) तुमारे तो आओ रथ साज रे ।। २ ।।
सनमथि[1] मील ही[2] इण वोसर कठन[3] रहन तुम लाज र(रे) ।। ३ ।।
वचन विन[4] आनद ड(गि)रधर के गाव मीरा(रां) दासी रे ।। ४ ।।

१८२

लेलो री भर लोचन लाहो ।। टेक ।।
चरत सखी एक श्रीरंगपुर की देत सीख फी(फि)र फी(फि)र सव काहू ।। १ ।।
असो सेट(ठ)कब ह[रि]पुर आवयाकी[1] कीवो[2] र[3] हरी(रि)-पुर आव(ऊ) ।। २ ।।
दुर्लभ दरस सेस सनकादिक जनम-जनम सखी सब पछिताऊ ।। ३ ।।
कोउ(ऊ) न हरक की(कि)या असुरन कू चार बरण नर-नार निवाहू ।। ४ ।।
मीरा कह(है) सो निरभ(भै)कर जानु(नू) जन नरख्यो नरसी को साहू ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर, के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ५२,(इन्द्रगढ पोथीखाना) पत्रांक-१२३

३. राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०५७ से पत्रांक-५

---

स० पाठ १८०-१. व्याकुल । २. देत ।

" " १८१-१ सनमुख,सन्मति । २ मिलो(आयमिलो) । ३. कठिन, । ४. विन, विना ।

" " १८२-१. आव्याकी, आवे याको । २. किधो, किनो, कैज्यो । ३. रे ।

१८३

वन[1] आवै तो हरी(रि)-गुण गाय लै रे ॥
गोवी(विं)द-गुण गाय लै रे ॥ टेर ॥
कहा रे भयो सपद ठाडे र(रे) जटा रे वधाई ॥
कहा भयौ हरी भभु(भू)त्त लगाय(ई) ॥ १ ॥
मीरा कैहै[2] प्रभु गी(गि)रधर नागर ॥
हरि-चरणां ची(चि)त लाय ले रे ॥ २ ॥

१८४

वरस(सै) कु[1]नही पाणी हो गुमानी मेहा ॥ टेर ॥
वरसत कु नही पांणी ॥ टे०
या वन सव(व) रे सुकै[2] वनसपती कुमलाणी हो ॥ १ ।
दादर मोर पपई(इ)या बोलै कोयल मुधरी सी बाणी हो ॥ २ ॥
मीरा कै प्रभु गी(गि)रधर नागर व्रज-वनता विलवाणी[3] हो ॥ ३ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९, से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९, से ।

---

सं० पाठ १८३-१. वण, वनि । २. कहै ।

" " १८४-१. १. वयूं । २. सूखे । ३. विलमांणी ।

१८५

राग सोरठ

वाजूवं(ब)ध तूट पड्यो हसत खेलत आधी रात ।। टेक ।
घर जाया मोरी सासु(सू) लडैगी देख अवीणो[1] हात(थ) ।।
कहो कौन विध जाई(इ)ये सजनी चित आयो परभात ।। १ ।।
आज की रैन चैन सों वी(बी)ती सुदर प्रीत्म(तम) साथ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर प्रेम-मगन भई गात ।। २ ।।

१८६

वा(वा)ट वैऊता वि(वी)र बटाउड़ा वाला को'ऐ रे दवारका नै जाये(य) ।।
गोपि(पी) सदेसो मोकळे रे वाला ओरे(र) जसोदा मायै(य) ।।
सांवरी(रि)आ नै कैजो[2] रे समजाऐ(झाय) ।। टेर ।।
खीर न पीये थांरा वाच्च(छ)ड़ा[3] रे वाला वन-वन डूंढी[4]थांरी गाऐ(य) ।। १ ।।
जल जमना रो-ऊमग्यो नही रै वाला ।।
कुजर-ई क(के)म तारचौ सावरा कुबजा आवी थारी दाय ।। २ ।।
कौयल ज्यू काली भई वागल ज्यु (ज्यू) वरलाय माखी ज्यों(ज्यूं)
मल को भाय ।। ३ ।।
जव लग सास सरीर मै(मे) तव लग हरी(रि)गुण गाऐ(य) ।। ४ ।।
दासी मोरा लाल गिरधर दरसण दीज्यो आऐ(य) ।। ५ ।।

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३७६४४ से । पत्रांक-८५
२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १४५, से ।

---

पा० पाठ १८५-१. आमीणों ।
" " १८६-१. कोई । २. कहज्यो । ३. बछड़ा । ४. ढूंढी ।

१८७

वार्ता तो तमारी[1] हो वारी[2] जी आ(या)द रहेला ।। टेर ।।
जव ची(चि)त आवे सावरी स(सू)रत को आडी अवली वहेला ।। १ ।।
पु(पू)रव जनम री प्रीत सा सा)वरी(रि)या सोई वात वरोला ।। २ ।।
होणी होई सोई विदना(विध) होली सोच करै सो ही गैला ।। ३ ।।
मीरा के प्रवु(भु) गी(गि)रधर नागर प्रीतड़ली दुख देला ।। ४ ।।

१८८

राग मारु

वावरी कीन्ही हो वसी वावरी कीन्ही ।।
असन वसन ग्रहै[1] भु(भू)लै तन-गत हर लीन्ही ।। टेक ।।
ऋछु[2] को रंग-राग राग-मत्र[3] होऐ देह दीनी ।। १ ।।
चात्रग ज्यु(ज्यूं) वूंद ववीसईसा[4] मे आधीनी ।। २ ।।
कहा कहु(हूं) कछु कहेत न आवै तन-गत[5] गई छीनी ।। ३ ।।
मीरा(रां) प्रभु(भू) नी(नि)रखत वहु भई लवलीनी ।। ४ ।।
हो वसी वावरी कीन्ही(हो) ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७०, से ।
१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से ।

---

सं० पाठ १८७-१. थारी, तुम्हारी । २. विहारी ।
" " १८८-१. गृह । २. ऋषि, कछु । ३. रागमत्त, रागमंत्र । ४. विश्वास
६. तनगति ।

१८९

व्रजहू की रज मे(मै) तो भई कु(क्यूं)नी वीरा रे ॥ टेक ॥
पडो रहत गोकल की डगर मे उड-उड लागु(गू) मै साम-सरीरा रे ॥ १ ॥
मोरे तो सी(सि)र पर प्रभु पाव धरत है सरवर्णं[1] सुणत वसी वट वीरा रे ॥ ३ ॥
वाट-घाट व्रंद्रावन-कुजन सीतल परसत पवन समे(मी)रा रे ॥ ४ ॥
मीरां कै प्रभु गी(गि)रधर नागर होय गयो सब सुख मिट गई पीरा[2] रे ॥ ४ ॥

१९०

व्रंदावन नी(नि)ज धाम देख्यौ री मैं व्रंदावन नी(नि)ज धाम ॥टेर॥
श्री जमुना ज्याकै नी(नि)कट वैहत[1] है सब विध पु(पू)रण काम ॥ १ ॥
श्री बलदेव माहाबनौ[2] गोकल मथुरा जी विच राम ॥ २ ॥
गोवरधन श्री मारणसी गंगा व(ब)रसाणै नदगाम ॥ ३ ॥
कु(कु)ज-कुज मे कथा वसत(बचत) है नी(नि)स-दिन आठु जाम ॥ ४ ॥
मीरा कैहै प्रभु गो(गि)रधर नागर सतन कै वो(बि)च राम ॥ ५ ॥

---

१. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९, से ।

---

स० पाठ १८९-१. श्रवणं । २, पीड़ा ।

" " १९०-१. वहत । २. महावली, महावन ।

१६१

व्रदावन मोहन दध लु(लू)टी ।। टेर ।।
कहा तोरो हार कहा नख-वेसर कहा मोतीअन की लड़ टु(टू)टी ।। १ ।।
गोकुल हार मथुरा नख-वेसर कुज-गली मे लड़ टूटी ।। २ ।।
वरजो जसोदा मइया[1] तेरा लाल ने खाई मरुगा[2]वी(वि)स-गु(घू)टी ।। ३ ।।
मीरा के प्रभु हरी अवीनासी[3] सव रस दे गुजरी छु(छू)टी ।। ४ ।।

१६२

सतसग स(सू,से) किन(ण) टाली ये माई(य) ।। टेक ।।
सतसग विन दोहोरी[1] कदिय[2] न सहोरी[3] ।।
तलफ-तलफ जीव जाव(वै) री माय ।। १ ।।
जेठानी खोटी देवरा[नी] [खो]टी यो जीवन कस[4] होसी ये माय ।। २ ।।
देवर खोटो सुमरो अपरादी[5] नणदल कह छ[6] न्यारी हो जाये माय ।। ३ ।।
पडोसणये[7] मिन्न लेऊ न(नि)त नेमि(मी) कस जीवन होसी ये माय ।। ४ ।।
मीरा कह(है) मी(मि)श्रुला इण वौसर[8] कवरी व्रहन[9] ।।
गाव(वै)री मा[य] ।। ५ ।।

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १७० से।

१ रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से। पत्रांक-२-३

---

सं० पाठ १६१-१ मैया। २. मरुणी। ३ अविनाशी।
,, ,, १६२-१. दोरी। २. कदी। ३ सोरी। ४. कैसे। ५ अपराधी। ६ कहे छै।
७. पडोसणियां। ८. अवसर। ९. विरहिण।

१९३

**राग सोरठ**

सबसू पतम[1] भज्यै गोपाल ॥
कोट-करम भ्र(जं)जाल जीव कै मीटे जम कै जाल ॥ टेर ॥
प्रहलाद की प्रतग्या राखी धूकु[2] इवछ(च)ल[3] राज ॥
वभीषण कु(कूं) लक(का) दीनी सायर बाधी पाज ॥ १ ॥
क्रस्ण सुदामा बाल-लीला पढै ची(च)टसाल ॥
कंचन-महल वणाय दीना(नां) जडत हीरा लाल ॥ २ ॥
ई(इ)द्रदेव रिसाय बरषै डरै ब्री(व्रि)ज के बाल ॥
ग्र(आ)गली पर धार[4] गी(गि)रवर राख ली(लि)यौ नदलाल ॥ ३ ॥
सकल ब्रिज मैं(मे) ग्रणंद होत है घर-घर मंगलाचार ॥
दासी मीरा लाल गिरधर हर(री) लिया अवतार ॥ ४ ॥

१९४

सांकडी लौ[1] मैं(मे) हानै(म्हानैं) सतगुर(रु) मिलिया ॥
कीकर फिरू रे अफूटी ॥ १ ॥
सासु(सू) बूरी है मारी(म्हांरी) नणद हठीली बल मीरा कै प्रभु-
गिरधर नागर ॥ २ ॥
चरण-कंवल पर वारी जल भई रे ग्रगीठी ॥ ३ ॥
साध सगत मैं(मे) नित उठ जाता दुरजन लौका दीठी ॥ ४ ॥
मे(मै) (म्हां)मारी गिरधर न्याव नवेरो[2] और दुनी[3] सब झूठी ॥ ५ ॥
भावै कोई न(निं)दो भावै कोई वंदो चलसी चाल अफूटी(ठी) ॥ ६ ॥
मीरां केहै प्रभु गिरधर नागर चढगौ रग मजीठी ॥ ७ ॥

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि ग्र० स० ७६३९ से ।
२. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८७ से ।

---

सं० पाठ १९३-१. प्रथम २. ध्रुव कूं । ३, अविचल । ४. धारचो ।
" " १९४-१. गली । २. निवेड़ो । ३. दुनिया ।

१९५

सावरे तोय रग भरूगी ।। टे ।।
चौवा चदन और अरगजा केसर घौर(ल) धरूंगो ।।
आवोगे विसवासी कुंजन देखत दाव फी(फि)रूगी ।। १ ।।
जै नो मैं आन जाय पकड़ू ले पी(पि)चकारी जड़ु(ड़ू)गी ।।
तुम सो(छो)री(रे) ढौटा नद-मैंर[1] का काजल-रैख करूगी ।। २ ।।
विंदावन की कुंज-गलन मे तौ सग रास रमूंगी ।।
मीरा के प्रभु गी(गि)रधर नागर तौ सिर छत्र धरूगी ।। ३ ।।

१९६

सावरै मोय रग भर डारि(री) देखै सब लोघ(ग) खैलारी ।। टे० ।।
सेज[1] सभाव स(च)ली जल जमुना पै [हर] वसती सारी ।।
आपई ठाढौ कदम की सई(छइ)या हाथ लिवी पी(पि)चकारी ।।
संखी वाकै छ(स)नमुख मारी ।। १ ।।
अगी(गि)या भीजोई मेरा लैंगा भीजोया और भीज(जो)ई दई सारी ।।
हेरी सखी घर काहा कहु(हू)गी अैसोई ढोटौ[2] विहारी ।।
सखी वांकै सि(चि)त पर वारी ।। २ ।।
सो(चो)ली का रग सवई उतर गया लैंगा होय गया भारी ।।
मैं पतली सी ली(लि)प[ट]जाय कमर मे चचल सासु(स) हमारी ।।
सखी मोकु(कू) डर लागै भारी ।। ३ ।।
या व्रज को प्रभु लोक स(छ)वियौ[3] हस-हस दै मोये तारी ।।
मीरा कै प्रभू गो(गि)रधर नागर चरण-कमल वलिहारी ।।
सखी मे तो सबसै न्यारी ।। ४ ।।

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से ।
२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ६२९९ से ।

---

न० पाठ १९५-१. नन्दमेहर ।
” ” १९६-१. सहज । २. ढोठौ । ३. छवैयौ ।

१६७

सेटा(ठा)णी जी चाल्या वो(ओ)लूड़ी[1] लगाये ।। टेक ।।

क(कि)रपा मौ पर घणी राखज्यो दरसण दोज्यो फेर आये ।। १ ।।

लक्ष्मी कह(है) सुनु(णो)पुर की नारी वो कवरी कि[2] तुम माये ।। २ ।।

मीरा(रा) कह(है) मोथुला यण वोसर[3] लखमी लागत पाये ।। ३ ।।

१६८

सुषमण[1] मौ हर[2] विसरत नाय ।। टेर ।।

सरव सोना र(री) बणी रे दुवारका मुथरा की सब नाय ।। १ ।।

न(नि)रमल जल जमुनाजी कौ आचमन गै'री[3] कदम की छाप(य) ।। २ ।।

मैं दध वैचन जात विंद्रावन गौरस को रस नाय ।। ३ ।।

मीरा के प्रभू गी(गि)रधर नागर हरी(रि)-सरणा[4] ची(चि)त लाय ।। ४ ।।

१६६

हम ईसट[1] हमारो ध्यावें ओर दाय नही आवं ।। टेर ।।

पी(पि)छली रात हात(थ)सेवा कर पीछै भोजन पावै ओर कहा नही जावै ।।१।।

भैरु पीर मीर भेरंब[2] हम नही सीस नमावे ।। २ ।।

वाद-वी(वि)बाद आद[3] नही आवे दरद गम[4] कू खावे ।। ३ ।।

मीरा के प्रभु भणे भवसागर रे'त[5] सदा नी(नि)रदावे ।। ४ ।।

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०५७ से ।

२. राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ से ।

३. अनूप सं० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

---

स० पाठ १६७-१. लूरी, लूंगी । २. की । ३. ओसर, अवसर ।

" " १६८-१. सुख, मन, सुषुम्णा, रुक्मण । २. हरि । ३ गहरी । ४. चरणां ।

" " १६६-१ इष्ट । २. भैरजी । ३. आदि, याद । ४. हम(?) । ५. रहत ।

२००

हम करे कह्न[1] की सेवा तव पावेगी नी(नि)ज भेवा[2] ॥ टेर ॥
काटसा[3]-नगर मे त्यारी हे सगरी मीदर[4]-अदर देवा ॥ १ ॥
हरिजन-धारा[5] सु(सू) अंग धोय डारा जाप साख[6] कर नेवा[7] ॥ २ ॥
करणी की केसर चढे परमेसर प्रेम-पुसब मन-मेवा ॥ ३ ॥
मेहर म(मे) मुकट लुकट हात(थ) मैं जनान(ना) के गे'णां पेरवा ॥ ४ ॥
मीरा भणै गढ भीतर रई सव विद[8] करता(ती) सेवा ॥ ५ ॥

२०१

हमारै पै काहे कु(कू) खोजो व्रजनारी ॥ टेक ॥
अपनो भाग सोच नही देखो कह्न[1]-कृपा कछु न्यारी ॥ १ ॥
सव वेलन मैं कड़ी[2] तूमड़ी ले कु(कू)]डे] म(मे) डारी ॥ २ ॥
आइ(ई) हात(थ) जत्र तत्री क(कै) वाजत राग सुढारी ॥ ३ ॥
टेडो(ढो) अग सीद्रोई[3] मेरो जान जात पाती कुल नारी ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गी(गि)रधर नागर हर अपनें हात(थ) सुधारी ॥ ५ ॥

---

१. अनूप सं० ला० लालगढ़, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० १७० से ।

२. अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं १६० से ।

---

स० पाठ २००-१. कान्ह, कवन । २. मेवा(?) । ३. काया । ४. मन्दिर । ५. हरि-जलधारा । ६. सास, सहस्र । ७. नेमा । ८. विघ, विधि ।

" " २०१-१. कृष्ण, कान्ह । २. खटी । ३. सौं द्रोही, सीधो ही । ४. सूं धारी ।

## २०२

हमारौ फगवा दे गी(गि)रधारी ॥ टेक ॥

गहै वनमाल जौह कर वाकी माग(गै) राधा प्यारा ॥ १ ॥

नीची डीठ[1] कीये[2] नही छुट(टि) हौ क्योंहू[3] कुज-वी(बि)हारी ॥ २ ॥

कै तो देहु नाहै तो अबै हु(हू) नीकस अेब ताहारी[4] ॥ ३ ॥

तनै नही राखा(ख)त मनोहर[5] रंग वड्यौ[6] अत(ति) भारी ॥ ४ ॥

जान(जन) मीरा(रां) रसकी झगरन पैर नी(नि)रण[7] हौत बलहारी ॥ ५ ॥

## २०३

हरी-चरण[1] ची(चि)त लायो राजी म(मैं) तो हरी(रि)-चरणां चित लायो ।टेर।

राजपाट झूठी सब माया वो झूठो जग दिखलायो ॥ १ ॥

सतगुर(रु) सामी[2] अतरजामी वो पूरब पुन(न्न) मिलायो ॥ २ ॥

जनम-मरण का सांसा[3] मेट्या वो निरभै सबद सुणायो ॥ ३ ॥

नंदलाल मथुरा-पुर-बासी वो रोम-रोम तन छायो ॥ ४ ॥

मीरा कह(है)प्रभू गी(गि)रधर नागर चरणा में सीस नवायो ॥ ५ ॥

---

१. राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०६७ से । पत्रांक-५४

२. सत साहित्य संगम बीकानेर के ह० लि० ग्र० से ।

---

स० पाठ २०२-१. दीठ, दृष्टि । २. क्रिये । ३. कवहूं । ४. तिहारी, ता हारी ।

५. मान मनोहर(?) । ६. बढ्यौ, बढ्यौ । ७. निरणै निर्णय, नीर-णहौत ।

" २०३-१. हरि-चरणां । २ स्वामी । ३. संशय ।

२०४

हरि व(वि)न चरना क(कि)त धरजौ [नित] उठ मारग जोउ(ऊ) हो ॥टेक॥
तोर(रै) कारण साईया भर नीद न सोउ(ऊ) हो ॥ १ ॥
हरि व(वि)ना सूरत क(कि)त धरजौ मनसा न(नैं) वेसारजौ[1] [हू]हो ॥
न(नि)जर पड़ा त(तु)म उ(ऊ)परे मन-तन[2] वारजे[3] [ऊ] हो ॥ २ ॥
अव(वि)न्यासी[4] आया सुन्या(सुणिया) मन-वन[5] धपाई [हू हो] ॥
मीरा कै दिल माहिला [सारा] दुख [री] टेर सुणाउ(ऊं) हो ॥ ३ ॥
वावरिया(यो)[6] कव [इहा] आवसा(सी) कोई कह(है) सनेसा हो ॥
मीरां कहै अ(अै)सी बात का प्रभू खरा अनेसा हो ॥ ४ ॥

२०५

राग मलार

हरि सैं टेरि कही री द्रौपता ॥
तुम जनि सौ हौ स्यांम सुंदर वरजे ती(ति)म जस हो(ही) ॥ टेक ॥
मै [रि] पति पच पचन-पति तुम हौ तम पति काहा रही ॥
भीखम करण द्रौण देखता दुसासन वा(बा)ह गही ॥ १ ॥
सव ठाढै नृपजु(जू) कै आगे मिथ्या भाख सही ॥
अैसो कोई रे न दीसत तासैं थासू) कौहौ दटो[1] ॥ २ ॥
जवर(वरे) सुनी जादूपति-नाथे(य)क कीन्ही साहाये सही ॥
मीरा दासी गी(गि)रधर की म्हमा[2] का पै जात कही ॥ ३ ॥

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३१०७७ से । पत्राङ्क-२६

---

सं० पाठ २०४-१. विसारजो । २. मन ते न(?) । ३. वारी जाऊ, वार जोऊं ।
४. अविनाशी । ५. मनवा ने । ६. सावरियो ।
" " २०५-१. कौ हो दई, कहे देही । २. महिमा ।

२०६

हे जी नरसी जी मा(म्हां)रो लहरचो भीज(जै)छ(छै)जी राज ।। टेक ।।
लहरचौ भीज रग चुत्र(चूवै) छ(छै) भीज(जै) मारो नोसर-हार ।। १ ।।
काली पीली घटा ऊमगे आई वरसै मूसलधार ।। २ ।।
मीरा(रा) कह(है) मीथुल इण वोसर गावत ह(है) सब नार ।। ३ ।।

२०७

ह(हे)जी म्हारा नैना मे सलूनो पानी अलक साम कत गओ(यो)री ।।
जादू कर क(के) ।। टेक ।।
पात-पात व्र दावन ढूंडी(ढी) कुज-कुज सबर(रे) देक(खे) ।। १ ।।
मोर-मुकट पीतांव्र(वर) सोवै कानां कुडल अलक(के) ।। २ ।।
मीरां के प्रभु गी(गि)रधर नागर चरन-कवल च(चि)त अटक(के) ।। ३ ।।

२०८

**राग सोरठ**

हे मां मुरली व(ब)जाय मेरो हीयो ला(लि)ए जाय ।।
विनि देखे मोहनी मूरति छिनि जी(जि)या ललचाय ।। टेक ।।
स्याम व(ब)रन तन ऊपरि सजनी पीत वसन फै(फ)हराय ।।
मीरा [कि] प्रभु गिरधर नंदलाल(ला) मेरै(रो) रु-रु' रह्यो है लुभाय ।। १ ।।

---

१. राज० शो० सं० चौपासनी, जोवपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०५७ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०(इंद्रगढ पोथीखाना)५२ से पत्राङ्क-२८

३. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से । पत्रांक-१२६

---

स० पाठ २०८-१. रु-रु, रोम-रोम ।

२०९

हेरी मतवारो ठाढो मोरी वाट ॥ टेक ॥
हैरी हाहा करत है तेरे पाय परत हो विनती करत मोपै ॥ १ ॥
भईया साहाजा [दा ?] असो री लगर ठाढो कनैया ॥ २ ॥
मारग रोकि मोपै आढो[1] ठाढो री ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरि-चरना चित लाग्यो सुगर ॥ ४ ॥

२१०

हेरी हेली मेरो मन चोरयो आली नद मेरी चितवन,
चित मो(मेरो) चोर ॥
हेली हू ठाढी श्रीता[1] ऊपरे मेर(रे) नन[2] करि गयो घात ॥ टेक ॥
हेली पछी वारहै[3] सावरौ मुधरी सी व(वै)न वज(जाय) ॥ १ ॥
'राये राये राची का'[4] मेर(रे) सरवनन[5] गयो सुनाअे ॥
हेली आन[6] सगि हो लो पैग ताकौ कौन उपाऐ ॥ २ ॥
प्रान वीन तन क्यौं रहा[7] सो तुमहि(ही) [दो] वताए ॥
मो गति भई जसै मीन मैं तो हु(हू) जल वी(वि)न जोव(वै) ॥ ३ ॥
हेली नदलाल हतौ राधिका हु हती नदलाल ॥
तौ वीरहनि दुख जानतौ वी(वि)रहनी येही हवाल ॥ ४ ॥
हेली मोहन अगमी डाहर मोहो रुमझुम सतकमार ॥
मीरा(रा) न(नै) गी(गि)रधर मी(मि)ल्या नेरी राखू(खो) भरतार ॥ ५ ॥

---

१ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८८२ से पत्राक-४३

२ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३१०७७ से, पत्राक-७९

---

स० पाठ २०९-१. आडो।
,, ,, २१०-१ सीना। २. तन, नैणा। ३. वागै, बाहिर। ४.'—'राधे राधे राधिका(?)।
५. श्रवणन। ६. अन्य। ७. कर रहसी।

## २११

हेली म्हारे आनंद मगलचार ॥ टेक ॥

करु स(सिं)गार रहूं सेझ समारी प्रसु(भु) हरि भरतार ॥ १ ॥

पच सखी मिल मगल गावै होइ रहै(ही) जै-जे-कार ॥ २ ॥

तन-मन आप अरपू स्याम कूं विलसु(सू)-सुख अपार ॥ ३ ॥

अपने पी(पि)या गलि लागी रहूं अब निरखो नेना निहार ॥ ४ ॥

मीरा के प्रभु अब ना छाडूं राखौ ज्यू गल-हार ॥ ५ ॥

## २१२

फाग लीखते

हो र(रु)त आई फागण ग(घि)र आई ॥

रसी(सि)आ र(रु)त आई कोअेल के[1] प्रवु[2] बेग पधारो ॥

अे जी लाला चेरी के ग(घ)र तुम कई बसी(सि)य्या ॥ टेर ॥

ल(लि)ख ल(लि)ख पती(ति)या उद(ध)व सग भेजी(जि)आ ॥

हे जी लाला जादु(दू) कीदा (तुम) सासा बीचा बसी(सि)या ॥ टेर ॥

मीरा के हर वेग पधारो हो जी लाला चरण कवल-च(चि)त

धार ली(लि)या ॥

---

१. राज० शो० ० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं०, ८२६१ से ।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४६२२ से । पत्रांक-३२

---

सं० पाठ २१२-१. कूके । २. अब प्रभु ।

२१३

होरी फागरा का दिन में प्रीतम तज गऐ देस ॥ टेर ॥
कहा करू कित जाउ(ऊ) मौरि सजनी मो मन बड़ो रे अदेस ॥ १ ॥
दिन नहि भूख रैरा नहि निद्रा सिर पर छूटे केस ॥ २ ॥
तोरै तौ कारण वन-वन ढुढ्यो कर जोगरा को भेस ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर [नागर] तन-मन छूटे केस ॥ ४ ॥

२१४

श्रीवदरिनाथ तुमारो दरसरा भाग बिना नही पावै ॥ टेक ॥
सीका उतरे भा भूला उतरे वकरा वालद लावै ॥ १ ॥
मन भग सीत भग कर पार लग(गँ)है पची(छी) सवद सुनावै ॥ २ ॥
तपत-कुड असनान करै तो प्रलै होय जावै ॥ ३ ॥
मीरा कै प्रभु गिरिधर नागर हरख-निरख गुन गावै ॥ ४ ।

२१५

श्रीरंगजी की नार देखो थान(थानै) सावर(रो) सेठ बुलावै ॥ टेक॥
आज कीरन वसागा समदन हरद(दैं) ग्यान विसेखो ॥ १ ॥
कोकिल भास भर(रे) लखमीजी मधुर व(वैं)न गवरी को ॥ २ ॥
मीरा कह(है) मिथुलायन वोसर धन्य भाग कवरी को ॥ ३ ॥

१ अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से।

२. रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६, से।

३. रा० शो० सं०, चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०५७ से

## परिशिष्ट (१)

# राग-रागिनी पद-संग्रह

१. राग मलार, ताल-त्रिताल

अजुह न लिदी साम मोरी खव्रीया[1], व्रसण[2] लागी बेरण वदलिया ।

अजुह न लीदी पीया मोरी खव्रीया । टेक ।

हे जावो री पतनीया मोरी खव्रीया, काहा बलमे पीया कोहण नग्रीया[3] ।अ०।

मेरे पीया प्रदेस गवंन कीया, जोवत हु मे उनकी डग्रीया ।अ०।

ज्यो पीया आवेंगे आज का हाल मे तो, मे रहुगी भुन्द पकड़ीया ।अ०।

मीरा के प्रबु (भू) ग्रध्र[4] नाग्र[5], हरके चर्ण[6] मेरो चत हु लग्रीया[7] ।अ०।।

[ कृति पत्रांक २१ ]

२. राग देवौचंद ताल कहरवा

अव केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया ।

मेरो अब केसे नीकसन हो दईया, होलि खेले कनईया । टेक ।

हे सासरे जाउ तो सासु लड़त हे, मे तो पीहर जाउ तो लडे मेरी मईया ।

हे अत डर उत डर भुल गई, मे तो मोहन सग खेलु ता थईया । हो० ।

हार डोर मेरो सगलो भीजीयो, ओर भीजाई पीलि पगड़ीया ।

मे अपना प्रीतम कु केसे भीजोउ, ओड लिवी काली कमलिया । हो० ।

वे व्रजवासि खेलण नीकसे, सग चली व्रज की सुखीया । हो० ।

मिरा के प्रबु ग्रध्र नाग्र, चर्णजीव रहो नद के छईया । हो० ।

[ कृति पत्रांक २६ ]

---

नोट—रागरागिनी पद संग्रह के प्रस्तुत समस्त पद राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के हस्तलिखित ग्रंथ सख्या २५५३९ से लिए गए है । चूंकि प्राप्ति स्थान और ग्रंथ सख्या इन रागरागिनी के समस्त पदों की एक ही है अत. प्रत्येक पद के साथ ग्रंथ संख्या, और प्राप्ति स्थान का उल्लेख (अलग से) नहीं किया गया है । अतः इन ५० पदों का प्राप्ति स्थान और ग्रंथ संख्या एक ही समझी जाए ।

---

शुद्ध शब्द रूप—१. खबरियां । २. बरसण । ३. नगरिया । ४. गिरधर । ५. न.गर । ६. चरण । ७. लगरिया (लग रहा) ।

३. राग केदारा ताल कहरवा

अया तो छव (नेण) नरखो नागर नटकी। टेक।
तो बन (विन) मारे कल ण पडत हे, सावली सुरत (मारे) हरदे अटकी। या०।
अत गोकल (उ)त मुथरा नगरी, अदवीचे (मारी)दद (की) गागर भपटी। या०।
मोर मुगट मकाकरत कुडल (ळ), सोवा (भा) प्रीतांब्र[1] पटकी। या०।
मीरा के प्रवु(भू) (गि) गरधर नागर, चरण कमल चतवन अटकी। या०।

[ कृति-पत्रांक. २३ ]

४ राग काफी ताल त्रताल

आज मारो लालजी गआसे रीसाग्रे रे। आ०। टेर।
हे कुबज्या न्न[2] कोही मान न्हि[3] करे, उण ही लिआ भ्रमाऐ (रे)। आ०।
सुनि सुनि सेजम्हे[4] ओजक उठु क्र[5] जगु, कुणि शु वालु गलवाग्र रे। आ०।
धुप दीप ले क्रु[6] आरती, लल (ळ) लल (ळ) लागु हर्रे[7] पाग्रे (रे)। आ०।
हात जोड़ करु बिणती, छन्म्हे[8] लु (ल्यू) मनाग्रे रे। आ०।
मिरा के प्रभु गर्घ्र[9] नाग्र[10], राखो चर्ण कमल री छाग्रे रे। आ०।

[ कृति-पत्रांक. १७ ]

५. राग खमाच ताल तिवग

आज मारे मद्र[11] मगलाचार रे। आ०। टेक।
राम लछम्ण मारे मद्र[12] पद्राया[13]। काई ग्रे करु (रू) मनवार रे ॥१॥ आ०।
हे धुप दीप ले क्रु[14] आरती। लल (लुळ) लागु हर रे पाग्रे रे ॥२॥ आ०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र[15] नागर। हर चरण, चत लाव रे ॥३॥ आ०॥

[ कृति पत्रांक-१८ ]

६ राग काफी ताल त्रताल

कुण खेले थासु होरो रे. रे संग लागोई आवे।
न्ही[16] खेला थासु होरी रे, रे संग लागोई आवे।
हा जी लाल न्ही खेलु थासु होरी। टेक।
चुवा चुवा चदन अगर अरगचो, केश्र[17] म गंमद घोरी रे। संग०।

---

शुद्ध शब्द रूप– १. पीतांवर २. वन ३. नहीं ४. सेज म्हे ५. कर ६. करु ७. हर रे ८. छन (छिण) मे ९. गिरधर १०. नागर ११. मींदर (मंदिर) १२. मदिर १३. पधार्‌या १४. करु १५. गिरधर १६. नहीं १७. केसर।

हा हा हो लाला मे तो म्हो[1], खेला थांसु होरी रे। संग०।
भर पचकारी मारा मुख प्र[2] डारी, तो भीज गई रंग साड़ी रे। सग०।
लारै लागौई आवै, यांकै होरी म्ही रुण[3] जोरी रे। संग०।
अबके देवो जव मर्द वहुगी, तो असी मारु पचकारी रे। सग०।
मिरा के प्रभु ग्रर्ध नाग्र[4], तो चर्ण जी रहो या जो(ड़ी)री रे। सग० ॥

[ कृति पत्रांक ३० ]

७. राग कुमायचो ताल अताल

ग्रधारी[5] पचकारी भर डारी हे माग्रे, उच कल डारी मारी आखन मे। टेक।
सेरी रे ज्योहे सुख्यामल, आवे नेकन न नीडाकन मे। ग्र०।
चुवा चुवा चदन अग्र[6] अरगचो, अबि[7] गुलाल वारी आखन मे। ग्र०।
हे मिरा के प्रवु(भु) ग्रध्र[8] नाग्र[9], रीज खीज वारी नाखन मे ॥ ग्र० ॥

[ कृति पत्रांक-२६ ]

८. राग भेरवी ताल कहरवा

चली आव रे गुवालण ददवाली, ददवाली रे गोरसवाली।
चली आव रे गुवालण ददवाली।
श्र[10] प्र[11] माट ध्र्यो[12] हे म्हो[13] को, मगन मले अधारी[14]।
लेहेगो लाल कसुमल अगीआ, ओडण कु चंपला साडी। च०।
सीसफुल प्रभु स(सि)र वीराजे, गल कंच्न[15] की खगवाली। च०।
रण ज्ण[16] रण ज्ण नेव्र[17] बाजे, धन जोबन मतवाली। च०।
व्रखभाणजी की कुब्र[18] रादका, रुप जोव्न[19] (सा)चे ढाली। च०।
मीरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[20], च्रण कमल चतधारी। च०।
चली आव रे गुवालण ददवाली, ददवाली रे गोरसवाली ॥ ७ ॥

[ कृति पत्रांक ३ ]

---

शुद्ध शब्द रुप— १. नहीं २. पर ३. खण ४. गिरधर नागर ५. गिरधारी ६. अगर ७. अबीर ८. गिरधर ९. नागर १०. सिर ११. पर १२. धर्यो १३. महो (दही) १४. गिरधारी १५. कंचन १६. रुणझुण १७. नेवर १८. कुंवर(कुंवरी) १९. जोबन २०. गिरधर नागर।

९. राग असावरी ताल कहरवा

छेल छबिला छौगाला रे मन मान्याजी ।

काई गुण साग्र[1] गौवीद, मारे घर आज्यो रे । रे मन मान्या जी । टेक ।

पागडलि छौगो व्ण्यौ[2] रे मन मान्याजी, काई नरुणं[3] त्रछा[4] नेण । मारे० ।

मौर मुगट सौवा[5] व्णि[6] रें मन मान्याजी, काई कुडल झलकै कान । मारे० ।

काई हात हीराजडो मुदड़ी रे मन मान्याजी, काई ढल हल मौती कान ।
। मारे० ।

वागौ तौ सौवे केसरया रे मन मान्याजी, कांई माथे पचर्ग[7] पाग ।
। मारे० ।

काँई हात(थ) ही(रा) जड्यो सेलड़ो रे मन मान्याजी, कांई असल गेडारी ढाल ।
। मारे० ।

काई पांव पीताम्ब्र[8] धोवती रे मन मान्याजो, काई पादु सुरुण पांव ।
। मारे० ।

काई पाव लाखीणी मोचडी रे मन मान्याजी, काई जाजर रो झणकार ।
। मारे० ।

कडस (केडेसूं) कटारो वाकडौ रे मन मान्याजी, काई सोरटड़ी त्रवार[9] ।
। मारे० ।

सौत्रा तो असी[10] व्णी[11] रे मन मान्याजी, काई आबुखण[12] सौवै अग ।
। मारे० ।

मीरा ने ग्रध्र[13] मल्या रे मन मान्याजी, काई सहेस गोप्या वीचे काहान ।
। मारे० ॥

[ कृति पत्रांक-१९ ]

---

शुद्ध शब्द रूप– १. सागर २. बणयो ३. न (नि)रखण ४. तिरछा ५. सौभा ६. बणी ७ पचरंग ८. पीताम्बर ९. तरवार १०. ऐसी र ११. बणी १२. आबुखण (आभूषण) १३ गिरधर ।

१०. राग देस ताल केहरवा

जतन को[1] हे मारी हे, पीया व(बि)न सुनी मारो देस । टेक ।
भस्या हे कोग्रे पीया कु मलावे, तन मन धन कु[2] भेट । पीया० ।
अेबन ढुढ्या सकल वन ढुढ्या, क क[3] जोगीडा रो भेस । पीया० ।
ग्राप जाग्रे दुवारका छाग्रे रह्या हे, पीजर व्हे गया केस । पीया० ।
मीरा के प्रबु(भु) गरध्र[4] नागर, तज दीयो नग्र[5] नरेस । पीया० ॥

[ कृति पत्रांक २४ ]

११. राग देस ताल कहरवा

ज जमना जी रे धोरे ।
हुं(हू) तो विश्र[6] गई जी मारो, मोतीड़ा रो हार ।
हे गढ सु(सू) गुवालण उत्री[7], श्र[8] मही रो भार ।
ग्राडो काहान जी फर रग्रा, मागे छे म्ई[9] रो दाण । जी० ।
न्दो[10] कोडे रुखडो, पाणि गुदला (ळा) होऐ । जी० ।
फूलि फूलि हू फरु, गल फुलन की माल ।
फुलारा सेज बछाव्णा[11], फुल्या फरे ज़ी नंदलाल । जी० ।
रादे हर की लाडली, नत उठ द्रस्ण[12] पाए ।
मिरा तो थारी थकी, राखो च्रण[13] लगाऐ ।
जि ज्मना जी रे धोरे ।
ह तो विश्र गई सु जी, मारौ मोतीड़ारो हार ॥ ४ ॥

[ कृति पत्रांक २ ]

१२. राग ग्रासावरी ताल त्रताल

थे ग्राज्यो जी मारे रमके भुमके, डाव लग्यो हे ग्रबके । टेक ।
तम तो मोहन विश्र गग्रेसो, कल ण पड़त हे ह्मको[15] । थे ग्राज्यो० ।
मनड़ो मोहन मौहे लीयो से, ग्राखड्या[16] ठमके । थे ग्राज्यो० ।

---

शुद्ध शब्द रुप– १. करो २. करु ३. कर कर ४. गिरधर ५. नगर ६. वीसर (भूल)
७. उतरी ८. सर(सिर) ९. मही(दही) १०. नदी ११. बिछावणा(विस्तर)
१२. दरसण १३. चरण १४. वीसर(भूल) १५. हमको १६. ग्रांखड्यां ।

सासु न्णद[1] मारी गा चली हे, थे मत मन्मे[2] राखो डर्के[3] । थे आज्यो० ।
रमझम झता[4] पधारो साव्रीया[5], गुगर्न के घमके । थे आज्यो० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र[6] नाग्र[7], काना कुडल(ळ) झलके । थे आज्यो० ।।

[ कृति पत्राक १८ ]

१३. राग कुमायचि ताल त्रताल या कहरवा

घिरा झुलो रा, घीरा झुलो रा ।
राज गुमानी, घिरा झुलो रा ।
हे लाडी जी झुले थारे कानी ।
घिरा झुलो रा ।
छोटी लाडी झुले था रे कानी, प्यारी लाडी झुले थारे कानी । टेक ।
घन ग्रजत विजलीम्रा चमके, झुम्र[8] व्रसे[9] पाणी । घि० ।
चुनड भीजे मारी रग चुवे, रग लागे छे. कानि कानि । घि० ।
हे नजर नीहारो न्हेको[10], कत हो पेम की सानी । घि० ।
हे झुलत झुलत सब सं[11] लीनो, मुज प्र[12] कीहे नसाणी । घि० ।
मिरा के प्रवु(भु) ग्रधर[13] नाग्र[14], राखो राखो चरण सवानी । घि० ।।

[ कृति पत्रांक–१ ]

१४. राग सोरठ ताल कहरवा

नद जी राम्म सुंजाण[15] ।
नद जी री दुवार थे तो माने, कामणी अछि अछि काही जाणो ।
म्हाने कामणीया की, दासे काई जाणो ।
राजे माने काम्णीया की, दासे काई जाण । टेक ।
अर्ज काछा कछु न्सीर वावे, राज्रा[16] गला री रूडी आंण । न० ।
घ्र[17] रो धंधो सव विश्र[18] गई सु(सू), छोडी छे कुल(ळ) री काण । न० ।
नेण वाण तम निहारो, मारो छो भलका ताण । न० ।
मिरा के प्रभु वे चं्द्रासण दीजो, मत चुको अवसाण । न० ।।

[ कृति पत्राक–४ (८) ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. नणद २. मन मे ३. डरके ४. करता ५. सांवरिया ६. गिरधर ७ नागर ८. झुरमुर(झिरमर) ६. बरसे १०. नेहको ११. रस १२. पर १३. गिरधर १४. नागर १५. राम र सुजाण १६. राज रा १७. घर १८. विसर(भूल) ।

१५. राग सारंग ताल कहरवा

नर ब्रेंद्रदी[1] हे वंसरी, बाजी जमना री तीर। बाजी जमना री तीर । टेक ।
आप ही गावै, आपी (ब)जावे, सुद नई रम्रेत[2] श्रीर[3] । न० ।
मोर मुगट अ[4] छत्र बीराजे, हर न्णादी[5] को बीर । न०
ले मेरो चीर कदम चड बैठा, आखर जात अहीर । न० ।
मिरा के प्रभु ग्रध न ग्रि[6], अ ................ खो श्रीर । न० ॥

[ कृति पत्रांक–६ ]

१६. राग आसावरी ताल कहरवा

पेम सवागरा मर्गा नेरणी रादे, तें गोवीद बस कीनो री । टेक ।
गोरा गोरा मुख प्रे[7] तलक बीराजे, हांरे वारी बंद का मे कछु कीनो री । पे० ।
सीसफुल प्रेम टकी बीराजे, हा रे वारी गोरस मे कछु कीनो री ।
हा रे वारी गोरस मे कछु कीनो री । पे० ।
काथो जी चुनो लु ( लू ) ग सुपारी, पानन मे कछु कीनो री ।
हा रे वारी पानन मे कछु कीनो री । पे० ।
मीरा के प्रबु(भु) (गि) गरधर नागर, हरी चरण सुख लिनोरी ।
हां रे वारी हरी चर्णा[8] सुख लिनोरी । पे० ॥

[ कृति पत्रांक २२ ]

१७. राग जोझोटी ताल कहरवा

भला सावरीया हो, आछा सावंरया[9] हो प्रित (नि) नबाया व्णेगे[10] (गी) । टेक ।
जे तुम हम कु गाली देओगे, तो हृर्दे[11] मे रख लेउंगी । सा० ।
ज्यो तम हम सु रुस रहोगे, तो राजी कीस वद[12] होवेगे । सा० ।
राणीजी रुखम्णि[13] ओर सतभामा, कुबज्या छकीए कु जावोगे । भ० ।
मोर मुगट अ[14] छत्र बिराजे, कुडल की झलक वताओ जावोगे । भ० ।
मिरा के प्रभु गधर[15] नाग्र[16], चर्णा[17] सु लपटावेगे । भ० ॥

[ कृति पत्रांक–१७ ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. बेदर्दी २. रहत ३. शरीर ४. सर(सिर) ५, नणदी ६. गिरधर नागर ७. पर ८. चरणां ६. सांवरिया १०. वरणेगी ११. हरदे में १२. बिद(विध) १३. रुकमणि १४. सिर १५. गिरधर १६. नागर १७. चरण ।

१८. राग काफी ताल दीपचदी

मत डारौ पचकारी रे, हु (हूं) तो सगली भीज गई। टेक।
चुवा चुवा चदन अवीर अर्गचो[1], केश्र[2] की छब न्यारी। हु०।
रादा(धा) मोहन जी होरी खेले तो, भं[3] पचकारण मा(रू)री। हु०।
अवके डारी जो तो डार डारी, प्ण[4] अबके डा[5]रो तो दडगारी। हु०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र, जुगल केल प्र[6] वारी। हु०॥

[ कृति पत्रांक ३१ ]

१६. राग कालिगड़ा ताल कहरवा

मोहवत कामलिवाला सु(सू) जोडी, मोहोबत कामलीवाला सु जोडी। टेक।
लोग कहे कालीकामली वालो, मारे तो लाख क्रोड़ी[7]। मो०।
उबो रहेत हे कदम की छइया, मारी बईया पकड़ झकझोरी रा। मो०।
मुथ्रा[8] सु(सू) आई गुवालणी, गोकल सु(सूं) आयो कान।
अदबीच अडबी रोडी रा। मो०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र, चर्णजी (व)[9] रजे[10] जोड़ी रा[11]। मो०॥

[ कृति पत्रांक–८ ]

२०. राग परज ताल कहरवा

मलता जाज्यो रा (ज) गुमानी, थारी साँवली सुर्त[12] देख लुवाणी।
मलता जाज्यो रा (ज) गुमानी। टेक।
गौकल मे आऐ मारौ घर बु (झ) लीज्यौ, वहोत क्रु[13] मजमानी॥ म०।
नद म्हेर जी सु(सू) दस ध्र आगे, रंगीलो पोल(ळ) न्ही छानी। म०।
तम तौ छौ न्द[14] म्हेरजी के कव्र[15] कनईया[16], हु(हू) बर्खभाण दुलारी। म०।
मिरा के प्रवु(भु) (गि)गरधर नागर, थांरी मारी परीत[17] न्ही छे छानी। म०॥

[ कृति पत्रांक–१८ ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. अरगचा २. केसर ३. मर ४. पण(किन्तु) ५. रे डारो ६. पर ७. करोडी ८. मथुरा ९. चिरजीव १०. रहे ११. राज १२. सूरत १३. करु १४. नंद १५. कंवर १६. कन्हैया १७. प्रीत।

२१. राग मांडताल कहरवा

मेरो मन मोश्रो(यो) सेजी, बेरा बजाय । टेक ।
सुणत काक ..... ड उठत हे, तलफ तलफ जीव जाअे(य) ।
दी(दि)न न्ही[1] चेन, रेरा न्ही नीद्रा, निस.........न कछु सुवाय । मे० ॥
तु(तू) मेरो कयो मान सु (स) खिरी, व्रज नद बेग बुलाय ।
मीरा के प्रभु (गि) गरध्र[2] नागर, राखो माने गल लपटाअे । मे० ॥

[ कृति पत्रांक-१२ ]

२२. राग कुमावची ताल केहरवा ( सारंग )

रसीश्रो राम रीजावां हे माश्रे, रांणो जी रुसे तो मारो कांई क्रसी[3] ।टेक।
राणो जी रुसै तो मारो काहे नही बीगड़ै, हे सांवरोजी रुस्यां मारे न्ही सरसि ।र०।
हे साघ संगत की मे श्रंध्यांधारी, साध बना मारे नही श्रसी[4] ।र०।
हे बडभागरा मेरतणी, च्रण[5] कमल मीरा प्रसि[6] ।र०।

[ कृति पत्रांक-५ ]

२३. राग बलावल ताल कहरवा या त्रताल

रस मे वस काय कु डारे सखि, रस मे बस काय कु डारे सुखि । टेर ।
हे दद म्हेथी[7] प्रत काड लिश्रो हे, अब कोरी रह गई छाछ री । र० ।
दुद(ध) दई तो मारे घर व्होतोरो[8], बीन श्राद्र[9] कीया प्रीत करसे । र० ।
मिरा के प्रबु(भु) ग्रध्र[10] नाग्र[11], खोल गु(घु)गुट थासु श्राप हसि । र० ॥२॥

[ कृति पत्रांक-४ ]

२४. राग सारंग ताल कहरवा

रादे(धे) क्रसन रादे(धे) क्रसन, गोवीद गोपाल । टेक ।
मोर मुगट कट काछनी, रे गल मोतन की माल । रा० ।
जमना की नीरा धेन चरावै, बंसी वजावे नदलाल । रा० ।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, (राखो च्रणं[12] कमल री छाये) ।
भक्तन के प्रतिपाल । रा० ॥

[ कृति पत्रांक-८ ]

---

शुद्ध शब्द रुप— १. नहीं २. गिरधर ३. करसी ४. सरसी ५. चरण ६. परसी ७. मथी ८. बहुतेरो ९. आदर १०. गिरधर ११. नागर १२. चरण ।

२५. राग सारंग ताल कहरवा

रे मानु द्रसे[1] वताज्यो जी, रे मानु द्रस वताअे जी। टेक।
जमना की नीरा तीरा धेन चरावे, वंसि को सवद सुण (णावे) जी। रे०।
माथे मुगट श्र[2] छत्र विराजे, कडल की लटक वताअे जी। रे०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र, हरी का चरण सु(सूं) लपटाअे जा (जी)। रे०॥

[ कृति पत्रांक-१७ ]

२६.

रे मे तो व्रेहे[3] की दादी, प्ण[4] वादा न्ही कछु मो मे।
रे मे तो व्रह की दादी। टेक।
कोट उपाअे कीयो मलवे को, प्ण काजम्रन लादी से री। रे०।
रवि च्द्र[5] तम कलाअेस मेटो, मत दग दे श्र श्रादी। रे०।
मिरा के प्रभु कव्ही[6] मलोगे, प्ण कठण रेण रही हे आदी। रे०॥

[ कृति पत्रांक-१७ ]

२७. राग मांड ताल दादरा

सांवरा जी श्राज्यो जी माहरे देस।
वसीवारा श्राज्यो जी, माहरे देस। टेक।
साव्ण[7] श्राव्ण[8] कॄ[9] गया रे, वारी क[10] गश्रा कोल श्रनेक।
हे गणता घसे गई जी मारी ई ई ई ई ई, श्रागलीया री रेख। व०।
सावली सुरत, वाली वेस। व०।
प्र त क्री[11] सुख लेण कु रै वारी, श्रव लागी दुख देण। व०।
श्रसी रे मे जाणती रे वारी, तो प्रीत न क्ती[12] लगार। व०।
सामीने चोगती रे वारी, आव्ण न देती दुवार। व०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, राखो चर्णा[13] की लार। व०॥

[ कृति पत्रांक-६ ]

---

शुद्ध शब्द रुप— १. दरस २. सिर ३. विरह ४. पण ५. चंद्र ६. कब ही ७. सावण ८. श्रावण ९. कहे के १०. कर ११. करी १२. करती १३. चरणां।

२८. राग आसावरी ताल कहरवा

सीताराम समर्जुग[1] हसवा दे, सीताराम समर्जुग हसवा दे। टेक।
हसती की चाल चलो रे मन्मेरा, पिछे कुक्र[2] भुसवा दे। सि०।
राजा लड़े राज के खातर, भुप भडे ज्याने भडवा दे। सि०।
भेरु पु(पू)ज सीतला पुजे, उल्ज्म्र[3] ज्याने मर्वा[4] दे। सि०।
नदर्यां कान सु रो न्ई दीजे, नं[5] पंडे ज्याने पडवा दे। सि०।
मिरां के प्रभु गरध्र नागर, हरी का च्रण चत क्रवा[6] दे। सि०॥
[ कृति पत्रांक–१६-१७ ]

२९.

सुद्र[7] साम विहारी। टेक।
आव्ण[8] आव्न क्[9] गअे उदो, प्ण कतनीक दुर गोकल रे।
वां ले चल रे उदो। सु०।
आव्न[10] के दन[11] बित गअे हे, प्ण लगी हे तपत मेरा तन मे (रे)। सु०।
काहा जी करु कीत जाउ मेरी सजनी, प्राण क्रत[12] तलफल रे। सु०।
सवई राणी सबई सीआनी, प्ण अत न्यामे[13] कुवज्या कुटमरे। सु०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नागर, हरी का चर्ण प्र[14] बलिहारी रे। सु०॥
[ कृति पत्रांक–१७ ]

३०.

सुख सागर मे आअेक अे अे अे अे अे,
मत जाअे रे पीआसा हा हा हा। टेक।
ऐ नरमल नीर भरयो घट भीत्र[15] अ अ अ अ अ,
पी जाओ सास उसासा हा हा हा हा। म०।
जल बीचे कमल कमल बीचे कलीया,
जस प्र[16] भमर लोवाणा आ आ आ आ आ। म०।

---

शुद्ध शब्द रुप– १. समग्रयुग २. कुक्कर ३. उलझ मरे ४. मरवा दे ५. नर र ६. करवा ७. सुंदर ८. आवण ९. कर(कह) १०. दावन (दग्ध होने के) ११. दिन १२. करत १३. या में १४. पर १५. भीतर १६. पर।

हाड चाहाम चता[1] हर लेई ई ई ई ई,
जस प्रे(पर) बयु घग्रणा[2] ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा । म० ।
ग्रव तु तू) चेत चेतन नज प्राणी ई ई ई ई ई,
जम डारेगा गल पासा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा । म० ।
मीरा के प्रभु ग्रध्र[3] नाग्र[4] ग्र ग्र ग्र ग्र ग्र,
चरण कमल मेरा वासा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा ग्रा । म० ॥
[ कृति पत्रांक- ६ ]

३१. राग वलावल ताल दीपचंदी

हे ग्रावे छे रे, गोपाल रगीलो । टेक ।
हे ज्र[5] कर्स[6] पाग केश्रीया[7] वामो सोवत, तलक ग्रदक छवीलो । ग्रा० ।
हे व्रद्रावन[8] की कुञ्ज[9] मे मोहन मलिया, हस क[10] ग्रचो[11] हे गुगट ढीलो । आ० ।
मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[12], सहेस गोप्या रो हे यो, रसिक रमिलो । आ० ।
[ कृति पत्राक-१८ ]

३२ राग सारग ताल कहरवा

हे कठड थया हो माधव मुद्रा मे, हारे वारी कागद न्ही लस्यो[13] कटको रे । टेक ।
गोकल म्हे[14] ग्रव वात क्रत[15] हे, काकान व्र[16] कुवज्या सग ग्रटको रे । क० ।
रुप काली अग कुवड़ी, हारे वारी ताप्र[17] श्रजी[18] का लटक्यो रे । क० ।
मोर मुगट श्र[19] छत्र वीराजे, कुंडल(ळ) की नाही झलको रे । क० ।
व्रद्रांवन[20] की कुज गलण मे, हारे यारी देखु हो, सावरीया थारो लटको रे । क० ।
मिरा के प्रभु गरध्र[21] नागर, नीच संगत सग काई भटको रे । क० ।
[ कृति पत्राक-७ ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. चिता (चित से) २. घवराना ३. गिरधर ४. नागर ५. जर(जरी) ६. कसर ७. केसरियां ८. वृंदावन ९. कुंजन १०. कर ११. कर्‌यो १२. गिरधर नागर १३. लिख्यौं १४. में १५. करत १६. कान कंवर १७ ता पर १८. सरीजी १९. सर(सिर) २०. वृंदावन २१. गिरधर ।

**३३. राग आसावरी ताल कहरवा**

हे कहेज्यो नीद न आवे, कहेज्यो जी नीद न आवे। टेक।
सेझड़लि सुरंगी वाला ओ[1] रेणो[2], दुजी नेण सतावे। क०।
कव्रे[3] होसी पापीया तुमारी रे मलण, रमक मोहन घरे आवे। क०।
मीरा के प्रभु गध्र[4] नागर्न[5], वीन वीगत उपजावे। केहे०।

[ कृति पत्रांक-७ ]

**३४. राग मांड ताल दादरा**

हे कुण ने सीखाया तुजे मीठा बोलणा,
रे कुण ने सिखाया तुजे मीठा बोलना। टेक।
हे ज्र[6] कसि(यो) फेटो केश्रयो[7] जामो, माथे मुगट सवर[8] क्रोडाना[9]। कु०।
हे हात चढयो पग पालकी, चाले म्रोडना[10]। कु०।
मिरा के प्रबु ग्रध्र[11] नागर, चर्ण[12] कमल चत जोड़ना। कु०।

[ कृति पत्रांक-६ ]

**३५. राग मांड ताल दादरा**

हे कुण ने सीखाया तुजे मोठा बोलना। कु०। टेक।
मोर मुगट श्र[13] छत्र बीराजे, कुंडल(ळ) झलके कपोलना। कु०।
हात चढ्यो पग पावड़ी, चाले मरोडना। कु०।
मीरा के प्रभु गध्र[14] नागर, माथै मुगट सवा क्रोडना[15]। कु०।

[ कृति पत्रांक-१० ]

**३६. राग कालिंगड़ा ताल कहरवा**

हे कुण माने थारी षातीया[16], कुण माने थारी बातीया।
जाओ भूठा बोला, कुण माने थारी बातीया। टेक।
हे कालकी वाता तो मारा आ ··· ···· ···· हरदा मे खुचत हे,
क्रवत[17] व्हे[18] गई मारी छतीया। जा०।

---

शुद्ध शब्द रुप— १. मरी २. रेण(रात) ३. कव रे ४. गिरधर ५. नागरन ६. जरी ७. केसरियो ८. सवा र ९. करोड़ना १०. चढ्यो ११. मरोड़ना १२. गिरधर नागर १३. चरण १४. सर(सिर) १५. गिरधर १६. करोड़ना १७. बतियां १८. करवत १९. बेह।

हे भोर भयो जब आअे मेरे आंगरो, कठ रे गया सा सारी रातीया । जा० ।
मो तन माला थे कठ दे भुला सो, हार रयो थारी छतीया । जा० ।
चुवा चुवा चन्ण[1] अगर अरगचो, सुदो लगायो थारी छतीया । जा० ।
मोरा के प्रभु (गि)गरधर नागर, जनम जनम था दासीया । जा० ।

[ कृति पत्रांक-६ ]

३७. ( गरवा )

हे केस करी अे रे केसे की[2] अे ।
नर्मोईडा[3] सु(सू) प्रीतड़ी केसी कीअे, भुठा वो वोला सु प्रीतडी ।
केसे किअे । टेक ।
आप गोकल म्हे[4] छाअे रहे हो, हम रोअे रोअे अखीया निरभ्रोअे[5] । न० ।
हे जाउंगी अटारी लेउगी कटारी, जर्ये[6] रज व्रव सखाअे म्रीअे[7] । न० ।
चुण चुण कलिआ मे सेज व्णाउ[8], भ्म्र[9] पलंग प्रे[10] भुरमरोअे । न० ।

[ कृति पत्रांक-१६ ]

३८. राग भेरवी ताल कहरवा

हे खडी छु खडी छु खडी छु, कबकी द्रवार(द्वार) कडी छु । टेक ।
सब सुखीया[11] सु ( सू ) हस हस वोलो, मे[12] काई नार वुरी छु । क० ।
सब सुखीया सु रास रमो छो, हम सु मुखडे न वोलो । क० ।
सब सुखीया के मेहेल पधारो, हु[13] हरदा मे अडी छु[14] । क० ।
सब सुखिया मोतन की माला, मैं हीमो की कल्ली छु । क० ।
सब सुखीया सोना को गेहेणो, मे(मैं) ही हीर कणी छु । क० ।
मिरा प्रभु (गि) गरधर नागर, चरण कमल म्हे[15] जड़ी छु । क० ।

[ कृति पत्राक-६ ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. चंदण २. करी ये ३. नरमोइड़ा (निरबोहिड़ा) ४. मे ५. नीर भरिये ६. जाय रे ७. मरिये ८. वणाऊं ९. भ्रमर १०. परे(पर) ११. सखियां १२. मैं १३. हूं (मैं) १४. छूं १५. मे ।

३९. राग बलावल ताल दीपचंदी

हे गई दध वेचण आप बिकाणि, गई दद वेच्ण[1] आप विकाआणी[2] । टेक ।
मे दद व्रेच्ण जाती व्रदावन[3], वीच मे मलिया[4] हे द(ध)णी । ग० ।
है आडो-आडो डोले औ रसीलो, बोलत अटपटी वाणि । ग० ।
दद मेरो खादो मटकीयो तोरी, मुख प्र[5] क्री[6] हे निसाणी । ग० ।
हे गुगट खोल्यो, लाज लीदी, ओर क्री[7] हे मन जाणी । ग० ।
मीरा सु गध्र[8] मलीया, ज्यु दुद(ध) मे पाणी । ग० ।

[ कृति पत्रांक-१८ ]

४०. राग भेरवी ताल त्रताल

हे चल्यो जा रे व्रजवासी, अप्णी[9] डगर्तू[10] चल्यो जा व्रजबासी । टेक ।
मे दद वेचण जाती व्रंदावन, अदबीचे प्राण डारी हे प्रेम की पासी । च० ।
तेरे तो खात्र[11] जोगण होउंगी, क्रवत्त[12] लेउगी मै कासी । च० ।
मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[13], चरण कमल रज की मे(मैं) दासी । च० ।

[ कृति पत्रांक-८ ]

४१. राग पीलु ताल कहरवा

हे छेल छबीला थाने, चलवा न देसु ( स्यूं ) रामा । टेक ।
माता जसोदा थासु अरज क्रे[14] छे, कान क्रे[15] छे नुग्राई[16] मे वारी रामा ।छे०।
मोर मुगट अ[17] छत्र वीराजे, कुंडल(ळ) की लटक बताअे ।
जी मे वारी रामा । छे० ।
जमना की नीरा सीरा[18] धेन चारावे, बसी को सबद सुणांअे ।
जातु मेरे रामा । छे० ।
मिरा के प्रभु गरध्र[19] नागर, हरी के चर्णा[20] लपटाअे रहुगो ।
तु मेरे रामा । छे० ।

[ कृति पत्रांक-७ ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. वेचण २. बिकाणी ३. वनरावन (वृंदावन) ४. मिल्या ५. पर ६. (करी)की र, ७. करी ८. गिरधर ९. अपणी १०. डगर तूं ११. खातर १२. करवत १३. गिरधर नागर १४. करे १५. का करे १६. नुगराई १७. सर(सिर) १८. तीरां १९. गिरधर २०. चरणां ।

४२. राग काफी ताल त्रताल

हो जी रंग भीनी होरी थांसु खेलुगी। टेक।
फागरण म्हे[1] पिया लाज काअे की, वुरी भली सु मे नाअे(ही) डरुंगी। हो०।
कांन कुवर भर मुठ चलावे, हु तो गुगट का पट प्रे[2] झेलुगी। हो०।
कन (क) कटोरो केश्र[3] घोरी, हु तो रगीला प्रीतम प्रे[4] ढोलुगी। हो०।
गोकल याकु मे(मैं) जाण न दूगी, भं[5] पचकार (इ)ण पे(डा) लुगी। हो०।
मिरा के प्रवु (भू) ग्रध्र नाग्र[6], हु तो फगवा ले न छोडूगी। हो०।

[ कृति पत्रांक–२६ ]

४३. राग पीलु ताल कहरवा

हु[7] तो वारी जाउअे भोरी(ली) नणदल, खेलण होरी दे। टेक।
कान कुवर मारे दुवारे ठाडे, भर्प[8]चकारण ले। हु०।
काउ की व्रजी[9] मे नाअ्रे रहुगी, फागण को रस ले। हु०।
मेरे पछवाडे घुम मचो हे, हे मारो ही मन हे। हु०।
मिरा के प्रवु (भू) ग्रध्र नाग्र[10], हर के चरण चत रहे। हु०।

[ कृति पत्रांक–२६ ]

४४. राग खमाच ताल त्रताल

हु[11] तो सु(सूं)वाली कछु न्ही[12] जाण, मोसु प्रीत लगाअ ग्रब काहां जासी रे। टेक।
ग्रत गोकल ग्रत मुथ्रा[13] नग्रि[14], वीच मल्या ग्रबन्यासी रे। हु०।
वंद्रावन[15] की कुज कल्ण[16] मे, सहेस गोपी न व्रजवासी रे। हु०।
तेरे तो खात्र[17] जोगण वेहुगो, क्रवत[18] लेउगी कासी रे। हु०।
हु(हू) ग्रखभाण की कुवर लाडलि, मारो जोवन तो सु[19] जासी रे। हु०।
मिरा के प्रवु(भू) ग्रध्र नाग्र[20], तुम करहु दासी रे। हु०।

[ कृति पत्रांक–२२ ]

---

शुद्ध शब्द रूप– १. मे २. पर ३. केसर ४. परे(पर) ५. मर ६. गिरधर नागर ७. हूं(मैं) ८. नर ९. वरजी १०. गिरधर नागर ११. हूं(मैं) १२. नहीं १३. मुथरा १४. नगरी १५. वृंदावन १६. गलण १७. खातर १८. करवत १९. सो(मत) २०. गिरधर नागर।

४५. राग धनाश्री ताल कहरवा

हे व्रजवासी व्रजवासे(सी) से व्रजवासी।
मोमु न्हेडो[1] लगाश्रे, गश्रौ रे व्रजवासी। टेक।
व्रद्रावन[2] म्हे[3] वंसि वजाई, लो गयो प्राण नीकासी। व्र०।
तेरे तो खात्र[4] प्रोन[5] तजुगी, क्रवत[6] लेउगी कासी। व्र०।
मिरा के प्रभु गरधनाग्र[7], चर्ण[8] कमल की दासी। व्र०।
[ कृति पत्रांक–५ ]

४६. राग आसावरी ताल कहरवा

हे लुटे छे रे लुटे छे छुटे।
मही दद माखण[9], गुवाली मारो लुटे, कीई भीडे वारे दद मारो लुटे। टेक।
हे रहो र गुवालण, ग्रव्र[10] नक्र[11], तु श्रणाई बाता सु न्ही[12] छुटे। म०।
मे(मैं) दद वेचण जाती व्रदावन[13], महीड़ो क्रो[14] छे मारो भुठे। म०।
जाश्रे पुकारुगी कंसराश्रे कु, पकड़ मगाउ थाने उठे। म०।
छोडो रा लाल जी, हार हमारो, मोर तन की लड़ा टुटे। म०।
छोडो रा लाल जी छे वडो हमारो, जर कसरो पलो टुटे। म०।
छोडो रा लाल जी वईया हमारी, काचुरी कस टुटे। म०।
मीरा के प्रवु (भू) (गि) गरधर नागर, लागी लगन नई टुटे। म०।
[ कृति पत्रांक–६ ]

४७. राग होरी ताल कहरवा

हो साम[15] मे(मैं) तो गई थो, हो प्रमेश्रवा[16] मे(मैं) होली खेलण गई थी। टेक।
चुवा चुवा चन्ण[17] श्रगर्श्र[18] रंगयो. हो साम केश्र[19] कीच मचाई थी। हो०।
श्रत गोकल श्रत मुश्रा[20] नग्री[21], तो बीच मे फाग मचाई थी। हो०।
हमारी भीजोई श्र[22] की चुनड़ीया, तो अप्णी[23] पाग बचाई थी। हो०।
मिरा के प्रभु गर्ध्र नाग्र[24], हो साम फगवा गोद भराई थी। हो०।
[ कृति पत्राक–३१ ]

---

शुद्ध शब्द रुप– १. नेहड़ो २. वृदावन ३. में ४. खातर ५. प्राण ६. करवत ७. गिरधर नागर ८. चरण ९. माखण १०. गरब(गर्व) ११. न कर १२. नहीं १३. ब्रंदावन(वृंदावन) १४. करो १५. श्याम १६. परमेसरवा(परमेश्वर) १७. चंदण १८. अगर(अंगरे) १९. केसर २०. मुथरा २१. नगरी २२. सर(सिर) २३. अपणी २४. गिरधर नागर।

४८. राग परज ताल कहरवा

हे हरो का मलण, केसे होग्रे रे।
मे जाण्यो न्ही[1] रे, हा रे मे जाण्यो न्ही रे। हृ०। टेक।
मेरे आगण फर्गया[2] ललना, मे तो रही रे अवागण[3] सोग्रे रे। मे०।
ज्यो प्रभु था आवता जाणती तो, देती दीवलो जोग्रे रे। मे०।
ज्यो मारा प्रवुजी ने आवता जाणती, तो जाजम देती बीछाग्रे रे। मे०।
ज्यो मारा प्रवुजी आवता जाणती, तो देतो ढोल्यो ढाल रे। मे०।
ज्यो मारा प्रभुजी ने आवता जाणती, तो देती मंद्र[4] खोल रे। मे०।
मिरा के प्रभु गध्र[5] नाग्र[5], राखो च्रण[6] कमल री छाअे रे। मे०।

[ कृति पत्रांक-१७ ]

४९. राग खमाज ताल त्रताल

हा हा रे गुगट को, हा हा रे गुगट को वारी रे।
गुगट को लटको भारी रे, गुगट को लटको। टेक।
हरी जरी की साड़ी सोवे, उप्र[7] कोर कीनारी रे। गु०।
हरी ज्री[8] की अगीया सोवे, उप्र हार हजारी रे। गु०।
अंजन मजन सवको संजन, राई लुण उतारु रे। गु०।
मिरा के प्रभु ग्रध्र[9] नागर, हर चर्ण[10] चत अटक्यो रे। गु०।

[ कृति पत्रांक-७ ]

५०.

हेली ज्यो घ्र[11] आवे अे अे अे अे अे साम साव्रो[12] मत दीज्यो रे गाली।
मारो वाल गोवीदो जाण के मत दीज्यो रे गाली। टेक।
मोर मुगट श्र[13] छत्र विराजै कुडल(ळ) झलके भारी। म०।
व्रदावन[14] की कुज क(ग) लण मे रास में[15] रादा प्यारी। म०।
मिरा के प्रभु ग्रध्र नाग्र[16] च्रण[17] कमल वलीहारी। म०।

[ कृति प्रत्राक-१६ ]

---

शुद्ध शब्द रुप— १. नहीं २. फिर गया ३. अमागण ४. मिंदर(मंदिर) ५. गिरधर नागर ६. चरण ७. कोर ८. जरी ९ गिरधर १०. चरणा ११. घर १२ सामसावरो(श्यामसावरो) १३. सर(सिर) १४. वृ दावन १५. रमे १६. गिरधर नागर १७. चरण।

# मीरां के प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले अप्रकाशित पद

## परिशिष्ट (२)

१. आज मारे[1] आंगणी हरिजन आया रे। टेर।
दुवा दईयां सु (सू)। पाव परवालुं[2] पग धोय पाथल पाया जी ॥ १ ॥
कु कु[3] केसर की गार घलाऊं[4] रे। मोतीयाँ चोक पुरावा जी ॥ २ ॥
बतीस भोजन तेतीस विध सैं। आपणै हाथ जीमाया जी ॥ ३ ॥
फुला रो मगलो फुलां री सैंज्या। उपर फुल बरसाया जी ॥ ४ ॥
मीरां कहै प्रभु (भू) गिरधर नागर। आनद मगल[5] गाया जी ॥ ५ ॥

[ रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्र०-स० १४५ ]

स० पाठ – १. म्हांरे २. परवाळूं ३. कुंम कुंम ४. घोळावुं ५. मगळ
शब्दार्थ – परवालुं – धोवूं।

२. ओलगीया अब घर आई हो।
अतर खोल कहूँ घट भीतर। सुँदर वदन दिखाई हो ॥ टेर ॥
नैनां (णा) नीर आभ ज्यूं बरसै। विरखा इमट लगाई हो ॥
रुतवति इक राम कथ विन। वदन फिरत विलखाई हो ॥ १ ॥
च्यारु पोर च्यार जग[1] वीते। नैनां (णा) नीद[2] न आई हो ॥
पूरण ब्रह्म परम सुख दाता। थे म्हारी भली निभाई हो ॥ २ ॥
निस दिन पथ निहारत सजनी। इक पल जुग सम जाई हो ॥ ३ ॥
जन मीरां कू मिल्यौ है रमियौ। जनम जनम मित्राई हो ॥ ४ ॥

[ अ० सं० ला० लालगढ़ पेलैस, बीकानेर ह० लि० ग्र० सं० ११३ ]

स० पाठ – १. जुग २ नींद
शब्दार्थ – मित्राई–मित्रता

३ उधो प्यारे वह गई प्रेम कटारी ॥ टे० ॥

यो मन मन' हसती ज्यां मारतों' आंकस दे डारी ॥ १ ॥

जाका निय प्रदेश बसत है सो क्यूं जीवे बृज नारी ॥ २ ॥

जसे भभ्ग' तज गयो कचरी सो गति भई है हमारी ॥ ३ ॥

मीरा के प्रभु (भू) गिरधर नागर चरन (ण) कवल' वलिहारी ॥ ४ ॥

[ रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७५७३ ]

स० पाठ – १ मस्त २. में तो ३. भुजंग ४. कवळ, कमळ

शब्दार्थ – कचरी-कचुकी (कांचळी)

उधो बिन कुण ल्यावै पाती ॥ टेक ॥

४ उधो जी आये काई काई ल्याये। हे उधो कहा छोटे सग साथी ॥ १ ॥

वाचत पाती भरि आई छाती। नैन (ण) रहे दोऊं राती ॥ २ ॥

हा (थ) त पांव मेरा असैं जलत है। जूं दीपग में वाती ॥ ३ ॥

सवै गोपीन' को त्यागन कीनी। कुवज्या सग रहे राती ॥ ४ ॥

मीरां के प्रभू गी (गि) रधर नागर। मुनि सग रहे सा (थी) ती ॥ ५ ॥

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ६२५६ से ]

स० पाठ – १. गोपीयन ( ण )

५. ऐरी वीरी अपना स्यांम खोटा। अब दोस कहा' कुब्जा को ॥ टेर ॥

कुवजा चेरी कस राजा की। वै नंद जी का ढोटा ॥ १ ॥

आप तो जाय द्वारका छायै। मिलन(ण) का भया टोटा ॥ २ ॥

मिरां के प्रभू गिरधर नागर। कुवजा वडी हरि छोटा ॥ ३ ॥

[ रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १४५—पत्रांक–५४ ]

स० पाठ – १. कहां

पाठान्तर—

जीनका र दौस कुबज्या काये।

विरी अपना स्याम खोटो। ग्रह अपनो ॥ टेर ॥

कुबज्या दासी कं चरण की। उवै नद जी का ढौटा रे ॥ १ ॥

आप तो जाय दुवारका छाये। हमकू दिया दसोटा रे ॥ २ ॥

कुबज्या लेअर संग चढाये। रातु सरणप[1] लोटीया रे ॥ ३ ॥

ऐक अचुबौ[2] एसौ र सुणीयौ। कुबज्या बडी हर छोटा रे ॥ ४ ॥

आप न आवै(पस)तिया नै भेजीया। क्या या कागद का टोटा रे ॥ ५ ॥

मीरां कै प्रभु गीरधर नागर (च)सरण। कमल(चि)सित ज्यो रे ॥ ६ ॥

---

[ रा० शो० सं० चो० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ ]

---

सं० पाठ–१. सरप(सर्प) २. अचम्बो(आश्चर्य)

६. कांई मिस आया जी राज अठै ॥ टेर ॥

राय आंगना[1] बिचै उभा ही दीसो आगा जावोला कठै ॥ १ ॥

कुबजा नाचन(ण) चावै सो नाचो राज रो कांई जी ब(घ)टै ॥ २ ॥

मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर तन मन हरि कै पटै ॥ ३ ॥

---

[ रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० ७६६४ ]

सं० पाठ – १. आंगण

७. कित गये नेहड़ो लगाय ॥ टेर ॥

जनम मरण को सांवरो सगाती तलफ तलफ जीव जाय ॥ १ ॥

नत[1] ऊठ दरसण करती साम[2] को हरि बिन रही मुरजाय ॥ २ ॥

पेहली प्रीत करी हरी हमसुँ अब दीनी छिटकाय ॥ ३ ॥

गोकल ढूंढ व्रंदावन ढूढे ढुंढी वृज सारी राय ॥ ४ ॥

मो अबला की अरज सुणे ने दरसण दीजो आय ॥ ५ ॥

मीरां के प्रभु (गि) गीरधर नागर चरण कवल (ळ) चीत[3] लाय ॥ ६ ॥

---

राज० शो० ग्रं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

---

सं० पाठ – १. नित २. स्याम ३. चित

पाठा तर —

क्यू जी हरे (रि) की(कि) त गए नेहड़ो लगाय ॥ टेक ॥
वसी वजाय मेरो मन हर लीनो रस भर तान सुनाय ॥ १ ॥
एक एक जीव मैं असी आवत है मरुंगी जहर वीस खाय।
हम कू छाडी गयो विसवासी नेह की नाव चढाय ॥ २ ॥
हम कुलवती सो तुम त्यागी रहै दासी कै जाय।
मीरा (रां) कहै प्रभु (गि) गोरधर नागर रहे हो मधुपुरी छाय ॥ ३ ॥

---

[ रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ ]

८. कुण करै मारी[1] भीर रांमजी विनां कुण करै मारी भीर ॥ टेक ॥
एक समै प्रैहैलाद[2] उवार्‌यो धर नरसिंघ सरीर ॥ १ ॥
एक समै द्रोपदी पति[3] राखी खेचत (बा)वाढ्यो चीर ॥ २ ॥
रांका भी तारया रांमजी वंका[4] भी तारया तारया है कालू कीर ॥ ३ ॥
मीरां कै प्रभू हर अवनासी साहिव गैहैर[5] गंभीर ॥ ४ ॥

---

राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७१४३।

सं० पाठ— १. म्हारी २. प्रह्लाद ३. पत ४. वांका ५. गहर।

पाठान्तर—

कोण करे मारी भीड़ हरि विनां कौन करै म्हारी भीर। टेक।
ऐक समै गजराज उवारयौ काट्यौं है भ्रम जंजार। १।
ऐक समै प्रैहलाद उवारयौ धार्‌यौं है नरसघ सरीर। २।
ऐक समै द्रोपता की पण राखी खेचत वधि गयौ चीर। ३।
मीरा के प्रभु (भू) ह (र) अविनासी तुम साहव गहर गंभीर। ४।

---

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६१।

९. गोविद रे रंग राची रांणाजी मैं तो गोविंद रै रंग राची । टेर ।

सझ सिंगार बांध पग नूंपर[1] । लोक लाज तज नाची । १ ।

गई हो कुमति लही साधु की संगत । भगति रूप भई सांची । २ ।

गाय गाय हरि के गून[2] निसदिन । काल व्याल[3] सु वाची । ३ ।

उन विन सब जग खारो लागैं । और बात सब काची । ४ ।

मीरा गिरधर लाल प्रभु (भू) सूं । भगति रसोली जाची । ५ ।

---

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २०६ ।

सं० पाठ— १. नुपुर २. गुण ३. काळ व्याल ।

१०. राग कल्याण--

चरण रज मेर्मा[1] म्हम[2] जानी[3] हो चरण रज मैमा हम जांनी (णी) । टेर ।

जीन[4] चरण नैन सै गगा नीकसी भागीरथ भूपत आंणी । १ ।

जीन चरणन सै उधरै सुदामा विपत हरीस पत्य आंणी । २ ।

जीन चरणन छै (सैं) अहैल्या उधरी गौतम रिख[5] की पटरांणी । ३ ।

जीन चरनन छै (सैं) कुबज्या उधरी सैस गोपीयां मे ठकुरांणी । ४ ।

मीरां कै है प्रभु (भू) (गि)गीरधर नागर हर चरणां मै लपटानी (णी) । ५ ।

---

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ ।

स० पाठ-- १. महिमा २. म्हे, हम ३. जांणी ४. जिन, जिण ५. रिखी ।

पाठान्तर---

सोइ चरन (ण) वरहमड[1] भेजे नख सुरसरी झरन ।

सोइ चरन रज परसत वही तारि गौतम घरन ।

सोइ चरन बलिबधि पचयो बिद्र रूप स धरन ।

दास मीरा लाल गिरधर अघम तारन तरन ।

---

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ ।

सं० पाठ— १. ब्रहमाण्ड ।

११. छाड द्यौ गिरधारी वो मारग मारो[1] । टेर ।

हमारै[2] सग की दूरी गई छै । मो सिर गागरि भारी वो । १ ।

मोर मुकट पीताबर मोहै कुंडल[3] की छिवि[4] न्यारी वो । २ ।

मीरा के प्रभु गिरधर नाग(र) चरण कवल(ळ) वलिहारी । ३ ।

---

राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्र० सं० २८८४

---

स० पाठ– १. म्हारो २. म्हारे ३. कुंडळ ४. छवि ।

पाठान्तर–

छोड़ दौ गीरधारी हो मारग मारो । टेर ।

सग की च(स)हेली मारै दुर गहि है म च(स)र गार[1] भारी । १ ।

मैं दध वे(च)सन जात विद्रावन । विस(च)मलयो(गि)गीरधारी । २ ।

मीर मुगट सर च(छ)त्र विराजै । कुड(ळ) की सव न्यारी । ३ ।

तुम तो नदजी के छैल स (छ) वीलै । मै व्रक भान दुलारी । ४ ।

मीरा कै प्रभू (गि) गीरधर नागर । तुम जीते हम हारी । ५ ।

---

रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के हृ० लि० ग्र० सं० ६२९९ ।

---

स० पाठ– १. गागर २. छव, छवि ।

राग सोरठी

१२ जासा[1] जासा जि सावरिया थारे वारने[2] हो ।

जवतै परघट[3] भये भाव व्रज मै ।

अे जव से दुख गये सव व्रज के ॥

ये जसोधा(दा) भरम भुलानी ये जि झुले पालन(ण) हो ॥

जासा जासा जि सावरिया थारे वारने हो ॥

मात पिता कि वद छुटई बावा नदराय कि धन[4] चराई ॥

कु(कू)द पडे कालि दह मे विसिये र कारने हो ॥

जासा जासा जि सावरिया थारे वारने हो ॥

आधा सुरंबध सुरु मारे केसई कस पकड़ पछाड़े।
जुमला-अरजन और पुतना तारने ही इद्र कोउ चढो।
या व्रज प कोइय न भु(भू)प छुटावन हारो।
महर करो कान्हा ननक पर (गि) गीरवर धारन (णा) हो।
जासा जासां जि सावरीया थारे वारने हो।।
जवसे प्रीत तुम्हारी लगी जवसे लोक लाज सब कुल की त्यारी हो।
महर करो मीरा(रा) पर उभो बारने(ण) हो।।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० २५३४४ ।]

१३. जौगीया जी आज्यौ म्हारे देस ।।
म्हे तो पल पल जोऊं थारी वाट । जौगीयाजी आज्यौ मारे देस । टेक ।
आवण आंवण कह गया वारो कर गया कौल अनेक ।
गणता' गणाता गस गई रे वारी आगलिया री रेख। १ ।
रादे(धे) जी पूजे अबकी रे वारो । भर मोतीड़ा रो थाल ।
वीनरावीन' पाई सासरो रे वारी । वर पायौ गौपाल । २ ।
ज्यौं मु' थाने ऐसा जानती' वारो । आगण वावु' खजुर।
ऊची चढ कर जौवतो रे वारी। नेडा व (सो) छौ हो के दूर। ३ ।
पुरब जनम की परीतड़ी' हो रामा । मत दीजो च(छ)ट(का)ये ।
मीरां कहे प्रभु(भू) गिरधर नागर। (मि)मीलीया नद के(कि)सोर। ४ ।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५८६ । ]

१४. जोसोड़ा रे जोसत' जोड़ी (ई) ले । कबरे मीले माने' राम । टेर।
पाना जु' पीली(ळी) पड़ी रे । जेसे पीलो(ळो) पान । १ ।

---

१२. स० पाठ– १. जास्यां २. बारणे ३. प्रगट ४. धेनु ५. कुळ ।

१३. स० पाठ– १. गिणतां २. वृंदावन, विनराविन ३. मूं, मैं ४. जांणती ५. वावूं, बुहावूं ६. प्रीतड़ी ।

१४. स० पाठ– १. ज्योतिष २. म्हांने ३. ज्यूं

आप अखे(के)ला हो रया सजनी। मेरा ल(त)लफत प्रान(ण)। २।
मीरा(रा) के प्रभु कबरे (मि)मोलोगे। श्रीपति सरी(श्री) भगवान। ३। ❀

[ अनूप स० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १७०। ]

राग सोरठ–

१५. जोगीये मेरी न जाणी पीर।
अब तो जाय बदेस बैठा। काऊ की सुध न सरीर। टेक।
याद न आवै ब्रज के माही खेलत जमुना तीर।
ग्वालन[1] को दध खोस खाते। खोसि पीवत खीर। १।
वन वन डोलत चाव पावते। पीवत जमुनां नीर।
व्रज वनिता संगि करै विलास। मन मैं होत अधीर। २।

---

❀ पाठान्तर–

जौसीडा रे जोतक जोय रें कवै मिलै श्री भगवान। टेर।
थारो तो जोतक कूडा (डो) नही रे कव घर आवै स्याम। १।
पिव कारण मै पीली(ळी) भई रे जैसे पीलो(ळो) पान। २।
आप तो परसण होय रहे हो मेरो व्याकुल(ळ) प्रान। ३।
मीरा के प्रभु (भू) गिरधर नागर श्रीपत श्री भगवान। ४।

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १४५। ]

जोसीड़ा तू जोतिग जोय र सुण कद मिलसी भगवान। टेर।
( शेष पूर्ववत् ) [पिलानी से प्राप्त हरजसो से]

राग काफी

जोसीड़ा तू जोतग जोये र सुण कव मि(ल)सी भगवान। टेर।
( शेष पूर्व ) [राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ५६६५। ]

---

१५. स० पाठ– १. ग्वालण।

सो दिन लाला भुलि गये हो। भूप भये बड़ भीर।
मारा के प्रभु(भू) गो(गि)रधर । तुम आखर जात अहीर। ३ । ❀

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० । ]

१६. नीतरा आवे ओल(ळ)मा ॥ काई भरम धरे ससार ॥ १४ ॥
काई थारे लागे छे ॥
राणेजी साड्या भेजीया ॥ मोरा ने पाछी फेर ॥
कुल(ळ) की तारण असतरी ॥ झपट चली राठोड ॥ १५ ॥
काई थारे लागे छे ॥
त्यारयो पीयर सासरो रे ॥ त्यारयो माय मोसाल ॥
मीरा सरणे राम के ॥ झक मारो संसार ॥ १६ ॥
प्यारो माने लागे छे गोपाल ॥

नैनन बान[1] परी हेली मारै[2] नैनन बान परी। टेर।
जीतू[3] देखु जीत मेरी जो आलो जीवन प्राण जारी। १।
माधो री मूरत मारै उर बीचै अटकी हिरदा मैं आन अरी। २।
कव की ठाडी पथ निहारु अपनै ही भवन खरी। ३।
मीरा(रा) गिरधर हाथ (वि)बीकानी लोक कहै वीगरी डो)। ४।

[ सत साहित्य मडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से। ]

---

❀ पाठान्तर–

जोगोया ते मेरी पीर न जाणी ।
मै तो आसिक बदी तेडी। नेक दया नही आण। टेक।
तुम भो स्वारथ को सगो परमनाथ नही पहचाणी।
तेरै मेरै भयो विछोहा। कोई दाणा पाणी। १।
तुम विन मोहि कल न परत है। मीन बिना पाणी।
तुम विना हम कसे जीवै। तरफ तरै न बिहाणी। २।

[ रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२९० । ]

---

१६. सं० पाठ– १. बांण २. म्हांरे ३. जित ।

१७ नांम से अटकी । सौ मीरा हर[1] नाम से अटकी । टेर ।
कोइ क(हे) मीरा भई बावरी । कोई कहे भटकी । १ ।
भर मटकी मकी[2] । या सरक ऊपर सौ मटकी पटकी । २ ।
मीरां कहे प्रभू गी(गि)रधर नागर । हर चरण[3] लपटी । ३ ।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७ । पत्रांक–१५८ । ]

१८. बुदन[1] भीजै मोरी साडी म कैसै आउं[2] । टेर ।
ऐक[2] गरजै दुजी पवन जकोलै[3] तीजो ललना दे गारी : १ ।
ऐक जोवन दू)दुजी मही की मटकी तीजो जमना जल[4](ळ) भारी । २ ।
मीरा कै प्रभु(भू) गी(गि)रधर नागर अवगत की गत न्यारी । ३ ।

[ रा० शो० संस्थान चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ । ]

१९. ब्रहेन[1] उभी पंथ सर । सांई अजहू न आया हो । टेर ।
सांवन(ण) भादव यो लसे । वृखा[2] रत[3] आई हो ।
उर घटा घनघोर हयौ । नेनां(णां) झर लाउ(इ) हो । १ ।
माई वाप तुम कूं दई । तुम ही भल जाने(नों) हो ।
तुम तजि आन भ्रतार कूं । हृदै नही आनौ हो । २ ।
तुम हो संमर्थ पूरण । पूरा सुख दीजै हो ।
मीरा हरि की व्रहनी । अपनी करि लीजै हो । ३ ।

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० प्र० सं० ८२६१ से । ]

२०. भगति दुहेली हो श्री जी राई ।
भगति दुहेली हां जी । मारी[1] रांम नाम ल्यौ[2] लागी राइ । टेर ।
मीरां जनमी मेड़त । पावन किया राटोड़ ।

---

१७. सं० पाठ– १. हरि २. मटकी ३. चरणां ।
१८. सं० पाठ– १. बूंदन २. एक ३. झकोळै ४. जळ ।
१९. सं० पाठ– १. विरहन, बिरहिण २. बिरखा ३. रुत ।

आगला भव की भगति है । तुम मति जाणो और । १ ।
सीसोद्या को नसर्णों । ही दुपति की धाम ।
सेवा सालिगरांम की । और नही कोई काम । २ ।
ऐसी भगति कठण है । जैसी खाडा-धार[3] ।
जै साधू सुमरण करै । तो क्या जाण ससार । ३ ।
बैकूंठा कौ वैसनूं और छत्र की छाहा ।
गादी तकीया रेसमि । राम त्रिना (बे)काम । ४ ।
वीस रो प्यालौ मेलीयौ । दीज्यो मीरां हाथि ।
करि चरणामत पी गई । थे जाणो रुघनाथ । ५ ।
वीसरो प्यालौ पीय कै । सूती खूंटी ताणि ।
स्याम सूलून[4] सावरै । झटके जगाई मोहि आणि । ६ ।
गरड[5] चढ्या र हरि आईया । पूरी मन की आस ।
रेम झेम[6] वाज घूघरा । मिंदरीया भयौ उजास । ७ ।
मीरा बिरह मैं बावरी । माथै भगति कौ मोड ।
रग राति मानी फीरै धनि मीरा राठोड । ८ । ❀

[ रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ं० सं० ८ से । ]

---

❀ पाठान्तर– राग राजवबोधी–

भगति दुहेली छै राणाजी ।। म्हारी भगति दुहेली छै ।।
थे तौ समझि भजोजी भगवान ।। टेक ।।
भगति दुहेली राम की ।। जिसी षाडा की धार ।।
सिर साटै धारण करी । म्हारौ काई करै लौ ससार ।। १ ।।
दसोता की वैसणै ।। हींदूपति को धाम ।।
सोडि पथरणा रे सभी ।। म्हार रामजी विना बेकाम ।। २ ।।
मुष पाला कौ बैठवो ।। और छत्र की छांइ ।।
भगति बिनां भगवांन की ।। म्हारै ऐ नही आवै दाइ ।। ३ ।।
साधू म्हारै कुटुब कबीलो ।। ररका र भरतार ।।
मीरा दासी रावली(ळी) ।। म्हारै नही छै लोकाचार ।। ४ ।।

[ भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० प्र० से । ]

---

२०. सं० पाठ– १. म्हारो २. लो ३. खाण्डाधार ४. सलूणों ५. गरूड़ ६. रिमझिम ।

२१. राग सोरठी–

मनमोहन सु' रूप लुभानी हो।

मैन²ढुरि गयो स्याम सुद्र(र) दिसि ज्यु सीलैंता सघ समानी। १।

कोई भला कहो कोई बुरा कहो मै सिरलीनी मानी। २।

मीरा प्रभु(भू) गिरवर मीलिवे की जुगि जुगि चली कहानी। ३।

[ रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्र० स० २८८४। ]

२२. माई मानैं' राम मिलण कव होय। टेर।

हर मारै आगण हुय गया सजनी। हू रही अभागण सोय। १।

चुड़लौ नहि पैहैरू² सजनी चूक न राखौ। गैहैणौ मै रालूली खोय। २।

पाटी न पाडू सजनी माग न सवारू। कजलौ(ळो) म डारूगी धोय। ३।

मीरा कै प्रभू हर अवनासी। सग चलूंगी रथ जोय। ४। ❀

[ राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर ह० लि० ग्र० स० ७१४३। ]

२३. जा दिन तें तुम बिछुरे हो मेरै भई हाणी।

तेरै कारन वन वन डोलू। होये के प्रेम दे( द)वानी(णी)। ३।

खान पान की सुधि न कोई काया कुमलाणी।

अब कछु नही रह्यौ बाकी। पड तजत प्राणी। ४।

पितत पावन विरद तेरौ। वेद पुराण बखाणी।

मोरा कौ अव दरसन(ण)दीजे। गी(गि)रधर सुख खाणी। ५।

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२६०

---

❀ पाठान्तर–

माई म्हांनै राम मिलण कब होइ। टेक।

हरि म्हारै आगणे हो गया सजनी। हू रे अभागिण रही सोइ। १।

चुडलो न पहरू रामजी चूप न दिवाडु। गहणो मै रालू(ळू)ली खोई। २।

पटोया न पाडुं रामजी माग न सवारू। कजलौ मै रालू(ळू)गी धोई। ३।

मीरा के प्रभु हरि अबनासी संगि चलूगी रथ जोई। ४।

[ भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से।

---

२१. सं० पाठ– १ सूं २. मैण, नैण।

२२. सं० पाठ– १. म्हाने २. पेहरूं।

२४. पद —

थारी साध संगत परी छाडो रा। गणगोर जौ पुजौ रा। टेक।
और पुजै देवी देवता। थे पुजौ गणगौर (रा)।
मन चित्या फल पावस्यौ। थे मति जाणो ओर रा। १।
नही पूजां देवी देवता। नही पूजा गणगौर (रा)।
मारो[1] प्रम[2] सनेही गोवीदो। थे मति जाणौ ओर रा। २।
सेवा सालगराम[3] की। साध सगत रो काम (रा)।
थे सो[4] बेटी राठोड की। थे(था)ने राज दीनौ भगवान(रा)।
राज करे ज्याने करणे द्यौ। म्ह(मै) सतन की दास (रा)।
चरण रेसा साध क। म्हांनै राम मिलण की आस(रा)। ४।
लाजै पीयर सासरो। लाजै माय मोसाल (ळ) (रा)।
चौथौ लाजे मेड़तौ। थे(थां)नै काई कहीसी[5] ससा(र) रा। ५।
नां हम कौई चौरी करा। ना हम कोई करा अकाज।
पुन रे मारग चालता। म्हाने कौई[6] कहीसी ससार (रा)। ६।
क्यौं लाजै पीहर सासरो। क्यु(यू)लाजे माय मुसाल(क)(रा)।
मीरा चरणै[7] राम कै। म्हाने गुर(रु) मीलाया रेदास रा। ७। ❀

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५८६। ]

---

❀ पाठान्तर–

गोरल–

भाभीजी गोरज पूजो राज॥ सता रो सग निवारो राज॥ टेक॥
सईया पूजै गवरजा॥ थे पण पूजौ गौर॥
मन बाछत फल पावस्यो॥ भाभी जो तूटै गिणगोर राज॥ १॥
नही पूजू गिणगोर नै॥ नही पूजू आन देव॥
वाल सनेही गोविंदो॥ जाको थे नही जाणौ कहू भेव राय॥ २॥
म्हे तो गिणगोर न पूजां राज॥ मोहन मित्र वीया रो छे॥
सेवा सालिगराम की॥ साध सत रो कांम॥
थे बेटी राठोड़ की॥ थांनै राज दीयौ छे भगवान राय॥ ३॥
राज करै ज्यानै करण दै॥ मैं सतन की दास॥
सेवा करसूं साध री॥ म्हानै राम मिलण की आस राय॥ ४॥
लाजै पीहर सासरो॥ लाजै माय मोसाल॥
नितरा आवै ओल(ळ)मा॥ थानै बुरा कहै संसार राय॥ ५॥

---

२४. स० पाठ– १. म्हारो २. परम, प्रेम ३. साळगरांम ४. छो ५. कहसी ६. कांई ७. सरणै।

चोरी करा न कुमारगी ॥ नही कुमावा पाप ॥
कुल कौ तातौ लागीयौ ॥ म्हासू काई हठ लागा छो आप राय ॥ ६ ॥
कद ठाकुर परचौ दीयौ ॥ कद मानी परतीत ॥
कुल की काण ज छोड दी ॥ या नही छै राजा री रीत राय ॥ ७ ॥
पीहर जाऊ न सासरै ॥ नही जाऊं पीया रै पास ॥
मीरा सरणे राम कै ॥ म्हान गुरु मलीया छै हरिदास ॥ ८ ।

[ रा० प्र.० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १०८४७ से । ]

थाने(थाने) राणाजी पुचे(छे) वात ॥ काई थारे लागे छे गोपाल ॥ टेर ॥
काइी थारे लागे छे गोपाल ॥

जेमल के घर जनम लीयो हे ॥ मीरा थारो(म्हारो) नाव ॥
रमतो ने लादो काकरो ॥ सेवीया सालगराम ॥ १ ॥
मीरा वेठी मेल मे ॥ हाता(था) तो मरदग ताल ॥
पावा बाधा गुगरा ॥ काई नाचे(नाचा) दे दे वो ताल ॥ २ ॥
वस रा प्याला राणौजी मेल्या ॥ दो मीरा के हात ॥
चरणांमत कर पी गया(गई) ॥ राषण वालो राम ॥ ३ ॥
साप-टपारो राणेजो मेल्या ॥ दो मोरा के हात ॥
हस हस मीरा कठ लगायो ॥ यो तो मारे नवसर हार ॥ ४ ॥
राणेजी सनेसो भेजीयो रे ॥ मीरा री खबर मंगाय ।
मुई मोरा ने घीस(सा) वज्यो ॥ काला(ळा) वेल जुताय ॥ ५ ॥
मीरा उतरे मेल सुँ रे ॥ उगव स[ग?]लो भार ॥
यो ले(यो ल्यो) राणा थारा मेलड़ा ॥ नीत री करे छे राड़ ॥ ६ ॥
प्यारो माने लागे छे गोपाल ॥ हे जी मारो जनम सुदारण सावरीयो ॥
माने त्यार(रे)गो गोपाल ॥

मे(थे, म्हे) मोटा कुल मा जनमीया ॥ ऊची थारी जात ॥
राणां जी सरोपो वर पाया ॥ थारे तीन कुंट को राज ॥
काई थारे लागे छे गोपाल ॥ ७ ॥

जेसा पाणी उसका ॥ जेसो यो ससार ॥
आवे झकोलो पवन को जान न लागे वार ॥ ८ ॥

प्यारो माने लागे छे ।।

"उना भोजन जीमलो ।। पेरो दीषणी चीर ।।
सीसोद्या घर आवीया ।। सगला मेला मे थारो सीर ।। ९ ।।
काई थारे लागे छे ।।

उनाँ भोजन तज दीया मे ।। तजीया दषणी चीर ।।
राणा सरीषा वर तज्या ।। सगला (सारा(धा))मे मारो मीर ।। १० ।।
प्यारो माने लागे छे ।।

ठडा टुकडा थे पीवो काई ।। पीवो पाटी छाछ ।।
भु सुवो भुषा मरो ।। कठे मीले गोपाल ।। ११ ।।
काई थारे लागे छे ।।

मीठा लागे टुकडा काई ।। अम्रत लागै छाछ ।।
भु सुवां भुषा मरा ।। माने काले मीले कीरतार ।। १२ ।।
प्यारो माने लागे छे ।।

मीरा उतरया [मिहल] सु जी ।। लीवी दुवारका री बाट ।।
समजायो समजे नही ।। ले जाती वेकुट ।। १३ ।।
प्यारो माने लागे छे ।।

लाजे पीयर सासरो ।। लाजे माय मोसाल ।।

२६. मा(म्हा)रा मोर मुगट बसीवाला[1] ने की(कि)ण राख्या वी(वि)लमाय ।
ऐ जी कीण राख्या छे छोपाय । टेर ।

तु(तू) वडभागण राद(ध)का । कोण कीया छल-छद ।
कर राख्या क्रस्न कु । भुज को वाजु(जू) वद । १ ।
तु(तू) वडभागण राद(ध)का । कोण तपस्या कीन ।
तीन लोक को नाथ है । सो तेरे आदी(धी)न । २ ।
मुरली(ळी)वाला मोवना । मुरली(ळी) नेक वजाय ।
ऐ मुरळी मेरे मन हर लीया । जर अगना न सुहाय । ३ ।
अलक चाप चवर करे । अद(ध)र उसीसा लेत ।
कोण पुन की मुरलीया । अद(ध) को रस लेत । ४ ।
ददसुत के नीचे वसे । मोती सुत के वीच ।
सो मागत व्रजनायका । साम[2] करो वगसीस । ५ ।

२६. सं० पाठ - १. वसीवाळा २. स्यांम.

लाला लेलो दो लख देऊं । होरा लो दस वीस ।
साम[२] हमारे ऐ कहे । कसे करु बगसीस । ६ ।
प्यारी भीजे प्रेम मे । कर प्रीतम से प्यार ।
सपने मीलीया सावरो । सखी ग्राख खुली दुख भाग । ७ ।
वीहवोन (विरहणी) के व्रक्ष को । मरम न जाणे कोय ।
डाला पात फल फु(फू)ल मे । रादे(धे)रादे(धे) होय ( ८ )
ग्ररे कठीण ग्रहीर के । नेक पीर पीछाण ।
तो मुख दरसण कारणे । छड-दइ[३] कुल(ळ)-काण । ९ ।
वीनराविन[४] री कुज गली(ळ) मे । बोलत दादु[र] मोर ।
मीरा(रा) ने गी(गि)रधर मीलया[५] । नागर नद-कीसोर । १० ।

[ग्रनूप स० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १७० ]

२७. मीराबाई रो पावणीयो रुडो । टेक ।
पावणीयो घर ग्रावयो मीरा सज सोळे सीणगार ।
सोळे सीणगारा री ओपमा मीराबाई रो चुरलीयो लायो । १ ।
घर राकु[१] जीमण खीचरी मीरा(रा) पावणीया ने खीर ।
सुचसु[२] जीमाऊ मारे रामजी नु[३] जीण दीठा............ । २ ।
पावणीयो घर चालीया आ । मीरा(रा) चली रे भोलाऊ साथ ।
मीरा को प्रभु गी(गि) रधर थे तोरो नही नेण हजुर । ३ ।

[राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७६६५ से ]

२८. मेवाड़ो रुठै तो मारो[१] काई कर देसी । गोमद का गुण गास्या । टेक ।
गोमत[२] मात पिता गुर(रु) गोमद-णो (गो) मद गाया री जास्या ऐ । १ ।
राणौजी रुठौ(ठै) तो मारो काई विगडैलो । हर[३] रुठां मर जास्या ऐ । २ ।
कुल[४] की लाज तीणा जू तोड़ो । भगत-नीसाण वजास्या ऐ । ३ ।
मीरां कहै प्रभू गी(गि)रधर नागर । हर रट हर मिल जास्यां ऐ । ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८५१ से ]

---

२ स्याम ३. छोड दी ४. विनरावन, व्र दावन ५. मिळया ।
२७. सं० पाठ- १. राद्गू २ रूचसूं ३. नू ।
शब्दार्थ- सीणगारा—शृ गार । ओपमा—उपमा । पावणीया—अतिथि ।
२८. स० पाठ- १. म्हांरो २. गोविंद ३. हरि ४. कुळ ।
शब्दार्थ- तीणा जूं—तृण के समान ।

राग सोरठ ।

२६. मैं तो लीयो है रामड़ीयो[1] मोल ।
कोई कै[2] सूगो कोई कै मुगो मै तो लीयो तराजे[3] सु तोल । टेक ।
आ भीरज[4] को सब लोक देखत है मै लीयो है भजता[5] ढोल । १ ।
मीरा कै प्रभु गी(गि)रधर नागर पल चारो बोल । २ । ❀

[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६३६ से ]

३०. मैं व्रहन[1] बैठी जागु जगत सब सोवै री मा ऐ । टेर ।
ऐक जो व्रैहन असी देखी : असवन माला(ळा) पोवै । १ ।
तारा गिन(ण) गिन(ण) वीस बीविती नैन[2] भरे भर जोवै । ३ ।
मीरां कैहै प्रभु वैग दरस दो तम मीलीया[3] सुख होवै । २ । ★

[अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० १७२ से ]

---

❀ पाठान्तर– १.
माई मैं तो लीयो री गोविंदो मोल । टे० ।
कोई कहै सोगो कोई कहे मूगो । लीयो री तराजू तोल । १ ।
कोई कहैं छानै कोई कहै छुपकै । लीयो री बजता ढोल । २ ।
याकू सब लोक जाणत है । लीयो अमोला मोल । ३ ।
मोरा के प्रभू हरि अविनासी । पूरब जनम को कोल । ४ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ० सं० ७३ से ]

पाठान्तर– २.
लियौ छै रामइयौ मोल । माई मैं तो लियौ छै रामइयो मोल । टेक ।
ना कोई हलकौ ना कोई भारी । लीयो छै तराजू तोल । १ ।
नां कोई सूघौ ना कोई मूघौ । लीयौ सिर साटै मोल । २ ।
ना कोई छानै ना कोई चोरी । लीयौ छै बाजतै ढोल । ३ ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर । पूरव जनम कौ कोल । ४ ।

[रा० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ७१४३ से ]

★ पाठान्तर–
मै व्रैहेन बैठी जागु जगत सब सोवै री माई । टेर ।
एक ब्रिहैनी अैमी देखी आंसूवन माला पोवै री माई । १ ।
यु है तन मन मेरा पुरजा व्याकुल वदन जो रोवै री माई । २ ।
मीरां के प्रभू हर अभनासी वहूर मरण नही होवै री माइ । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से ]

---

२६. सं० पाठ– १. रामइयो २. कहै ३. तराजू ४. ब्रिज, व्रज ५. बाजंता ।
३०. सं० पाठ– १. विरहण, विरहिन २. नैण ३ मिळियां ।

राग सामेरी।

३१ मोहि रे मोहि रे मोहि रे सावरे वाल-काने हु मोहि।
नद-नदन नटनागर मोहा[1] तन-मन सुण्यो[2] तोही रे। टेक।
मोर-मुगट पीताम्बर राजे कुँडल[3] झलके[4] सोई रे।
मधुरि-मधुरि धुनि वेनु वजावे ओर न ऐसा कोई रे। १।
त्ररूप[5] अनुप लाल गी(गि)रधर को तामे रहो मन मोही रे।
मीरा प्रभु गीरीधर कव मलहि तन मन मे सुव होही रे। २।

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३२८४ से ]

३२. यो तो रग घता लग्यो हे माय। टेक।
भाग तभाखू छोतरा सव कोई पीवै लाय।
राणाजी भेज्यो विषरो प्यालो लीनो सीस चढाय। १।
चरणाम्रत कर पी गई मैं चढियो मोदक माइ।
हरि-रस प्यालो जे पीवै री दुजो कछु न सुहाइ। २।
गुर(रु)-परताप साध-सग मिल कर मिलिया गिरधर आय।
महा हलाहल जहर की री व्यापो न तन मै लाय। ३।
लोक-लाज कुल[1] की सव त्यागी हरि भगतन कै माय।
जन मीरा मनवाली[2] कीनी लै पुन पाय। ४। ❀

[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३७६४४-पत्राक-३४ ]

---

❀ पाठान्तर–१
यो रग घता चढ्यों छै ये माय
पिया पियाला निज नाव का। ओर न रग सुहाय। टेर।
भाग तमाखू छौतरा। सब कोई पीयै लाल।
प्रेम पियाला जे पियै। तिनका और हि ख्याल। १।

---

३१ स० पाठ– १. मेरा, मोही २. सौप्या, सूप्या ३ कुडळ ४. झळके ५. त्रिरूप ।
३२ सं० पाठ– १. कुळ २. मतवाळी।
शब्दार्थ– पुन = पुण्य।

राग मारु।

३३. रूप लोवानी[1] हो पोया तेरै रूप लोवानी हो।
निस नही आवै नीद री। दीन फीरहै[2] दिवानी॥
प्यास लगी तेर नाम की वीरहै[3] वोहरानी।
सुक-सुया-दी[4] तन पच निहार तौ जीके अैक न जानी हो।
यो ओसर यो ही गयो सुनि सखी ये सयानी हो।
आव हम पी सेज री मुज ओर न भाव (वें) हो।
प्रभु गिरधर बिना तन ताप न जाव (वैं) हो॥ १॥
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से ]

राग किलाण।

३४. राम नामै मेरै धा[1] माने वासी।
रासीयो[2] राम रिजाऊ हे माय।
व्रहैया जार की भलै साखी री। उठे जै जावै हुलसाहु हे मायै।
मानेकुं[4] मार सावेद[5] सातेगुरै[6] का। दुरैमतै[7] दुरहायहु ये माय।
भाको नावै सू रात का रैभोरी। कासण पै मैं चड हु हे मायै।
गानै को ढोलै वाणो आभारि। मागा नैवाई घुणै गाहु ये माय।
तानै कारतार मानै कार मारै हगं। सुती सुरते जगाहु हे मायै।
थे सो जी प्रभु घाणैनामी[8]। वीडैदै[9] कोसो हे गाहु ये मायै।

---

गुर-परसाद साध की सगत। मिलिया हरजन पाया।
जन मीरां भई मतवाली। कोई पुरबलै भाया। २।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८५१ से ]

पाठान्तर–२–

यौ रग धता चढ्यौ हे माय।
पीया पीयाला निज नाव का। और न रग सुहाय। टेक।
भाग तवाखू छातरा। सब कोई पीयै लाल।
... . ...... ... .........। मिलीया हरजन आय।
जन मीरा भई मतवाली। कोई पुरबले भाग। २।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं०स० १०८४७ ]

---

३३ स० पाठ– १. लुभानी २. दिन फिरै ३. विरह ४. सुख-शय्या ही।
३४ सं० पाठ– १. ह्रदा २ रतिजो ३ विरह ४. मन कू ५. सवद ६. सतगुरु
७ दुर्मति ८. घणनामी ९. वीडद।

३७. वावरी[1] भई हरी के सग न गई । टेर ।

एक दीन हर मोरे घरै आया मै दध मथन रही ।

मै अपराधण मान ज - कीनो चलतो भेट ज लही । वाव० । १ ।

इथ गोकल उथ मुथरा नगरी वीच मै वैरण भई । हम ।

इथ उत मं मथ हो सखी री मोवन सैन दई । वाव० । २ ।

आप तो जाय दुवारका मै छाए हमनै कछुव न कइ[2] ।

मीरा कै प्रभु गीरधर [नागर] गोपी व्याकल[3] थई

वावरी भई हरी के सग न गई । ३ ।

[रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १०४५७ से ]

३८. विरज[1] को वसवो[2] री सा(छा)डो रै, राज करै तेरो कान । टेर ।

वरज जसीदा अपनै लाल कु(कू)जब देखु जब आडो । १ ।

अत गोकल अत मथुरा विछै[3] नदको[नदन] ठाडौ । २ ।

मीरां कहै प्रभू गीरधर नागर माहि मांगै मो पे गाडो । ३ ।

[राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ६२६६ ]

३९. वीनैराविन[1] मै को डैरा चाहै ।

रुखैमाणै पारेणै घारे लासी ।। ❀

यो(ओ)लुडी लागायै किया सूनै आवेन्यासी[2] ।

वीनाराविनै मे मागाले[3] गारवै । १ ।

साईया रुडै नायैकै आसो ।

पीतडीना दै घाव मे घूमै पाडै ।।

ताहै मुगरैवालो[4] वासी वाजासो[5] ।

पीतैडि[6] लगायै है किसानावा[7] । २ ।

मीरा कै प्रभु ग्रारेधारै-नागारै[8] ।

चशणै-कावालै[9] की दासी ।।

[राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ८३९८ से ]

---

३७ स पाठ- १. वावरी-२. कही ३. व्याकुळ ।

३८ सं० पाठ- १, व्रज २. बसवो ३. बिचै, बीच ।

३९ सं० पाठ-१ बिनराविन, वृंदावन २. अविनासी ३. मगळ ४. मुगटवाळो ।
५.बजासी ६.प्रीतड़ी ७.किसनवा ८.गिरधर नागर ९.चरण कंवळ (कमळ)

❀ रुखमण ।परण घर लासी ।

पद-

८० वीरो¹ मारो² भलाई आयो र ।
हे जी मारा तन को दरद गमायो ॥ टेक ॥
सुर नर मुनि ज्याको ध्यान धरत ह सेस पार नही पायो ॥
सो दरसन(ण) सिव ब्रंह्मा दुरलभ सो मोय छनम³ वतायो ॥ १ ॥
मात पिता अर कुटम कवीलो सवको लज्या राषी ॥
मेरी मेरे पीना कि त्रीभवन पत⁴ चल आयो ॥ २ ॥
नणदल जटानी बोल बोलै छी तीन को गरभ नवायो ॥
सोमान्री सब नीचा किना हरद-सूख सब छायो ॥ ३ ॥
जसवविध⁵ साज ल्यायो माहेरो चुदड घाट उठायो ॥
कवरी कलस⁶ धरयौ सिर उपर वीर कलस वधायो ॥ ४ ॥
कवरी कलस दीयो नणदल न वीरो मीलवा आयो ॥
ज-जकार⁶ होत सुरपुर म सषीयन मगल गायो ॥
मीरा(रां) कहै कवरीयन वोर असो वीरो गायो ॥ ६ ॥
[रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०५७, पत्रांक ४ से]

राग देसटो ।

८१.सावरो¹ घर जाण दे मोय सावराजी सैं काम है । टे० ।
मोर मुगट सर धरें उं² स(च)दन की खौ(खोर) हो ।
बाया तो बाजुबन्द जु करया उवाकें गल मोतीयन की माल³ है । १ ।
वींद्रावन⁴ में रास रच्यो है सैंस गोपी ऐक कांन है ।
और के आनद हे रादे को कोन हवाल हैं । २ ।
दासी मीरा लाल गी(गि)रधर और को नही कांम है ।
सावरो सुरत देख के मैरौ तो मन अराम है । ३ ।
[राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से ]

---

८० स० पाठ— १ वीरो २ म्हारो ३ छिण मे (क्षण में) ४ पथ ५ जिस विध
६ कलस७ जै जै कार, जय जय कार ।

८१ स० पाठ—१ सावरो२. उर३. माळ४. वृंदावन, विनरावन ।

२. सजन घर वेला ही आज्यौ । टे० ।
बहूत दिना की जोऊ छौं[1] बाटडी ।
घणा घणा सुख ल्याज्या(ज्यौ) । १ ।
औ बिरिया कब होइगी कोई(कहे) संदेसा । २ ।
मीरां के उस नाह का मन खरा अदेसा । ३ ।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० स० २८३८० से ]

३. सतगुरु वेगा आजोजी म्हारा जनम सुधारण राम ।
अत्रै मोहि मति छिटका जो , जी[1] । टेर ।
जा दिन से तुम बिछड्या रे दिन दिन दुख्ख अपार ।
रोय रोय ने मारी[2] अखिया राति सुख नहि पायौ लगार । १ ।
झूठी माया याहा पडी रे उन में त(ते)रौ ध्यांन ।
हात जौडने करु वीनती मोय तुमारो आन । २ ।
आकुल(ळ) व्याकुल(ळ)फिरु वदन की आवौ व्रंहन[3] के भरतार ।
अबके [किरपा करो मनमोहन दो मोकू , दीदार । ३ ।
आज मिलौ के काल मिलौ रे तलफ तलफ तलसाय[4] ।
हिरदे हरि दरसण की लग रही गुरु विन भरम न जाय । ४ ।
ब्रह्म प्रसंगी सतगुरु म्हारा दूर करौ भ्रम-नास ।
दासी मीरां अरज करें है वे सतगुरु मै दास । ५ ।

[ अनूप सं० ला० लालगढ़ पेलेस, वीकानेर के हृ० लि० ग्रं० स० ११३ से ]

४४. सावरा सु[1] प्रीत लगाई री माई री सावरा से प्रीत लगाई । टेव ।
जल डूवत गजराज उबारयो सतन के सुखदाई ।
ऐसा[1] साम[2] कु मै कबे नहो विसरु[3] राखु(खू), माहरा[4] हीरदा रे माही री । १
शिव ब्रह्मा जाकु रटत निरतर सेस सहस्त(स्र) मुख गाई ।
च्यार वेद बाकु नैत-नैत[5] कहै वाको कोई पार न पाई । २ ।
नित नुव[6] दरसण करु री सांम को देख-देख सुख पाई ।

---

४२ स० पाठ- १. छूं ।

४३ स० पाठ-१. ज्यो जी । २. म्हारी । ३ बिरहन । ४. तन जाय ।

४४ स ० पाठ-१. स० । २. स्याम । ३. वीसरूं । ४ म्हारा । ५. नेति-नेति । ६. नव,नया ।

सावरी सुरत की लेत वलैयां नी(नि)त नी(नि)त होत भलाई। ३।
जनम मरण को भे[7] सब मिटीयो हरि-सरण मे आई।
मीरा(रा) के प्रभु गी(गि)रधर नागर हरख-हरख गुण गाई। ४।

[ राज०शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १६६७ से ]

४५. सांवरे न जाणी म्हारी पीर रे लाल। टेर।
रोइ-रोइ अखीया लाल भई है।
आसूड़ा सू भीज्यौ म्हांरो चीर चीर भर रर रर। १।
हम जाते प्रभु की ठोड विलूवे।
कैसे धरे मन धीर धीर धर रर रर। २।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर।
ताकर[1] मारचो प्यारो तीर तीर रर रर। ३।

[ पिलानी से प्राप्त हरजसों से ]

४६. राग सोरठ।

सावलीयो[1] जोवा-सरको राधा नैणा भरि-भरि नैणां नरखो[2]। टेक।
सैस सखी मिली मगल गावे कोटि सखो मन हरख्यो। टेक।
मोर-मुगट पीतांबर सोहै कुंडल की छवि नरखो। टेक।
सख चक्र गदा पदम वीराजे सुधामापुरी वरसो। टेक।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर वर पायो सरवर को। १।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १८६० से ]

४७. राग मारु

सेभडली सरखी री सेभड़ली संवारी।
तेरे ग्रह[1] आवन[2] कह गये प्रभु मोहन नंद-कुमार। टेक।
जाई जुही चपमाल पाडल फूल गुलाबी।
कुदत्ति वरी केतको करना कि कलीया[3] डारी। १।

---

७ भेद, भय।

४५ सं० पाठ–१. ताक'र, ताक कर।

४६ सं० पाठ–१. सांवलियो। २. निरखो।

४७ सं० पाठ–१. गृह, घर। २. आंवण। ३. कळियां।

विविध भांति बौहौ गीदवा करबीरी दे हौ सवारि।
दासी मीरा लाल गिरधर तौसी नवी नीनारि। २ ।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं १८८२ से ]

४८. राग बिहागरो।

सेझड़ी बनाय स्यांमां तेरे पोढे गिरधर आय। टेक।
केतकि चपौ केवडौ अवर[1] सुगधी जाय।
सौडि[2] सुपेदी गीदवौ पचरग पिलग बिछाय। १।
बिरहनि ऊभि मग जोवै हौ प्यारे प्रीतम मिलीये आय।
जान करौ तुझ वारनै हौं जन मीरां बलि जाय। २।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से ]

४९. होरि आई हौं पीया मारे[1] देस।
हो लख[2] भेजु(जूं)संदेसौ होरी आई हौ बालम मा[रे] देस। टेक।
लख-लख पतीया पियाजी कूं भेजु(जूं) उधो जी गयो रे सनेस। १।
आवां जी पाका महुं झर्ड लागा नीबुका(वा) पाका मारे देस। २।
पीउ के कारण मैं जोगन[3] हुंगी करु मै भगवां-वेस। ३।
मीरा कै प्रभु गीरधर नागर राधाजी बालक वेस[4]। ४।
राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२९९ से।

---

४८ सं० पाठ-१. और, अर। २. सौंदी।

४९ सं० पाठ-१. म्हांरे। २. लिख। ३. जोगण, जोगिन(ण)। ४. भेस।

# मीरां के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियां ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती हैं शेष पद नहीं।

## परिशिष्ट ३

१. अब हरि कहा गऐ नेहरौ[1] लगाय। टेर।
छोड़ चल्यौ विसवासीघाती प्रेम की वात सुणाय। १।
घायल कर निरमायल कीनी खवर न ली मोरि आय। २।
छोड चल्यौ है व्रहै[2]-समद्र मे नेह की नाव लगाय। ३।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर रया[3] छी अवधपुर छाय। ४।

[ अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से ]

२. अरी नदनदन सौ मेरौ[1] मन मान्यो कहा करैगो कोई री। टेक।
हो तो चरन-कमल[2] लपटानी (णी), जो भावै सो होय री। १।
वे घर छाडि आवै घर मेरै पर घर लोग रिसाय री। २।
नद-नद सौ मै कबहू न तोरौ[3] मैं मिलोगी निसान (ण), वजाय री। ३।
सासु (सू) लरै (डै) मोरी नन (ण) द रिसानी हसत बटउवा[4] लोग री। ४।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर विधना लिख्यौ सजोग री। ५।

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से ]

३ आज सखी मेरै अणद वधावो घर मे गी (गि) रधर लाधौ हो। टेक।
वन ढुढौ[1] वृदावन ढुढो ढुढ लीयो वृज बाधो है।
विच[2] ज (झ) रोखे जा (झां) खन (ण) लागी घर मे गी (गि) रधर ठाढो है। १।
दुद (ध) दई मोरे घरत घणो हे सों-सों[3] (सोर-सोर) दध खायो है।

---

१ स० पाठ–१. नेहडो। २. विरह। ३. रिया, रह्या।
२ स० पाठ–१. म्हारो। २. चरण कमळ। ३. तोडौं। ४. बटाऊ।
३ सं० पाठ–१. ढुढयो। २. बीच। ३. चोर–चोर।

कव कि ठाढी पथ नीहारू वाय पकड़ हर बावो है। २।
र्मो(मोर)-मुगट पीतांबर सोवै ओर रेसमी वागो है।
मोरा के प्रभु गीरधर नागर ब्रह्र बूज्यो रग लागो है। ३।
[राज शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ से।]

४. आ वदनामो[1] लागै मीठी राणा जी माहाने[2]।
आ विदनामी लागै मीठी। टेर।
साध-संगत मै(में) निसदिन जातां दुरजन(ण)-लोका दीठी। १।
प्रेम-गल्या[3] मैं(मे)मोवण मिलग्या क्यू कर फिरु अफूटी। २।
सासू नणद मा(म्हा)री देराणी जिठाणी बळ-जळ भई अगीठी। ३।
थै तौ हौ सीसोद्या रांणा मैं हू दूदाजी री बेटी। ४।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चढेगयौ[4] रंग मजीठी। ५। ❀
[राज० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १०८५१ से।]

५. ऐ री कुबजा नै जादु डारा जिन[1] मोहन ली(लि)या साम[2] हमारा। टेर।
निर्मल जल(ळ)जमना जी को छाडयो जाय पिया जल खारा। १।
इति[3] गोकुल उत मथुरा नगरी वीच वहै जल-धारा। २।
जमना के नीरा-तीरा धेन चरावै मोहन मुरली-वारा। ३

---

❀ पाठान्तर–
आई वदनामी मीठी राणा जी मा(म्हा)नै आई वदनामी मीठी।
सावरो गरी को मौहन मिल्यो क्यो करि फिरोलो अफुठी।
राना वात करे छी सावरीया सो लाग अभुठ झीठा।
मीरा(रां) के प्र(भू)भु गिरधर नागर हरदे वरछै अगीठी। १।
[रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८६० से]
पत्रांक– ८२–८३।

---

४. बिरह।
४ सं० पाठ–१. बदनामी। २. म्हांनै। ३. गळयां। ४. चढग्यो।
५ सं० पाठ–१. जिण। २. श्याम। ३. इत।

मोर-मुगट पीतावर सोहै काना कुडल(ळ) छविवारा । ४ ।
मीरा कै प्रभु गिरधर नागर हम उनकी वै मा(म्हा)रा । ५ । ❀
[ राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १४५ से ]

६. कत गम्रो' सावरी जादु कर केसैं । टेर ।
वसी वजाय हरयो मन मेरो । ल गम्रो' सत हर कै । १ ।
वृ दावन की कुज गल(ली)'मैं ल सव(ब)' गम्रो सत घरकै । २ ।
मीरा कै प्रभु कपटी' देख कवऊ न मले' भ्रग भरकै । ३ ।
[ राज०शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२६६ से ]

७. राग सोरठ देस ।
काई तेरे कुब्ज्यासे मन राशी(जो), हम'से अनवोलन(णा) मा'राज' । टेर ।
हम से कहे सी(सि)णगार उतारो द्रग अजन कजरा वोय डारो ।
सीर पे ती(ति)लक रमायो पहेरो चोलणा हो मारांज । १ ।
हमरो' कहे' जेर' उस लागे उनके जाणे मदन-रस पागे ।
हम से दु(दू)र-दुर भागे अ'नहस वोलणा मा'राज । २ ।

❀ पाठान्तर—१.
कुवजा न जादुकारा जीन मोया स्याम' हमारा टेर ।
कुबज्या वैरन कोस-वद(विध) जलमी मोया स्याम हमारा । १ ।
अत गोकल अत मुथरा नगरी विस(च) वहै मज(भ)धारा । २ ।
आस-पास रतनागर सागर विच वैहै प(र)म धारा । ३ ।
सीतल जल जमुना जी को त्यागे जाय पिया जल खारो । ४ ।
काथा सौनो लुंग चौफा(सुपा)री पानन मैं कसु खारो । ५ ।
सीतल स(छ)या कदम की त्यागी धु(धू)प सैया ची(सि)र धारा । ६ ।
जमुना की नीरां-तिरा धेन चरावै मोहन वसीवारा रे । ७ ।
मोर-मुगट पितावर सोवै काना कुंडल धारा । ८ ।
मि(मी)रा कै प्रभु गोरधर नागर चरण-कमल सी(चि)त धारा । ९ ।
[ राज शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ६२६६ से ]

६ सं० पाठ–१ गयो । २ ले गयो । ३. गलिन । ४. ले सब । ५. मिले ।
७ स० पाठ–१ महाराज, मा'राज

जमुना-कनारे बंसी बजावे वंसी मे कछु अचरज गावै ।
तरसी तान सुणावे च(छ)तीयां चो(छो)लणां माराज । ३ ।
वंसी की धुन सुन मेरे मन भई ब्रज की सको(खो) सब देखन(ण) आई ।
प्रेम उमग मन भाई वन-वन डोलणा माराज । ४ ।
मीरां राग वळ-मळ गावै सो गत सुर नर नही मुन्की[2] पावे ।
हीऐ हरकतृ(खत) ललचावे कर सु(सूं)दांवणा हो माराज । ५ ।

[ अनूप सं० ला० लालगढ, पेलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से ]

८. काहे कू देह धरी भजन बिन काहे कू देह धरी । टेक ।
गीता भागोत सुनी नही श्रवना(णा) तीरथ डग न भरी । १ ।
भूका(खा) वेर भोजन नही दीनौ रामजी गुर-सेवा न करी । २ ।
मीरा के प्रभु हरि अबनासी सगत सू सुधरी । ३ ।

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८२`१ से ]

९. काहू कि(की) मैं ब्रजी[1] नाय रहू । टेर ।
सखी सहेली सू न मोरी हेली नीं किसी बात कहूं । १ ।
ओ मन लागो सायब-सेती सबका बोल सहू । २ ।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर चरण लपट रहू । ३ ।

[ राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७६६५ से ]

१०. कैसे जीउं री माइ हरि बिनि कैसें जीउं री माई । टेक ।
झडत दादर मोर जल-चर जल सें वीछेडे[1] तलफ-तलफ मर जाइ । १ ।
पीया बीना पीलीभई का घगघरा खाई औखद मुलानी ।
चचर वेद फिर फिर जाई ।

---

२. मुनि की ।

९ स० पाठ—१. वरजी ।

१० सं० पाठ—१. बिछुडे ।

दासी हौए वंन-वन फी(फि)रु वीथा तन छाई ।
दासी मीरा लाल गीरधर मील्या सुखदाई । ३ । ॐ

११. गिरधारी म्हासू प्रीत निभाजा(ज्यो) हो । टेर ।
औ तो जीव प्रभू ओगुणगारो औगुण दिसा मत जाज्यौ हो । १ ।
काथा-नगर मै मे भोड पडैला जद म्हारो(रे) उपर[दया]कराज्यो हो । २ ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर वाहि पकड ले जाजो(ज्यो) हो । ३ । ★
[अनूप सं० ला० लालगढ पेलेस, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से]

ॐ पाठान्तर

कैस[1] जोऊं माई मै हरि बिन कसै जीऊं माई । टे० ।
कमठ दाद(र)[2] वसत जल मे जलहि उपजाई ।
छाडि जल सू वीछड़ तलपि[3] मर जाई । १ ।
आमे क[4] डाली सूवटो बंठो सूवा रै उडि जाई ।
पिठि पाछै जम खडा काठ घुंण खाई । २ ।
पाना ज्यूं पीरी भई विदन[5] तन-त[न]छाई ।
ओखद को लागै नहि वंद झखि जाये(ई) । ३ ।
पांच पंचा पाज वाटधी जोति द्रसाई ।
येक मै दुभेला रहता सो क्यू विछराई । ४ ।
दुरवल हूवै वन-व्रन फिरी हेला दे घाई ।
दासी मीरां लाल गिरधर मिले सुखदाई । ५ ।
[राज० शो० स० चौपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ८३९९ से]

★ पाठान्तर

जी ग्रि(र)धारी म्हारी प्रोति त्र(नि)भाज्यौ । टेक ।
य्यो जीव् छै प्रभू वोगुण आऐ वोगुण[6] दिसा थे मैति जाज्यौ । १ ।
काया-नग्र(गर) मं (मे) भोडि पड़ैली जैदि[7] म्हारो ऊपर कराज्यौ । २ ।
मीरा के प्रभू ग्रि(गिर)धर नागर बाहै पकडि त्रि(नि)भाज्यौ[8] । ३ ।
[राज० शो० सं० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८६९९ से]

सं० पाठ–१. कंसे । २ दादुर । ३. तकफ, तडफ । ४, आंम की ५ बेदन (वेदल ६ ओगण । ७ जदि । ८ निभाज्यो ।

गिरधर लागे री नीको मोहन लागै री नीको । टे० ।
लटपटो पाग मोहन सिर सोहे सिर केसर को टीको ।
मैं मेरै दिन राचि[1] रहो री राग सुण्यौ बसो को । १ ।
चलो री सखो स्याम कौ निरखाँ मुख देखा मेरा पिव कौ ।
नैन(ण) सू नैन मिलाइ र(स)खी री भौ भागी मेरा जीव कौ । २ ।
कडवा तेल कहां ज पुरसौ क्रिसन खवईया घी कौ ।
वृंदावन की कुंज गलिन[2] मैं मागै दान मही को । ३ ।
माखन(ण) खाइ मटके(कि)या पटकी और टटोल्यो[3] छीकौ ।
मी(रा) रा के प्रभु(भू) गिरधर नागर दुख मेटो मेरा जीव कौ । ४ ॥

राज० शो० स० चौपासनी के ह० लि० ग्रं० स० ७६३६ से

पद —

गी(गि)रधर कै मन भाई राणाजी मै तौ साची रांम सगाई ।टेक।
जैमल कै घर औतार ली(लि)या है । राणा कू(कु)ल व्याहाई ।
भोग रोग व्यापे मेरी सजनी । श्री भगिति[1] परगट हौऐ आई । १ ।
पुरबे[2] जनम को मै थी गोपका । चुक पड़ी मु(भ)ज माई ।
जगत लेहेर ल व्यापी घट भीथर । दीदो ह(रि)री छटकाई । २ ।
लौक लाज कू(कु)ल की मरजादा । छौडी सकल बडाई ।
मेरौ कह्यौ थै मानौ राणा जी । बरजै मी(रा)राबाई । ३ ।
जो तम हाथ हमारौ पकडौ । खबरदार मन माई ।
दे(स्यूं)सूं सराप साचे मन तौकौ । जल बल भसम हौऐ जाई । ४ ।
जनम जनम कौ प्र(ति)थी[3] प्रेमेसर[4] । थारी नही (छू) छु लुगाई ।
थारे म्हारे झूठो सनेहो रांणाजी । गावे मीरांबाई । ५ ॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १२५७७

---

**सं० पाठ—१. राजी । २. गळिण । ३. टंटोळ्यो ।**
स० पाठ—१ भगति २ पूरब ३ पति ४ परमेसर ।

पाठान्तर—

राग सोरठ।

राणा जी हूं तो गिरधर कै मन भाई।
लोक लाज कुल(ळ) की मरजादा। छाडो सकल वड़ाई हो। टेक।
पुरव जनम की गोपिका हो। चूक परी[1] मो माई।
जगत लहरि व्यापी घट भीतर। तव मोहि दई छटकाई हो। १।
जैमल के कुल जनम मेरतै। राणा को ले व्याही।
भोग रोग होये लागा री सजनी। वा भक्ति प्रगट होय आई हो। २
मात पिता सुत कुटुंब (क)वीलो। या सब झूठ सगाई।
परम सनेही गी(गि)रधर पीतम। वाही सुं सुरत लगाई हो। ३।
जो तुं हाथ हमारो पकरो[2] तो। खबरदार मन माही।
देऊं सराप साचे मन तुमको। जरि भसमी होई जाइ हो। ४।
जनम जनम गी(गि)रधर की दासी। तुम री नाहि लुगाई।
तेरै मेरै झूठो सनेहा। गावै मीराबाई हो। ५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८२९० से

गी(गि)रधर प्रीतम प्यारो राणा जी। म्हांरो गी (गि)रधर प्रीतम प्यारो। टेक।
है घट माह[1] घट ही से दूरा। सबको सरजणहारो।
गौतम नारा[2] ह(रि)री ऐहेल्या[3]तारी। कीर कीटम[4] सब तोरा[5]। १।
गजकाज पी(पि)यादा ध्याया। द्रौपता को चीर बधायो।
प्रतग्या प्रहलाद को राखी। हरीणाकुस और वीडारयो। २।
नामदेव की छान छवाई। प्र(भू)भु वना को खेत नीपायो।
दास कवीर के वाल(ळ)द लायो। आप भयौ छे बणजारो। ३।
ढोला वाजा सफल जुग लोग खारो। राम नाम की टेक पकडी।
दुंनीया झक मारो। ४।
नाग व्यथ[6] और कंस पछाड्यो। नख पर गी(गि)रवर धारयो।
मिरा कहै प्रभू गिरधर नागर। राणै जि(जी) कुंण विचारयो। ५।।

[ रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १२५७७ से। ]

---

सं० पाठ—१ पड़ी। २ पकड़ो।

सं० पाठ– १. मांह, मांही। २. नारी। ३ अहिल्या। ४. कुटुम्ब। ५. त्यारयौ। ६. नाथ।

गा (गो)व्यदा सूं प्रीति करत जबं ही क्यूं न हटकी।
अब तौ बात फैलि पड़ी जैसै बीज बटकी । टेक।
अबै चूको तौ गैर नाही । जैसै बीज बटको । १।
घर घगे माफ घेरा होत । वाणी घट घट की।
सांवरौ तौ मेरा सीस परि । मैं लोक लाज पटकी । २।
जल मैं घुली गांठि परो रसना गुन(ण) रटकी।
अबै छुडाऊ तौ छुटै नाही मैं कैहो बार झटको । ३।
मद के हसतो समा' फिरत प्रेम लटकी।
मोरां के प्रं(भू) भु गिरधर बिना कोन जाने घटकी । ४ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० स० ८ से।

* पाठान्तर- १ राग प्रजा।

गोव्यदा सु(सूं) प्रीति करि । तैं जबतैं क्यौ नही अटकी री।
अब तो बात फैल परि । जैसे बोज बटकी री । टेक।
प्रेम की घुरी गाठि दीनो । रसना रटेती।
अब तौ छुडाया छुटै नाही । अनेक बेर झुटकी री । १।
घरि घरि महि मथाना । बानी घट घट की।
सुनि सुनि सब सीस धारो । लोक लाज पटकी । २।
बीच कौ विचार नही । छप परी तटकी।
ज चुकै तो ठौर नाही । जैसै कला नटकी । ३।
मद के गजराज जैसे । प्रेम मगन लटकी।
मीरां प्र(भू)भु भगति बुंद । हिरदा में गटकी । ४ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० सं० ३६१५२ से ।

पाठान्तर-२ "राग मारू

तवही क्यो न हटकी री गोबींदा सु प्रीत करत।
अब तो मन फैल परो जैसै बीरुघ बटकी ।।
घर घर घर घोलो मथानी बानी घट घट की।

---

सं० पाठ- १. रमाने।

सुनी सुनी हु सोस धरो लोक लाज पटकी री ।।
वीच को वीचार नही छाप परी ठेड कीरा।
जो चुकु तो खेर नही जैसै कला नटकी री ।।
मद के गयेद जैसै मत पेमलट की री।
मीरा प्रभु भक्ती बुद हीरदे अट्कीरी ।।

अनूप स० ला० लालगढ, वीकानेर के ह० लि० ग्र० स० २२३ से।

गोविंद ना गुण गास्या । राणा जी मै तो गोविद ना गुण गास्या । टेर ।
राणे जी रुठे तो साम[1] रखेला। गोविद रूठा[2] कमलाम्या[3] । १ ।
·.... मदिर जाऊं । हरि दरसन(ण)नित पास्या । २ ।
साध सगत मा बैस(ठ)करी नै । लोक लाज गमाम्या । ३ ।
सतसग रूपी नाव बेसा न । भवसार तिर जास्या । ४ ।
विखना प्यालया राणौ जी भेज्या । इम्रत कर गटकास्या । ५ ।
मीरा कहै गिरधर नागर । निरभै नोबत वास्या (वजास्या) । ६ ।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं २०६ से।

पाठान्तर–१

गिरधर रा गुण गास्यां । रांणाजी मे(म्हे)तो । टेर ।
साध संगत भगति ह(रि)री की । सहजे ही तर जास्या । १ ।
म्हारै छै पण चरणामत रो । नित उठ दरसन(ण)जास्या । २ ।
कथा कीरतन चित कर सुणास्या । महा प्रसादी पास्या । ३ ।
सुण सुण वचन सावके मुख के । खात करे करि गास्या । ४ ।
नाम अमोलक ईम्रत रूपी मिर रै । साटै ल्यास्या । ५ ।
लोक कुटव की लाज न मा(म्हा रै । अस्टंक गोविद गास्या । ६ ।
प्रेम प्रतीत जमा निसवामर । वोहोर न भव जग आस्यां । ७ ।
थे हट माड्यो स हम उपरि । विसरा प्यालया प स्या । ८ ।
जन(जण)मारगी(गि)ये सत पधारया । ऊन मारगीयै मे(म्हे)तो जास्या । ६
जन मीरां गिरधर जी रै चरणै । पीवत मन न डुलाम्या । १० ।।

राज० शो० स० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १४५ से ।

स० पाठ– १. राज । २. रूठ्या । ३. कुमळास्यां ।

पाठान्तर-२

गोमंदा रा गुण गासा रा(णा)जी मे(म्है)तो गोम(द)ा रा गुण गासा। टेर।

राणु जी रुसला तो सैर राखवो ह(रि)री रूठा केम ला(जा)गा। १।

राम नाम की जा(झा ज(झ)चलाया वौ भ(व) वै सागर तो(ति)र जासा। २।

चरणामत कौ नेम हमारै नी(नि)त उठ दरसण जासा। ३।

वो(त्रि)सग प्याला राणा जी भेजा वौ ईम्रत कर गट कासा। ४।

यो ससार ही नाम जान कै वौ ताकौ सग छीटकासा। ५।

मो(रा) रा कै प्र(भू)भु गा(गि)रधर नागर चरण मे च लासा। ६।।

सत साहित्य मडल बीकानेर के लि० ग्र० से।

पाठान्तर-३

गोविंद का गुण गास्या। टे०।

राणौ जी रूसंला तो गात्र रखंला। हरि रूठा कुमलास्या। १।

राम नाम की जिहाज चलाम्या। भो सा(ग)र तिर जास्या। २।

चर्णामृत को नेम हमारै। नित उठि दरसन(ण)ारया। ३।

विख रा प्याला राणै भेज्या। इ म्रत कर रि गटकास्या(स्या)। ४।

यौ सनार विनास जानि कै। ताको सग छिटकास्या (स्या)। ५।

लोक लाज कुल काणि(णी)तजि कै। निरभै निसाण घुरास्या(स्या)। ६।

मोरा के प्रभू हरि अविनासी। चरन(ण)कमल वलि जास्या(स्या)। ७।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स ७३ से।

पाठान्तर-४

राणा जी म्हे तो गोबिन का[1] गुण गास्या। टेर।

चिरणामत को(रो)नेम हमारौ नित की[2] मंदर जास्यां। १।

थे रूस्यां म्हारो कुछ न बीगडै हर रूस्या मर जास्या। २।

राणा जो म्हे तो गोबिन रा। टेर।

मैं दासी गिरधर चिरणा की तन मन सै लव लास्या । ३ ।
मीरा के प्र'भू भु गिरधर नागर फेर जलम नही पास्या । ४ ।
राणाजो म्हे तो गोविन रा । टेर ।।

पिलानी से प्राप्त हूरजसों से ।

पाठान्तर--५

राणा जी म्हे तो गोविद रा गुण गासा । टेर ।
श्रो ससार असार जाण कै ताकौ सग छिटकासा । १ ।
लोक लाज कुल काण त्याग कै निरभै निसाण घुरासा । २ ।
राणौ जी रुठ तो वारो देस रखावसी हरि रूठा मर जासा । ३ ।
चरणामृत को नेम हमारे नित उठ दरसण जासा । ४ ।
विखरा प्याला राणजा भेज्या इमरत कर गटकासा । ५ ।
मीरा कहै प्र(भ्र)भु गिरधर नागर चरण कमल चित लासा । ६ ।।

अनुप स० ला० लालगढ पैलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सं० ११३ से ।

राग विलावल ।

डार गयो मोहन गल पा(फा)सी ।
पीत[1] कारकण[2] वन वन डो(लू)लु ।
। डा ।

छो(छि)पे मुथरा के वासी । डार गयो मोहन गल पासी ।
वो(वि)रह की दाडी[3] जोगन हुवगी । प्रान तजु करवट लेवु(वू)कासी ।।
। डा ।

मीरा क(के) परभु गी(गि)रधर नागर । तुम ठाकर हम तेरी दासी ।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३२५७८ से ।

---

सं० पाठ--१ गोविन्द रा । २. रा ।

सं० पाठ- १ प्रीत । २ कारण । ३ दाझी ।

राग विहंग।

जगत सारो सोवै रै आली में(मैं) व(वि) रह्न जा(गू )गु सारि रे(ण)न ।टेर।
रंग महल मै(मे)विरहन ठाडी। असुरन(ण)माला(ळा) पौवं रै । १ ।
यो तंन मेरै पुरजन पुरजानी। नत उठ श्याकुल(ळ)होवै रै । २ ।
मीरा कै है प्र(भू)भु गी(गि)रधर नागर आवा(ग)घमग'न होवै रै । ३ ।।

राज शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० स० ६२१९ से।

जैहर दी(दि)यो मैं जानी(णी)हो जी रा(णा)ना ।
अपना कुल (ळ)को संख्या मेटो मैं हो अबला वोहोरानो'। टेक ।
कचन काटि(टी)अगन मै डारचो । नीकस्यो व॰वा॰पा(णी)नी हो ।
न्याव की(कि)यो मा(म्हा)रो परमेसुर छणाया दूधर पा(णी)नी । टेक ।
मा(म)रुधर मेवाड़ मेडतो लेटू मा(म्हा)रा कुल(ळ)की कानि हो ।
हाथल(ळ)तो राना(णा)जी सो जोरया गिरधर को पटरा(णी)नी हो । टेक ।
कोटक भूप वारो साधो पर साथा(धा) हा(थ)त विकानी हो ।
मीरा के प्रभु(भू) गिरधर नागर चर(ण)न कव(ळ)न लपटानी हो ।। १ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० स० १८९० से पत्रांक--७६।

पाठान्तर--

जहैर दी(दि)यौ मै जा(णी)नी। राणाजी जहर दीयौ मै जा(णी)नी।
अपना कुल को पडा दी करि लै। मै अबला वौरानी । टेक।
जैसे कंचन कम्यौई कसोटी । हौन है वारैहृवानी ।
सुपच भगत प्रिबि प्रसेवा री । मै हरि हाथ विकानी । १ ।
वीख कौ प्यालौ राणे दी(दि)यौ। अचयो मी(गं)रा जा(णी)(नी)।
मीरां के प्र(भू)भु न्याव निवेडयो । छाणो(ण्यो) दूध र पाणी । २ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० प्र० स० ३६१५२ से पत्राक--८६

---

स० पाठ--१. आवागमन, आवागमण ।

स० पाठ--१. वोरानी ।

राणा जी जहर दो(दि)यौ मैं जाणी
आपणा कुल को कारण राख्यौ । हूं अबला वो ही राणी । टेक ।
कचन लेर अगनि मैं डारयौ । निकस्यौ वीरा वानी(णी) ।
मेरौ न्याव कीयौ परमेसर । छार पौड़ धर पाणी । १ ।
राणै जी परघन पढाया । सुण ज्यौ जी तुम राणी ।
जो साधां को सग निवारो । तोहि करू पटराणी । २ ।
कोटिक भूप वास सतन परि । जाके हाथ विकाणी ।
हथलेवो राणा जी सू जोडयौ । गोविंद को पटराणी । ३ ।
मुरधर देस मेडतै मारू । ज्यारी मैं वेटी कहाणी ।
मीरा के पनि राम गोसाई । चरण कमल लपटाणी । ४ ॥
भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० से

पाठान्तर–

राणा जी जहर दीयौ म्हे जाणो ।
अपना कुल का पडदा करिल्यो म्हे अबला बहौराणी । टेक ।
जब लग कचन कसियो नाहीः होत न वारा वानी
प्रभु मेरौ न्याव कीयौ है छाण्यौ दूध र पाणी । १ ।
कोटिक भूप वारौं सतन परिः जिनकै हाथि बिकोनी ।
मीरा के प्र(भू)भु गिरधर नागर संतचरण लप(टा)ताणी । २ ॥
रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८ से

जाके प्रिय न राम वैदही ।
सो त्यागीयै कोटि वैरी सम जदपै(पी) परम सनेही । टेर ।
पिता तज्यो प्रहलाद वध वभीखन[1] भरथ तजीमहि ।
नाव विसर गई ग्वा(लि)नि हरि लेऊ हरि लेऊ बोलै । १ ।
पेम[2] विवसि ग्वालनि भई कुछ और ही और बोलै ।
मीरा प्र(भू)भु गिरधर न मिलोगी-भई दासी विन मोलै । २ ॥
सत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० से ।

---

स० पाट–१. विभीखण । २. प्रेम ।

राग सोरठ

जोगीया रे आज्यो रे ईण देस ।।टेर।।
पैरण चो (ला) ला भसम कथा । भेख धर्‌यौ वेस ।
साई तेरे कारणे । मै तो प्रिड[1] कीयो परवेस ।१।।
कर उपाय पतराख मेरी । ले जावौ अपने देस ।
आउगी मं नाहि रहू रामजी वी (वि)ना परदेस ।२।।
आगै केता पतत उभारया । नेगै काहा सदेस ।
जिद करु कुरवाण तुज पर । धरू न दूजी देह ।३।।
दरद दिवानी भई बावरी । डौली सावरा रे देस ।
दासी मीरा भई पडर । पलट्या काला केस ।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १६१ से

स० पाठ १ पिंड

पाठान्तर १ ( राग सोरठ )

जोगीया आवौ नि आ देस ।
नैनज देखु नाथ मेरौ । ध्यांन करूं आदेस ।।टेर।।
आयौ सावण मास सजनी । भरे जल थल नाल ।
रावली (लि या नै की (कि) ण विलमाय राख्यौ । विहन भई वेहवाल।१।।
वीछडीया कोई भो भया रे जोगी । ऐ दिन अंहैला जाय ।२।।
वासु सुरत माहारं मन वसी रे । वाली छी (छि) न भर रह्यो न जाय ।३।।
मीरा क कोई नाहि दूजो । दरस दो हर आय ।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८५१ से

पाठान्तर २

जोगीया आवौजी ऊन देस ।
नजर पडै जब नाथ मैरो । धाय करू आदेस ।।टेक।।

आया सावण मास सजनी । भरीया जल थल नाल ।
रावलिया कीण (बि) लमाई राख्यौ । ब्रहेणी विहाल ।१।।
बिछडीया कौई दन भया । जौगण दन ऐला जाय ।
एक वरीया देहौ नीद्रया फैरी । नगर म्हारे आय ।२।।
वा मुरत मेर उर वसे । पल भर रह्यौ नाही जाय ।
दासी मीरा कै कौई नाही दूजौ । दरमण दो है (हे,) रि आई (य) ।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १२५७७ से पत्राक १७७–७८

राग सोरठ

जोगिया जाये बस्यौ परदेस ।
जहा गयो फेरि आवै न जावै । कु ण जाय कहै सदेस ।।टेक।।
बेगमपुर जाकी गम नांही । कौंन करै परबेम ।
चलत चलत सुर नर मुनि थाके । थाके विप्र नरेस ।१।।
देस वदेस सदेस न चहूचै । जाणयौ न परै लवलेस ।
कहौ कौन ले जाव सनेसो गुर । भने[1] जाण्यौ परेस ।२।।
वहोत भाति मैं जतन कीना । ना ना विधि के पेस ।
तातै मेरै मिलण कौ । मन माहि रह्यौ अनेस ।३।।
वाको न आवन मेरो न जावन । तो अब कहा करेस ।
या तन ऊपर भसम लगाऊ । मु ंड मु डाऊ केस ।।
मीरा प्रभु गी (गि) रधर कै कारन पहरया भगवा भेम ।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ८२९० से

सं० पाठ १. जन

पाठान्तर १

जोगीयाजी छाइ रह्या परदेस ।।टेक।।
जव का बिछड्या फेरि नि (नी) मिलीया । बोहोरि न दीया जी सदेस ।१।।
या तन ऊपरि भसम रमाऊं । खौर करू सिर पेस ।२।।

भगवा भेस करू तुम कारणि। ढूंढत च्यार्‌यूं देस ।३।।
मीरां के प्रभू तुमारे मिलण मन। जीवण जनम अनेस ।४।।

---
रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १०८४७ से

---

जोगीया दरसण दीज्यौ राज।
कर जोड्या करणा करूं। मोहि बाहा गह्यां की लाज ।।टक।।
लोक - लाज त्रिसारि डार्‌यौ[1]। छोड्यौ जग - उपदेस ।१।।
पात्र मुद्रा भाव कथा। नक सक[2] राख्यौ साज।
जोगणि होइ [जुग] ढुंढस्यू। म्हारी घरि घरि फेरी आजि ।२।।
दरध (द)वांन तन जाण आपणू। मिलीया दीनदयाल।
मीरा कै मनि आनद भया। रुम रुम[3] खुसीयाल ।३।।

---
भारतीय विद्या मदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ-संग्रह से

---

सं० पाठ–१. डारी। २. नखसिख। ३. रोम – रोम।

देसड़लो हो राणा रुडो थां (रो रा।
म (मैं) कबुन[1] 'रहोजी। कदे न गुथाऊं सी (सि) र जूडो ।टेर।
पाटी नही पाडूं माग सवारु। कदे न परु[2] था (था) रो चूडो ।१।।
मी(रा) रा के प्रभु गी [ गिरधर ] नागर वर पायौ छै पूरो ।२।।

---
अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० २०६ से

---

स० पाठ–१. कबहुं न। २ पेरूं।

दुखन(ण) लागै री नैन (ण) दरस बोना दुखण लागे री नैन ।।टेर।।
क (ल) ल न पडत मोय। ऐक पग ठाडी भई छैमासी रैण ।१।।
अह[1] अगन मेरै अंग लगी। बोलत मीठा बेण ।२।।
व्याकुल विकल(ल)भई हरी(रि)कारणै। करवत बह गयो अेन ।३।।
मीरां कहे प्रभु कबही मिलोगे। दुख मेंटण सुख देण ।४।।

सत साहित्य मडल, बीकानेर के ह० लि० ग्रथ सग्रह से

सं० पाठ-१. विरह

पाठान्तर

दुखन लागे नेन दरस बि (ना) नी ॥टेर॥
जब के तुम बिछूरे मेरे प्रभूजी । कबहू न पायो चेन ।१॥
ब्रिह बिथा कासु कहु सजनी । करवत बे गई अेन ।२॥
एक टक ठाडी पी(पि)या पथ निहारू । भई छमासो । रेनि ।३॥
मीरा के प्रभु हरि अबिनासी । दुख मेटण सुख देन ॥४॥

राज० शो० चोपासनी जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ६२६६ से

न भावे थारो देसडलो रूडो ॥टेर॥
हर की भगत(ती) करे नही कोई । लोक बसे कूडो ।
दोय कुल (ल) त्याग भई मैं बोरी । नाखं[१] परो चूडो ।१॥
माग रु पाटी उतार धरु सब । काटु सिर को जूडो ।
मीरां हटीली कहे सतन सू । वर पायो मैं पूरो ॥२॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८५१ से

सं० पाठ-१. नाख्यो ।

पाठान्तर १

न भावे थारो देसडलो रूडो ।
हर को भगत करे नही कोई । लोक वसे कूडो ॥टेक॥
दोय कुल त्याग भई मैं बौरी । न्यहा परो चूडो ।१॥

माग रु पाटी उतार धरुगी । काटु सिर की जूडो ।२।।
मीरा हटली कहै सतन सू । वर पायौ है पूरौ ।३।।

---

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० १०८५४ से

---

पाठान्तर २

न भावै थारी देसडली रुडो ।।टेर।।
हर की भग [ती] करै नहि कोइ, लोक बसै कूडौ ।

---

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के हृ० लि० ग्रं० सं० १०८६२ से

---

## २२

नारी [ड़ी] हू न जाणे, वेद भडो[1] ही अनारी है ।। टेर ।।
पीर पीर[2] पात होर्सा[3], । पीलग पर डारै है ।१।।
तुम घर जावो बेद, । रोग मोरो भारी है ।२।।
धुरका[4]मे (मे)वेद भ (ब)से तम जावो जासू मेरी आ(या)री है।३।।
मी [रां] तो तीहारी दासी, सदा ही पिया री है ।४।।

---

रा० शो० स० चोपासनी जोधपुर के हृ० लि० ग्र० स० ७६३६ से

---

स० पाठ–१. बड़ो २. पीली, पीली ३. जैसी ४ द्वारिका, द्वारका

## २३

पाठान्तर १

नारी गजैजवति
नारी ऊन जाणौ बैद, निपट अनारी है ।।टे०।।
पीली पीली पान जैसी, पिलग पर डारी है ।
तुम घर जावो बैद, मोहि रोग भारी है ।१।।

लगी है कलेजा माही मूरख टटोलै बाही ।
जबतै सिधारो राम, बिरह - बान मारी है ।२।।
बूटी सब भूठी भई, कारी हू न लागै काई ।
द्वारका मै बसं वैद, तासू मेरी यारी है ।३।।
मीरा कू जिवाई चाहो, तुम घर आवो स्याम ।
रोग को कटईयौ मेरो, कुंज को विहारी है ।।४।।

राο शोο संο चोपासनी, जोधपुर के हο लिο ग्रंο संο २८८४ से

२४

पाठान्तर २

नाडी हू न जाणै वैदो, निपट अनाडी है ।।टेर।।
पीरी पीरी पान जैसी, पलग पर डारी है।
तुम घर जावो वैदो, मोह रोग भारी है ।१।
करक कलेजै माह, मुरख टटोलै बाह।
रोग हू की भ्रम नाही, भूठा भ्रमधारी है ।२।
बुंटी सब भूठी भई, कारी क्रम सारी है।
माधोवंन वसै वांसु, मोरी तारी है ।३।
रहत है उदास वास, जीवना की थोरी आस।
प्रेम हू के लागे वान, व्रह हू की जारी है ।४।
मीरां कु जीवाई चाहो [तो] मम घर माम आवो।
रोग को कटइयो मेरै, कुंज नो विहारी है ।५।

राजο शोο सο चोपासनी, जोधपुर के हο लिο ग्रο सο ७६६४ से

२५

पाठान्तर ३

राग जजवती माडी-
नाडी ही न जानै वैदो । निपट अनाडि है ।।टेक।।

पिरी पिरी पान जैसि । पिलग रि डारि है।
तुम घरि जावौ वेदा । मेर रोग भारि है।१।।
जड़ि बूंटि सबही झूठी । ओखदि सबहि खारि है।
उठि, वैदा जावौ घरि । मोहि रोग भारी है।२।।
द्वारिका में बानब दो । जासू मोरी तारी है।
मीरा के प्रभू ग्रि (गिर) धर नागर । कारी करम सारी है ।।३।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि. ग्र० स० ८३९९

२६

पाठान्तर ४

नाडऊ न जानै बैदा । निपट अनाडी है ।।टेर।।
पीरी पीरी पान सी । पलंग प्र (पर) डारी हैं।
तुम घरे जावो वेद । मेरे रौग भारो है।१।
बूटो सब झूठी भई । कारीऊ न लागै काई।
द्वारका मे बसवो दो। जासू मेरी हारी है।२।
चनन की खोर लीयें । और बेंजिती हीयैं।
मै तो त्मकु अैसै जाणौं । तुम बिन माली हौ।३।
मी (रां)रा कु जीयाई चाहौ। मम घरि आवौ साम।
रोग के कटईया मेरे । कुंज के विहारी हौ ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७६६५ से

२७

राग सोरठ :

पतीय्या[1] म (मैं) कस[2] लीखु (खूं), लीखीये न जाय ।।टेक।।

पतीय्या लीखु तो, लीखीय न जाय ॥
पतीय्या लीखु कछु लीखीय न जाव, बतीय्या[3] कहीय न जाये।
कलम गहु (हू) तो मेरो कर कपत है, जीवरो अत थरराये ॥
व्रीह[4] बीथा कासु (सूं) कहु सजनी, नैनै[5] रहे जल (ल) छाये।
समारी दीसा वधो देख चले हो, तुम कज्यो[6] समझाये॥
मीरा के प्रभु गी (गि) रधर नागर, रहे जी मधुपुर छाये।
पतीय्या कस लीखु लीखीये न जाये ॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८६२ से

सं० पाठ–१ पतिया। २ कैसें। ३ बतिया। ४ बिरह। ५ नैण, नैन। ६ कहीज्यो।

२८

पाठान्तर– १ ( राग सोरठि )

पतिया मैं कैसै लिखू, लिख्यौ न जाइ ॥ टे०॥
कलम भरत मेरो कर कपत है, हिरदे रहहो घरराई।१।
किस विध चरण कमल मै गहसू, सबही अग थरराई।२।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, चरण रहू लिपटाई।३।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्र० म० ७३ से।

२९

पाठान्तर– २ ( राग सोरठ )

पतीया मैं कैसै लिखू, लिखीए न जाय।टेर।
कलम गहत मेरो कर कापत है, नैन रहे जल छाय।१।
अतरगत की कोई न जानन, चूठ कलेजो खाय।२।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर बैग दरस दी आय।।३।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७६६५।

### ३०

पाठान्तर–३

पतीया मैं कैसै लिखूं, लिख्यौ न जाई ।। टेर ।।
बात कहूं मौहि बात न आवै । नैन रह्या छै झरलाई ।१।।
कलम भरत मेरौ कर कंपत है । हिरदौ रह्यौ घरराई ।२।।
किस विध चरण कवल मैं गहसू । सबही अंग थरराई ।३।।
मीरा के प्रभू हरि अबनासी । चरण रऊ लपटाई ।।४।।

रा० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ६२६६ से

### ३१

पाठान्तर–४

पतीया मैं कैसे लिखू, लिखौ रो न जाइ ।।टेक।।
कल न परत मेरो कर कपत है । नैन रहे झड लाई ।१।।
बात कहू तौ कहत न आवै । जीवडौ रह्यो छै डराई ।२।।
बिपत हमारी देखि तुम चाले । हरिजी सू कहीयौ जाइ ।३।।
मीरा के प्रभू सुख के सागर । चरण कवल वलि जाइ ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १०८४७ से

### ३२

वावी[1] मी (रां) रा मांन लो थे म्हारी,
थांनै सईयां वरजै सारी ।। टेक ।।
राजा बरजे रैयत वरजे, वरजै सो परवारी ।
कंवर पाटवी सो वी वरजै, और सेहेल्या[2] थारी ।१।।
सीसफूल सिर ऊपर सोहे, विंदली सोभा भीरा ।
गलै गुंजारी करमै कांकण, नेवर की झणकार ।२।।

साधा कै सग वंट वटवौ, लाज गमाई सारी ।
ऊठ सूवारै नित-प्रित[3] जावो, ल्यावो फूल कूं गीरी ।३।।
वडा घरा का छोरु कू (वा) चावो[4], नाचो दे दे तारी ।
वर पायो हीदवाणी सूरज, अव काई दिल मे धारी ।४।।
तार्‌यो पिहर सासरो, तारी माये मूसारी[5] ।
मीरा नै सतगुरुजी मिलीया, चरण कव (ल्) ल वलिहारी ।५।।

राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७१९९ से

सं० पाठ-१. भाभी । २. सहेल्या । ३. नितप्रति । ४. कुवावो । ५. मुसाल् ।

३३

विडद घटै कैमै माई हौ ।
मैन भगत को सासो मेट्यौ । आप भयो हरि नाई हौ ।।टेक।।
भीलनी[1] का बेर सुदामा का तदूल । द्रोपता गै चीर वड हौ[2] ।
कमावाई री खीचड़ो आरोगौ (ग्यो) कवीर के वालद[3] आई हौ ।१।
जुरजोधन का मेवा त्याग्या । साग विद्र[4] घरि पाई हौ ।
धना भगत कौ खेत नवायो[5] । नामदेव हरि छानि छवाई हौ ।२।
ज्यां पह(र) सै रया माटी तुलसी । ज्यारी पुजा लाई हौ ।
मीरां के प्रभु गीरधर नागर । दार की सार दिखाई हौ ।। ३ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ३६१६२ से

सं० पाठ-१. भीलणी । २. वडायो, वाध्यो । ३. बालद । ४. विदुर । ५ निपायो ।

३४

राग खमायची ।

मथरा जावो तो थानै नंद की द (दु)वाई । टेर ।।
सब मिल गवाल् सबै मिल गोपि, में तो थारे दरसण आई॥१॥
नैना री सोभा इधक विराजै मैं, तो थारे लोचन लोभाई । २ ।।
सोले सहस गोपका त्यागी, कुबजा नै कठ लगाइ । ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, कुब्जा रीनै धीनै[1] है कमाइ ।। ४ ।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७६६४ से

स पाठ– १. धिन, धन (धन्य)

३५

मर (मेरे) (रे) भाव (वै) परभुजी वीना, सोही है उजाड ।। टेर ।।
सुखघ[1] (ग) यो सरवर उड गया, हसला रही है नीमाणी नार । १ ।।
गज परभु कमनीसवासर कर, नही पासूं आहार । २ ।
ऐक सम (मै) मोतिया र (रे) मोल, ह (ह) सा चुगत जवार । ३ ।
मीरां तो कव गीरधर नागर, हरी चरणा ची (चि) त लाव । ४ ।
मा (रै) र वीना मा माम्रो जी र, सोइ है उजाड ।। ५ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३२५७४, पत्रांक-७-८ से

स पाठ– १. सुक ।

पाठान्तर–१

आज म्हारे भावै माधो विना, वसत उजार ।। टेर ।।
ऐक समौ मोतियन के भरोसे, हस चुगत जवार । १ ।।
सुक गये सरवर उड गये, हस रही नीवाणी नार । २ ।।
सरवर भरिया हसा जी आया, वैठा छै पांख पसार । ३ ।।
मीरा कहै प्रभू गिरधर नागर, अब कै पार उतार ।। ४ ।।

अनुप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि०ग्रं०स० १०७ से

३६

मेरो मन राम ही राम टैंवे [रटै] ॥ टेर ॥

राम नांम जपि लीजे रे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे । १ ॥

कनक कटौरे इम्रत भरियौ । पीवत कू (कु ं) ण नटै रे । २ ॥

जैसे अवहू ईमक लगी रस । मु (ह) व उलट लटै रे । ३ ॥

राम नाम कैसे तजि देऊं । मैं लीयो है सीस सटै रे । ४ ॥

मीरा के प्रभू स (मु) ख के सागर । तन मन तापहि पटै रे ॥ ५ ॥

---

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ से

---

३७

मैं तो रामा दर [द] दीवानी । दरद न जाने(णे) कोई । टे० ।

अतर गति नै लागी उदासी । किस विध रहणा होई । १ ॥

सूली उपर सेझ हमारी । किस बिध रहणा होई । २ ॥

में तो तुम्हारी चेरी भई हू । तुमै मति जानू दोइ । ३ ॥

---

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रंथ मे

---

पाठान्तर–

म्हारो मन रामोई राम रटै ॥ टेर ॥

भाल तिलक गल तुन (ल) छा की मा (ला) ला, फ(फे)रत कौन हट । १ ॥

कनक कटोरा मैं इमरत भरियौ, पीवत कौन नटै । २ ॥

जनम जनम का खत छै पुराणा, नाम लिया तै फटै । ३ ॥

जिम तिम करके राम सिमरलौ, जाकूं वेद रटै । ४ ॥

मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, लीयौ छै सीस सटै ॥ ५ ॥

---

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११२ से

---

३८

मैं अमली हरि नांव की। मुझि बाडडि आवै।
पी(पि)या पीयाला नांव का। कछु और न भावै ॥ टेर ॥
या तन की कूंडी करू। मन पोसत भेऊ।
ग्यान नलणीया हाथिथे ले। इम्रत रस पीऊ। १ ॥
पीया जोगी भरथरी। गुर गोरख पावै।
धनि माता मैणांवती। सुत पैं राज छुडावैं। २ ॥
और अमल किस काम का। चढि उतारि जावैं।
अमल करो इक नाव का अमरापुर पावै। ३ ॥
अमल का(कि)या मावा किया। सुखि रैणी बिहावै।

३९

वीठल रह्यौ वसी म्हांरै मन, विठल रह्यौ वसी ॥ टेर ॥
अहैन[1] काली नाग ज्यौं रैं, म्हारै काजलडै रे डसी ॥ १ ॥
ओखदीया अलगा करो रे, म्हानै छिम पावौ सोधसी ॥ २ ॥
भोजनीयां भावं नही रे, म्हांरै नैणां की नीद नसी ॥ ३ ॥
अै पैला दुरज (ण)न लोकडा, म्हांरी वात न जांने ईसी ॥ ४ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, कहौ गत की किसी ॥ ५ ॥

---

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १८२ से

---

स० पाठ—१. विरहण।

४०

वे न मिलै उसकी[1] मैं दासी ॥ टेर ॥
गोकल ढुढ वनरावन[2] ढुंढ्यो, ढुंढै लई मथरा अरु कासी ॥ १ ॥
इण बीरजवा से प्रीत न करीये, डार गये गल प्रेम की फासी ॥ २ ॥
इत गोकल (ल) उत मथरा नगरी, बीच मिलै पूरण अबनासी ॥ ३ ॥
मी(रां)रा कंहै प्रभु गीरधर नागर, चरण कवल (ल) चितहर की मैं दासी ॥ ४ ॥

---

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रन्थ से

---

सं० पाठ—१. जिणरी, जिणांरी। २. बिनरावन, विंदराविन।

४१

वैद वन (ण) आवजो[1]
जी म्हारो व्याकुल (ल) भयो रे,सरीर, हकीम वण आवजो ।।टेर।।
ओखद म्हांरै राम नाम कौ, सोई हिरदै लिखावजो ।
वेगाई वेग पधारो गिरधर, चरण खोल[2] रज पावजो ।।१।।
मोर–मुकट सिर–छत्र विराजै, केसर तिलक वणावजो ।
सख चक्र गदा पदम विराजै, गरुड चढनै वेगा व्यावजो ।।२।।
दरद दिवानी कौ वैद रामैयो, सूतोडी नै आंण जगावज्यो ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, हस–हस कठ लगावज्यो ।।३।।

अनुप सं० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० प्र० स० ११३ से

स० पाठ—१ आवज्यो । २ खोल ।

४२

सतसग मैं परी[1] हो धिन–धिन आज नी घरी ।टेक।
श्रवण सुणत श्रीमत भागवत, रसना रटत हरी ।
सावरी सूरत मोहनी मूरत, उर विच आन अरी ।।१।।
मोर–मुग (ट) त पीतावर सोहै, काना कु डल जरी ।
वद्रावन की कूज गलन मैं, मुरली की टेर करी ।।२।।
भली भई घर साँम पधारे, आज सुनाथ घरी ।
निरधन तै मैं भई धनवती, ब्रह्मा ताप हरी ।।३।
मन डूबौ लीला सागर मांही, एही थाट थरी ।
मीरा कह प्रभु गिरधर नागर सर(णै) नै आन परी ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० प्र० स० ७१४२ से

स० पाठ—१ पडी ।

४३

सावरे रग राची रा(णा) ना जी, राम सो रग राचो ।।१।।
देउ देव गारो मलु हरा दाम सु ,वा तो मो मन नही है काचो ।।२।।
देस वदेस[1] जुग[2] सोही जानै (णै), वाधि घुघरा नाची ।।३।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हू तो जनम–जनम की दासी ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६० से

स० पाठ—१ बिदेस । २. जग ।

राग सोरठ

४४

हरि बिन क्यों जीउ माई
उर कदा उर कमठ, जलचर जला उपजाई ।
मीन पलभर बीछरै, तौ (त) लफ मर जाई ।।१।।
वीस भक्ति प्रतपल कीन्ही, जोति दरसाई ।
एकरा सेभ्क सदा रह्यो सो, क्यूं पीव विसराई ।।२।।
वप विरह कै वस परी, जैसे काउ धन खाई ।
अब की वेर न आवीया तै, करक राह जाई ।।३।।
पी(पि) या विन पीरी[1] भई,जैसे विथा तन छाई ।
ओखद मोकुं नी लगै, लगा-वोराई ।।४।।
व्याकुल(ल) अइ वन-वन फिरी, टेर सुनाई ।
दासी मीरा लाल गिरधर, मिले सुखदाई ।।५।।

संत साहित्य मडल, बीकानेर के ह०लि० ग्रं० से

स० पाठ—१ पीली ।

पाठान्तर—१

हरि बिन क्यू जीवूं इ माई ।।टेक।।
पात जेसी भई पीरी, ब्रेदन तन छाई ।
औखद तौ अनेक दीनी, मोहि लगी नही कांई ।१।
सबक सीतलमीन दादरा, जल ही उपजाई ।
मीन जल सौ बिछटै तातै, तलफ मरजाई ।२।
जाग निस दिन सुमर पहैरे, अब सोइ मत जाई ।
पाच चोर महाबली, तौकौ हरैगा भाई ।३।
बिरह बैदन लाइगी तन सौ, जैसे काठ घौरा खाई ।
बौखद तौ अनेक दीनी. मोह लगी वहेराई ।४।
बीस पछ प्रतपाल कीन्ही,प्रभु जोगीया नु जोति दरसाई
दासी मीरा राम प्रभु, मिले सुखदाई ।।५।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

पाठान्तर—२

मैं हरि विन ना जियो[1] माई ।
पान तै पियरी भई, जैसे काठ घुंन (ण) खाई । टेर ।
ओखद मूल कछु नहिं लागै, वैद फिर जाई ।१।।
मीन दादुर बसत जल (ल) मे, जलहि उपजाई ।२।।
एक दिन जल तें वीछुरे, हो तलफ मरि जाई ।३।।
तवक टूटे जजीर छुटे, खजर खा मरिजाई ।४।।
ज्ञान गासिन मा (रै) र सतगुर, पार व्है जाइ ।५।।
जगल-जंगल हरि को मैं ढूढो, प्रभु को चितलाइ ६।।
एक दिन जौ हरि मिलि है, हो खटक मिटजाई ।७।।
सकल वृज की ललित सोभा, क्रस्हन[2] उर छाई ।८।।
दासी मीरा लाज गिरधर, मिले सुखदाई ।९।।

---

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३४७५६ से

---

स० पाठ—१. जिहों । २ कृष्ण, किसन ।

४५

देव गधार—

हो तो गोविंद मो अटकी
थक्त भए दोऊ द्रग मेरे, तकि सोभा नटकी री ।१।।
लोक-लाज कुल (ल) कानि[1] मेटी, सखी रहू न घर अटकी री ।२।।
विन गोपाल (ल) लाल सुनि सजनी, को जानै घटकी री ।३।।
हो तो भई सांवरे कै वसि, लोग कहै भटकी री ।४।।
मीरां प्रभु के सग फिरू गी, कुंज-कुज लटकी री ।५।।

---

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०६७ से

---

स० पाठ—१ काण, काणि ।

[मीरा के वे पद जिनकी अधिकांश पक्तियां पूर्व प्रकाशित पदो से मिलती है,] केवल एक या दो पक्तियां नही मिलती।

१

अैसो पीव जांण न दीजै हो, अैसो पीव जाण न दीजै हो। टेक।
चदण का लेसाय जु लपटाय रहीजे, हो लपटाय रहीजे।१।
जु केसर मे हीगलु जैसे, राच रहीजे हो।
पाच सात सखी मी (मि) लकै, रस पीयो हो ॥२॥
साम[1] सलुणो सांवरो मुख, दीठ जीय हो।
तुम ही पूरण साईयां पुरा, सुख दीजौ हो ॥३॥
तन मन जोबन वारके, नीब लाल कीजीये हो।
मीरा व्याकुल (ल्) भई आपणो कर लीजे हो ॥४॥

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के०ह०लि०ग्रं०स० ७६३६ से

स० पाठ—१. स्याम।

टिप्पणी प्रस्तुत पद से साम्य रखने वाला पद मीरांसुधासिंधु, मीरामाधुरी, मीरां-वृहत्पदावली भाग १ आदि मे आया है किन्तु, उनसे प्रस्तुत पद की प्रथम दो पक्तियो के अतिरिक्त पद नही मिलता। पाठान्तर मे कुछ पदो की अधिकाश पक्तिया मिलती हैं।

( राग मारू )

पाठान्तर—१. अैसौ पीव जान दीजै हौ ॥ टेक ॥
वलि री सखी मिलि राखिये, मुख निरखत जीजे हौ ॥ १ ॥
स्याम सलोनौ सावरौ, नैना रस पीजै हौ ॥ २ ॥
मीरा विरहनि व्याकुली [अपनी] करि लीजे हौ ॥ ३ ॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

पाठान्तर—२.

ग्रैसे जन जान न दीजै हो ।
ग्रावो मिला सहेलड्या । वाथा मुख लीजै हो ।। टे० ।।
नैन सलोने साइया । देख्या मू जीजै हो ।
तन धन जोवन वारकै । निछरावलि कीजै हो ।। १ ।।
ग्रपणी ग्रारत कारणे । वाकै पाई परीजै हो ।
चदन के ए[क]रूंख ज्यो । चरण लिपटीजै हो ।। २ ।।
हाथ जोड़ि विनती करु । मेरी ग्ररज सुणी जे हो ।
मीरां व्याकुल वृहनी । वाकू दरसण दीज हो ।। ३ ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७३ से

पाठान्तर—३

ग्रैसे जन जांण न दीजे हो ।
ग्रावो मिलो सहेलड्या । वाता सुष लीजे हो ।।टेक।।
नैन सलूंनै सांइयां । देख्या मू जीजे हो ।
तन धन जोवन वारिकै । नछरावलि कीजे हो ।।१।।
ग्रारति ग्रापणी कारणे । वाकै पाई परीजे हो ।
चंदण केरा रुंष ज्यू । चरण लिपटी जे हो ।।२।।
हाथ जोरि विनती करुं । मेरी ग्ररज सुणी जे हो ।
मीरा व्याकुल ब्रिहनी । जाकू दरसण दीजे हो ।।३।।

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह०लि० ग्रं० से

पाठान्तर—४

ग्रैसौ पीव जांन न दीजै हो ।।टेक।।
चलि री सषी मिलि राषिये, मुप निरषत जीजे हो ।।१।।
स्याम सलौंनौ सावरौ, नैना रस पीजैं हो ।।२।।
मीरा विरहनि व्याकुली, अपनी कर लीजै हो ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १८८२ से

पाठान्तर—५

इसो पीव जान न दीजै हो ।
स्यांम सलौना लौडइणां, मुष देख्या जीजै हो ।।टेक।।
आवो सषी सहलड्यौ, बातां सुष लीजे हो ।।१।।
आरति आपणी कारणै, वाकै पाई पडीजै हो ।
आत्माध्यान लगाई कं, वाकै चरणा चित दीजे हो ।।२।।
चदन केस नाग ज्यूं लपटाई रहीजे हो ।
कर जोडे बीनती करौं, मेरी अरज सुणी जै हो ।।३।।
मीरा व्याकुल बिरहनी, अपनि करि लीजै हो ।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० २७ से

पाठान्तर ६

जानै न दीजै हो, असो ही प्रभु जान न दीजे हो ।
तन मन धन करु वारनैं, हरदै धरि लीजे हो ।।
आवो सषी मुषी देषिये, नैना रस पीजे हो ।
जाही जाही वद रीझ है, सोही सोही वद कीजे हो ।
सुन्दर स्याम सुहावणो, मुष देवै जीजे हो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सो तो वडो भागी हो ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० १८६० से

पाठान्तर—७

जान न दीजे हो ईसो, पीय जान न दीजै हो ।
स्याम सलौनो सावरो, मुष निरषत जीजे हो ।।टेक।।
चली री सषी मिली देषीए, नैना रस लीजे हो ।
आरति अपनी री सषी, वांकै पाय परीजे हो ।।१।।
तन मन धन वारि कै, हीरदै धरि लीजे हो ।
जिही जीही विधि हरि मिले, सोई सो विधि कीजे हो ।।२।।
भली कहो कोई बुरी कहो, दोस न दीजे हो ।
मीरां प्रभु गिरधर मिलै, मोहि अभै-पद दीजे हो ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १८८२ से

२

एकण सू हस बोल रे धूता रा जोगी ।।टेव।।
अग भभूत व गले (ले) मृगछाला, कुंज कुंज हस खोल रे ।।१।।
सेली सीगी भभूत को बटवो, अब तो मुनज खोल रे ।।२।।
जगत वदीत करी मन-मोहन, ओर कहा' वजावत ढोल रे ।।३।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोल रे ।।४।।

राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १६६७ से

सं० पाठ—१ कई ।

टिप्पणी-मीराँ माधुरी पृ० ६६ पद सं० २७५ तथा पृ० ४८-४६ पद स० १२५ पर प्रस्तुत पद से साम्य वाला पद है किन्तु, प्रथम पंक्ति साम्य तथा कुछ शब्द साम्य के, दोनो पदो मे प्रर्याप्त अन्तर है।
मीरांसुधासिन्धु-पृ० ६३० पद सं० २१-से प्रस्तुत पद मे २ पक्तियां कम है तथा क्रमान्तर से थोडा भेद है। मीराँ बृहत्पद-सग्रह पृ० २६८ पद स० २४२-२४३, मीरा बृहत्पदावली-पृ० ११६ पद स० २४१, मीरासुधासिंधु से साम्य रखने वाला ही पद है। अन्य कई सग्रहो मे मीरांसुधासिधु से पूर्णतया मिलता हुआ पद ही दिखाया गया है।

पाठान्तर—१

हां रे जोगी एकर सु मुख बोल ।।टेक।।
काजल रेख नैन अनीयाली, बूंद मनी द्रिग खोल ।।१।।
अंग वभूत गलै म्रिघछाला, घर घर भीख म[त]डोल ।।२।।
जगत वदीत कीनी प्यारे, कहा वजाऊ ढोल ।।३।।
मीरां कै प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन मोल ।।४।।

राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७१४३ से

३

उधौ लागी कटारी प्रेमनी, प्रेमनी प्रेमनी रे उधौ ला० ।।टेर।।
गोकल(ल)सूं रे बालौ मु[थ]रा सिधायौ, बात पूछा छां कुसल(ल) खेमनी ।।१।।
मै बल(ल) जमनां कौ भरण जात ही, माथै गागरीया हेमनी ।।२।।
मीरां के प्रभु हरि[1] अवनासी, सावरी सुरत सुदर स्यामनी । ३।।

अनूप सं० ला० लालगढ, पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से

स० पाठ—१. हर

टिप्पणी–मीरांसुधासिन्धु के पृ० २८२ - २८३ पद सं० २३ से अन्तिम दो पक्तियां मिलती है । शेष नही ।

मीरांमाधुरी-पृ० १४२ पद स० ३६० प्रथम पक्ति भेद के साथ २ द्वितीय पक्ति नही मिलती, शेष मिलती है ।

पाठान्तर—१

लागी कटारी प्रेमनी उद (ध) व जी, प्रेमनी प्रेमनी ।।टेर।।
गोकुल थी वालो मथुरा गया था, हू वात पूछूं कुसल खेमनी ।।उधो०।।
जल जमना जल भरवा गया था, माथं गगरीया हेमनी ।।उधो०।।
मीरांबाई कहै प्रभु गिरधर नागर, सावरी सुरत सुदर समानी ।।उधो०।।

राज० शो० स० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० १४५ से

पाठान्तर—२ प्रेमनी प्रेमनी, प्रेमनी उधव जी लागी कटारी प्रेमनी ।।टेर।।
काचै धागै हरि सू वधाणा, ज्यू, तांणे ज्यू तेमनी ।।१।।
जल जमना जी रौ भरवानै गई थी, माथै गागरिमा हेमनी ।।२।।
गोकल सूं तुम मथुरा पधारया,वात पूछू छू कुसल खेमनी ।।३।।
मीरा कहै प्रभू गिरधर नागर,आसा लगी छै थारा नामनी ।।४।।

अनूप स० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० ११३ से

४

कज्यौ[1] रे आदेस जोगीया न, कज्यौ रे आदेस ।
आउ गी मै नाय रहूंगी, करु जटा धर भेस ।।टेर।।
कथा पैरु भस्म रमाऊ, लेऊ ओ उपदेस ।
गीणाता गीणाता घस गईजी, मा(म्हा)री आगलिया[2] री रेख ।।१।।
माला मुद्रा मेखला रे, जोगी सील खपर लीयो हाथ ।
जोगण होय नै सब जुग ढुंढ्यो, इण रामईया रै साथ ।।२।।
प्राण हमारो जहाँ बसे रैं, जोगीया है खाली खोड ।
मात पिता परवार[3] मु रे, जोगी रही रैं तीणा ज्यु तोड ।।३।।
पांच पचीस सु बस कीया रे, जोगी पला ने पकड कोय ।
मीरा व्याकुल (ल) ब्रहनी[4] रे, जोगी तुम मिलीया सुख होय ।।४।।

---

सत साहित्य मडल, बीकानेर के ह० लि० ग्र० से *

---

स० पाठ—१. केज्यो । २ आंगलियां । ३. परिवार,परवार ४ बिरहनी ।

टिप्पणी–१. मीरा सुधासिंधु पृ० ६२६ पद स० १८० पद की ५ पक्तिया क्रमभेद से मिलती हैं शेष पद नही ।

टिप्पणी–२ *सत साहित्य मडल, बीकानेर के ह० लि० ग्र० सख्या उन ग्रथो पर न होने के कारण नही दी गई है । अत ऐसा (*) चिह्न इसी बात का प्रतीक माना जाय ।

५

करणा मा (स्या) म मेरी ।
हूं तो होय रही चेरी तेरी, झूरु नित टेरी टेरी ।।टेर।।
दरसण कारण भई हू बावरी, ब्रहं[1] वीथा तन घेरी ।
.. . . .. ... प्रीत पाछे प्रेगी प्रेरी ।।१।।
तेरे तो कारण जोगण हू भई हू,देउ नगर बीच फेरि ।
. .. ........ . . ... ... कुज सब हेरी हेरी ।।२।।
अब मैं प्राण तजू गी पीया वीना, गयो तन भसमै करोरी ।
. .. . . . अजहू नाथ नै मिलैरी मिलैरी ।।३।।
जिन(ण) मिरा कु गी ग्वर मिलीया, सुख उपज्यो दुख ग्योरी ।
. . . . .. . ..रहू चरणां चेरी चेरी ।।४।।

---

सत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्र० से

---

स पाठ—१ बिरह ।

टिप्पणी-मीराँमाधुरी-पृ० १८२ पद सं• ५०० से प्रस्तुत पद की ३-४ पक्तियां मिलती हैं वे भी क्रमान्तर से शेष नही
मीराँसुधासिंधु-पृ० २०० पद स• ११२ (बिरह) पद की ४ पक्तियों का साम्य है। पद पूर्ण भिन्न है। पाठांतर कही २ अवश्य मिलते हैं।

होरी

पाठान्तर—१

कारण सुणि स्याम मेरी, मैं तो होय चेरी तेरी ॥टेक॥
दरसण कारण भई वावरी, ब्रिह विथा तन घेरी।
तेरै कारण जोगण होऊगी, देऊ गी नगर बिच फेरी॥
. . ....... . .. . कु ज सब हेरी हेरी ॥१॥
अग भभूत गलै म्रिग छाला। यौ तन भस करु गी!
अजहू न मिल्या राम अ(वि)बनासी,बन बन बिचि फिरु गी॥
. . रऊ निति टेरी टेरी ॥२॥
जन मीरा कू गिरधर मिलीया, दुख मेट सुख मेरी।
रु म रु म साता भई उरमै, मिट गई फेरा फेरी॥
.. .. . ... .. ·रहू चर(ण) नन तर नेरी ॥३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८४७ से

पाठान्तर—२

करण सुनि स्याम मेरी, हूं तो होइ रही तेरी चेरी ॥टेर॥
दरसन कारन भई बावरी, व्रह विथा तन घेरी।
तेरै कारण जोगन होउ गी, देउ नगर विच फेरि॥
..... . . कु ंज वहेरी हेरी ॥१॥
अग भभूत गलै अगछाला, यो तन भसम करोरी।
अजहू न मिलै राम अविनासी, वन वनि वीच फिरु री॥
.... ... ..... . .... . ....रोऊ नित ढेरी ढेरी ॥२॥
जन मीरां ई गिरधर मिलिया, दुष मेटन सुष देनी।
रु म रु म साता भई उर मै, मिटि गई के ए फेरी॥
रहू चरनन नित चेरी ॥३॥

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

टिप्पणी-मीरां सुधासिंधु पृ० २०० पद म० ११२ -पद पूर्णतया मिलता है

पाठान्तर - ३

करुणा सुण स्याम मोरी, मैं तो होय रही चेरि तौरि तौरि ।।टेर।।
दरसण कारण मई बावरी ग्रँह व्यथा तन घेरी ।
.. .... .. .. . ..प्रीत उर प्रेरी प्रेरी ।।१।।
तोरें तो कारण जोगण होय रही, दई नार विध फेरी ।
... .. ...... . . . .. ....कुंज वहेरी हेरी ।।२।।
अब मैं प्रान तजूं गी पीया विन, यौ तन भस्म करुंरी ।
. ....... . . .. .....अजू ना मिल्यौ री मिल्यौरी ।।३।।
जन मीरा कू गिरधर मिलीया,सुष उपज्यौ दुष गयौरी गयौ ।।४।।

अनूप स० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

६

कोंई दिन याद करोगे, रमता राम अतीत ।।टेर।।
आसण मार गुफा विच बैठे, याही जोगीयन की रीत ।।१।।
जो लीनै झडा नही सग चलैगा, छोड चल्यौ अध बीच ।।२।।
अगर चदण की धूणो धूकाई, दू[1] रग मेलन कै बीच ।।३।।
मीरां कहै प्रभू गिरधर नागर, जोगी किसका मित ।।४।।

अनूप स० ला० लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० ११३ से

स० पाठ—१. द्यूं ।

टिप्पणी-मीरांसुधासिंधु-पृ० ६२५ पद सं० ७ से प्रस्तुत पद की तीन (प्रथम) पक्तिया मिलती है, शेष दो नही । मीरा के पदो के अन्य अधिकाश सग्रहों में मीरांसुधासिधु से पूर्ण समानता रखने वाला ही पद दिया गया है ।

७

घडिय न आवड़ै रे वाला, तम दरसण बिन मोय।
तम विन मेरे प्रान(ण) पीयारे, जिवन कीस विध होय। टेर॥
वेग पधारो वाला मा, ब्रंहन[1] लो वतलाय।
उर भूष न, लागं नीद न आवै, ब्रं सतावैं मोय।
घायल ज्यु घुमत रहू, दरद न जांणे कोय॥१॥
दीन गमायो षाय कैं, रैंण गमाइ सोय।
प्राण गमाया भुरता, नैंण गमाया रोय।२॥
जेऊ अेसि जाणति, प्रीत कीया दुष होय।
नगर ढढोला पेरति, प्रीत करो मत कोय॥३॥
पल-पल पाथ निहारति, वैठ रहो मघ जोय।
मिरा कहै प्रभु गीरधर नागर, रांम मिल्या सुष होय॥४॥

रा० प्रा० वि० प्र० बीकानेर के ह० लि० ग्र० स० १०४५७ से

सं. पाठ—१. विरहण।

( राग कालिगडौ )

पाठान्तर—

घडीय न आलगै वाला हो, तु म दरसण विना मौय।
तु म विना मेरैं प्रान पियारे, जीवण कैसे होय॥टेर॥
दिवस न भूष, रैन नहि निद्रा, ब्रंह सतावे मोय।
घायल ज्यू घूंमूं सदा, दरद न जानै कोय॥१॥
दिवस गमायो षाय कै रे, रैन गमाई सोय।
प्रांण गमायो भूर कं, मैं नैंन गमाऐ रोय॥२॥
जे हू अैसी जांनती रे, प्रीत कीया दुष होय।
नगर ढढोल्यो फेरती रे, प्रीत करो मत कोय॥३॥
पल पल पथ निहारतां, दीठ रही मग जोय।
मीरां कै है प्रभु गिरधर नागर, तुम मिलिया सुष होय॥४॥

राज० शो० स० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० से

८

जावा दो ये सईया, जोगी किसका मीत ॥टेर॥
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ॥१॥
बोलत बचन मधूरै से मीठै, जोरत[1] नांही प्रीत ॥२॥
म[2] जाण्यौ जोगी लेय निभेगो, छोड चले अध बीच ॥३॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, प्रेम पीयोला[3] मीत ॥४॥

संत साहित्य सगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

सं० पाठ—१. जोडत । २. मैं । ३. पीयालो, प्यालो ।

टिप्पणी—मीरासुधासिंधु–पृ० ६२८ (पद स० १४) से प्रस्तुत पद की प्रथम तीन पक्तियां पूर्णतया मिलती हैं, शेष दो नही ।

९

तुम विनि राम मुनै को मेरी ॥टेक॥
ऊभी खेवटणी अरज करत है, मलवा नै नाव पछम कू घेरी ॥१॥
नदिया गहरी नाव पुराणी, अध पर नाव भवर नै घेरी ॥२॥
खेई है सोई पार करैगा, बूड़ जाइ तौ रही काहा[1] तेरी ॥३॥
मीरा कै प्रभू हरि अबनासी[2] दोऊ कुल(ल) त्याग सरण लई तेरी ।४॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० १०८४७ से

सं० पाठ १ कहां । २. अविनासी ।

टिप्पणी मीरांसुधासिंधु–पृ० ४४ पद सं० ७३ मे प्रस्तुत पद की आधी प्रथम, आधी चोथी पक्ति के तथा कुछ शब्दान्तर के साथ पद समानता रखता है । यही पद मीरा बृहत्पदावली भाग १ (स्व पु. ह. ना) मे पृ० १९८ तथा मीरा बाईनां भजनो के पद सं० ४६ पर भी दिया गया है ।

पद सांईवानी ।

१०

द्रस्टी मानु[1] प्रेमनि कटारी है ॥टेर॥
लागत वेहाल भई घर हू की, सुध नांही, तन हू मैं व्यापी पीड़ मतवारी है ॥१॥
खीमि ती दोय च्यारी वावरी भई है, सारी निस दिन व्रहलिया आस की पुकारी है ।२॥
चाहत चकोर चदा दिपग पतग, जैसे जल बिनै मरे मीन असी प्रीत प्यारी है ॥३॥
विना देख्या कैसे जीवै कल(ल) न पड़त, हीयै जोय वाकु असी कहीयो मीरां तो तिहारी है ॥४॥

राज. शो सं चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्र. स ७६६४ से

सं. पाठ—१. मांनो

टिप्पणी—मीरां वृहत्पदावली-भाग १ (स्व. पु. ह ना.) पृ० ३०८ पद स० ६११ से प्रस्तुत पद को तीसरी पंक्ति नही मिलती तथा अतिम पक्ति मे अतर है। शेष पद मिलता है। यही पद मीरामाधुरी के पृ० २२ पद सं० ५६ पर भी दिया गया है।

पाठान्तर—१.

सावरा की दिष्ट मानु, पेम की कटारी है ॥टेर॥
देषत ही बिहाल भई, सरीरा री सुध न रही ।
तन ही मैं प्रेम प्रगटी, मनिह मितवाली है ॥१॥
सपी मिल दोय च्यारी, वावली भई न्यारी है ।
मैं तो व्याकौल भई, जानौ कु जि की वहारी हो ॥२॥
चद कौ चकोर चाहै, दीपक पतग जालै ।
जल विन मिन दुषी, असो प्रीत प्यारी है ॥३॥
बीनती हमारी उधो, माधो लग पुहचाईवौ ।
माधो जी कु असे कहीवौ, मीरा तौ तुमारी है ॥४॥

राज. शो सं चौपासनी, जोधपुर के ह लि ग्र. सं. ७६६५ से

पाठान्तर—२

सावरा को दिष्टि मानु, प्रेम की कटारी है ।।टेक।
दीषत ही वेहाल भई, सरीरा री सूधै नी रेही ।
तनही मा प्रेम प्रगटो, मनह मित वली है ।।१।।
सषी मिल दोय च्यारी, बावली भई न्यारी है ।
मा तौ व्याकुल भई, जानौं कु जि की बिहारी है ।।२।।
चद्र को चकौर चहै, दीपग पतग जालै है ।
जल विना मिन दुषिया, ऐसी प्रीत प्यारी है ।।३।।
बीनती हमारी उधो, माधो लग पहुचाईवो ।
माधो जी कु ऐसे कहीवो,मीरां तो तुमारी है ।।४।।

संत साहित्य सग्रम, बाकानेर के ह० लि० ग्र० से

पाठान्तर—३

सावरे की द्रसट मानो, प्रेम की कटारी है, लागत वेहाल भई ।
गोरस की सुधी गई मनहून, व्यापो प्रेम भरे मतवारी माई ।।
चद तो चकोर चाहै, दीपत पतग जारैं जल बिन मर मीन ।
ऐसी प्रीति प्यारी है, सषी मिले दोय च्यारि सुनोरी सयानी नारी ।।
ईनऊ न जानो नाही कुंज के बिहारी है मोर तो मुकट माथ छवि गीरधारी है ।
सावरी सुरत परि मायकरी, मुरतपरि मीरां वेलिहारी है ।।१।।

रा प्रा वि प्र. जोधपुर के ह. लि. प्र. स. १८८२ से

टिप्पणी—मीरां माधुरी—पृ० २२ पद स० ५६ से पद पूर्णतया मिलता है ।

पाठान्तर—४

( राग जैजैवती )

सांवरा की दीष्ट मानु प्रेमनी  कटारी है ।।टे०।।
सषी मील दोय च्यार वावरी  सी भई,
नारी मैं तो उवाकू नीको ज्यानो कुज कै विहारी ।।१।।
लाग वीहा[ग] भई गोरस की सुध नाही तनकूं,
मैं वाप्यौ काम मन मतवाली है ।।२।।
चद चकोर नीरषे दिपक पतग जल कै,
जल वीन मीन नल कै अैसी पीत प्यारी है,
अैसी तुम कहीयो उधो, मीरा तो तीहरी है ।।३।।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि ग्र स. ६२६६ से

पाठान्तर—५

सावरे की द्रसट मानो. प्रेम की कटारी है।
लागत बेहाल भई, गोरस की सुधी गई ।।
मनहू न व्यापो प्रेम भर मतवारी है माई।
चद तो चकोर चाहै, दीपग पतग जारै ।।
जल बिन मर मीन, अैसी प्रीति प्यारी है।
सषी मिले दीय च्यारि, सुनोरी सयानी नारी ।।
ईनहून जानो नाही. कुज को बिहारी है।
मोर तो मुकट माथ, छवि गीरधारी है ।।
सावरी सरत परे माधकरो,मूरत परि मीरा बलिहारी है ।।१।।

रां. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८९० से

११

नातो हरि नाम को मोसूं, तनक न तोड़्यो [जाई] ।।टे०।।
पीया कीजि पीरी पडी रे, लोग कहे पिडरोग ।
छानै लांघन मैं कीया री सजनी, राम मिलण कै जोग ।।१।।
खिण आगणे खिण डागले (लैं) रे वाला, खिण खिण ऊवी होइ ।
घायल ज्यूं घूमंत फिरू रे, म्हारो मरम न जाणे कोई ।।२।
बाबल वेद बुलाईया, म्हारी पकडी दिखाई वाह ।
मूरिख[1] वैद न जानई, म्हारे करक कलेजा मांहि ।।३।।
जा जा वैद घर आपणे रे, म्हारो तू नाम न लेह ।
मै तो दाधी व्रहकी रे, तू काई दासै (जैं) देह ।।४।।
रे रे पापी पपीहा (ह्या) री रे, पीया को नाम न लेह ।
कोईक व्रहनि साम्हलै रे, तो पीव भरण जीव देहि ।।५।।
काढि कलेजा मे धरु, इडि कै वा ले जाई ।
ज्या देसा म्हारो पीव बसै, वै देखे तू खाई ।।६।।
पीव मिल्या जी ऊबरी रे, नातर तजू हमारी देह ।
दासी मीरा रामराती हरि, विनि किसो सनेह ।।७।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्र० स० ७३ से

स पाठ –१ मूरख

टिप्पणी —मीरांसुधासिंधु - पृ. १८५ पद स ७२ मे प्रस्तुत पद की आधी बाहरवीं तथा अन्तिम दो पक्तियां नहीं मिलती — शेष पद मिलता है ।

पाठान्तर—

नातो नांव को मोसूं, तनक न तोड्यो जाइ ।।टेक।।
पाना ज्यूं पाली (ली) पड़ी रे, लोग कहे पीडरोग ।
छानै लांघरण मैं कीया सजनी, राम मिलरण कै जोग ।।१।।
बाबल(ल) बैद बुलाइया रे,पकडि दिखाई म्हारी बाहि ।
मूरिख बैद मरम नही जाणै, करक कलजा माहि ।।२।।
जाहो (ओ) बैद घरि आपरणै रे, म्हारो नाव न लेह ।
म्हे तो दाधी ब्रिहकी तूं काहे कूं ओखदि देह ।।३।।
मांस गले - गलि छीजीया रे, कर करह्या गलि आहि ।
आंगलिया कौ मूंदडौ म्हारे, आवरण लागौ बांही ।।४।।
रहो रहो पापी पपइया रे, पीव को नाव न लेह ।
जे कोई ब्रिहनि साम्हलै तो, पीव काररिण जीव देह ।।५।।
खिरण मिंदर खिरण आगरणे रे, खिरण खिरण ठाढी होई ।
घायल ज्यू घूमू खरी, म्हारी बिथा न बूझै कोई ।।६।।

भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर के ह लि ग्र. से

१२

नथ म्हारी दीजो जी व्रजवासी ।
मै तौ चरण कमल (ल) की दासी ।।टेर।।
रास रमता नथ म्हारी घ(ग)म गई, सब कू ओलबौ आसी ।
ग्वाल - बाल सारा मिल हेरौ, ग्वालन(ण) भई उदासी ।।१।।
ब्र ना(दा,वन मे रास रमोगे, रास रमरण कुण आसी ।
मै तौ म्हारे पीहर जासा[1], बाबल(ल) ओर घडासी ।।२।।
समदरीया मैं सीप नीपजे, उनका मोती पौवासी ।
गोकल(ल) मै इक सोनी वसत है बाबल(ल) उनकूं बुलासी ।।३।।
यू मत जाणौ नथ फबी मोबत मै वा दलाली मे जासी ।
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, चरण कवल की दासी ।।४।।

अनूप स ला. लालगढ़ पेलेस, बीकानेर के ह लि ग्र. स ११३ से

स. पाठ—१ जास्यां

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ६९३ पद सं ३५१ से प्रस्तुत पद की द्वितीय पक्ति तथा ६वीं आधी पक्ति नहीं मिलती तथा शेष पद का क्रमान्तर-भेद भी है।

१३

नैनन[1] मैं नंदलाल वसो मेरे नैनन में नंदलाल।
अधर सुधारस मुरली (ली) राजे उर, वैजंति माल (ल) ।।टेक।।
मोर-मुकट मकराकृति कुंडल (ल) अरुन (ण) तिलक दीयो भाल (ल)।
मुभ व(वि)न मोहन करत है, कीडा संग सखा ब्रजवाल ।।१।।
जमुना - तटि निकट वसी वट, विहरत कुंज रसाल ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर भक्ति वछल प्रतिपाल ।।२।।

रा प्रा. वि प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. स १८८२ से

स पाठ - १ नेनण

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ ८१३ पद सं १ से प्रस्तुत पद की प्रथम, द्वितीय और अन्तिम पक्तियां मिलती हैं, शेष दो नहीं, किन्तु जो मिलती हैं उनमे भी क्रमान्तर है। मीरां माधुरी पृ. १६-१७ से इस पद की चार पंक्तियां मिलती है, शेष नहीं।

पाठान्तर—राग राम कली

नैनन मे नंदलाल वसो मेरे नैनन मे नंदलाल।
.......... .. .. .. .. ... .. ..
मधवन मोहन करत है क्रीड़ा सग सखा ब्रजवाल ।।१।।
..... ...... .. . .. ..... .. ..... .. .. .. ...... ....

रा. प्रा वि प्र. जोधपुर के ह लि ग्र. सं. १८८७ से

१४

पपइया रे पिव की बाँग[1] न बोल
सुण पावैली व्रँहनी[2] थांरी लै ला पाष मरोल[3] ।।टेक।।
चांच काऊं थारी पपइया रे, ऊपर डालर लू ण ।
पीव हमारा मै पीया की रे, तूं पिव कैहै सो कूंण ।।१।।
थारा तौ सबद सुहावणा रे वाला ! जो पीव मेलौ आज ।।
चांच मढाऊ थारी सोवनी रे, तू म्हार सिरताज ।।२।।
प्रीतम कूं पत्तीया लिषू रे बाला ! कऊ वानूं ले जाय ।
जाय पीया जी नै यु कहौ जी, थांरी व्रंहन धान न षाय ।।३।।
प्रीतम तम मत जाण ज्यौरे वाला ! तम बिछड्या मोहि चैन ।।
तन सुष जब हीया वसरे वाला ! देषूं भर भर नैन ।।४।।
मीरा व्याकुल व्रँहनी रे वाला ! पिव पिव करत्त विलाप ।।
तम मिलीया सुष पावसा, प्रभु अतरजामी आप ।।५।।

---

राज. शो स चौपासनी, जोधपुर के ह लि ग्र सं ७१४३ से

---

स. पाठ—१. वाणी । २. विरहणी । ३ मरोड ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु - पृ० १६४ पद सं० ६६ (दसवीं और १२ वीं) दो पक्तियो के अतिरिक्त पद पूरा मिलता है ।

पाठान्तर—१

पपीया रे पीव की वानी न बोलि ।
सुनि पावेंगी व्रहनी राले ली पाष मरोडि ।।टे०।।
चाच कटाऊ पपीया रे, ऊपरि कालो रे लौंग ।
पीव हमारे मै पीव की रे, तूं पीव कहै सो कौण ।।१।।
थारा सबद सुहावणा रे, जौ पीव मिलावै आज ।
चाच मडाऊ थारी सोहनी, तुम्हारै सिर साजि ।।२।।
पीतम कूं पतियाँ लिषू, कागा तू ले जाइ ।
पीतम कूं तू यौ जाइ कहियौ, थारी व्रहणी अन न षाइ ।।३।।
तुम मति जानो प्रीतमा हो, तुम बिछड्या मोहि चेन ।
मोहि चैन न जब होइगा, भारि भारि देषूं नैन ।।४।।
मीरा दामी वारणे हो, पीव पीव करत विहाइ ।
वेगि मिला प्रभू अतरजामी, तुम विन रह्यो न जाइ ।।५।।

---

रा. प्रा. वि. प्र जयपुर के ह. लि. ग्रं सं. ७३ से

पाठान्तर — २

पपईया रे पीव की बाण न बोल ।
मुण पावैली व्रंहनी रे थारी, लैला पाप मरोर ।।टेक।।
चांच कटाऊ थारी पपईया रे, लाऊ कालर लू ण ।
पीव म्हारा मै पोव को रे, तू पीव कहैस कूंण ।।१।।
थारा तौ सबद सुहावणा रे वाला ! जो पीव आवै आज ।
चाच मढाऊं थारी सावरी रे, तू म्हारे सिरताज ।।२।।
प्रीतम कू पतोया लिषू रे, कागवा तू ले जाय ।
जाय पीया जी ने यू कैहै ज्यारे, थारी व्रंहन धान न षाय ।।३।।
पीतम तु म मत जान जो रे,तम विछड्या मोय चैन ।
तन सुष जब ही पावसू , देषू भर भर नैन ।।४।।
मीरा व्याकुल व्रंहैनी रे, पिव पिव करै रे विहाय ।।

रा प्रा वि. प्र जोधपुर के ह लि ग्रं स १०८५२ से

पाठान्तर—३

पपईय रि पिव की बाण न बोल ।
मुण पावेला व्रंहैनी, लैला पाँष मरोल ।।टेक।।
चाच कटाऊ थारी पपईया रे, लाऊ काल (ट)र लू ण ।
पीव हमारा मे पीया की रे, तू पिव बोली कू ण ।।१।।
थारा तो मवद सूहावणा रे, जो पिव आवें आज ।
चाच मडाऊ थारी सोनवो रे, तू म्हारे सिरताज ।।२।।
पीनम कूं पत्तीया लिषू रे, तू ले जाय ।
जाय प्रभूजी नै यूं कहै ज्यौरे,थारी व्रंहन धान न षाय ।।३।।
प्रीतम तम मत जाण जो रे. तम विछर्या मोहि चैन ।
तन सुष जब ही पाव सूं रे, देषूं भर भर नैन ।।४।।
मीरा व्याकूल व्रंहैनो, पिव पिव करे विहाय ।
तम घर आवो राम पियार, तम विन रहीयो न जाय ।।५।।

राज. शो सं चौपासनी जोधपुर के ह. लि प्र. सं. ७१४२ से

१५

पीया तेरे नांव लोभानी[१] हो ।
काऊ की मै बरजी नांहि रहूं ।।टेर।।
सखी सहेली सु(ण)न मेरी हेलो, नीकी वात कहूं ।।१।।
सासू नणदल देराणी जेठानी, सबका वचन सहूं ।।२।।
तन धन सब अरप(ण)न ले करहूं, उलटौ पथ गहूं ।।३।।
मीरां कहै प्रभु गीरधरनागर, सतगुर सरणे रहूं ।।४।।

रा प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि ग्रं सं. १०८५१ से

स. पाठ —१ लुभांनी ।

टिप्पणीः-मीरांसुधासिधु पृ ८६६ पद स. १ से प्रस्तुत पद की प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता ।

पाठान्तर—१

पीया तोर नाई लूभानी हो ।
नावें लेवत तिरता सुण्यां, असे पवन और पांणी हो ।।टे०।।
सुकरत केई नां कीया, बहू करम कमानी हो ।
गनिका किर पठाव, तैं बकूंट पठानी हो ।।१।।
पुत्र हेत पदई दई, जुग सार जाणि हो ।
अज्यामल-से उधारिया, जम-त्रास मिटाणी हो ।।२।।
अरध नाम कू जर लियौ, गई ओधि विलानी हो ।
चक्र ले हरि आइया, जिन किवि कुरवांणि हो ।।३।।
नाव महातम गुर दीयो, सोई वेद बखाणि हो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, परतिन बधानी हो ।।४।।

राज. शो स. चोपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्र सं ८३६६ से

पाठान्तर—२

पीया तेरे नाव लुभानी हो ॥
नाव लेत तिरता सू‍ण्या, जैसे पाहन पांनी हो ।।टेर।।
सू ऋत कबहू ना कीयो, बहू करम कमानी हो।
गिनका सूवा पठावता, वैकुंठ पठानी हौ ।।१।।
अज्यामेल साउ धरे. जम - त्रास मिटानी हो।
पुत्र हेत पदवी दिवी, जग सारे जानी हो ।।२।।
अरध नाव कुंजर लीयौ, वाकी अवध घटानी हो।
गुरुड़ छाड हरि ध्यावीया.पसू -जू न मिटानी हो ।।३।।
सोई नाम सतगुरु दिया, सोई वेद वपानी हौ।
मीरां दासी कारणे, अपनी कर जानी हौ ।।४।।

राज. शो स चौपासनी, जोधपुर के ह लि ग्र.स ७१९१ से

पाठान्तर- –३

पीया तेरे नाम लोभानी हो ॥
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसे पाहन पानी हो ॥टेक॥
सुकृत कोऊ ना कीयौ, बहू करम कमानी हो ।
गिनका सूवा पठावता, बैकूट पठानी हो ॥१॥
अज्यामेल - से उधरे, जम - त्रास मिटानी हो ।
पुत्र हेत पदवी दिवी, जग सारै जानी हो ।।२॥
अरध नाम कूंजर लीयौ, वाकी अवध घटानी हो ।
गुरड छाड़ि हर ध्यावीया, पसू - जूण मिटानी हो । ३॥
सोई नाम सतगुर दया, सोई वेद वषानी हो ।
मीरादासी कारणे, अपनी कर जानी हो ।।४॥

राज शो. स चौपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्रं सं. ७१४३ से

पाठान्तर—४

नाम लभानी हौ, साई तेरै नामि लुभांनी हौ ।।
नाव लेत तरते सुनै मै, पाहन पानी हौ ।।टेक।।
अरध नाव कुंजर लीयौ, वाकी अवधि बिहानी हो ।।
अड़ छाड़ि हरि ध्याईये, पसु-जुनि मिटानी हौ ।।१।।
अजामैल ऊधारीय्यौ, जम - त्रास मिटानी हो ।।
पुत्र हेत पदई दई, सब काहू न जानी हौ ।।२।।
सुक्रत तो कछु नां कीयो, वौह क्रम कमानी हो ।।
गनिका कीर पढावता, बैंकुंठ पठानी हौ ।।३।।
नाव महातम गुर कह्यौ, अर वेद बषानी हौ ।।
मीरा व्याकल व्रहनी, अपनी करि जानि हो ।।४।।

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह लि ग्रं सं ३६१५२ से

पाठान्तर—५

नाम लोभांनी हो,पीया तेरे नाम लोभानी हो ।
नाम लेत तरता सुनिया मे तो पथर पानी ।।टेक।।
सुकृत तो कछु ना कीया, बहू कर्म कमानी हो ।।
सूवा पढावत गनका तारी, बैकूंठ वसानी हो ।।१।।
पतती अजामेल तारी औ, जम-त्रास मिटानी हो ।।
पुत्र हेत पदवी दई, सब काहू ते जानी हो ।।२।।
अमीष प्रेहेलाद की, सुनी अकथ कहानी हो ।।
द्रपदी चीर बधारीया, भया भूप वीसानी हो ।।३।।
अरध नाम कूजर तर्यौ, जब आई तुलांनी हौ ।।
चक्र ले हरि धाये हो, पसू - जोन मिटानी हो ।।४।।
नाम महेमा गुर कह्यौ, परतीत बधानी हो ।।
मीरा प्रभू हरि मिलै, मेरी वेदनां जानी हो ।।५।।

राज. शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्र. स ८२६१ से

पाठान्तर — ६

पीया तौरै नाम लुभानी रे।
नाम लेत तिरना सुण्या, जैसे पाहन पाणी रे ॥टेर॥
अरध नाम कुंजर रट्यौ, वाकी अवधि सिरानी रे।
गरुड छाड हरि आविया, पसू-जूण मिटाणी रे ॥१॥
सुकरत कछू ना कियौ, वहु करम कमाणी रे।
गिनका कीर पठावता वैकुंठ पठाणी रे ॥२॥
अज्यमिल-से उधरे, जमत्रास मिटाणी रे।
पुत्र हेत पदवी लही, जग सारे ही जाणी ॥३॥
नाम म्हातम गुरा दीयौ, सो वेद वषाणी रे।
मीरा दासी राज री, अपनी कर जाणी रे ॥४॥

अनूप स. ला लालगढ बीकानेर के ह लि. ग्रं. सं. ११३ से

पाठान्तर — ७

पीया तेरै नांव लुभाणी हो।
नाव लेत निरता सुण्या, जैसे पाहण पाणी हो ॥टेक॥
सुक्रत कोई ना कीयौ, वोहो क्रम कुमाणी हो ॥
गिनका कीर पठावता, वैकूंट बसांणी हो ॥१॥
अरध नाव कूंजर लीयौ, वाकी अवधि घटाणी हो ॥
गरड छाडि हरि ध्याइया, पसू-जूंणि मिटाणी हो ॥२॥
अजामेल-से उधरे, जम-त्रास मिटाणी हो ॥
पुत्र हेति पदवी दइ, जग सारै जाणी हो ॥३॥
नांव म्हातम गुर दियौ, सौ ही वेद वषाणी हो ॥
मीरा दासी कारणै, अपणी करि जाणी हो ॥४॥

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह. लि. प्र. से

१६

हरजस। राग सोरठ

पीया वीन[1] सूनों मोरो देस ।
जा तन को रोहे मार स्या हे, कोई आसै हे पीव मिलावै ॥१॥
कोई छानै मानै करूं पेस तेरे कारणे, बन बन ढूंढ करू जोगण को वेस॥२॥
जागैतै वाही तो आना प्रीयौ, पाछै रैहुयेगा केसै ॥३॥
मीरा कै प्रभु ग्र(गिर)धर नागरै, तांजै गाय नावै नारेसघ ॥४॥

---

राज. शो सं चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्रं सं ८३९९ से

---

सं. पाठ – १ बिन

टिप्पणी—मीरा सुधासिंधु पृ. १९५ पद स. ९७ प्रस्तुत पद की प्रथम तथा आधी द्वितीय पक्ति मिलती है, शेष पद नहीं।

१७

राग मारू —
पीया मोहे आरत तेरी हो।
तेरे कारण साईीया ह्वा करू सेझ सवेरी हो॥
आयो सावण भादवो, वरषा को आगम हो।
भुट घटा मट हुयि रही, नैना झर लायो हो॥
मेनन(ण)ते झरवाझर बरषो येक धारा हो।
या तन भीज काव वो, तन ताप बुझावो हो॥
या तंन को दीवलो(लो) करू मनछा की बाती हो।
तेरे कारण साऐया[1], जारू नेस[2] राती हो॥
पाटी पारी(डी) प्रम की, वह माग सुवारू हो।
तेरे कारण साईीया, जोबन तन गारूं हो॥
सेझडीया न वरगीया, वह फूल वेछावु हो।
रेण गेणु तारा गेणु, पीआ अजहु न आये हो॥
मात पिता तमकुं दइी तम ही भल जाणु हो।
तम वेण वोरन, साईीयां, हीरद नही आणु हो॥
पुरण पुर पुरीणा, पुरो सुप दीजै हो।
मीरा प्रभु विरहणी, अपणी करे लीजै हो॥
पीया मोहे आरत तेरी हो।

---

अनूप स ला लालगढ, बीकानेर के ह लि. ग्रं स २२३ मे

---

सं० पाठ—१. साईयां । २ दिन, नित।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. १६६ पद स. १९ से पद की प्रथम तीन-पंक्तियों तथा अन्तिम पक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता।

पाठान्तर—१

पीया मोय आरत तोरी रे ।
तोरि नै तोरा नाम री, मोय साज मंवेरी रे ॥टेर॥
आयौ सावण भादवौ, विरषा रितु आई रे ।
वीज भल - भल हो रही, नैण झर लाया रे ॥१॥
या तन कौ दिवलौ करू, मनसा की वाती रे ।
सैजडीया वहु रगीया, चगा फूल विछाया रे ।
रैण गई तारा गया, साई अजहू नी आया रे ॥२॥
पाटो पाडू प्रेमनी, वुध माग सवारू रे ।
मांई तौरें कारणे, धन जोवन वारू रे ।
तुम प्रभू पूरण पूरणा पूरौ जस लीजै रे ।
मीरा दासी राज री, अपनी कर लीजे रे ॥३॥

अनूप स ला बीकानेर के ह लि. प्र. स. ११३ से

पाठान्तर—२

पीया मोहि आरत तेरी हो ।
काहे को दिपक करू, काहे को वाती हो ॥टेव॥
या तन कौ दीपक करौं, मनसा की बाती हो ।
तेल बुवा वे प्रेम का, जारौ दिन राती हो ॥१॥
सेजरीया बऊ रगीया, धुनि फूल विछाये हो ।
मारग जोउ स्याम कौ, अवऊ नही आये हो ॥२॥
म वच क्रम तोमो लगी, चाहौ सो कीजै हो ।
मीराबाई वा(आ प री, अपनी कर लीजै हो ॥३॥

सत साहित्य मडल, बीकानेर के ह लि.ग्रं. से

पाठान्तर—३

पीया मोहि आरति तेरी हो ।
आरति तेरी तेरा नाम की, मोइ साझ सवेरी हो ।।टे०।।
या तन को दिवलो करु, मनसा की बाती ।
तेल जालाऊं प्रेमको, बालूं दिन राती हो ।।१।।
पाटी पारु ग्यान की, बुधि माग सवारु हो ।
साइ तेरें कारणे, धन जोबन गारु हो ।।२।।
आयौ सावण भादवो, वरपा रुति आई हो ।
वीज झलामल होइ रही, नैणां झड लाई हो ।।३।।
सेजडल्या वोहो रगीया, चगा फूल बिछाया हो ।
रेणि गई तारा गिनत, प्रभू अजहू न आया हो ।।४।।
थे छो पूरण ब्रह्मजी, पूरा सुष दीजो हो ।
मीरां व्याकुल व्रहनो, अपनी कर लीजै हो ।।५।।

रा प्रा वि. प्र जयपुर के ह. लि ग्रं. सं ७३ से

पाठान्तर—४ ( राग मारु )

पिया मोह आरत तेरी हो,तेरी तेरा नाव की मोह साझ सवेरी हो ।।टेर।।
नैन मै झरना झरै, वरसै एक ही धारी हो ।
भीजत है तन कपवा,तन ताप निहारी हो ।।१।।
मांग सवारु ग्यान की, बुध पाटी पारु हो ।
साई तेरे कारणै,धन जोवन वारु हो ।।२।।
या तन का दिवला करूं,मनसा की वाती हो ।
लोही सिंचु तेल ज्यु ,वारुं दिन राती हो ।३।।
सेज सु वारु साईया, प्रेम फुल विछाया हो ।
मारग जोऊ पीवका,अजहू नही आया हो ।।४।।
मेरा प्रीतम एक तुम, दुजा नाही जानु हो ।
तुम विन ओर भरतार कुं,हृदै नही आंनु हो ।।५।।
तुम हो पुरण पुरण, पुरा सुष दीजै हो ।
मीरा वीरहन व्याकुली अपनी कर लीजै हो ।।६।।

राज. शो. स. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. ७६६४ से

पाठान्तर—५

आरति तेरी हो पीया, मोहि आरति तोरी हो ।
आरति तोरी तौरे नांव की, भजू साज सैवेरी हो ।।टेक।।
या तन को दिवलो करु, मनसा की वाती ।
तेल सीचावू प्रेम को जागियो दिन राती हो ।।१।।
पाटि पाडु प्रेम की, वलि माग सवारो हो ।
थार कारन साईया, धन जोबन वारो हो ।।२।।
आया सावन भादवौ, व्रिषा रुति आई हो ।
बिरह् जड़ लह्यौ प्रेम को, नेणा झड लाई हो ।।३।।
सेजडिया वहू रगीयां, फूला सेज बिछाई हो ।
रैन गिई तारा गिणा, हरि अजहू न आया हो ।।४।।
थे छो पूरण पूरवा, पूरा सुष दीज्यौ हो ।
मीरा व्याकुल व्रहनि, अपनी करि लीज्यौ हो ।।५।।

---

राज. शो सं. चोपासनी, जोधपुर के ह लि ग्रं. स. ८३९९ से

---

पाठान्तर—६

आरति तेरी हौ पिया, मोहि आरति तेरी हौ ।।
तेरीज तेरी नाव री, मोहि साझ सवेरी ।।टेक।।
या तन कौ दीवलौ करौ, मनसा की वाती ।
तेलज पूरौ प्रेम रौ, जालौं दिन राती ।।१।।
पाटी पाडौ ग्यान की, वुधि माग सवारौ हौ ।
तेरे कारण साईया, धन जोबन वारूं हौ ।।२।।
सेझडिया हू रगिया, चगे फूल विछाये हो ।
वाटज न्हालूं साझ की पीव अजहू न आये हो ।।३।।
आवन आवन कहि गय, पीय अजहू न आये हो ।
भौंह घटा घन उमोय्या, नैणी झड लाये हो ।।४।।
तुम हो पूरण पूरणा, पूरा सुष दीजे हो ।
मीरां बिरहनि व्याकुली, वडभागी ती रीझै हो ।।५।।

---

रा प्रा वि प्र जोधपुर के ह लि ग्रं सं १८८२ से

पाठान्तर - ७

आरति तेरी हो पीया, मोहि आरत तेरी हो।
तेरी तेरा नाम की, मुज सांझ सवरी हो॥
नैनां का झरणा झरै, बरसै येक धारी हो।
भीजत है तन काचुकी, तन ताप निवारी हो॥
माग सवारो ग्यान की, बुद पाटी पाडी हो।
साई तेरे कारन, धन जोवन वारी हो॥
तेल जलावै प्रेम को, जालू दिन राती हो।
सेज सावरी साईये, प्रेम फूल विछायो है॥
मारग जोउ पीव का, अद जह नही आये हो।
मेरा प्रीतम येक तु, दूजा नही जान हो॥
तुम विनि ओर भरतार को,हरदै नही आन हो।
तुम तो पुरन पुरना, पुरा सुष दीजे हो।
मीरा ब्रहैन लाडली, अपनो कर लीजै हो॥

रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह. लि. ग्र स १८६० से

१८

प्रात निभाजौ[1] जी सांवरिया ॥टेर॥
थे छौ वाला सुखडे रा[2] सागर, ओगण दिस मत जाज्यो जी ॥१॥
मन नहि धीजै दिल न पतीजै, मुखड़ैरा वचन सुणाजौ जी ॥२॥
मैं छूं दासी जनम जनम की, रमता आगण आजौ जी ॥३॥
मो अबला(ला) पर किरपा कीजौ,दया कर दरस दिखाजौ जी ॥४॥
मौ नुगणी मैं(मे) गुण कछु नांही,ओगण चित न लाजौ जी ॥५॥
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, बेडौ पार लगा जौ[3] जी ॥६॥

अनूप स ला लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह लि. ग्रं. स ११३ से

सं. पाठ—१ निभाज्यो। २ सुखड़ेरा। ३. ज्यो।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ ६२२-६२३ पद सं. १३६ से प्रस्तुत पद की प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता।

पाठान्तर—१. ( राग कान्नगडो )

प्रित नीभाज्यो रि (री) सावरी ।।टेर।।
लोक न धीजै मीरो मन न पतीजै, मूखडै रा वचन सुणज्यौ रे साजनीया ।१।
मैं हू दासी जनम जनम की र, मता मोरै घर आज्यो जी ।२।
थे छो मीरे सुख रा सागर, ओगण दीसा मत जाज्यो जी ।३।
मीरा कै है परभु गिरधर नागर, वैड़ा पार लघाज्यो जी ।४।

अनूप सं. ला लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि ग्र स १७२ से

१६

प्यालो कीउ रे पठायो राणाजी, प्यालो कीउरे पठाया ।।टेर।
आज काल की नही रे मीरा, जव को अ।(ब)मंड छायो ।
मेरतीया 'ग(घ)र जनम लीया हे, मीरा नाम केवाया ।१।
कनक कटौरे ले वीख गो(घोल्यो)ल्या दयाराम पाड्या लाया ।
आगो पाचो छो। क(छु)चु न जोयो, कर चरणाम्रत पाया ।२।
बुरी वात तो मैं नही कीदी, राणोजी कीउर रीसाया ।
तुमरी हमरी देह धरी हो, जाको हरीजस गायो ।३।
पेल्हाद की परतग्या राखी खव(भ) फाड हरी आया ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, छेलो हरजस गायो ।४।

अनूप सं० ला० लालगढ पेलैस, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० १७० से

टिप्पणी— मीरांवृहत्पदावली (प्रथम भाग) पु०ह०ना०पृ० ३११ पद स. ६१६ से इस पद की ७ और ८ दो पंक्तियां नहीं मिलती, शेष मिलती हैं ।

पाठान्तर—२

राणां जी मा(म्हा)नै प्यालो क्यूं रे पठायो । भयो नही थारो भायो ।।टेर।।
आज काल की नही है मीरां, जब ब्रं हैमंड रचायो ।१।।
मेडतीया घर जन्म लियो है, मीरा नाम धरायो ।२।।
रतन कटोरा मै विष ले घोल्यो,दयाराम पांडयौ लायो ।३।।
आगो पाछो जोयो नाही, चरणाम्रत कर पायो ।४।।
बुरी वात तो हम नही कोनी, राणौ क्यु रै रीसायौ ।५।।
प्रहलाद की प्रत्यंग्या राखो, खभ फोड़ कढि आयो ।६।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, हरख हरिजस गायो ।७।।

रा० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० २०६ से

२०

बोल सूवा राम राम बोलै तो वलि जाऊ रे ।
सार सोना की सल्या मगाऊ, सूवा पीजरो वणाऊ रे ।
पीजरा री डोरी सुवा, हाथ सूं हलाऊ रे ।१।
कचन कोटि महल सुवा, मालीया वणाऊ रे ।
मालीया मैं आई सुवा, मोतिया वधाऊ रे ।२।
जावतरी केतकी तेरै, वाग मै लगाऊं रे ।
पला री डार सुवा, पीजरो बधाऊ रे ।३।
घृत घेवर सोलमा–लापसी * परसाऊं रे ।
आमला को रस सुवा, घोलि घोलि पाऊ रे ।४।
बैठक कै तो कारणै सूवा, चानरमी विछाऊ रे ।
पेम[१] कै प्रताप सुवा, झाझ वणवाऊ रे ।५।
केसर भरीयौ वाटकौ, तेरै अंगि से लगाऊ रे ।
मीरा के प्रभू हरि अविनासी, सरणै आया सुख पाऊं रे ।६।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ७३ से

सं० पाठ—१ प्रेम ।

टिप्पणी— १. मीरांसुधासिंधु पृ० ७७० पद सं. ६१ से उक्त प्रस्तुत पद की ६ और ७वीं पंक्तियां नहीं मिलती। शेष मिलती हैं।

*टिप्पणी—२. सोलमा लापसी – मारवाड़ ( राजस्थान) मे गेहूँ के दलिये को घृत में भूंज कर लापसी नामक मिष्ठान (मांगलिक अवसरो पर) बनाया जाता है जिसमे एक मन के पीछे सोलह सेर घृत डाला जाता है। उसे 'सोलमा लापसी' कहते हैं।

२१

भाभी मीरा हो ! साधा को संग निवारि[१] ।
थाहारी[२] लोक नद्या करै, बाई उदा हो ! लोका नै लौका रो भाव ।।
म्हे म्हाकौ राम लड़ावस्यो, भाभी मीरां हो ! लाजै सैस मेवाड ।
लाजै कौंभाजी[३] रो बेसणौं,भाभी मीरा हो ! लाजै नौकोटी मारवाड़ ।।
लाजी दूदाजी रो मेडतो, भाभी मीरा हो ! लाजै माइ मोसाल ।
लाजै है पीहर थारो सासरो,भाभी मीरां हो ! थापरि राणौं कोपीया ।।
बाटकड़ै विष घोलने, बाई उदा हो ! थे दीज्यौ म्हारै हाथै ।
म्हे अमरत करि आरोग्स्या[४], बाई उदा हो ! साथरि सेज बिछाई ।।
नैणा मैं विष सचर्यो, बाई उदा हो ! मदर ऊवो छै उजास ।
सही साधौं री तारण आवई,वाई उदा हो ! दुज्या[५] पषालौ हरे रा पाव ।।

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८ से

सं० पाठ — १. निवारो। २ थांरी। ३ कुंभाजी। ४. अरोगस्यां। ५. दूर्यां।

टिप्पणी –मीरासुधासिंधु पृ० १६४–१६५ पद सं ३४६ सुधासिंधु में बहुत बड़ा पद है, किन्तु प्रस्तुत पद आधा ही मिलता है।

## २२

राग धनासरी ।

मीराँ रंग लागो हरी ।
सब रग अटक पडो, मीरा (रां)रग लागो हरी ।। टेर ।।
गी(गि)रधर गासा[1] सतीय न हूसा, मन वसिया घणनामी ।
जेठ बहू रो नातो राणा जी, थे सेवग मे (मै, म्हे) सा (स्या) मी ।।१।।
छापा तिलक मनोहर वनासा, सील सतोख सीणगारो ।
ओर कछु नही भावै हो राणाजी, ओ गुर गीयान[2] हमारो ।।२।।
राज करतां नरग (क) पडता, जा जीव रवी सुत खाया ।
ओरी क राना (णा) सतावा, काई करेलो मा [रो] कोई ।।३।।
गज कु तज के खर नही अठसू [3],आ पीण बात न होई ।
कोई यानै कहो कोई मंनै कहो, गुण गोवीदरा गासा ।।४।।
जी(जि)ण मारग मे (म्हां)रा साध पोहोता[4], जीण[5] मारग मे जासां ।
गिरधर धणी क कुब[जा] गी(गि)रधर, मात पिता सुत भाई ।
थे थर मे माहो राणाजी, गाव मीराबाई ।।५।।

---

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३२५७४ से

---

सं० पाठ—१. गास्या । २. ग्यांन । ३. चढसूं, बैठसू । ४. पधार्‌या । ५ उण ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ३६२ पद स० ३८ से उपर्युक्त पद की पचम, सप्तम तथा अष्टम पंक्तियो को छोड, शेष पद मिलता है किन्तु, पक्ति-क्रमान्तर-भेद अवश्य है ।

पाठान्तर–१

सो मीरा रग लाग्यौ राम हरी ।।टे०।।
कठी तिलक दोवडी माला[1], सोल वरत सिणगारो ।
ओर सिंगार सोकै नही राणाजी, यो गुर ग्यान हमारो ।।१।।
भलि कोई निंदो भलि कोई विंदो, गु ण गोविंदजो का गास्या ।
जिन मारग मेरा सत पधार्‌या, जी मारिग म्हे जास्या ।।२।
भजन करस्यां सती न होस्या, मन मोह्यौ घणनामी ।
जेठ वहू कौ नातो नही हो, थे सेवक म्है स्वामो ।।३।।
राज न करस्या जीव न सतास्या, काई करैलौ म्हारो कोई ।
हसती चढि म्हे षर नही चढस्या, ऐ तो वात न होइ ।।४।।
ना कोई मेरैं मात पिता है, ना कोई वधू भाई ।
थे थाकै म्हे म्हाकै राणाजी, यू गावैं छै मीरावाई ।।५।।

---

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्र० सं० ७३ से

---

सं० पाठ—१. माला ।

पाठान्तर—२

राग धनाश्री ।

मीरा रंग लाग्यो हो नाव हरी, और रंग अटकि परि ।।टेक।।

गिरधर गास्या सति न होस्यां, मन मोह्यौ घणनामी ।

जेठ वहु कौ [नातो] नाही राणाजी, थे सेवग म्हे स्वामी ।।१।।

चोरी करा न जीव सतावां, कोई करेगौ म्हाकौ कांई ।

गज सू उतरि गधे न चढिवौ, या तो बात न होई ।।२।।

चूडौ तिलक दोवडी माला, सील वरत सिणगार ।

और वरत नही भावै मोहि राणांजी, यहू गुर ग्यान हमारा जी ।।३।।

भावै कोई निंदो भावै कोई वंदौ, म्हे तो गुण गोविदजीरा गास्या ।

जी मारगि वै संत गया छै, वी मारगि म्हे जास्या ।।४।।

राज करता नरकि पडता, भोगी जो रे लीया ।

जोग करंता मुकति पऊता, जोगी जुगि-जुगि जीया ।।५।।

गिरधर धनी धनी मेरे गिरधर, मात पिता सुत भाई ।

थे थाकै म्हे म्हाके राणाजी, यू कहै मीराबाई ।६।।

---

रा० प्रा० वि० प्र० जयपुर के ह० लि० ग्र० स० ८३ से

---

पाठान्तर ३

मीरा रग लागौ राम हरी, और रंग अटक परी ।।टेक।।

कठी तलक दोवडी माला, सील वरत सिणगारौ ।

और सिगार न भावै हो राणाजी, यौ गुर ग्यान हमारौ ।।१।।

चौरी न करस्या जीव न सताम्या, काई करैलौ म्हारो कोई ।

हसती चढि म्हे खर नहि चढस्या, या तौ बात न होई ।।२।।

राज करता नरक पडता. भोगीया जमलीया ।

भगति करता मुकति पऊता. जोगी जुग-जुग जीया ।।३।।

भावै कोई निंदो भावै कोई विंदो म्है गुण गोविंद का गास्या ।

जी मारिग म्हारा सत पधारया, जी मारिग म्है जास्या ।।४।।

राज न करस्या सती न होस्यां. मन मोह्यो घणनामी ।

जेठ वहू को नातौ नही हो राणोजी, थे सेवग म्हे स्वामी ।।५।।

साध हमारौ गोतक डूवौ, नां कोई बहू भाई ।

थे थार्कै म्है म्हाकै हो राणाजी, यूं गावै मीराबाई ।।६।।

---

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० प्र० से

## २३

सोरठ—

म्हांरी सुध जेरा जाणो त्यौं लीज्यौ जी ।
हौं तो थारी दासी जनम जनम की, किरपा रावरी कीज्यौ ।।टे०।।
विश्व रो प्यालो राणं भेज्या, अमरत करि करि लीज्यौ ।।१ ।
भक्ति - वछल प्रभु विडद तुमारौ, भावै त्यौ कीज्यौ ।।२।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिलि विछरन[1] मति दीज्यौ ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं०सं० २८३८० से

सं० पाठ — १ विछडन ।

टिप्पणी - मीरासुधासिंधु पृ० ३२२ पद स. ७ से इस पद की प्रथम तथा द्वितीय पक्ति के कुछ साम्य के अतर से पद नहीं मिलता ।

## २४

राग केदारौ —

रै मनि परसि हरि के चरन(ण) सुभग सीतल ।
कव(म)ल कोमिल, त्रिविधि ज्वाला हरन(ण) ।।टेक।।
ते चरन(ण) प्रहलाद परसे, इद्र पाई[1] ध्रन(धरण) ।
ते चरन ध्रु[2] अटल कीही, राखि अपनी श्रवन(ण) ।।१।।
ते चरन गयो लोक मापे, ते चरन बले ध्रारन(ण) ।
ते चरन ब्रैहमंड छीन्यौ, सुरसरी नख झरन(ण) ।।२।।
ते चरन ग्रधारि नख पंरि, इद्र को बल हरन(ण) ।
तेई चरन काल के अ[सर]परि, गोप - लीला करन(ण) ।।३।।
ते चरन गउ चारि बन मैं, कुडीआ भरन(ण) ।
दास मीरा रा) लाल गी(गि)रधर, अधम त्यारन तरन(ण) ।।४।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ३६१५२ से

सं० पाठ — १. पदवी । २ ध्रू ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ० ७६५-७६६ पद स. ४७ से प्रस्तुत पद की प्रथम चार पक्तियां मिलती हैं, शेष मे अतर है ।

पाठान्तर—१　　　　( राग सोरठ )

मन सै पस[र] हर के चरण।
सुभग सीतल कवल कोमल, त्रिमंद जाला हरण ।।टेर।।
जै चरण प्रहलाद परसै, इद्र - पदवी धरण।
सोई चरण ध्रु अटल कीनौ, राख अपणी सरण ।।१।।
जै चरण वन गउ चराई, कुबडी अभरण।
सोई चरण काली नाग नाथौ, गोप-लीला करण ।।२।।
जै चरण ब्रीह्मड भेद्यौ, नख सुरसुरी धरण।
सोई चरण रज परस सील पर, तारै गौतम धरण ।।३।।
दास मीरा लाल गिरधर, अधम तारण तरण।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स ७६३६ से

२५

रामैया मैं तौ दरद दिवानी(णी),मेरा दरद न जांणे कोय ।।टेर।।
घायल की गत घायल जाणै, और न जाणै कोय।१।
सूली ऊपर सैज हमारी सौवन(ण),किस विध होय।२।
सुख सपत में सब कोई अपना विपत पऱ्या नहिं कोय।३।
सुख के सागर सदयण आगर, कृस्न गुण दोय।४।
मीरा कहै प्रभू गिरधर नागर, वैद सावरी होय।५।

अनूप सं० ला० लालगढ पैलेस, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० सं० ११३ से

टिप्पणी – मीरांसुधासिंधु पृ ७७ पद सं. २०८ से उपर्युक्त पद की प्रथम तीन पंक्तियों के अतिरिक्त पद नहीं मिलता।

पाठान्तर—१

हेली मैं तो दरद दिवानी, दरध(द) न जाणै मेरा कोई ।।टेर।।
सूली ऊपर सेज हमारी, सौवना किस विधि होई ।।१।।
घायल की गत घायल जाणै, और न जाणै कोई ।।२।।
सुख संपत मैं सब कोई साथी, दुख बिपता नही कोई ।।३।।
मीरा कहै प्रभू हर अवनासी, दरसण दीज्यौ मोइ ।।४।।

रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १०८४७ से

पाठान्तर—२

हेली मै तो दरद दिवानी, दरद न जाणै कोय ।।टेक।।
सूली ऊपर सेझ हमारी, सोवण किस विध होय ।१।।
घायल की गत घायल जाणै, और न जानै(णै) कोय ।२।।
सुख सपत मै सब कोई नेडा, विपत पड्या नहिं कोय ।३।।
मीरां के प्रभू गिरधर नागर, राम मिल्या सुख मोय ।४।।

रा. शो सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्र . सं ७१४५ से

पाठान्तर— ३

हेली मैं तो दरद दिवानी, दरध न जाणै री कोइ ।।टेक।।
सूली ऊपर सेझ हमारी, किस बिधि सोणा होई ।१।।
मीराँ के प्रभू हरि अबिनासी, राम भज्या सुष होई ।२।।

भारतीय विद्या मन्दिर, बीकानेर के ह० लि०ग्र ० से

पाठान्तर—४

हेली मे तो दरध दिवांनी दरध, न जाणै कोय ।।टेर।।
सूली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होय ।१।।
घायल की गत घायण जाणैं, जे कोई घायल होय ।२।।
हीरा की पारख जुहरी जाणै, और न जाणैं कोय ।३।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, वैद सावरो होय ।४।।

अनूप स. ला. लालगढ, बीकानेर के ह. लि. ग्र. स ११२ से

पाठान्तर—५. ( राग काफी )

हेरी मै तो दरद दीवानी, मेरा दरद नै जाणै कोय ।।टेर।।
सुली कै ऊपर सेज हमारो री, सुवणा कीसी वीध होय ।।१।।
गीगन मडल मै सेज हरी की, कीस बीध मिलैणा होय ।।२।।
घायल की गत घायल जानै, जो तन पीडा जौ होय ।।३।।
जोहरी की गत ज्यूहरी जानै, सो जीन जुहैरी होय ।।४।।
दरद की मारी वन वन डोलु, वैद मिल्या नही कोय ।।५।।
मीरा कहै प्रभु गीरधर नागर, वैद सावलीयौ होय ।।६।।

सत साहित्य मडल, बीकानेर के ह लि. ग्र से

पाठान्तर—६

हेलो मे तो दरद दीवानी, दरद न जाणे मेरा कोय ।।टेर।।
गायल की गत गायल जाणे, जे कोडी गायल होय ।।१।
सुष सपत मे सब कोडी साती, बीपत पड्या नही कोय ।।२।
सुली उपर सेज हमारी, सुवणा कसी बीद होय ।।३।।
मीरा के प्रभु अहन वीयाकुल, वेद रमया होय ।।४।।

अनूप सं. ला. लालगढ, बीकानेर के ह. लि. ग्र. सं १७०

२६

रामईया बिना नीद न आवै।

नीद न आवै ब्रँह[1] संतावै, प्रेम की आंच ढुरावै ढूरावै ।।टेर।।

पीया जोत विन मिंदर अंधारी, दीपक दाय न आवै।

पीया जी विना मा(म्हा)रो सैज अलूंणो, जागत रैण बिहावै,

कबै घर आवै आवै ।।१।।

दादुर मोर पपैया बोलै, कोयल सब्द सुणावै।

घटाघौर औलर हूय आई, दामन दमक डरावैं,

नैन(ण) झर लावैं[2] लावै ।।२।।

कहा करुं कित जाऊ मोरि सजनी, वेद न कोइ रैं वतावै।

ब्रँह नाग मोरि काया डसी है, लहर लहर जीव जावै.

जडी घस लावै लावैं ।।३।।

है कोई असी सखी रे सहेली, पियाजो कू आन मिलावै।

मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर, मौ मन भावै कबै बतलावैं ।।४।।

---

अनूप सं. ला. लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह लि ग्र. स. ११३ से

---

स. पाठ — १. बिरह. २ ल्यावैं।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ४५१ पद सं. ३५ से प्रस्तुत पद की तीसरी और छठी पंक्ति नहीं मिलती, शेष पद मिलता है।

पाठान्तर— १

रमईया बीना नीद न आवे, घर आगणे न सुहावे ।।टेर।।

पीया जी वीना मारे मीद र अ देरो, दीपक दाय नी आवे।

पीया जी वीना मारी सेज अलुणी, तो जागत रेणी वीवहावे,

कवे घर आवे ही आवे ।।१।।

कहा करु कीत जाउ मेरी सजनी, वेदन कोइ न मीटावे।

ब्रीहनाग मेरी काया डसी हे, तो लहरी लहरी जीव जावे।

जडी गसी लावेई लावे ।।२।।

दादर मोर पपैया बोले, कोयल सबद सुणावे।
प्रेम घटा उमग होय आई, तो दामण चमण चमक डरावे,
नेन जडी लावेई लावे ।।३।।
सुन री सषो री सहेली सजनी, पीयाजी कु आनी मिलावे।
मीरा के प्रभु हरी अबीनासी, तो माधोजी मन भावे,
कबे हसी के बा(ब) तलावे ।।४।।

अनूप स. ला. लालगढ, बीकानेर के ह लि ग्रं. स. १७० से

२७

लगन कौ नाव न लीजीये भोली(ली) लगन कौ ।।टेक।।
लगन लगी कौ पेंडोई न्यारो, पांव धरत तन छीजीये ।।१।।
जेहू लगन लगाई हे चाह्वै, तो सीस की आस न कीजिये ।।२।।
लगनि लगी छे हे म्रग नाद सूं, सनमुख छांन सहीजीये ।।३।।
लगन लगाई पतग दीपक से, वारि फेरि तन दिजीये ।।४।।
लगन लगी जेसे जल मछीईन से, बिछरत प्रांन(ण) दविजीये ।।५।।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, चरन(ण) कवल[1] चित दीजिये।।६।।

राज शो. स. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं. स. ८२९१ से

सं पाठ — १. कमल, कंवल।

टिप्पणी—मीरासुधासिंधु पृ ७५७ पद सं २३ से इस पद मे दो पंक्तियां कम हैं। प्रस्तुत पद की प्रायः सभी पंक्तियां मिल तो जाती हैं, किन्तु पंक्ति-क्रमभेद है।

२८

लागत मोहन प्यारो राणा जी मा(म्हा)नै लागत मोहन प्यारो ।।टेर।।
जाकी कला मैं हालत चालत, बोलत प्राण आधारो ।१।।
ताकी माया मैं सब जग भूल्या, उपुर-स[1] है न्यारो ।२।।
तुम कहते अरधग्या हमारी, हमसे लगायो कारो ।३।।
चवदे भवन मही व्यापक रहै, तेसो बीज बर है हमारो ।४।।
तुम भी तो झूठे राणा हम भी तो झूठे, वो झूठो है राज पसारो ।५।
तोसे पुरस कौ, सवद झूठो राणा, फूटौ है हीयौ तमारो[2] ।६।
सालु पीताबर मोतीया की माला(ला), वो ले ले अंग माहि डारो ।७।
छापा तिलक तुलछी की माला, वो साध संगत निसतारो ।८।
जै जै दिन मै तो हरि बीना खोया, वो डग मनुज अवतारो ।९।
मीरा(रा) कहै प्रभु गिरधर नागर, चरण कवल(ल) बलिहारी ।१०।

सत साहित्य संगम, बीकानेर के ह लि ग्रं से

सं. पाठ — १. ऊपर सू । २. थांरो

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु पृ २८२-२८३ पद सं ३६ से उपर्युक्त पद की चौथी तथा अंतिम पंक्ति पूरी तथा सातवीं पंक्ति आधी नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

२९

लाज वैरन (ण) भई सखि मोहे ।
हाथ मां उसके ऐक तीर है, औमैहु ततवीर है ।।
नहा सील तकदीर है ओमैहु, हय लाज बैरन भई ।
चलत गोपाल पिय के सग क्यौ ना गई ।।
कठिन क्रूर अक्रूर आये रथ चढाये नई ।
लै गए नदलाल पिय को हाथ भीवत[1] रही ।
कठिन छाती स्याम बिछुरत विहर क्यौं ना गई ।
लिखी पाती स्यामजी को काह्या पठवो दई ।
कठिन छति स्यामजी की दया नेकू न भई ।
दास मीरा लाल गिरधर प्राण दक्षिणा[2] दई ।।१।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० ३४७५६ से

सं० पाठ—१. भींचत । २. दखणां ।

टिप्पणी–मीरां माधुरी–पृ० २५-२६ पद सं० ६६ से उक्त प्रस्तुत पद की प्रथम तथा बीच की चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं। मीरांसुधासिंधु–पृ० ५७८ पद स० १० से प्रथम, पांचवीं, छटी, सातवीं,तथा आठवीं पक्तिया मिलती है,शेष नहीं।

३०

बरसवोई कर रे मेहा म्हारो, प्रितम वाल्हो घर रे ।।टे०।।
मोटी मोटी बूंदन वरसन(ण) लागी, सूके सरवर भरे रे ।।१।।
वहोत दिनन सौ प्रीतम पायो,मोहि विछुरन[1] को डर रे ।।२।।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सावरीयो छै म्हारो वर रे ।।३।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० स ३७९४४ से

सं० पाठ — १ विछुडन

टिप्पणी — मीरांसुधासिंधु–पृ० ४४१ पद सं० १ से प्रथम तीन पक्तिया थोडे शब्दान्तर से मिलती हैं, किन्तु अंतिम नहीं मिलतीं।

३१

वसीवारा आजो मारे[1] देस।
थारी अजब सुरत बाई भेस, वसोवारा आजो मारे देस ।।टेव।।
आवन आवन केहे गये, कर गऐ कोल अनेक।
गीनता[2] गीनता घस गई, आगली(ली)या की रेष ।।१।।
या कपटी सू प्रीत न करीयं काहा[3] जाने पर पीर।
हम छोडी नीज धाम मैं, आप उतर गये तीर ।।२।।
जेह ऐसो जानती, प्रीत कीये दुष होय।
नगर दुहायी फेरतै प्रभु, प्रीत करो मत कोय ।।३।।
हम गोकल तम मथरा का,अव कैसे मीलणो होय।
मीरा के प्रभु गीरधर नागर मील(मिल)(वि)वीछरो मत कोय ।।४।।

राज० शो० सं० चोपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ७६३६ से

सं० पाठ — १ म्हारे। २ गिणता। ३ का।

टिप्पणी - मीरांसुधासिंधु–पृ० १९५ पद स० ९९ वें पद की प्रथम चार पक्तियां मिलती है, शेष नहीं।

पाठान्तर—१

वंसीवाला आय जौ मांरै देस ।।टेर।।
थांरी सांवरी सुरत ह षवेस ।।टेर।।
आवण आंवण कै गयौ जोगी, कर गयो कवल अनेक ।
गुणता गुणतां घस गई मारै, आगणलीया रि रेष ।।१।।
पगे षडाउ पैरलो जौगी, कृ(कर)लो भगमां वेस ।
डगर हमारै आवजौ, करजो आलेष आलेष ।।२।।
आगण वाउ रे लेसी, लवै पेड खजुर ।
जण चढ जौउ थारी वाटडी, नैडा वसो कै दुर ।।३।।
राय आगण कैसोक मै, राषु वाग लगाय ।
कलोअन कै मस आवजो रे जौगी, राषुली वलमाय ।।४।।
पानन ज्यु पोलि परी, लौक कैहै पड रोग ।
साना लागण मे कीया रांम मीलनवि जौग ।।५।।
पीत कीआ सुष उपजै वीचडिआ दुष होय ।
नगर ढढीलो फेरति, पीत म करजौ कौय ।।६।।
पीर हमारौ मेडतै जौगी, सासरीयौ चीतौड ।
मीरां नै गीरधर मल्या, नागर नद कीसौर ।।७।।

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्र० सं० ६२९९ से

पाठान्तर २

वंसिवाला आई जौ म्हारै देस, थांरी सावरी सुरत हरदे वसे ।।टेर।।
आवन आवन कह गयो हेली, कर गयौ कवल अनेक ।
गिनंता गिनंता घस गई हेली, आगलीयां री रेक ।।१।।
कागद नहि स्याही नही हेली, कलम म्हारे लेस ।
पछी कौ परवेस नही हेली, किण सग लिषू रे मदेस ।।२।।
इक वन ढूढ सकल वन ढूढ्यौ, ढूढि फिरी सारो देस ।
तारै तौ कारण जोगण होसूं रे, करसू भगवा भेस ।।३।।
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, गूघर वाला केस ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, प्रीत किया दुष देस ।।४।।

अनूप सं० ला० लालगढ, वीकानेर के ह० लि० ग्रं० स० ११३ से

पाठान्तर—३

वसीवारा आवज्यो मारे देस, थारी सावरी सुरत हृद वेस
[हरदे वसे] ।।टेर।।

आउं आउ कह गयो सावरा, कर गयो कवल अनेक ।
गीणते गीणता घस गई, मारी आगलीया की रेष ।।१।।
मै बरागण राम की, थारै मारै कदकौ कौ सनेह ।
बीन पाणी बीन साबुना रे, सावरा हूगई धोर सपेद ।।२।।
जोगण हूई जगल सब हेरु, तेरा न पाया भेस ।
तेरी सुरत कै कारणं सावरा, धरै लीया भगवा भेस ।।३।।
मोर मुकट पीतावर सोहै, घुघर वाला केस ।
मीरा कह प्रभु गीरधर नागर, हूण बढा सनेस ।।४।।

संत साहित्य संगम, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

३२

सजन घर आव रै मीटा[1] बोला ।।टेर।।
थारे तो कारण मब तज दीना, काजल(ल)तीलक तमोला(ला) ।।१।।
रषत रती बीन नाहो रहती, बीन मासै बीन तौला ।।२।।
बी (मी)रा के प्रभु गीरधर नागर, कर धर रही छ कपोला ।।३।।

अनूप स० ला० लालगढ, बीकानेर के ह० लि०ग्रं० सं० २०६ से

सं० पाठ—१. मीठा, मिठ ।

पाठान्तर—१                (राग सोरठ)

सजन घरि आवोजी मीठा ब्रोला ।
या रुसन मै का लगयो वोहो, अब तो मेटि अबाला ।।टेक।।
आरत वहोत विलब नहि करणां, आय्यां ही सुष होला ।
तन मन प्रांन करो नोछावर, अब प्रभु कहा कहोला ।।१।।
आवो निसक संक नही करणा, आया ही होय रगरोला ।
तरै कारण सब कुछु त्याग्या, काजल तीलक तवोला ।।२ ।
विन देष्यां व्याकुल भई सजनी, कर धर रहै कपोला ।
मीरा तो गीरधर विना हो, षिण मासो षिण तोला ।।३।।

राज० शो० सं० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्र० स० ८२९० से

टिप्पणी – मीरांमाधुरी–पृ० ८७ पद सं० २३७ की तीसरी से लेकर आठवीं पंक्ति क्रमभेद से मिलती है, शेष नहीं ।

पाठान्तर—२

साजन घर आवोजी मीठा बोला ॥टेक॥
आव निसक संक मत मांनै, छांदे देइ झकझोला ॥१॥ ः रामा ः
तरे कारण सबही त्याग्या, काजल तिलक तमोला ॥२॥
तन मन वार करु निछरावल, लीज्यो स्याम मोहोला ॥३॥
तुम देष्या बिन कल न पडत, कर द(ध)रही जी कपोला ॥४॥
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, तो आया होइगा मारा वाला ॥५॥

राज० शो० स० चौपासनी, जोधपुर के ह० लि० ग्रं० स० ८२९१

टिप्पणी–मीरांवृहत्पदावली–पृ० २९६ पद स ५९० से दूसरी तीसरी तथा पांचवीं पंक्ति के अतिरिक्त पद नहीं मिलता। वे पंक्तियां भी क्रमभेद से हैं।

पाठान्तर—३

साजन घरि आवौ मीठा बोला ॥टेक॥
कबकी षड़ी षड़ी पथ निहारु, थां आयां होसी भला ॥१॥
आव निसंक सक मति मानै, आया ही सुष ह्वैला ॥२॥
तन मन वारि करु नवछावरि, दीज्यौ स्याम मोहोला ॥३॥
आतरि बोहोत बिलम नही करनां, आया ही रंग रहला ॥४॥
तेरै कारणि सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला ॥५॥
तुम बिनि कल न परत है, कर धरि रही कपोला ॥६॥
मीरा के प्रभू हरि अबिनासी, षिण मासा षिण तोला ॥७॥

भारतीय विद्या मंदिर, बीकानेर के ह० लि० ग्रं० से

पाठान्तर—४

साजन घर आवौ हो मीठा बोला ।
कबकी षड़ी मै पथ निहारुं, थां आयां होसी भला ॥टेर॥
अब निसष सक मत माने, आयांई सुष रेंहैला ।
तन मन वार करुं निछरावल, दीजौ सांम मोहोला ॥१॥
आव सलूना विलम न कीजै, थो आयांई रंग रहैला ।
तेर कारण सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला ॥२॥
तुम देष्यां विन कल न परत है, कर धर रही कपौला ।
मीरां कै है प्रभू हर अभनासी, षिण के मासौ षिण तोला ॥३॥

रा प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि ग्र. स. १०८५१ से

राग गलतांनी सोरठ —

पाठान्तर—५

साजन घरि आवो मीठा बोला ॥टेक॥
कवकी षडी षडी पथ निहारुं,था आयां होसी भला ॥१॥
आव निसक सक मति मांनै आयां ही सुष ह्वैला ॥२॥
तन मन वारि करु नवछावरि, दोज्यौ स्याम महोला ॥३॥
आतरि वहोत बिलम नही करनां,आया ही रग रहला ॥४॥
तेरै कारणि सब सुष त्याग्या, काजल तिलक तमोला । ५॥
तुम देष्यां विन कल न परत है, कर घरी रही कपोला ॥६॥
मीरां कहै प्रभू हरि अवनासी पिण मासा षिण तोला ॥७॥

रा० प्रा० वि० प्र० जोधपुर के ह० लि० ग्रं० सं० १०८४७ से

३३

राग धुर ।

संता काले रीज्यो मा(म्हा)रो ईतरो जोर,आज बसो मा(म्हा)रे सेर मैं।।टेक।।
धिन घड़ी पल आप पधार्‌या सता,चरण पवीत कीनी मा(म्हा)री भोम ।१।
अचलो(लो) बिछाय करु प्रना(णा)म, सीस निवाऊं मा(म्हां)रा दोनूं कर जोर ।२।
मा(म्हां)रा क्रम कठन होय लागा, आप पधारो जांरा निरमल होई ।३।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साईयां साधुडा रो हिरदो बड़ो कठोर ।४।

राज० शो० सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं सं. ७६६५ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ० ७७६ पद सं.८० से इस पद की द्वितीय पंक्ति नहीं मिलती, शेष पद मिलता है ।

३४

राग सोरठ ।

सईयां अरज बदी री सुणि[1] हो ।
मो निगुणी रा सगुणा साहिब, अवगुणगारो रा गुण हो ।।टेक।।
राणै जी पीयालो बिख रो भेज्यौ,मोहि भगति रो पण हो ।१।।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर,म्हे काई जाणा राणै जी कुण हो ।२।।

रा प्रा. वि. प्र जोधपुर के ह लि. ग्रं स. १८८२ से

स पाठ—१ सुण ।

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. ३४१ पद सं. ६१ से इस पद की अंतिम पंक्ति के अर्द्ध-भाग को छोड़ कर सम्पूर्ण पद मिलता है, किन्तु मीरांसुधासिंधु में इस पद की ६ पंक्तियां है जबकि उक्त पद मे ४ पंक्तियां ही हैं ।

पाठान्तर— १

साईया अरज वंदी री सग हो ।
मो निगुणी रा सुगण साहिब, औगणगारी रा गुण हो ।।टेक।।
हूं तौ थारो दासी जनम जनम री,तुम हौ हमारे वर हो ।
दीनदयाल करौ मो पर तुम, हौ गिरवरधर हो ।१।।
राणो जी प्यालौ विष नौं भेज्यौ, मोहि भगति नौ पण हो ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, कांई जाणु राणो कुण हो ।२।।

स त साहित्य स ंगम बीकानेर के ह लि प्र से

( राग गिरनारी सोरठि )

पाठान्तर—२

साईयां अरज वदी की सुणि हो ।
मो निगुणो का सुगण साहिवा,औगणगारी का गुण हो ।।टेक।।
हूँ द सी तेरी जनम जनम की, तुम हो हमारे बर हो ।
दोनदयाल करि मोपं, मेहो सबही डर हो ।१।।
राणो जी विसरो प्यालो भरि भेजीयो, म्हारे भगति रो पण हो ।
जाकूं राखै रांम गुसाई, तो मारणहारो कुण हो ।२।।
आन देव म्हारो दाइ न आवै, तुम मू लागै म्हारो मन [हो] ।
जैसें चद चकोर निहारै, यू सुमरु छिनि छिनि हो ।३।।
वेर वेर मोहि बिरह सतावै, ज्यूं काठे लागो घुण हो ।
मीरा नाव पीयालै छकी,काई जांणू राणोजी कु ण हो ।४।।

भारतीय विद्या मदिर, बीकानेर के ह लि. प्र से

३५

साजन वेला(ला) घर आजौ (ज्यौ) हौ।
आदि अत के मित्र हो, हम कूं मुख लाजौ हौ ।।टेर।।
हरि वनात चरना(णां) कल घरजौ, उठ मारग जोऊं हो।
तोर (रे) कारण साईयां, भर नीद न सोऊं हो ।१।।
हरि वना सूरत कत घरजौ, मनसा न बैसर जौ हो।
नजर पड़ा तम उपरै, मन तन घन वारजौ हो ।२।।
अवन्यासी आया सुण्या, म नव न(नि)घ पाई।
मीरा(रा) कै दिल माहिला, दुख टेर सुणाऊ हो ।३।।
वा बरीया कब होवसी, कोई कहे सनेसा हो।
मीरा(रां) कहै अैसी बात का, प्रभू खरा अनेसा हो ।४।।

राज. शो सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं स. ७६६५ से

पाठान्तर—१

सजन वेला घर आज्यौ हो।
आदि अत के मत हो, हम कू सुख लाज्यौ हो ।।टेक।।
निस दिन मोहि [क] ल ना पड़ै, नित मारग जोउ हो।
साई तेरे कारणे, भारि नीद न सोऊ हो ।१।
अवनासी आया सुनो, जव नवनिधि पाऊ हो।
माहिब सू मन माहिलो, दुख टेरि सुनाउ हो ।२।
बावरीया कब आवसी, कोई कहत सदेसा हो।
मीरा कहै इस बात का, मोहि खरा अदेसा हो ।३।

राज शो. स चौपासनी, जोधपुर के ह लि ग्रं स. ८२६१ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु–पृ १६६ पद सं. २८ से उपर्युक्त पद की प्रथम चार तथा अंतिम दो पंक्तियां कुछ शब्दान्तर से मिलती हैं, शेष नहीं।

३६

हरि न बूझि ब्रात माई मेरी,हरि न बूझि वात ।
देह माही प्रांण पापी, निकसि क्यू नही जात ॥टे०॥
रैण दूंधारी[1] ब्रेहन[2] घेरी, तारा गितरौ[3] विहाये ।
का कटारौ कठैं छेदौ, क मेरौ विख खाये ।।१।।
मुखां न वोलै पल न खोल, सांझ अरु प्रभाति ।
अवोलरण केई दिन वीते, काहि को कुसलात ॥२॥
सुपनें मैं द्रस पायौ मैं, न जाणू जात ।
नैण उघड़े मिले नाही, करौगी तन घात ।३॥
आवैणा कहे गया छा हरि, आवैण की वात ।
दास मीरा लाल गिरधर, वालक ज्यू विललात ।।४॥

राज. शो स चौपासनी जोधपुर के ह लि. ग्रं सं. ८२९९ से

स पाठ—१ अधारी । २ विरहण । ३ गिणत ।

पाठान्तर—१

स्याम नें वूझी मोरी वात माई, मुनै स्याम नें वुझी वात ।
आवण कहे गये आये नही, आवण ही की राति ।
रेण अघेरी वीजली चमकै, तौ तारा गीणत वेहाल माई ।१॥
मुख न वोलें यो या पाट न खोलै, दीपें सरसरी रात ।
अवलो दउ जात हेरी माई, काहे की कुसलात माई ।२॥
काढि कटारी कंठ पहरो, काहे मरु विख खाय ।
वेग मीरा(रा)वाई के ठाकर, राज मेल्या दुख जाय ।३॥
माई मुनै स्याम नु वुझी वात ।

रा. प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं म. १८९० से

टिप्पणी-मीरासुधासिंधु पृ १७९ पद सं ९० से प्रस्तुत पद की चौथी और आठवीं पंक्तियां नहीं मिलती । इसी तरह पाठान्तर की भी प्रथम पांच पंक्तियां मिलती हैं, शेष नहीं ।

३७

राग विहंग—

हर विन पलक न लागै मेरी, सां(स्यां)म बिन पलक न जागै मेरी ।।टेर।।
हरि बिन मथुरा असि लगत है, चंद बिन रैण अंधेरो ।१।।
पात पात बिंद्राविन ढुंढ्यौ, कुंज किलण[1] सब हेरी ।२।।
दिन ही न भूख र(रैंण)हण नही नीद्रा,तलफ तलफ रही हेरी ।३।।
मिरा(रा) के प्रभु गिरधर नागर, अब क्यूं भई अवेरी ।४।।

राज शो स. चौपासनी, जोधपुर के ह लि ग्रं. स. १६६७ से

स. पाठ—१. गलण ।

टिप्पणी मीरासुधासिंघु–पृ.२०३ पद सं. १२२ से उपर्युक्त पद की प्रथम तीन पंक्तियां मिलता हैं, किन्तु उनमे भी शब्दान्तर है। शेष दो पंक्तियां नहीं मिलती।

३८

हरि मारै आवन की कोई कहियौ रे ।।टेर।।
आप न आवे पतियां न भेजे, वाण पडी ललचावण की ।१।।
अं दोय नैन क्यौ नहि मांनें, नदीयां उलट गई सावन(ण) की ।।२।।
कहा करू कित जाऊं मोरि सजनी,पाख नही उड जावन(ण)की ।।३।।
मीरा कहै प्रभु गिरधरनागर, दासी भई तौरै पावन(ण)की ।।४।।

अनूप स. ला. लालगढ पेलैस, बीकानेर के ह. लि. ग्रं. सं ११३ से

टिप्पणी—मीरांसुधासिंधु पृ. १७५–१७६ पद सं. ४७ से इस पद की प्रथम तथा अन्तिम पंक्ति पूर्णतया नहीं मिलती ।

३६

हेली म्हासू हरि बिन रह्यौ न जाई ।।टेक।।
चौकी तो राखो भावे पहरा भी राखौ, ताला कांन जुडाई ।।१।।
वावल रूसौ भावै मायड रूसौ, वीरो जी परौरी रिसाई ।।२।।
सुसरो भी रूसो भावे सासू भी रूसो, खावद खरोरी रिसाई ।।३।।
चहूदिसा री सजनी सनमुख जोउ, कब रे मिलौगा हरि आई ।।४।।
मीरा के प्रभु राम सनेही, और न आवे म्हारी दाई ।।५।।

रा शो. स चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्र ं स. ८२६१ से

टिप्पणी —मीरांसुधासिंधु पृ ३६४ पद स ४३ से इस पद की अन्तिम पंक्ति पूरी तथा दूसरी पक्ति आधी नहीं मिलती ।

पाठान्तर—१

हेली मोमू हरि विनि रह्यौ न जाइ ।।टेक।।
सासू लडो री सजनी नणद खिजो रो, पीव क्यू न रहो रिसाइ ।।१।।
चौकी भी मेल्हौ सजनी पहरा भी राखौ,ताला(ला)क्यू न जडाइ ।।२।।
पूरव जनम की प्रीति हमारी सजनी, सो क्यू रहैरी लुकाइ ।।३।।
मीरां के नौ सजनी राम सनेही, और न आवे म्हारी दाइ ।।४।।

भारतीय विद्या मदिर, बीकानेर के ह.लि. ग्र. से

पाठान्तर—२

मजनी मोमू हर विन रह्यौ न जाय ।।टेक।।
सासू लडौरी सजनी नणद खिजोरी, पिव क्यूनी रहोरी आय । १।।
चौकी भी मेलौ सजनो पौहोरी भी राखौ, ताला क्यू नी जडाय ।।२।।
पूरव जनम की प्रीत हमारी सजनी, कैसे रहूं री लुकाय ।।३।।
मीरा कै नौ सजनी राम सनेही, और न आवै मारी दाय ।।४।।

राज शो स. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि. ग्र. सं. ७१४३ से

४०

राग देसी —

श्रीतुलसी सुख निधान दुख हरन(ण) गुसाई।
बार बार प्रना(णा)म लीखूं, अब हरो सोक समुदाई ।।टेर।।
घर के स्वजन हमारे जेते, सबन उपाधि बढाई।
साध सगत अरु भजन करत मोही, देत कलेस महाई ।१।
बालपना(णा) ते मीरा कीनो, गिरधरलाल मीताई।
सो तो अब छुटत नाहि, क्यूं हू[1] लगी लगन बरीयाई ।२।
मोर मात पिता के सम हो, हर भगतन सुखदाई।
हमको काहा उचत करबो है सो लीखीयौ समुदा[भा]ई ।३।
मीरा(रा) कहे प्रभु गिरधर नही छाडु, प्राण क्यूनि जाई।
एह पत्री मैं लीखी आप सूं, उतर लीखा गुसांई ।४।

सत साहित्य मंडल, बीकानेर के ह. लि. ग्र. से

स पाठ—१ क्यूं हो।

टिप्पणी—मीरासुधासिंधु पृ. ९९० पद सं १० से इस पद की अंतिम दो पंक्तियां नहीं मिलती। शेष पद मिलता है।

# पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तर

## परिशिष्ट—५

[ पृष्ठ सं० २५ पद सं० ४९ का पाठान्तर ]

पाठान्तर — १

अरो हू गोविंद सो अटकी, तकत भये दोउ द्रग मेरे ।।१।।
लख सोभा नटकी कर मुरली, कटि काछनी राजे दामन उत पटकी ।।२।।
विन गोपाल लाल सुन सजनी, को जा[नै]न घटकी ।।३।।
हू तो भटे सावरे के बसि, लोग जाने भटकी ।।४।।
मीरा(रा) गिरधर रसिक लाल, सग कुंज लटकी ।।५।।

रा प्रा वि प्र जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं. १८९० पत्रांक १५८-१५९

पाठान्तर—

राग रामकली।

गोविंद सौं अटकी री हू गोविंद सौं अटकी।
थकित भयौ दोउ द्रग मेरे, देखि छवी नटकी ।।टेक।।
हौं तो रंग सांवरे राचो, लोग कहै भटकी ।।१।।
बिना गुपाल लाल बिन सजनी, को जाने घटकी ।।२।।
कर मुरली कंकन अति राजत दुति दामने फटकी ।।३।।
लोक लाज कुल कानि बिसारे, ग्रह नर हौ अटकी ।।४।।
मीरा प्रभु जो कै संगि रहूंगो, कुज कुंज लटकी ।।५।।

रा प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह लि. ग्रं. स. १८८२ पत्रांक-५२ से

पाठान्तर—३                                  (राग रामकली)

गोविंद सो अटकी री हू गोविंद सो अटकी।
... .. .     . .. ....   .
अंग अग आभूखन(ण) राजत बनमाला छटकी ।।२।।

रा प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं.

[ पृ० स० १४, पद स० २७ के पाठान्तर ]

पाठान्तर—१

उधव म्हांनै लै चालो जी सावैरा कै देस ।।टेक।।
कवहु क छाडि मथरा नगरी, छाड्यौ नदजी को देस। १।।
तुमरी कारणि जोगणि ऊगी, करस्यां भगवा भेस ।।२।।
विभूति लगावूं गल म्रगछाला जटा वधावूं लावा केस ।।३।
मीरा के प्रभू ग्रि(गिर,धर नागर, मन मै(मे) घणा अने(न्दे)स ।।४।।

राज मो मं. चोपासनी जोधपुर के ह. लि ग्र स ८३९९ से

पाठान्तर—२

उधौ मांहा(म्हा) नै ले चालौ नी सांवरा रै देस ।।टेर।।
कबकी छोडी मथुरा नगरी, छोड्यो छोड्यो नंदजी रो देस ।।१।।
अग व(भ)भूत गलै(ल") अगछाला(ला),सिर पर लंबा केस ।।२।।
पगा खडाऊ वन विचरु, करगौ जौगिया कौ वेस ।।३।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, तन म तुंमारी पेस ।।४।।

राज. शो सं चौपासनी,जोधपुर के ह. लि ग्रं. सं १४५ से

पाठान्तर—३

उधो म्हानै ले चालौ नी सांवरा रै देस ।।टेर।।
तारै कारन(ण)वन वन डोलू , कर जोगन(ण) को भेस ।।१।।
अवद वदीती अजु न आए, पडर हुय गया केस ।।२।
है कोई असो प्रभु कूं मिलावै, तन धन मन करु पेस ।।३।।
मीरा कै है प्रभु गी(गि)रधर नागर, छोड्यो नार नरेस ।।४।।

राज. शो. सं चौपासनी, जोधपुर के ह लि. ग्रं सं १०८५१

[ पृष्ठ संख्या ४३, पद सख्या ८७ का पाठान्तर ]

राग सौरठ ।

देखौ हरि कित गया नेहडौ लगाय ।।टेर।।
छोड चल्या विसवासघाती, प्रेम की वात सुनाय ।।१।।
घायल कर निरमायल कीनी, खबर न लीनी मेरी आय ।।२।।
ऊंहे समद मैं छोड़ चल्या है, नेह की नाव लगाय ।।३।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, रह्या छै माधोपुर छाय ।।४।।

रा. प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह लि प्र सं १०८५१ से

[ पृ. स. ८७, पद स. १७७ के पाठान्तर ]

राग सोरठ ।

पाठान्तर—१

न द घर चेरी मे रहू बाबा, न द घर चेरी ॥टेक॥
चरण चेउ मे करू, बदगो चरणन चेरी ।
टैल कै मिस दरसन(ण) पाऊं, मुगत होइ मेरी ।१॥
लौक लाज कौल(कुल)काण तजकै, मगन होइ टेरी ।
मोहनजी का बदन ऊपर, वार हू फेरी ।२॥
सासु न[ण]द और देराणी, झे(जे)ठाणी सब मिल झगडी ।
मेरो मन लागौ रमतां राम सूं,बाला झख मारो सगरी ।३॥
कोई भली कहो कोई बुरी कहो रे, बाला मै मांड लैहू झोली ।
दासी मीरा लाल गिरधर, वण रही जौं [ह]री ।४॥

रा. प्रा वि प्र जोधपुर के ह लि ग्र. सं. १२५८६ से

पाठान्तर—२

नद घर चेरी रसू(स्यू ) बावा नद घरि चेरी ॥टेक॥
मात जसोदा को गोवर थाडु, पीवगो मेरो कवर कन(न्है)यो ।१॥
गोदे(द) खोलाऊ पावन की चेरी, कोटक न दो कोई ।२॥
कवंदी कोई कवदी सुरत हमे ही मोहनजी के वदन ऊपर वारी हो ।३॥
कोटे बुरा कहो कोटे भला कहो री, माड ल(ले)हो जोरी(झोली) ।४॥
दास मीरा लाल गी(गि)रधर, भली पवनो जोरो ।५॥

रा प्रा वि. प्र. जोधपुर के ह. लि. ग्रं. सं. १८९० से

पाठान्तर—३

हरि सू बावा न द घर चेरी ॥टेक॥
सांवरी सुरत पर मेरो मन अट्यो, ओर कछु न सहाव री ।१।
कोट काम नोछावर करहू, मद मंद मुसकाव री ।२।
जमना की तीर कदम की छइया, मुडी मुडी वेन वजाव री ।३।
मोर मुकट पीतावर सोहै, कुंडल झलकन आ[का]नरी री ।४।
मीरा(रा) के प्रभु गिरधरनागर, चरन(ण) कवल(ल) लपटावरी ।५।

रा प्रा. वि प्र. जोधपुर के ह. लि ग्रं. से

[ पृ. सं. ६६, पद सं. १४१ ]

मुज(भ) प्रेम म(मे) हरि करो जी।
हरि आवना(णा) हरि आवना(णा) जी मन भावना ।।टेक।।
मेरे द्रग तलफत द्रग देखन कु, गल कर दरस दिखायना ।१।।
लगी लगी सब कोई जानै, आव कहो कैसे छिपावना ।२।।
मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, यो औसर नहो पावना ।३।।

राज. शो. सं. चौपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं से

[ पृ० सं० ६६, पद सं० १४३ ]

मेरो प्यारो ननलाल[1] मुरली बजाय गयो बन में।
अजी बंसी की धुन सुन मै गई भूल, तन मन मोया मेरा प्राण ।१।।
अजी बण का मिरगला मोय लिया, अजी मोया सिंघ सियाल(ल) ।२।।
अजो व्रज की गोपी मोह लइ, अजी चदा मोया अकास ।३।।
अजी पाथर में पाणी बह गयो, जमना बही असराल ।४।।
अजी मीरा(रा) ने दरसण दे गयो, अजो वांका चिरण मे ध्यान ।५।।

पिलानी से प्राप्त हरजसों से

सं पाठ—१. नदलाल

[ पृ० सं० ७२, पद सं० १४८ ]

मैं तो छाडी छाडी कुल(ल) की कांनी [राणोजी] मेरो कहा करसी ।१।
सादा(धा)रे सग जासा दवारका मे,(म्हे)तो भजस्यां श्रीरणछोर(ड़)।२।
दोडि र(रै) जास्यां देऊरे, लेस्यो(लेस्यां) महा प्रसाद ।३।
पगा वजावे[स्या] घुघरा, हाथ में लेस्यो(स्यां) ताल(ल) ।४।
गास्यो (स्या) गुन(ण) गोपाल।
पीहर छाडो मेरतो, सासरायो चीतोर (ड ।५।
बीखरो प्यालो राणै जी भेजीयो, मैंतो इमंरत करि अरोग्यो ।६।
मीरां बाई ने गिरधर मिल्या, वह तो भगत वछिल प्रीत पाल(ल्) ।७।

रा प्रा वि. प्र जोधपुर के ह. लि. प्रं. से

[ पृष्ठ संख्या ७६, पद संख्या १६० का रूपान्तर ]

म्हे जास्या[सा]वरीया र साथ वाई म्हान(नै) जगत हंसी है ।
जगत हसै हसि जाणदे री टहैल करा जाय ।।टेक।।
माधुरी मुरति हिरदै वसी, म्हाने चित मे रही है लुभाय ।१।।
लोग कटुवो निंदवे री, लगी प्रीत न घटाय ।२।।
जब देखा तब ही सुख उपजै, विनि देख्या जीव जाय ।३।।
सास ननद देली वोलिबो, म्हांना[णा]मात पिता पिछताय ।४।
मीरा[रा] प्रभु गिरधर नी दासी, अबकै रऊं वारि ।।५।।

रा प्रा. वि प्र जोधपुर के ह. लि. ग्रं. से

[ पृष्ठ सख्या ८४, पद संख्या १७१ का रूपान्तर/पाठान्तर ]

राधे वसि कीनो हो स्याम सुजांन ।
धन जी रानी कुखि तुमारी,धन जी पोता वृखभान[ण] ।।टेक।।
सुनो रग वेली राज गेहली,कहा कीया जी पुन दान(ण)।।टेक।।
सोवा जी सागर रुप उजागर, अखीया मैं जान विजान ।।टेक।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,दीज्यो जी भगत मोहि दान ।।टंक।।

रा. प्रा. वि प्र जोधपुर के ह लि. ग्र. स. १८६० से

भाव वाले पदों का रूपान्तर/पाठान्तर [पृ० ६६, पद स० २०२]

फगवा दै गिरधारी हमारौ ।।टक।।
गहबन मान भौंह करि वाकी, मांगत राधा प्यारी ।१।।
नीची द्रिस्ट किये छुटि हो, क्यो कहू कुंज बिहारी ।२।।
कै तौ देऊ नाहि तो अब ही, निकसै अंड तिहारी ।३।।
मैं तन हाहा खात मनोहर. रग चढयौ अति भारी ।४।।
जिन मीरा रस की भगरनि पर,निरखत होत वलिहारी ।५।।

रा शो. सं. चोपासनी, जोधपुर के ह. लि ग्रं स. १०६७ से

★★★

# पदों के आधार पर मीरां की आत्मकथा का अन्वेषण

## परिशिष्ट—६

मीरां का जीवनवृत्त और काव्य, सम्प्रति अत्यन्त विवादास्पद रहे है। इसका कारण मीरां के जीवनवृत्त सम्बन्धी प्रामाणिक उल्लेख का उपलब्ध न होना तो है ही साथ ही मीरां की प्रामाणिक पदावली अभाव मे भी यह समस्या जटिल हुई है। मेरी यह धारणा है कि मीरा अपने पदो मे आज भी सजीव है। मीरा लोकनिधि है अत उनकी वास्तविक खोज भी लौकिक सामग्री में ही होनी चाहिए। लोकमान्यताओ, लोकवार्ताओ किवदन्तियो तथा लोक-काव्य एव मीरां के पदो मे मीरा व्याप्त है। आवश्यकता इस बात की है कि उस सम्पूर्ण सामग्री का चयन कर, उसमे से प्रामाणिक सामग्री अलग की जाय तथा शेष भक्त-समाज के मनोरजन के लिए छोड दी जाय। इसी दृष्टि को ध्यान मे रख कर प्रस्तुत पदो को सकलित किया गया है। किसी भी साहित्यकार अथवा भक्त के जीवन पर प्रकाश डालने वाले दो ही प्रकार के तथ्य हो सकते हैं—एक आंत-रिक और दूसरा वाह्य। मीरा के पदो के इस आतरिक साक्ष्य से बहुत सी नई सामग्री उपलब्ध होती है। इन पदो को देखने से ज्ञात होता है कि मीरा के जीवन-वृत्त पर इनसे नवीन प्रकाश पडता है तथा कुछ ऐतिहासिक तथ्यो की पुष्टि होती है।

मीरा अपने आराध्यदेव श्रीगिरधर नागर के भक्ति-रस मे रगी, भाव-विभोर हो परिचयात्मक ढग से गा उठी—

म्हारे हीरदे लीख्यो जी हरी नाम, अब नही वीसरु।<br>
म्हारी सेवा मे सतगुरु राम ।।टेग।।<br>
वीसका प्याला राणोराई भेज्या, दे मेड़तणी रे हाथ।<br>
करी चरणाम्रत पी गई, थे जाणो रे रगुनाथ ।।१।।<br>
जा य दासी म्हल मे जोरे, मीरा मुई क नाही।<br>
मुई वे तो जाल दो जी, न तो नदी मे दो जी बुहाई ।।२।।<br>
पावां बाद्या मीरा गुगरा जी, हाता लीनी ताल।<br>
मीरां महल में ऐकली जी, भजे राम गोपाल ।।३।।

राणो मीरा परी कोपीयो जी, मारु ऐकण सेल।
लाछण लागै जीव कु, पीहर दीजो मेल ॥४॥
मीरां महल सु उतरी जी, राणा पकडयो हात।
हतलेवा का साईना, मारे ओर न दूजी बात ॥५॥
रत वेल्या सीणगारिया, ऊटा, कसीया भार।
डावो मेल्यो मेरतो जी, पहली पोकर जाई ॥६॥
साडीड़ा साड्यो पोलाण, जा रे मीरा पाची फैर।
कुल की तारण असतरी, मुरड़ चर्ला राठौड़ ॥७॥
साडीड़ा साड्यो फैर दे रे, परत न देमु पाव।
ले जाती बैकुट में, समज्या नही सीसोद ॥८॥
लाजै छे पीयर सासरो मीरां, लाजे छै माय मोसाल।
लाजै दूदा जी रौ मेरतो जी, लाजै गढ चीतौड ॥९॥
तारु पीयर सासरौ जी, तारु माय मौसाल।
तारु दुदा जी रो मेरती जी, तारु गढ चीतौड़ ॥१०॥
लक्षमीनाथ के देवरे जी, बैठो सीसोदया साथ।
मीरां नाचे एकली जी, छाडी कुल की लाज ॥११॥
साघ हमारा मै साध की, हम हे साधा आग।
साघ हमारे मे रम रया, ज्यु पथरी मे आग ॥१२॥
मीरां को पीयर मेडतो जी, सासरियो चीतौड़।
मीरां ने गीरधर जी मिल्या, नागर नद किसोर जी ॥१३॥

इस पद से मीरा के जीवनवृत्त भक्ति, उपास्यदेव तथा साधु-सतो के प्रति श्रद्धा और प्रेम का पूर्ण परिचय हमे मिलता है। उपर्युक्त पद की प्रथम दो पक्तियाँ पूर्णरूपेण मीरा के भक्तिपूर्ण उद्‌गार ही हैं, किन्तु पद के अत तक आते आते लगता है जैसे यह पद संवादपूर्ण वन गया है और इसमे प्रक्षिप्त अश का समावेश हो गया है। इस कारण इसकी प्रामाणिकता सदिग्ध भी हो जाती है। किन्तु, इतना अवश्य समझा जा सकता है कि इस पद के निर्माणकाल तक, लोकमानस मे मीरा का यही स्वरूप और परिचय था। इस पद के ग्रंथ का लिपिकाल विक्रमी सवत् १८६६ है अत सवत् १८६६ तक का मीरा का यह परिचय सिद्ध होता है।

उपर्युक्त पद से यह ज्ञात होता है कि मीरां के हृदय में हरि का नाम अंकित हो गया है। मीरा के ये हरि, उसके उपास्यदेव 'गिरधरनागर' अथवा 'गिरधर-गोपाल' श्रीकृष्ण ही हैं, किन्तु अपने आराध्य स्मरण मे मीरा संकीर्ण नही है वह उन्हे हरि और राम दोनों ही रूपो मे स्मरण करती हैं। यह हरि-स्मरण मीरां की आदर्श भक्ति का द्योतक है। साथ ही मीरा के 'सतगुरु' भी वे राम ही है अर्थात् हरि (विष्णु) के दूसरे अवतार। इससे यही ज्ञात होता है कि मीरा के उपास्यदेव अथवा आराध्यदेव ही गुरु थे। मीरा ने अलग से किसी लौकिक सत्-पुरुष को अपना गुरु नही बनाया। हरि के दो रूपो-राम और कृष्ण मे मीरा ने कभी भेद नही समझा, इसी कारण ये दोनो शब्द मीरा के पदो मे बार बार एक ही के पर्यायवाची शब्दो के रूप मे आए है। यहा भी 'सतगुरुराम' कह कर मीरा अपने आराध्य की ओर ही संकेत करती हैं। अनेक नामो से भी वह अपने गिरधर को ही भजती हैं। श्रीमद्‌भागवत आदि पुराणों मे श्रीकृष्ण ने स्वयं भक्ति को ऐसी स्थिति बताई है जब भक्त के प्रभु ही उसके गुरु होते हैं। यहा मीरा भी अपने सतगुरु का स्पष्ट उल्लेख करती है। इससे मीरां पर किसी गुरु का आरोपण असत्य ही ज्ञात होता है।

प्रस्तुत पद से ज्ञात होता है कि दूदा जी के मेडते और 'सिसोदियो' के गढ़ चितौड से मीरां का कोई सम्बन्ध है। चितौड के सिसोदिया राणाओ की वह 'कुल की तारण अस्तरी' है। 'राणा-राई' ने विषका प्याला भेजा था मीरा को मारने के लिए, क्योंकि मीरां ने लोकलाज छोड़ कर 'पाव गुगरा बांध' कर, हाथो मे ताल लेकर, राम-गोपाल को भजा था। मीरा चितौड मे 'मेडतणी' के नाम से प्रसिद्ध है, तभी तो उसे मेडतणी के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

मेड़ता मीरा का पीहर है और चितौड ससुराल है। मेवाड और मेडता के इन दोनो कुलो से मीरा सम्बन्धित है। मेड़ता, दूदाजी के मेडता के रूप मे और चितौड, 'सीसोदिया' राणाओ के गढ चितौड के रूप मे प्रसिद्ध है। मीरा को उसकी साधु-संगति, लोकलाज छोड, पग घुंगरू बांध कर नाचने के कारण, मारने का प्रयास किया गया। मारने के इन प्रयासो मे विष का प्याला भेजना और एक ही 'सेल' (अस्त्र विशेष) से मार डालने के प्रयत्न शामिल है। विष के प्रभाव से मीरा बच जाती है और 'रथ और बैल्यों' मे बैठ कर तथा ऊंटो पर सामान बंधवा कर अपने पीहर (मेड़ता) की ओर चल देती है। इस समय मीरां सीधी

मेडता न जाकर, पहले प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर (पोकर) जाती है, इस कारण मेडता मीरा के बाईं ओर रह गया है (डावो मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई)।

पद के इस सकेत से मीरां के पुष्कर की तीर्थ यात्रा की पुष्टि होती है। मीरा के चितौड त्याग करने पर 'ऊट सवार' को मीरां को वापस लिवा लाने को भेजा जाता है, किन्तु मीरा स्पष्ट कह देती है कि वह पीछे पाव नही रखेगी। इस पर उस ऊट-सवार ने उसे बहुत समझाया कि आपकी इन वातो से आपके पीहर और ससुराल दोनो अपमानित और लज्जित होते हैं। आपका पीहर दूदा जी का मेडता है और ससुराल गढ चितौड है।[1] मीरा का उत्तर है कि मैं पीहर और ससुराल दोनो को लज्जित करने के बजाय 'त्यार' दू गी अर्थात् गौरव प्रदान करू गी।

प्रस्तुत पद मे तत्कालीन आवागमन के साधनो का अत्यत सजीव वर्णन है। 'रथ और वैलो' के साथ ऊट - सवार उन दिनो राज-परिवार की महिलाओ के, एक स्थान से दूसरे स्थान जाने पर, प्रयोग किए जाते थे। मीरा भी कभी अकेली नही गई, उसके साथ भी पाच दस आदमी अवश्य थे।

चितौडगढ मे महाराणा कुंभा का बनाया हुआ वराह का मंदिर है जिसे अब तक मीरा का मदिर कहा जाता रहा है और उसी को आधार बना कर मीरा को कुंभा की पत्नी मानने का प्रयास भी हुआ है।[2] किन्तु मीरां के पदो से यह स्पष्ट है कि वह मदिर लक्ष्मीनाथ के मदिर के रूप में, मीरा के समय प्रसिद्ध था। उसी लक्ष्मीनाथ के मदिर (देवरे) मे मीरा ने अपने प्रभु के भक्ति–गान गाये हैं।

मीरां ने अपने पदो मे स्पष्ट रूप से कुभ स्याम के (कुभ स्वामी) के देवरे (देवस्थान मदिर) का उल्लेख किया है। इसम यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि चितौड-स्थित यह मदिर मीरांबाई का मदिर नही है, यह कुभस्वामी का मदिर है जो वि० स० १५०५ से पूर्व बन चुका था[3]। अर्थात् मीरां के जन्म (वि०स० १५५५) से कई वर्ष पूर्व।

हा, यह सभव है कि मीरां इस मदिर मे बैठा करती हो। भजन-भाव, श्रवण, कीर्तन करती रही हो। क्योकि यह इतिहास का सत्य है कि भक्त रैदास जव चितौड गए थे तव इसी कुंभस्वामी के मदिर मे झाली रानी ने उनके दर्शन

किए थे। इस सम्बंध के प्रमाण रूप मे रैदासजी के पैरों के चिह्नों का चबूतरा इसी मंदिर के दालान मे बना हुआ है।

मीरा के पदो को देखने से एक समस्या जटिल हो जाती है कि पदों में वर्णित यह राणा कौन है? क्या यह 'राणा' मीरा के ससुर महाराणा सागा हो सकते हैं? अथवा कोई जेठ है अथवा देवर है अथवा मीरा के पति है? ये राणा मीरा के पति नही हो सकते क्योकि इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि—मीरां के बडे पिता (बाबोसा) राव वीरमदे दूदावत ने वि० स० १५७३ मे मीरां का विवाह चितौड के महाराणा सागा रायमलोत के ज्येष्ठ पुत्र युवराज भोजराज से किया था। विवाह बड़ी धूमधाम से किया गया था। महाराणा सागा स्वयं अपने विक्रम हाथो के साथ मेडता गए थे। मीरा के विवाह–अवसर पर इतना बडा 'तोरण' बनाया गया था कि उस पर ३०० दीपक रखे जा सकते थे। मीरा का यह 'तोरण' कुछ वर्षो पूर्व तक मेड़ता के चारभूजा के मदिर मे सुरक्षित था।

विवाह के कुछ वर्ष पश्चात् ही युवराज भोजराज का देहात हो गया था। अत. उन्हे 'राणा' शब्द से सम्बोधित नही किया जा सकता। मेवाड मे 'राणा' केवल शासक के लिए ही प्रयुक्त होता है। भोजराज सागावत कभी मेवाड के राणा नही रहे अत यह 'राणा सम्बोधन युवराज भोजराज के लिए नही हो सकता।

३. "कुभस्वामी और आदिवराह के दोनो विष्णुमदिर चितौड मे एक ही ऊंची कुर्सी पर पास पास बने हुए हैं। एक बहुत ही बडा और दूसरा छोटा है। बड़े मदिर की प्राचीन मूर्ति मुगलो के आक्रमणो के समय तोड़ डाली गई, जिससे नई मूर्ति पीछे से स्थापित की गई है। इस मदिर का भीतरी परिक्रमा के पिछले ताक मे वराह की मूर्ति विद्यमान है। अब लोग इसी को कुभस्वामी (कुभस्याम) का मदिर कहते हैं। लोगो मे यह प्रसिद्धि हो गई कि बडा मदिर महाराणा कुंभा ने और छोटा उसकी रानी मीराबाई ने बनवाया था, इसी जनश्रुति के आधार पर कर्नल टॉड ने मीराबाई को महाराणा कुभा की रानी लिख दिया है, जो मानने के योग्य नहीं है। मीराबाई महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज की पत्नी थी। उक्त बड़े मदिर के सभा–मण्डल के ताको मे कुछ मूर्तियां स्थापित हैं जिनके आसनो पर वि० सं० १५०५ के कुंभकर्ण के लेख हैं, जिनसे पाया जाता है कि वह मदिर उक्त सवत् मे बना होगा। उदयपुर का इतिहास, ओझा—पृ० ६२२)

यदि यह मीरा के ससुर, जेठ अथवा देवर के लिए है तब भी ठीक नहीं है क्योंकि वे मीरा के 'हथलेवा के साईना' कैसे हो सकते है ? मीरा के 'हथलेवा के साईना' तो भोजराज ही हो सकते हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि यह शब्द मीरा के ससुर अथवा जेठ के लिए है तो एक प्रश्न उठता है कि मर्यादा का पोषक मेवाड़ का महाराणा, अपनी पुत्रवधु का हाथ पकडने की भूल कैसे कर सकता है ?

अत. यही कहा जा सकता है कि या तो यह राणा शब्द दो भिन्न भिन्न व्यक्तियो के लिए है अथवा यह पंक्ति प्रक्षिप्त मानी जाय तो यह महाराणा विक्रमादित्य के लिए संभव हो सकता है। महाराणा विक्रमादित्य सागावत, जो महाराणा रतनसी सागावत के पश्चात् मेवाड की राजगद्दी पर बैठे थे। एक तो वे ऐसी ही विकृत प्रकृति के राणा के रूप मे इतिहास मे प्रसिद्ध हैं दूसरे वे मीरा के देवर भी थे अत उनके लिए मीरा का हाथ पकडना भी सभव हो सकता है। अन्यथा न तो महाराणा सागा रायमलोत ही ऐसा कार्य कर सकते है जो स्वय मीरा को पुत्रवधू बना कर लाए थे और न ही उनके बाद महाराणा बनने वाले रतनसी सागावत ही। महाराणा रतनसी सांगावत न मेवाड़ पर बहुत ही अल्प समय (वि० स० १५८४ से १५८८) तक शासन किया था और इस समय भी वे आतरिक कलह मे फँसे रहे और अत मे अपने मामा के साथ ही युद्ध करते हुए मारे गए। उन्हे न तो मीरां को सताने का अवसर मिला होगा और न ही वे महाराणा विक्रमादित्य जितने इतिहास मे अपकीर्ति को प्राप्त हुए है। महाराणा रतनसी के बाद विक्रमादित्य राणा हुए और इनके बाद राजकुमार पृथ्वीराज रायमलोत का दासी पुत्र बणवीर महाराणा हुआ। बणवीर, दासीपुत्र कभी साहस नही कर सकता कि वह मीरा को सतावे ! बणवीर के पश्चात् उदसी [उदयसिंह] सांगावत मेवाड़ के महाराणा हुए। महाराणा उदैसी सागावत मीरा के चचेरे भाई जैमल वीरमदेवोत का बहुत सम्मान करते थे तथा धार्मिक वृत्ति[४] के महाराणा थे अत उनसे भी मीरां को सताने की आशा नही की जा सकती। इसके विपरीत उन्होने तो महाराणा बनते हो मीरां को मेवाड़ लाने हेतु अपने आदमी द्वारिका भेजे थे।

इस शब्द पर (समय को ध्यान मे रख कर) विचार करें तो भी ज्ञात होगा कि मीरां अन्तिम रूप से वि० स० १५६० तक चितौड में रही थी, इसके पश्चात् वह मेड़ता लौट गई थी। इस बात की पुष्टि बाह्य और आंतरिक साक्ष्यों

दोनों से होती है। बाह्य साक्ष्य से ज्ञात होता है कि वि० सं० १५९१ में मेवाड का द्वितीय शाका (जौहर) हुआ था जबकि गुजरात के बहादुरशाह ने दूसरी वार चित्तौड़ पर आक्रमण किया था। इस समय हुए जौहर मे हाडी कर्मावती के साथ चितौड दुर्ग की समस्त स्त्रियो ने अपने प्राण अग्नि को समर्पित किए थे। कहते है इस समय १३०० स्त्रियो ने इस 'शाके' मे भाग लिया था। कोई भी स्त्री जीवित नही वची थी।[५] यदि मीरा इस समय चितौड मे होती तो उसे भी जौहर करना होता। अत. इससे पूर्व ही मीरा ने चितौड त्याग कर दिया था और वह मेड़ता चली आई थी।

मीरा के पद भी इस बात के द्योतक हैं कि जबसे उसे सताना आरम्भ किया गया उसके बहुत थोडे ही दिनो तक वह चितौड मे रही। अपनी व्यथा अपने बडे पिता तक वह भेजने लगी थी—

सासरीया मे दुख्ख घणेरो, सासू नणद सतावै।
केजौ म्हारा बाबोसा ने, वेगा लेबा आवै॥

अपनी पुत्री के इस करुण आमत्रण पर राव वीरमदे स्वयं चितौड़ गए थे। इसो समय उन्होने महाराणा विक्रमादित्य को भी बहुत समझाया था, किन्तु उनकी बात न माननें पर वे मीराबाई को लेकर मेडता चले आए और वि० स० १५९१ मे बहादुर शाह द्वारा आक्रमण करने पर भी वे चितौड़ नही गए। जब कि इससे पूर्व के सभी युद्धो में वे महाराणा की सहायतार्थ गए थे।[६]

राव वीरमदे दूदावत और उनके परिवार को, राणा परिवार द्वारा मीरां के साथ ऐसा व्यवहार करने पर अत्यन्त प्रायश्चित् हुआ था, जिसकी प्रतिध्वनि मीरा के इन पदो में मिलता है—

सास नणय दे लीवो लीवो म्हाना मात पिता पछताय।

मीरा को भी चितौड के इस व्यवहार से अत्यन्त दुख हुआ था तभी तो कहती है—

मारा पियरीया रो लोक भले रो बांधे कठीमाला

चितौड़ मे मीरा के साथ जो व्यवहार किया गया उसके कारण चितौड़ त्याग ने के अतिरिक्त उसके पास और कोई चारा नही था। मीरा ने इसे अपने पदो में भी स्थान दिया है—

गढ़ चितौड़ ना रेवां, नहीं रहण को जोग

मीरा किसी भी किम्मत पर चितौड़ रहना नही चाहती थी। अत उसे चितौड तो छोडना था पर चितौड़ छोड़ने के पश्चात् वह कहा जाय यह उसके समक्ष प्रश्न था। इसके दो ही रास्ते हो सकते थे--

१. या तो वह अपने पीहर मेडता लौट जाय, अथवा
२. अपने प्रभु के लीला-स्थलो के दर्शनार्थ चल दे।

मीरा के प्राप्त पदो से दोनो ही ध्वनिया और स्पष्ट सकेत मिलते हैं, किन्तु पदो के आधार पर यह निर्णय करना कठिन है कि मीरां चितौड से सर्वप्रथम कहा गई—पीहर, पुष्कर, वृंदावन अथवा द्वारिका ?

## मीरां का मेड़ता-गमन—

सबसे पहली सभावना यही है कि मीरां अपने बड़े पिता के पास मेड़ना ही लौट गई थी और मेडता जाते हुए पुष्कर - स्नान करती गई होगी। इस बात की पुष्टि मीरां के पदो और इतिहास से भी होती है।[७]

विभिन्न कष्टो से तंग आकर मीरां ने अपने बडे पिता[८] को अपनी करुण कथा कहलवाई (जिन्हे राजस्थान में बाबोसा कहा जाता है क्षत्रिय-समाज मे विशेपकर) तथा राजस्थान मे लड़की का बाबोसा की लाड़ली होना अत्यधिक प्रसिद्ध है। प्रत्येक कन्या अपने दादा और बाबोसा की लाडली होती है। यह परम्परागत प्यार मीरां को भी प्राप्त हुआ था। उसने बाबोसा को बडे करुण स्वर मे कहला भेजा कि मुझे लेने शीघ्र आ जावे। इसी सदेश के मिलते ही राव वीरमदे दूदावत चितौड़ पहुच गए और मीरा को मेडते ले आए। यह घटना वि० स० १५८९ की है जबकि राव वीरमदे गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के प्रथम चितौड़-आक्रमण के समय चितौड की रक्षार्थ गए थे।

मीरा वि० सं० १५९० तक मेडता में रही। मेड़ता मीरा को अत्यन्त प्रिय रहा है। उसके पदो में बार बार इस बात का उल्लेख मिलता है। मेडता के भक्ति पूर्ण वातावरण और सीधे सादे श्रद्धालु लोगो से मीरा को बडा स्नेह था। तभी वह बार बार कहती है—

१. म्हारा पियरीयारी बातां सतगुरु कैता जाज्यो
२. मारा पीयरीया री लोक भले रौ बाधे कंठीमाला

मीरां के इन पदो से भी यही सकेत मिलता है कि चितौड़ की दुखी मीरा अपने प्रिय मेड़ते अवश्य गई थी। मीरा के पदो का यह उल्लेख कि—

'झावो मेल्यो मेरतो, पहली पोकर जाई'—भी मीरां की मेडता यात्रा की ही पुष्टि करता है। मेडता आने से पूर्व मीरां तीर्थ-स्थल पुष्करराज जाती है और तत्पश्चात् मेडता पहुचती है, यही सकेत प्रस्तुत पद का है।

मीरा के मेड़ता आगमन के कुछ समय बाद ही मारवाड के स्वामी राव मालदे गागावत ने मेड़ता पर आक्रमण कर दिया और राव वीरमदे दूदावत को मेड़ता छोड़ कर अजमेर जाना पडा।[८] अजमेर राव वीरमदे, सपरिवार गए थे अतः मीरा भी मेड़ता से उनके साथ अजमेर आ गई थी। राव वीरमदे दूदावत अजमेर एक वर्ष ही रह पाये थे कि राव मालदे ने अजमेर पर भी अधिकार कर लिया।[९] तब राव वीरमदे दूदावत नरणा और अमरसर की ओर चले गये।[१०] इसी समय मीरां वृंदावन की ओर गई होगी। मीरा के वृंदावन गमन की सूचना उसके पद देते है—

'रायघाट सब ढूढ फिरि। वृदावन मेरौ सांवरियौ'
जब मीरां को यह अनुभव होने लगा कि उसका सावरा वृंदावन मे है तब वह घर से निकल पडी।

'घर से निकसी' (घर से निकलते ही) 'मौकु छीक भई' अपशकुन हुआ किन्तु दूसरी ओर 'आगे वान सुनावै कागरिया'। इस शुभ शकुन के मिलते ही मीरां वृंदावन को चल दी। जब वह वृदावन घूम चूकी तब उसने कहा—

वृदावन नीजधाम। देख्यौ री मैं वृदावन नीजधाम।
श्री जमुना ज्याकै नीकट बैहत है सब विध पूरण काम।
श्री बलदेव माहावनौ गोकल मथुरा जो विच राम।
गोवरधन श्री माणसी गंगा वरसाणौ नद गाम।
कुंज कुंज मैं कथा वसत है, नीस दिन आठु याम।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, संतन के वीच राम॥

इन पदो के सजीव वर्णनो से भी मीरां की वृंदावन यात्रा की पुष्टि होती है। साथ ही कुछ भक्तो ने भी मीरा की वृंदावन यात्रा की पुष्टि की है।[११] आधुनिक साहित्यकारो मे से कुछ इस यात्रा को स्वीकार करते हैं।[१२]

वृदावन की तीर्थयात्रा करने के पश्चात् मीरां द्वारिका लौट जाती है जहां अपने जीवन के अतिम समय तक वह रहती है।[13] मीरा का द्वारिका गमन वि० सं० १५९७ तक हो गया था। सभी इतिहासकार, साहित्यकार एव धार्मिक व्यक्ति इस बात से पूर्णतया सहमत है कि मीरा अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे द्वारिका मे थी और वही उसने इस लौकिक देह का त्याग किया था। मीरां के पदो से भी इस बात की पुष्टि होती है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि क्या मीरां चितौड़ से सीधी द्वारिका गई थी अथवा पुष्कर, मेड़ता और वृंदावन जाने के पश्चात्। मीरा के कुछ पद ऐसे उपलब्ध हैं जिनसे मीरां के चितौड़ से सीधे द्वारिका जाने के संकेत मिलते हैं—

१. गढ चितौड़ै ना रहां, नही रहण कौ जोग
   बसस्यां रुड़ी द्वारिका : जांहां हरि भगता राभोग ॥
२. सादां रै संग जाय दवारका मे तो भेजस्यां श्रीरणछोर।
   दोडि र जास्यां देउरे। लेस्यूं महाप्रसाद
३. मीरा उतरया मेल सूं जी। लीवी दवारका री बाट ॥

कुछ आधुनिक साहित्यकारो की भी यही धारणा बन गई है कि मीरां चितौड़ से सीधी द्वारिका गई थी। वृंदावन आदि स्थानों को वह नही गई।[14] किन्तु अंत. और बाह्य साक्ष्यो से इस बात की पुष्टि होती है कि मीरां पुष्कर, मेडता और वृदावन के पश्चात् ही द्वारिका गई थी।

इतना होते हुए भी मीरां का एक पद ऐसा है जिससे मीरां की सभी तीर्थयात्राओ के प्रति संदेह किया जा सकता है—

मेरा राम ने रिझाऊं अजी मैं तो गुण गोविन का गाऊं।
डालपात के हाथ न लाऊं ना कोई विरछ सताऊं।
पान पान मे सायव देखूं झुक करि सीस निवाऊं।
गगा जाऊ न जमना जाऊं ना कोई तीरथ नाऊं।
....... ......... ....... ....... ....... . . ..... ..
अडसट तीरथ भरया घट भीतर जामे मलमल न्हाऊ।
..... ... .......................... . . ................ .. ....

साधू हौऊ ना जटा बधाऊं ना कोई राख रमाऊं ।

ग्यान कटारी कस कर बाधू सुरतां म्यांन चढाऊं।

पार विरम पूरण पुरसोतम व्यापक रूप लखाऊं ।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर आवागमण मिटाऊं ।

यह इतिहास सम्मत तथ्य है कि मीरांबाई जोधपुर के संस्थापक राव जोधा जी रिडमलोत के पुत्र राव दूदा जी मेडतिया के पुत्र रतनसी दूदावत की पुत्री थी। राव दूदा जी जोधावत ने ही अपने भाई वरसी जोधावत के साथ वि० सं० १५१८–१६ मे मेड़ता मे मेडतिया शासन स्थापित किया था।[१५] अत: कालातर में कई वर्षों तक मेड़ता दूदा जी के मेडता के नाम से जाना जाता रहा है। मेडतिया राव दूदाजी के ५ पुत्र थे —(१) राव वीरमदे, (२) रायमल, (३) रतनसी, (४) रायसल और (५) पीचाण जी।

इतिहास साक्षी है कि मेड़ताधीश राव दूदा जोधावत की वि० स० १५७२ में मृत्यु हो जाने पर, उनके ज्येष्ठ पुत्र राव वीरमदे दूदावत मेड़ता के शासक हुए।[१६] राव दूदो जी जोधावत के पुत्र अर्थात् राव वीरमदे दूदावत के अनुज,रतनसी दूदावत की कन्या ही मीरांबाई थी। इस तरह मेड़ता के राव वीरमदे दूदावत मीरां के बडे पिता हुए अर्थात् पिता के बड़े भाई। राजस्थान मे पिता के बडे भाई को 'बाबोसा' कहा जाता है।

इस बात की भी इतिहास पुष्ठि करता है कि मीरां के पिता रतनसी दूदावत, मेवाड के महाराणा सांगा और मुगल सम्राट बाबर के बीच हुए, इतिहास प्रसिद्ध खानवा के युद्ध में महाराणा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए थे।[१७] खानव का यह युद्ध विक्रमी सम्वत् १५८४ मे हुआ था।[१८] चू कि मीरांबाई का विवाह वि० स० १५७३ मे हुआ अत: यह युद्ध मीरां के विवाह के ११ वर्ष बाद हुआ था। इस समय तक मीरां विधवा हो चुकी थी।

इतिहास इस बात को भी स्वीकार करता है कि मेडता के राव वीरमदे दूदावत को महाराणा सागा रायमलोत की बहन ब्याही गई थी और इस तरह चितौड़ मेडता के स्वामी राव वीरमदे दूदावत की ससुराल थी और महाराणा सांगा रायमलोत उनके साले थे। इसी कारण उन्होने महाराणा सांगा रायमलोत

की जीवनपर्यन्त, प्रत्येक युद्ध मे सहायता की थी। यहां तक कि महाराणा के जीवन के उस अन्तिम युद्ध (खानवा) में भी मेड़तिया राव वीरमदे दूदावत ४००० सैना लेकर अपने दोनो छोटे भाईयो, रतनसी और रायमल के साथ महाराणा की सहायतार्थ गये थे जबकि महाराणा सांगा के जवाई (पुत्री के पति) मारवाड़ के स्वामी रावगांगा बाघावत उस युद्ध मे नही थे। इसी युद्ध मे राव वीरमदे दूदावत के दोनो भाई (रतनसी और रायमल) वीरगति को प्राप्त हुए थे।

इन्ही राव वीरमदे दूदावत सहित पांचो भाईयों के बीच सबसे बड़ी कन्या मीराबाई थी। अतः उन्हे बड़े लाड प्यार से पालापौषा गया था। मीरा का बचपन अपने यशस्वी दादा राव दूदा जोधावत की स्नेहमयी गोद में बीता था। अभावो से दूर राज वैभव और दुलार प्यार मे पली मीरां, लौकिक दुर्भाग्य भी अपने साथ लाई थी। इस कारण मीरा को लौकिक सुख कभी प्राप्त नही हो सका। मीरा के जन्म के कुछ समय पश्चात् ही मीरा की माता का स्वर्गवास हो गया, जब वह विवाह के योग्य हुई तब अर्थात् वि० स० १५७२ में उसके दादा राव दूदा जोधावत की मृत्यु हो गई। विवाह होने के कुछ वर्ष पश्चात् ही उसके पति इस संसार मे नही रहे। उसके लौकिक पति उसके सभी सासारिक आनन्दो की इतिश्री कर, उसे वैधव्य दे गए। मीरा अभी इस कष्ट को भूल भी न पाई होगी कि उसकी ससुराल के पितातुल्य ससुर महाराणा सागा और मीरा के पिता और पिता के भाई (रायमल) की मृत्यु लीला ने मीरा को अत्यधिक दुखी कर दिया। इस प्रकार एक एक करके मीरा के सभी सहारे इस दुनियां से चले गए। केवल एक सहारा बचा और वह भी पीहर मे, राव वीरमदे दूदावत का।

चितौड मे महाराणा सागा के समाप्त होते ही मीरांबाई के दुर्दिन प्रारम्भ हो गए। महाराणा सागा की मृत्यु होते ही मीरां को अपमानित, प्रताड़ित कर कष्ट दिए जाने लगे जिसकी पराकाष्ठा महाराणा सागा के द्वितीय उत्तराधिकारी उन्ही के पुत्र महाराणा विक्रमादित्य सागावत के शासन काल मे हुई। अपने कुकर्मो के लिए इतिहास में कुख्यात महाराणा विक्रमादित्य ने अपनी भाभी को कष्ट देने मे कोई कमी नही रखी, जिसकी लम्बी विथा मीरा के पदों मे वर्णित है। यद्यपि इन पदो मे कुछ अतिशयोक्ति, किंवदन्ती अथवा अप्रामाणिकता हो सकती है किन्तु सर्वथा मिथ्या सकेत, ये नही हो सकते। मीरां के पदो मे पुन: पुनः उल्लेख है, मीरा को सताने, विष देने का—

१. वीसरा प्याला राणो राई भेज्या, दे मेड़तणी रे हाथ ।

२. मीरां ने जहर इ ंम्रत कर पीयौ

३. कनक कटौरे विष घोलियौ, दीयौ मीरां के हाथि

४. राव राना जहर दीन्या अधिक सौभा लसी

५. प्याला मे वीष घोल दिया है, पीया है नीजदासी

६. कनक कटौरा मे इमरत भर्यो, पीवत कौन नटै ।

७ कनक कटौरे लै विष घोल्यौ, दयाराम पाड्यो लायो ।

८. राणो मीरां पर कौपीयो जी, मारु एकण सेल

इसी प्रकार—

'राणा' के साथ-साथ श्वसुर - परिवार के अन्य लोगो ने भी मीरां को जी भर के सताया । इसीलिए मीरां को कहना पडा—

१ सासरिया मैं दु ख घणौ री सासू नणद सतावै

... ........ . ................................ .......

देवर जेठ म्हारो कुटब कबीलो नितउठ राड़ चलावे

२. देवर जेठ म्हारै कुबुधि, नीत की राडे पछाड़

३. सासु नणद मारी देवर जैठांणी सब ही मिल जगडी

४. सास बुरी है मारी नणद हठीली

उपर्युक्त सभी पदो मे मीरां को जहर देनें तथा सताने की करुण व्यथा भरी है । राणा-मीरा संवाद, इनमें से कुछ पदों की विशेषता है । राणा को मीरां के प्रत्युत्तर सारगर्भित और विद्वतापूर्ण हैं । मीरां की दृढ भक्ति और दुष्टों से दूर रह कर 'हरिजन' के साथ हरि–स्मरण करने के संकेत इन पदो मे मिलते हैं । 'कनक कटौरे विष घोलियो' से यही ज्ञात होता है कि मीरा जैसी राजवधू को विप देते समय भी उचित पात्र चूना गया था । इसका कारण एक तो यह हो सकता है कि मेवाड का राजमहल इतना सम्पन्न था कि हीन से हीन कार्य हेतु भी सोने के कटोरे ही प्रयुक्त होते थे अथवा मीरां राजवधू थी अत उस हेतु चरणामृत के नाम से भेजा गया विष भी सोने के कटोरे मे ही होना चाहिए अन्यथा संभव है प्रतिदिन के विपरीत पात्र में प्रभु का चरणामृत देख कर मीरां को कुछ सशय हो जाता । यदि यह पद प्रक्षिप्त भी माना जाय तव भी इतना तो निश्चित है कि लोक - धारणा यही थी कि चितौड की राजवधू को विप भी सोने के कटोरे में दिया गया था ।

वि० सं० १५८८ से १५६१ तक का समय महाराणा विक्रमादित्य का ही है जब मीरां प्रतिदिन के कष्टो से दुखी होकर चितौड-त्याग करती है। अत: कालक्रम से भी मीरां के पदो के निर्दयी और उसे सताने वाले राणा, विक्रमादित्य ही हैं। साथ ही इतिहास मे इस बात का पर्याप्त उल्लेख है कि महाराणा विक्रमादित्य अपने वुर्जुग और चितौड के रक्षक सरदारो की हंसी उडाया करता था, उन्हे अपमानित करता और सताता था, जिसके कारण वे सभी चितौड़ छोड कर चले गए थे। इन सरदारो और सामतों के चले जाने पर उसने ५०० पहलवान रख लिए। ऐसा व्यक्ति जो अपने दादा और पिता के समय के अनुभवी और चितौड़ के रक्षक सरदारो का अपमान कर, उन्हे चितौड़ छोड देने को विवश कर सकता है, उसके लिए भक्तमती नारी को सताना कोई आश्चर्य की बात नही है। अत: सभी दृष्टियो से यही ज्ञात होता है कि मीरां को सताने वाला, विष देने वाला राणा, विक्रमादित्य ही था।

मीरा को विष बडे योजनाबद्ध तरीके से दिया गया था। इसका मार्मिक चित्रण मीरां ने अपने पदो मे किया है—

कनक कटोरे विष घोलीयो, दीयो मीरा के हाथि
हरि चरणोदिक करि लीयौ, हरि जी भयो सुनाथि
सव मलि मतो उपाइयो, मीरा नै विषै द्यौ
कह्यो मुख्यौ माने नही, नीच लग्यो हठ यौ
नगर वस वांमण बांणीया, भीतर सुंदर पवार
मुऊ मोडे मुलक्या करे। समझे नही गवार ।।

(सोने के कटोरे मे विष घोला गया और उसे मीरां को भेजा गया। वे जानते थे कि सभव हे ऐसे मीरा इसे पान न करे। अत. इसे हरिचरणों का 'चरणामृत' कह कर भेजा गया। यह विष एकाएक नही भेजा गया। विप भेजने से पहले सवने वैठ कर विचार किया कि मीरां से छुटकारा पाने का एक ही तरीका है कि मीरां को विष दिया जाय। इस कार्य हेतु 'मुख्या' नाम के व्यक्ति को पकडा गया, किन्तु वह नीच भी हठ पूर्वक मना करता रहा। उसका सभवत. यह सकेत था कि नगर मे (चितौड) व्राह्मण और बनिये रहते हैं जो धार्मिक-प्रवृत्ति की जातिया हैं अत. मीरा को व्रिष देने जैसा पाप कर्म चितौड में मैं नही कर सकता। वह गवार मुह मोडे हुए मुस्कराता रहा, पर कुछ समझा नही।)

विष देने की इस घटना का उल्लेख मीरां ने अपने पदो में तो बार-बार किया ही है साथ ही अन्य भक्तों और साहित्यकारों ने भी इस घटना का और मीरां को सताने का उल्लेख किया है।[१९]

मीरां को विष देने के साथ-साथ लालच आदि भी दिए गए थे। इनका सकेत मीरां के पदो से मिलता है—

राणो जी कागद मोकल्या जी। द्यो मेड़तणी ने जाहे।
साधां री संगति छोडि द्यो। थांका कुल ने लाछ्रण थाह ॥
काठन की माला तजो जी। पहरो मोतीहार।
भगताई थे दूर करो जी। सब ही राज तुमार ॥२॥

किन्तु, मीरां इस पर भी विचलित नही हुई। मीरां के कुछ पदो में मीरां को विष देने के साथ सर्प पिटारा आदि भेजने का उल्लेख मिलता है—

सर्प्र पीटारा राणा जी भेज्या। द्यो मेड तणी ने जाय ॥

नागरीदासजी ने मीरां को विष देने को घटना का सविस्तार उल्लेख किया है—

'मीरांबाई सौ राना बहौत दुख पाय रहै, राना के घर की रीत तें, इनके भिन्न रीत, यह भगवन्न सम्बन्धी सत्यसग विसेस करे, देह-सम्बन्ध को नातो व्यौहार, कछु न मानै, राना बहुत समुझाय रह्यौ, निदान एक विष को प्यालो उनकौ पठ्यो, कह्यौ चरनामृत को नाम ले के दीजियो, उनके प्रण हैं, चरनामृत के नाम तें पी जायेंगे, सो ऐसौ ही भयो, जानि बूझ पियो, राना तो इनके मरिवे की राह देखत रह्यो अरू यह झांझ मृदग संग ले के परम रग मौ एक नयो पद बनाय ठाकुर आगै गावत भये, यह पद बहुत प्रसिद्ध भयो, सौ वह यह पद—

रानै जू विष दोनौ हम जानी।
जान बूझि चरनामृत सुनि, पीयो नही बौरी मीरानी ॥
कंचन कसत कसौटी जैसै, तन रह्यो बारह बानी।
आपुन गिरधर न्याय कियौ, यह छान्यो दूध अरू पानी।
राना कौटक वारौ जिहि पर, हौ तिहि हाथ बिकानी।
मीरा प्रभु गिरधर नागर के, चरन कमल लपटानी।[२०]

पाद टिप्पणियां—

१ (क) जयमल वश प्रकाश – गोपालसिंह मेडतिया, पृ० ७०.
(ख) उदयपुर राज्य का इतिहास-पहला भाग-गौरीशंकर हीराचद ओझा पृ ३५८
(ग) मारवाड का इतिहास-विश्वेश्वर नाथ रेऊ, पृ० ११८
(घ) मारवाड का मूल इतिहास-प० रामकर्ण आसोपा, पृ० ११३
(ड) पूर्व आधुनिक राजस्थान-डॉ० रघुवीरसिंह सीतामऊ, पृ० २३
(च) महाराना सागा-हरबिलास शारदा, पृ० ६५
(छ) वीरविनोद-श्यामलदास, पृ० ३६२

२. (क) उदयपुर राज्य का इतिहास–ओझा, पृ० ६१२
(ख) एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज आफ राजस्थान–कर्नल टॉड, पृ० २३२
३. महाराणा कुम्भा—रामवल्लभ सोमानी, पृ० २८०
४. मुंहता नैणसी री ख्यात–सं० बदरीप्रसाद साकरिया, पृ० १११
५ नैणसी री ख्यात (प्रथम भाग) पृ० ५५
६. (क) गोपालसिंह मेंडतिया, वर्ष २ खण्ड २
(ख) डावो मेल्यो मेरतो, पहलो पोकर जाई—
७. सुधा (लखनऊ) फाल्गुन वर्ष २ खण्ड २–लेखक–गोपालसिंह मेड़तिया
८. मारवाड रा परगना री विगत (नैणसी) भाग २ स० डॉ० नारायणसिंह भाटी, पृ० ५२
९. (क) जयमल वंश प्रकाश–गोपालसिंह मेड़तिया पृ० १
(ख) मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ३–पृ० ९८
१०. अमरसर के कछवाहे–देवीसिंह मडवा, शोधपत्रिका, पौष वि सं २००९ भाग ४ अंक २
११. (क) वृंदावन आई जीव गुसांई जू सो मिली झिली, तिया मुख देखिवे की पन लै छुटायो ॥
—प्रियादास जी की भक्तिरस वोधिनी टीका
(ख) जा ब्रज जीउ मिली पन हौं तिय, देष तनै सुण ताही छुड़ायौ
—राघवदास जी दादूपंथी
(ग) ता पीछे मीरांबाई गंगादिक तीरथ करिकै अरू श्री वृंदावन हू आये, तहां जीऊ गुसाई जू को प्रण स्त्री के न देखिवे को छुटाय–सबौ गुरु गोविंदवत सनमान सत्संग करि द्वारिका कौं लले (नागरी दास)
१२. डा० सत्येन्द्र, डा० कृष्णलाल आदि
१३ डा० प्रभात, मीरांबाई शोधप्रबन्ध
१४. डा० हीरालाल माहेश्वरी–राजस्थानी भापा और साहित्य
१५. जयमल वश प्रकाश—गोपालसिंह मेड़तिया, पृ० ७०
१६. उपर्युक्त, पृ० ७१–७२
१७. (क) मारवाड का मूल इतिहास–रामकरण आसोपा पृ० १२५-१२६
(ख) महाराणा सांगा–हरविलास शारदा पृ० १४४
(ग) उदयपुर राज्य का इतिहास (प्रथम खण्ड) गौ०ही०ओझा पृ०३७३-३७४
१८. उदयपुर राज्य का इतिहास, ओझा (पहली जिल्द), पृ० ३७४–७५
१९ (क) नाभादास की भक्तमाल
(ख) नरसी मेहता
(ग) नागरी दास, (घ) ध्रुवदास
२०. नागरी दास

# पदानुक्रमणिका

पद-संकेत

पृष्ठ संख्या

परिशिष्ट (१)

## राग-रागिनी पद संग्रह-अनुक्रमणिका

परिशिष्ट (२)

## मीराँ के प्रकाशित पदों से भाव साम्य रखने वाले अप्रकाशित पदों की अनुक्रमणिका

परिशिष्ट (३)

**मीरां के वे पद जिनकी प्रथम दो या तीन पंक्तियाँ ही पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, शेष पद नहीं।**

परिशिष्ट–४

## मीराँ के वे पद जिनकी अधिकांश पंक्तियां पूर्व प्रकाशित पदों से मिलती है, केवल एक या दो पंक्तियां नही मिलती ।

परिशिष्ट—५

## पूर्व प्रस्तुत मूल पदों के पाठान्तरों की अनुक्रमणिका

# शुद्धिपत्र

'भूमिका के अन्तर्गत'

| पृष्ठ सख्या | पक्ति सख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | १२ | अधुनावधि | अद्यावधि |
| १ | २० | सभा | सभी |
| ४ | २२ | उपरोक्त | उपर्युक्त |
| ८ | २ | सत | मत |
| ८ | २० | रागरागनियो | रागरागिनियों |
| ८ | २५ | रागिनडियो | रागिनियों |
| ८ | २८ | नमे | इनमे |
| ८ | २८ | रागनिया | रागिनिया |
| ९ | ४ | रागनी | रागिनी |
| ९ | ४ | रागनियां | रागिनियां |
| ९ | २६ | कुल | कुछ |
| १० | १ | मूचिपत्र | सूचीपत्र |
| १० | ७ | के | के' की आवश्यकता नही है |
| ११ | १ | -- | पदो की |
| १२ | ६ | -- | कुछ छूट |
| १२ | १७ | -- | किया है |
| १२ | १९ | वश्वसनीय | विश्वसनीय |
| १२ | २१ | हरजसो | हरजस |
| १२ | २३ | छ | कुछ |
| १२ | २६ | अधुनावधि | अद्यावधि |
| १३ | १७ | तथा | यथा |
| १३ | २२ | सक्लन | सकलन |
| १४ | ५ | समव | सम्भव |
| १४ | ७ | को | का |
| १४ | ८ | क | किया |
| १४ | २१ | सकलन | सकलन |
| १४ | २२ | गितेरोध | गतिरोध |
| १४ | २४ | भावसम्य | भावसाम्य |
| १५ | २ | से | मे |
| १५ (फुटनोट) | ३ | स्पण्ठ | स्पष्ट |

| पृष्ठ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १६ (फुटनोट) | १७ | के | के' की आवश्यकता नही |
| १६ (फुटनोट) | १२ | प्रभाव | प्रकाश |
| १६ (फुटनोट) | | उन पर की | उनकी |
| १६ (फुटनोट) | | सभी | सभी शब्द की आवश्यकता नही |
| १८ (फुटनोट) | १० | मीर्राबाई | मीराँबाई |
| १९ | १३ | का | के |
| १९ | १४ | अजर अमर अलौकिक | अजर, अमर, अलौकिक |
| १९ | ६ | लिं | लिं |
| १९ (फुटनोट) | ११ | मिल | मिस |
| २१ | ६ | । | ? |
| २२ | २४ | जीवनि | जीवनी |
| २३ | ३ | वह | वे |
| २४ | २१ | जोगेश्वर | 'जोगेश्वर' |
| २९ | १ | जिस विरद | जिन विरदो |
| २९ | २ | वही | वे ही |
| ३२ | ७ | मिलया | मिलया |
| ३३ | ३ | हमार | हमारे |
| ३४ | २४ | को | 'को' की आवश्यकता नही |
| ३५ | ७ | आने | जाने |
| ३५ (फुटनोट) | ६ | जी | जीव |
| ३६ (फुटनोट) | २५ | बछडे | बछडे |
| ३७ | ४ | हैं | है |
| ३७ | ५ | अध्यात्मिक अलौकिक पूर्ण ब्रह्म | अध्यात्मिक, अलौकिक एव पूर्ण ब्रह्म |
| ३८ | १९ | मारा | मीराँ |
| ३८ (फुटनोट) | ५ | मोरा | मीराँ |
| ४१ (फुटनोट) | १ | प्रभाषक | प्रकाशक |
| ४१ ,, | ,, | प्रतिक | प्रतिष्ठान, जोधपुर |
| ४३ | ४ | माराँ | मीराँ |
| ४३ | ५ | शद | शब्द |
| ४४ | ९ | छिन | धिन |
| ४४ | १३ | चरण | प्रथम |
| ४४ | १४ | सत | सत |

| पृष्ठ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
| --- | --- | --- | --- |
| ४४ | २१ | छिन | भिन |
| ४४ | २२ | मता | सतो |
| ४५ | ४ | सत-समागम | सन-समागम |
| ४५ | १६ | सामा | लासा |
| ४६ | १७ | दर्शनार्थ | दर्शनार्थं |
| ४७ | १४ | कल्पना तो क्या, विचार भी असभव हे | विचार तो क्या, कल्पना भी असभव है। |
| ४७ | १८ | गृहित | गृहीत |
| ४७ | २३ | (        ) | स्थान नही |
| ४८ | २२ | सदेहात्मक | सदेहास्पद |
| ४८ | २३ | विवादात्मक | विवादास्पद |
| ४९ | ६ | किवदतियो | किवदतियो |
| ४९ (फुटनोट) | ८ | श्री विश्वेवर | श्री विश्वेश्वर |
| ५० (फुटनोट) | ११ | सूर्य राम | सूर्यराम |
| ५० (फुटनोट) | १२ | ससस्या | समस्या |
| ५० (फुटनोट) | १६ | चतुवेंदी | चतुर्वेदी |
| ५२ | २६ | श्री विश्वेवर | श्री विश्वेश्वर |
| ५२ (फुटनोट) | १ | इतिहासवेता | इतिहासवेत्ता |
| ५२ (फुटनोट) | ८ | जीपा | पीपा |
| ५३ (फुटनोट) | ५ | संस्कृते | सस्कृत |
| ५३ (फुटनोट) | ७ | का | मार |
| ५३ | १२ | अस्तवल | अस्तवल |
| ५४ (फुटनोट) | १ | पदवि | पदवी |
| ५४ (फुटनोट) | ८ | बागविल | बाइबिल |
| ५४ (फुटनोट) | ९ | सूर्यवण | सूर्यवश |
| ५४ (फुटनोट) | १४ | थनधन | धनधन |
| ५४ (फुटनोट) | १७ | अथ | अर्थ |
| ५४ (फुटनोट) | १८ | प्रकाथ | प्रकाश |
| ५४ (फुटनोट) | १९ | उज्जवल | उज्ज्वल |
| ५५ | १४ | वाड्गमय | वाड्मय |
| ५५ (फुटनोट) | ३ | फर्च | फ्रेंच |
| ५५ (फुटनोट) | ५ | (रेयिस्तान) | (रेगिस्तान) |
| ५७ | १० | तथा मूल पाठ अनुसधान सम्बधी सिद्धान्तो | (यह वाक्य दो बार छप गया है—होना एक ही बार चाहिए। |

| पृष्ठ संख्या | पंक्ति सख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५९ | २४ | का | को |
| ६१ | २२ | निणय | निर्णय |
| ६२ | ६ | एव | एवम् |
| ६२ | ८ | ,, | ,, |
| ६२ | ८ | अपने | आपने |
| ६२ | ८ | एव | एवम् |
| ६२ | १० | भहत्व | महत्व |
| ६२ | १३ | काय | कार्य |
| ६२ | १९ | ( ) | की' शब्द होना चाहिए |
| ६३ | ३ | ( ) | मीरॉबाई की बृहत्पदावली |
| ६४ | ३ | अत्यत प्रिय है | अत्यत लोकप्रिय है। |

## 'मूल पदावली के अन्तर्गत'

| पृष्ठ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २ | ३ | काढि | काढ |
| ३ | शीर्षक पक्ति | माग | भाग |
| ३ | १८ | ग्र० | ग्र थ |
| ३ | १ (सम्पा० पाठ) | बालपर्णों | बाळपणो |
| ४ | १ | खबायची | खमायची |
| ५ | शीर्षक पंक्ति | माग | भाग |
| ६ | २ (सम्पा० पाठ) | कही | कांई |
| ६ | ४ (सम्पा० पाठ) | गेहणे | गे'णो |
| ७ | ३ (सम्पा० पाठ) | साईया | सांईया |
| ८ | १५ | फूले | फल |
| ८ | ३ (सम्पा० पाठ) | बधावना | बधावणा |
| ८ | ४ (सम्पा० पाठ) | सु णे | सुण |
| ८ | ५ (सम्पा० पाठ) | मगल | मगळ |
| ९ | १ (सम्पा० पाठ) | बसरी | बसरी |
| ११ | २ (सम्पा० पाठ) | आखडली | आँखडली |
| १३ | ३ (सम्पा० पाठ) | याके | जाके |
| १३ | ५ | हासे | या से, यहां से |

| पृष्ठ संख्या | पंक्ति संख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १६ | २ (सम्पा० पाठ) | गोप्या | गोप्यां |
| १६ | ३ (सम्पा० पाठ) | सावरिया ने | गोवरियां नै |
| १६ | ३ (सम्पा० पाठ) | आगलिया री | आगळियां री |
| १६ | ४ (सम्पा० पाठ) | यारे | हमारे |
| १७ | १४ | (इन्द्र) | (इन्दगढ़-संग्रह) |
| १८ | ३ (सम्पा० पाठ) | जानूं | जाणूं |
| २० | २ (सम्पा० पाठ) | अफूठ | अपूठो |
| २१ | १७ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २१ | १८ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २२ | १६ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २३ | १ (सम्पा० पाठ) | सावति | सावत, गोधा |
| २४ | १४ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २४ | १ (सम्पा० पाठ) | मछ्री | मछलो |
| २४ | १ (सम्पा० पाठ) | विरहिणी | विरहणी |
| २४ | ३ (सम्पा० पाठ) | म्हैं | म्हे |
| २४ | ५ (सम्पा० पाठ) | म्हखो | म्हारो |
| २५ | २ (सम्पा० पाठ) | ज्याने | जिण |
| २६ | १६ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २६ | १ (सम्पा० पाठ) | किला है | सालमा है |
| २७ | ४ (सम्पा० पाठ) | घणी | वस्या |
| २८ | १६ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २८ | २१ | ग्र० | ग्रन्थ |
| २९ | १ (सम्पा० पाठ) | भ्रवीलो | छबीलो |
| ३१ | १ (सम्पा० पाठ) | पर्ण पेरण | पेंरण |
| ३२ | १४ | ग्र० | ग्रन्थ |

नोट— मुद्रण सम्बन्धी असावधानी के कारण अनेक स्थलों पर अनुस्वार का बिन्दु उभर नहीं पाया है, अतः विद्वान् पाठकों से अनुरोध है कि वे ऐसे शब्दों का शुद्ध रूप पढ़ने का अनुग्रह करें ।